मङ्गल भक्ति सुमन

प्रकाशक:
तीर्थधाम मङ्गलायतन
आगरा रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.)

ॐ

॥ नान्यथावादिनो जिनाः ॥

मङ्गल भक्ति सुमन

: संकलन एवं सम्पादन :

मङ्गलार्थी उदित जैन, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

मङ्गलार्थी सक्षम जैन 'ऐश्वर्य', भिण्ड (मध्यप्रदेश)

मङ्गलार्थी सिद्धार्थ जैन, करेली (मध्यप्रदेश)

मङ्गलार्थी समकित जैन, ईसागढ़ (मध्यप्रदेश)

: सह-संकलन एवं सम्पादन :

मङ्गलार्थी आदीश जैन, कोटा (राजस्थान)

एवं समस्त मङ्गलार्थी छात्र

: मुख्य मार्गदर्शक :

श्री पवन जैन, 'ताऊजी', अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)

प्रथम संस्करण – 1500 प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण – 1000 प्रतियाँ
(वीरशासन जयन्ती के अवसर पर, जुलाई 2018)

सहयोग राशि – रुपये 40.00 मात्र

प्राप्ति स्थान :
तीर्थधाम मङ्गलायतन
अलीगढ़–आगरा मार्ग, सासनी–204216
हाथरस (उत्तरप्रदेश)
website : www.mangalayatan.com
email : info@mangalayatan.com

मुख्य प्रेरणास्त्रोत :
स्वर्गीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी जैन,
बुलन्दशहर (उत्तरप्रदेश)

मार्गदर्शक :
श्री स्वप्निल जैन 'भैय्या'
पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन
पण्डित संजयकुमार जैन 'शास्त्री'
पण्डित अरुणकुमार जैन, जयपुर
पण्डित सचिन जैन
पण्डित सुधीरकुमार जैन, 'शास्त्री'
पण्डित सचिन्द्रकुमार जैन, 'शास्त्री'

टाइप सेटिंग :
मङ्गलायतन ग्राफिक्स, अलीगढ़।

मुद्रक :
दी डायमंड प्रिंटिंग प्रेस
9, मोती सिंह भोमियो का रास्ता, जौहरी बाजार,
जयपुर–302003, फोन : 0141–2562929

✍ मन की बात

तीर्थधाम मङ्गलायतन परिशुद्ध तत्त्वज्ञान का एक विशुद्ध क्षेत्र है। साथ ही तत्त्वज्ञान की शोभा को बढ़ाते हैं, यहाँ संचालित 'भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन' में अध्ययनरत मङ्गलार्थी छात्र।

हम मङ्गलार्थी छात्रों पर तीर्थधाम मङ्गलायतन व सम्पूर्ण जैन समाज का बहुत उपकार है, जिसकी भरपाई करना बहुत मुश्किल ही नहीं अपितु नामुमकिन है और अभी हम इतने सक्षम भी नहीं कि उस उपकार की भरपाई कर सकें। तथापि उसके अंशरूप हम यह 'मङ्गल भक्ति सुमन' नामक पुस्तिका का प्रकाशन कर रहे हैं।

पुस्तक प्रकाशन में परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का हम उपकार नहीं भूल सकते, जिनके द्वारा इस पंचम काल में तत्त्व की अमृत-वर्षा हुई। तत्त्व का उद्घाटन हुआ। मुक्तिपथ का मार्ग मिला। साथ ही स्वर्गीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी जैन, श्री पवन जैन 'ताऊजी' एवं श्री स्वप्निल जैन 'भैय्या' का जिनके मंगल सान्निध्य से तत्त्व एवं तत्त्वप्रचार का अनुपम, अद्भुत संयोग हमें मिलता है। इसलिए इनके जितने आभार प्रगट करें, उतने कम हैं।

इस पुस्तिका में, आप वे समस्त भक्तियाँ पायेंगे जो सभी विशेष प्रसङ्गों पर गायी जानी चाहिए और वे, जो सामान्य भक्ति सन्ध्याओं में अपना एक अहम स्थान संरक्षित करती हैं।

साथ ही हमने पुस्तिका में प्राचीन आध्यात्मिक कवि जैसे बनारसीदासजी, दौलतरामजी, द्यानतरायजी आदि तथा वर्तमान के आध्यात्मिक कवि बालब्रह्मचारी रविन्द्रजी 'आत्मन्', अमायन; पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली; डॉ. विवेककुमारजी, छिन्दवाड़ा आदि सभी की भक्तियाँ सम्मिलित की हैं।

इस पुस्तिका में भक्तियाँ प्रसंगानुसार, विभिन्न खण्डों में विभाजित की गयी हैं। जैसे पंच कल्याणक भक्ति खण्ड, प्राचीन कवि भक्ति खण्ड, वैराग्य-उपदेश भक्ति खण्ड आदि-आदि।

चूँकि हमने अपनी योग्यता अनुसार इस पुस्तिका को त्रुटि मुक्त करने की कोशिश की है, तथापि कोई त्रुटि रह जाये तो हमें अवश्य सूचित करें, ताकि अगले संस्करण में उनका परिहार हो सके।

जय जिनेन्द्र!!

—सम्पादक

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण

(1) श्री अरहन्त सदा मङ्गलमय.... 1
(2) जो मङ्गल चार जगत में.... 2
(3) मन्त्र जपो नवकार.... 2
(4) मन्त्र णमोकार हमें प्राणों.... 3
(5) पंच परम परमेष्ठी देखे... 4
(6) अरिहंत जय जय.... 5
(7) ॐ आदिनाथाय नम:..... 5
(8) भावे भजो भावे... 5
(9) मैं महापुण्य उदय से..... 6
(10) जय अरिहन्ता.... 7
(11) मंगल अर्हन्त मंगल... 7
(12) घड़ि-घड़ि पल-पल...... 8
(13) आप्त आगम गुरूवर..... 8
(14) तेरी पूजा ओ........ 9
(15) ॐ मंगलम्........ 10
(16) देवों के देव श्री जिनदेव.. 10
(17) णमोकार मन्त्र को.. 11
(18) म्हारा पंच प्रभु... 12

देवभक्ति

(1) वीतरागी देव तुम्हारे.... 13
(2) हे प्रभो चरणों में तेरे.... 14
(3) रोम-रोम से निकले...... 14
(4) रोम-रोम पुलकित हो.... 15
(5) आज हम जिनराज...... 16
(6) निरखी-निरखी मनहर... 16
(7) मेरे मन मन्दिर में आन........ 17
(8) निरखो अंग-अंग जिनवर.... 18
(9) चाह मुझे है दर्शन की.... 19
(10) मङ्गलमय जिनराज तुम्हारे...... 19
(11) दिन-रात स्वामी तेरे.... 20
(12) कोई इत आओ जी..... 20
(13) तुम्हारे दर्श बिन स्वामी...... 21
(14) तिहारे ध्यान की मूरत...... 22
(15) आये आये रे जिनन्दा 22
(16) आओ जिनमन्दिर में आओ...... 23
(17) दरबार तुम्हारा मनहर है...... 23
(18) प्रभु हम सब का एक...... 24
(19) थांकी उत्तम क्षमा पै...... 24
(20) नाथ तुम्हारी भक्ति में सब...... 25
(21) नेमि जिनेश्वर...... 25
(22) तुम्हारी मूरत पे हमने देखा...... 26
(23) प्रभु शांति छवि तेरी अंतर...... 26
(24) मनहर तेरी मूरतियाँ..... 27
(25) जिनराज तेरी महिमा..... 28
(26) प्रभु विनति लेकर आये हैं... 28
(27) तेरी वाणी को अंतर.... 29
(28) कैसी सुन्दर जिन प्रतिमा... 29
(29) नाथ तुम्हारे दर्शन से... 30
(30) नाम तुम्हारा तारण हारा... 30
(31) स्वर्ग से सुन्दर अनुपम.... 31
(32) भवि देखि छवि भगवान की.... 32
(33) जपि माला जिनवर नाम की.... 32
(34) परम गुरु बरसत.... 32
(35) कर लो जिनवर का गुणगान.... 33
(36) श्री अरहंत छवि.... 33
(37) हे जिन तेरो सुजस उजागर... 34
(38) ऐसा दो वरदान जिनेश्वर... 34
(39) तेरा ध्यान जब से किया है.... 35
(40) सुर से सुनाऊँ...... 36
(41) आयो आयो रे हमारो.... 36
(42) अहो भगवंत का दर्शन.... 37
(43) कितना प्यारा... 37
(44) है यही भावना... 38
(45) जय जय जय जिनवर हो.... 39
(46) वीर जिनेश्वर अब तो मुझको... 39
(47) देखने आया चेहरा.... 40
(48) श्री जिन मेरा सदा है... 41
(49) मन के विकार नासो 41
(50) कर ले प्रभु का ध्यान..... 42

शास्त्रभक्ति खण्ड

(1) माँ जिनवाणी ज्ञायक... 43
(2) म्हारी माँ जिनवाणी.... 44
(3) सुनो सुनो रे जिनवाणी... 44
(4) ग्रंथ समयसार..... 45
(5) हम अगर वीरवाणी पर.... 45
(6) महिमा है, अगम जिनागम... 46
(7) जिन बैन सुनत मोरी... 46
(8) चरणों में आ पड़ा हूँ.... 47
(9) केवलिकन्ये, वाङ्मय गंगे.... 47
(10) धन्य-धन्य जिनवाणी माता.... 48
(11) धन्य-धन्य वीतराग वाणी.... 48
(12) जयवन्तो जिनवाणी... 49
(13) जिनवाणी सुन लो रे.... 49
(14) हे जिनवाणी माता तुमको.... 50
(15) जिनवाणी माता दर्शन.... 50
(16) जिनवाणी माता रत्नत्रय.... 51
(17) नित पीज्यो धी धारी.... 51
(18) शान्ति सुधा बरसाये.... 52
(19) आत्मा ही समयसार, म्हाने.... 52
(20) पञ्च परम गुरूओं ने गाया.... 53
(21) माँ जिनवाणी बसो हृदय में... 54
(22) मीठे रस से भरी.... 54
(23) समयसार-समयसार... 55
(24) माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में... 56
(25) माँ जिनवाणी तेरो नाम... 56
(26) जिनवाणी माँ-२.... 57
(27) जिनवाणी-जिनवाणी... 58
(28) सुनकर वाणी जिनवर की.... 58
(29) वे प्राणी ! सुज्ञानी, जिन जानी... 59
(30) मेघघटासम श्री जिनवानी... 59
(31) परम उपकारी जिनवाणी.... 59
(32) जान के सुज्ञानी जैनवानी... 60
(33) जिनवाणी माँ सुन तो... 60
(34) माँ.... सुनाओ वो गाथा... 60
(35) माता तू दया करके... 61
(36) जिनवाणी अमृत रसाल... 62
(37) सुनो जिनवाणी.... 62
(38) थे तो जिनवाणी के मारग... 64

गुरुभक्ति खण्ड

(1) श्री मुनि राजत समता सङ्ग..... 65
(2) धन-धन जैनी साधु..... 66
(3) धन्य मुनीश्वर आतम..... 66
(4) जिन रागद्वेषत्यागा..... 67
(5) ऐसे साधु सुगुरु... 67
(6) गुरुओं के उपकार को..... 67
(7) होली खेलें मुनिराज.... 68
(8) नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ..... 68
(9) हे परम दिगम्बर यती..... 69
(10) धन्य मुनिराज हमारे... 70
(11) म्हारे आँगन में... 70
(12) सिद्धों की श्रेणी में... 71
(13) नगन दिगम्बर संत... 72
(14) जंगल में मुनिराज... 73
(15) ज्ञानी की ज्ञान गुफा में.... 73
(16) मुनिवर आज मेरी.... 74
(17) मैंने मुनिराज देखें सपने... 74
(18) है परम दिगम्बर मुद्रा... 75
(19) धन्य मुनिराज की समता... 75
(20) जब मुनिवर आते हैं.... 76
(21) अपना करना हो कल्याण.... 77
(22) आत्म अनुभव नित रमण... 77
(23) गुरुवर थारी परिणति.... 78
(24) निर्ग्रंथों का मार्ग.... 78
(25) वे मुनिवर कब मिली हैं... 79
(26) ऐसे मुनिवर देखे वन में.... 80
(27) छोड़ा सब जग का क्लेश... 80
(28) धारा है दिगम्बर वेश..... 81
(29) वैराग्य का धन.... 81
(30) गुरु समान दाता नहिं कोई.... 82
(31) संत निरंतर चिंतत ऐसैं..... 82
(32) देखा उन्हें जो.... 83

गर्भकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) मंगलायतन में गर्भ कल्याणक 84
(2) गर्भ कल्याणक आ गया... 85
(3) सुनो जी माँ ने.... 85
(4) सोती थी मरुदेवी माता... 86
(5) सोलह-सोलह स्वपन... 88
(6) मरुदेवी माता.... 89
(7) गर्भ कल्याणक की शुभ घड़ी... 89

जन्मकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) बहे अमृत धार.... 91
(2) आया अवसर आया सुहाना.... 92
(3) जब जन्म तीर्थंकर..... 92
(4) लिया प्रभु अवतार.... 93
(5) बाजे कुण्डलपुर में बधाई.... 93
(6) प्रभुजी पधारे म्हारे आँगणे.... 94
(7) माता वामा जायो प्यारा.... 95
(8) म्हारे आंगन आज आई..... 95
(9) उड़ उड़ रे उड़ उड़ रे.... 96
(10) त्रिभुवन के नाथ प्रभु... 97
(11) मंगल ये अवसर आंगण आयो... 97
(12) पंखिडा ओऽऽऽ पंखिडा..... 98
(13) नाचे रे इन्दर देव रे...... 99
(14) दिन आयो दिन आयो... 99
(15) बधाई आज मिल गाओ... 100
(16) आज तो बधाई राजा... 101
(17) सुरपति ले अपने शीश... 102
(18) झुलाय दियो पलना... 103
(19) मेरा पलने में झूले ललना... 103
(20) आज नगरी में जन्मे.... 104
(21) बधाई गाओ रे !... 104
(22) इन्द्र नाचे तेरी भक्ति.... 105
(23) छोटी-२ बइयाँ.... 106
(24) ऋषभ पधारे भैय्या..... 107
(25) देखा मैंने त्रिशला को लाल... 108
(26) आया जन्मकल्याणक महान... 109
(27) आनंद अंतर मा आज न.... 109
(28) महिमा कही न जाए मुख से... 110
(29) लिया ऋषभदेव अवतार..... 110

तपकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) जन-जन को अचरज आयो... 112
(2) रोम-रोम में नेमिकुंवर... 113
(3) गिरनारी पर तपकल्याणक... 113
(4) आनन्द अवसर आयो... 114
(5) विषयों की तृष्णा को... 114
(6) वेष दिगम्बर धार... 115
(7) संसार लगने लगा...... 116
(8) देवों और मानवों में... 117
(9) वैराग्य भावों का.... 118
(10) वर्धमान ललना से.... 118
(11) अंतर आनंद के रसिया.... 119

ज्ञानकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) जिनवर दरबार तुम्हारा..... 120
(2) समवसरण आएँ भक्तों.... 121
(3) घर-घर आनन्द छायो.... 121
(4) समवसरण स्तवन.... 122
(5) ॐकारमयी वाणी तेरी... 123
(6) आदि जिनन्दा-२..... 123
(7) अनन्त चतुष्टयवंत हुये..... 124
(8) दिव्यध्वनि वीरा..... 125
(9) सुनकर वाणी जिनवर की.... 125
(10) आनंद की गगरी छलक.... 126

मोक्षकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) देखो जी आदीश्वर स्वामी... 127
(2) अशरीरी सिद्ध भगवान... 128
(3) जीयरा... जीयरा... 128
(4) जहाँ राग-द्वेष की गंध नहीं,... 129
(5) आओ नी आओ नी भविजन... 129

प्राचीन भक्तिखण्ड

(1) प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ 131
(2) धन्य-धन्य है घड़ी आज की... 132

(3) निरखत जिनचन्द्र-वदन...... 132
(4) चिन्मूरत दृग्धारी.... 132
(5)आतम रूप अनुपम अद्भुत.... 133
(6) आज मैं परम पदारथ पायौ...... 133
(7) अब मेरे समकित सावन आयो... 134
(8) भगवंत भजन क्यों भूला रे.... 134
(9) हमकौ कछू भय ना रे.... 134
(10) भोंदू भाई! समुझ सबद यह.... 135
(11) दुविधा कब जैहै या मन की.... 136
(12) विराजै 'रामायण' घटमाहिं.... 136
(13) चेतन तू तिंहुकाल अकेला.... 137
(14) हम बैठे अपनी मौन सौं.... 137
(15) भावों में सरलता रहती है.... 137
(16) अब हम अमर भये न मरैंगे.... 138
(17) जो जो देखी वीतराग ने.... 138
(18) जिनवर चरण-भक्ति वर गंगा... 139
(19) धिक्-धिक् जीवन समकित.... 139
(20) हमें निज धर्म पर चलना.... 139
(21) अब के ऐसी दिवाली मनाऊँ..... 140
(22) मेरे चारों शरण सहाई.... 141
(23) पापन सों नित डरिये... 141
(24) अरहंत सुमर मन बावरे..... 141
(25) लगी लौं नाभिनंदनसों..... 142
(26) हम न किसी के कोई न.... 142
(27) धर्म बिना कोई नहीं अपना 142
(28) हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजै 143
(29) कबधौं मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर 143
(30) अपनी सुधि भूल आप,... 144
(31) चेतन कौन अनीति गही रे 144
(32) हम तो कबहुँ न निजगुन भाये 145
(33) मेरे कब ह्वै वा दिन की सुधरी 145
(34) जिन देख मगन भयो मेरो मनवा... 145
(35) जब आतम अनुभव आवै... 146
(36) मैं निज आतम कब ध्याऊँगा.... 146
(37) हम तो कबहुँ न निज घर आये.... 147
(38) चरखा चलता नाहीं (रे).... 147
(39) आकुलरहित होय इमि निशदिन 148
(40) प्रानी समकित ही शिवपंथा 148
(41) परनति सब जीवन की 148

आध्यात्मिक भक्ति खण्ड

(1) अब विषयों में नाहि रमेंगे... 149
(2) निज आत्मा का ज्ञान..... 150
(3) हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम.... 150
(4) चैतन्य के दर्पण में.... 151
(5) मैं ज्ञान मात्र बस.... 151
(6) आओ रे आओ रे..... 152
(7) भगवान आत्मा आनंद भंडार.... 152
(8) देखा जब अपने अंतर.... 153
(9) आत्मा हूँ आत्मा हूँ..... 153
(10) देखो तो दिखाई देता है 154
(11) तू ही शुद्ध है..... 154
(12) ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया... 155
(13) ज्ञानमयी चेतन तुझे जग से.... 156
(14) चेतो चेतन निज में आओ... 157
(15) ध्रुव शुद्धात्म ही सार... 157
(16) शुद्धात्मा का श्रद्धान होगा 158
(17) अहो चैतन्य आनंदमय...... 158
(18) ज्ञान दर्शन लक्षण.... 159
(19) ज्ञानी का ध्यानी का.... 160
(20) तू ज्ञान का सागर है... 161
(21) काम मेरा है जानना... 161
(22) हे ज्ञान.... हे ज्ञान.... 162
(23) ऐ आतम है तुझको नमन.. 162

वैराग्य भक्ति खण्ड

(1) एक तुम्हीं आधार हो...... 163
(2) मोक्ष के प्रेमी हमने... 164
(3) आनंद श्रोत बह रहा... 164
(4) क्या तन मांजना रे... 165
(5) नर तन को पाकर के.... 165
(6) करुणा सागर भगवान.... 166
(7) हे भविजन ध्या लो.... 166
(8) साधना के रास्ते... 167
(9) भूला है तू स्वयं... 167
(10) भूलकर अपना घर.... 168
(11) पाना नहीं जीवन को... 169
(12) मोहे भावे न भैया... 169

(13) देख तेरी पर्याय की हालत... 170
(14) सन्त साधु बनके.... 170
(15) तू जाग रे चेतन प्राणी..... 171
(16) उठो रे सुज्ञानी जीव.... 171
(17) चलो रे भाई.... 172
(18) आया कहाँ से कहाँ है जाना.... 173
(19) पुद्गल का क्या विश्वासा... 173
(20) जीवन है पानी की बूँद.... 173
(21) तीन भुवन के स्वामी... 174
(22) मैं तो छोड़ चला.... 175
(23) क्षणभंगुर इस झूठे जग में... 175
(24) अब गतियों नांही.... 176
(25) न रागी बनूँगा.... 176
(26) विषयों से दामन बचाते चलो... 177
(27) जिया कब..... 177
(28) मैं क्या माँगू भगवान.... 178
(29) सुन रे जिया.... 179
(30) तू धर ले दिगम्बर चोला... 179

प्रासंगिक भक्ति खण्ड

(1) आएँगे जब परमात्मा... 180
(2) सीमंधर मुख से.... 181
(3) भ्रात जिनवाणी सम.... 181
(4) आया पंचकल्याणक महान.... 182
(5) पंचकल्याणक आए, ... 183
(6) तेरे पाँच हुए कल्याण प्रभो... 183
(7) नाथ मेरे होऽऽ नाथ मेरे... 184
(8) पावन हो गई.... 184
(9) अमृत से गगरी भरो... 185
(10) मङ्गल बेला आज..... 185
(11) छोटे-छोटे मुनिवर.... 186
(12) नेमीकुंवर को देखो ये क्या... 186
(13) घर में ही वैरागी भरतजी 187
(14) धन्य-धन्य हे गौतम.... 188
(15) आदीश्वरस्वामी वन्दूँ... 189
(16) धन-धन साधर्मी मिलन... 190
(17) अब प्रभु चरण.... 190
(18) जिनेन्द्र चरण चन्द्र... 191
(19) आचार्य कुंदकुंद.... 191
(20) स्वागत करते आज तुम्हारा.... 192
(21) हिंसा पीड़ित विश्व राह... 192
(22) हे वीर रे आए हैं तेरे हम द्वार... 193
(23) करुणा के भण्डार.... 194
(24) भावना की चूनर ओढ़ के... 194
(25) अ र र र र र र र र र र र र ऽऽऽ.... 195
(26) मितवा रे सुमिरन अवसर आयो... 195
(27) आया है सारा सिद्धालय... 196
(28) गा रे भैया, गा रे भैया... 197
(29) शिखर पे कलश..... 197
(30) ये शाश्वत् सुख का प्याला... 198
(31) विश्व तीर्थ बड़ा प्यारा 198
(32) ऊँचे-ऊँचे शिखरों.... 199
(33) अभी-अभी मेरे मन में, ये... 199
(34) तुमसे लागी लगन.... 200
(35) प्रभु जी अब न भटकेंगे... 200
(36) जागो जागो जागो चेतन... 201
(37) वीर प्रभु का है कहना... 202
(38) ज्ञान की ज्योति जलाते चलो... 202
(39) निज आत्मा में देखो... 203
(40) पूर्व दिशा सम जननी.... 203
(41) ये महामहोत्सव मंगलमय.... 204
(42) करता रहूँ गुणगान... 205
(43) कैसे करुँ गुणगान... 205
(44) पारस प्यारा लागे.... 206

जिनधर्म भक्ति खण्ड

(1) सत्य सनातन धर्म प्यारा लगता है.. 207
(2) पंच परम परमेष्ठी भगवन्.... 208
(3) करो धर्म से प्यार.... 208
(4) कितना सुन्दर... 209
(5) है धर्म यहाँ की रीत सदा... 209
(6) ये धर्म हमारा है.... 210
(7) दशलक्षण के दशधर्मों का... 210
(8) जहाँ रागद्वेष से रहित...... 211
(9) बड़े भाग्य से हमको मिला.... 211
(10) कभी भूल नहीं जाना... 212
(11) महावीर संदेश ये न्यारा.... 212
(12) भले रूठ जाए ये सारा जमाना... 213

(13) ये प्रण है हमारा.... 213
(14) मंगलायतन की वसुन्धरा पर... 214
(15) श्री जिनवर की दिव्य देशना... 214
(16) कंकड़-कंकड़ बन गया.... 215
(17) जिनवर सत्य है.... 216
(18) जिनशासन बड़ा निराला... 217

मंगलार्थी भक्ति खण्ड

(1) अन्याय अनीति छोड़ा.... 218
(2) न राग न द्वेष, धरा दिगम्बर वेष... 219
(3) जब से मैंने आतम.... 219
(4) मैंने गुरुवर को है ध्याया.... 220
(5) जहाँ केश लुंचन हाथ कमण्डल.... 221
(6) आत्म चिंतन का.... 221
(7) इक्षु रस का किया पारणा.... 222
(8) हे तीन भुवन के स्वामी 222
(9) शुद्धातम की बात.... 223
(10) दिया जले अगम का.... 223
(11) निजातम ध्याऊँगा... 223
(12) मंगलमय हो मंगलकारी... 224
(13) जिनवाणी माता - जिनवाणी... 225
(14) मुनि निजरूप परम शिवभूत.... 225
(15) मन मोहक छवी थारी 226
(16) वीर जिनेश्वर 226
(17) हम सब ज्ञायक हैं... 227
(18) बाहुबली, जय बाहुबली... 227
(19) माँ, प्यारी माँ, जिनवाणी माँ 228
(20) पारस रे तेरी कठिन डगरिया.... 228

विविध भक्ति खण्ड

(1) नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी.... 229
(2) ये महा-महोत्सव पंच-.. 231
(3) आदिप्रभु का, वीरप्रभु का.... 232
(4) मुझे चरणों से लगा ले... 233
(5) पारस नाम... 234
(6) सुन ले ध्यान लगाकर 234
(7) सुख आते हैं, दु:ख आते हैं,... 235
(8) सोते-सोते ही निकल गयी... 235
(9) सजधज के जिस दिन... 236
(10) वीरा प्रभु के ये बोल..... 237
(11) प्रेम जब अनन्त हो गया, 238
(12) मोह की महिमा देखो 238
(13) ममता की पतवार न तोड़ी... 239
(14) लक्ष्य-बिन्दु 240
(15) जब एक रतन अनमोल है... 242
(16) तेरी छत्र छाया भगवन.... 243
(17) सिद्धालय जाना है 243

पूज्य गुरुदेव भक्ति

(1) शांति सुधा बरसा गये.... 245
(2) मोहे लागी लगन 246
(3) गुरुदेव आए रे... 246

बालगीत खण्ड

(1) तुझे बेटा कहूँ कि वीरा 247
(2) चेतन है तू.... 248
(3) आत्मा हमारा हुआ है.... 248
(4) ज्ञाता दृष्टा राही हूँ..... 249
(5) जैनधर्म का प्यारा बच्चा 250

शोभायात्रा/ध्वजारोहण भक्ति खण्ड

(1) यह धर्म है आतम ज्ञानी का... 251
(2) केशरिया केशरिया... 251
(3) मंगलमय अरु मंगलकारी.... 252
(4) रंग मां..... 252
(5) अपना ही रङ्ग मोहे.... 253
(6) धन्य धन्य आज घड़ी.... 253
(7) लहर-लहर लहराये...... 254
(8) शासन ध्वज लहराओ.... 254
(9) उड़े गगन में झण्डा प्यारा,.... 255

अन्य भक्ति खण्ड

(1) लक्ष्य-बिन्दु.... 256
(२) श्री पार्श्वनाथ स्तुति.... 257
(3) श्री बाहुबली स्तुति.... 258
(4) जब एक रतन अनमोल है... 259

वीतरागता के लक्ष्यपूर्वक भगवान की भक्ति

चेतन, जड़ नहीं होता और जड़, चेतन नहीं होता। जड़ के स्वभाव में चेतनपना नहीं होता और चेतन के स्वभाव में जड़पना नहीं होता। जड़ के संयोग से होनेवाला विकार भी वस्तुतः चेतन का स्वभाव नहीं है। जैसे, सर्वज्ञदेव वीतराग बिम्ब है, वैसा ही आत्मा का स्वभाव है – ऐसे लक्ष्यसहित वीतराग भगवान की भक्ति इत्यादि का राग आवे, वह प्रातःकाल की सन्ध्या / लालिमा जैसा है। जिस प्रकार प्रातःकाल की सन्ध्या / लालिमा के पश्चात् सूर्योदय होता है और सायंकाल की सन्ध्या / लालिमा के पश्चात् सूर्यास्त हो जाता है; उसी प्रकार वीतरागता के लक्ष्यपूर्वक भगवान की भक्ति इत्यादि का जो शुभराग है, वह प्रातःकालीन लालिमा के समान है; तत्पश्चात् जगमगाता चैतन्य सूर्य उदय होनेवाला है।

जिसे वीतरागता का लक्ष्य नहीं है, वीतरागदेव की भक्ति नहीं है और मात्र शरीरादि जड़ के राग का ही पोषण करता है, उसे तो उस लालिमा के पश्चात् अन्धकार आयेगा, उससे चैतन्यसूर्य ढँक जायेगा।

जहाँ स्वभाव का लक्ष्य है, वहाँ वर्तमान राग की लालिमा की मुख्यता नहीं है, अपितु यह राग मेरा स्वरूप नहीं है; इस प्रकार वीतरागस्वरूप के लक्ष्य से वह राग मिटकर चैतन्य प्रकाश प्रगट होगा और पूर्ण केवलज्ञान होगा।

(– पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी,
सोनगढ़ प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रवचनों से)

मङ्गल भक्ति सुमन

मङ्गलाचरण

महावीराष्टक (पद्यानुवाद)

जिनके चेतन में दर्पणवत् सभी चेतनाचेतन भाव।
युगपद् झलकें अंत-रहित हो ध्रुव-उत्पाद-व्ययात्मक भाव॥
जगत्साक्षी शिवमार्ग-प्रकाशक जो हैं मानों सूर्य-समान।
वे तीर्थङ्कर महावीर प्रभु मम हिय पधारें नयनद्वार॥१॥

जिनके लोचनकमल लालिमा-रहित और चंचला-हीन।
दर्शाते हैं भव्यजनों को बाह्याभ्यन्तर क्रोध-विहीन॥
जिनकी प्रतिमा प्रकट शांतिमय और अहो है विमल अपार।
वे तीर्थङ्कर महावीर प्रभु मम हिय पधारें नयनद्वार॥२॥

नमते देवों की पंक्ति की मुकुट-मणि का प्रभासमूह।
जिनके दोनों चरण-कमल पर झलके देखो जीव-समूह॥
सांसारिक ज्वाला को हरने जिनका स्मरण बने जलधार।
वे तीर्थङ्कर महावीर प्रभु मम हिय पधारें नयनद्वार॥३॥

जिनके अर्चन के विचार से मेंढक भी जब हर्षितवान।
क्षणभर में बन गया देवता, गुणसमूह और सुक्खनिधान॥
तब अचरज क्या, यदि पाते हैं सच्चे भक्त, मोक्ष का द्वार।
वे तीर्थङ्कर महावीर प्रभु मम हिय पधारें नयनद्वार॥४॥

तप्तस्वर्ण-सा तन है, फिर भी तनविरहित जो ज्ञानशरीरी।
एक रहे होकर विचित्र भी, सिद्धारथ राजा के वीर॥
होकर भी जो जन्मरहित हैं, श्रीमन् फिर भी न रागविकार।
वे तीर्थङ्कर महावीर प्रभु मम हिय पधारें नयनद्वार॥५॥

जिनकी वाणीरूपी गङ्गा, नयलहरों से हीन-विकार।
विपुल ज्ञान-जल से जनता का करती है जग में स्नान॥
अहो आज भी इससे परिचित ज्ञानीरूपी हंस अपार।
वे तीर्थङ्कर महावीर प्रभु मम हिय पधारें नयनद्वार॥६॥

तीव्र वेग त्रिभुवन का जेता, काम-योद्धा बड़ा प्रबल।
वयकुमार में जिनने जीता, उसको केवल निज के बल॥
शाश्वत सुख शांति के राजा बनकर जो हो गये महान।
वे तीर्थङ्कर महावीर प्रभु मम हिय पधारें नयनद्वार॥७॥

महामोह-आतंक शमन को, जो हैं आकस्मिक उपचार।
निरापेक्ष बन्धु हैं जग में, जिनकी महिमा अपरम्पार॥
भवभय से डरते संतों को, शरण तथा वर गुण भण्डार।
वे तीर्थङ्कर महावीर प्रभु मम हिय पधारें नयनद्वार॥८॥

(दोहा)

महावीराष्टक स्तोत्र को, 'भाग' भक्ति से कीन।
जो पढ़ ले एवं सुने, परमगति हो लीन॥

मङ्गलाचरण खण्ड

(1) श्री अरहन्त सदा मङ्गलमय....

श्री अरहन्त सदा मङ्गलमय मुक्तिमार्ग का करे प्रकाश,
मङ्गलमय श्री सिद्धप्रभु जो, निजस्वरूप में करे विलास;
शुद्धात्म के मङ्गलसाधक, साधु पुरुष की सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस, जब मङ्गलमय मङ्गलाचरण हो॥1॥

मङ्गलमय चैतन्यस्वरों में परिणति की मङ्गलमय लय हो,
पुण्य-पाप की दुःखमय ज्वाला, निजआश्रय से त्वरित विलय हो;
देव-शास्त्र-गुरु को वंदन कर, मुक्ति वधू का त्वरित वरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस, जब मङ्गलमय मङ्गलाचरण हो॥2॥

मङ्गलमय पाँचों कल्याणक मङ्गलमय जिनका जीवन है,
मङ्गलमय वाणी सुखकारी शाश्वत सुख की भव्य सदन है;
मङ्गलमय सतधर्म तीर्थ-कर्ता की मुझको सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस, जब मङ्गलमय मङ्गलाचरण हो॥3॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान-चरणमय मुक्तिमार्ग मङ्गलदायक है,
सर्व पापमल का क्षय करके, शाश्वत सुख का उत्पादक है;
मङ्गल गुण-पर्यायमयी चैतन्यराज की सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस, जब मङ्गलमय मङ्गलाचरण हो॥4॥

(2) जो मङ्गल चार जगत में....

जो मङ्गल चार जगत में हैं, हम गीत उन्हीं के गाते हैं,
मङ्गलमय श्री जिन-चरणों में हम सादर शीश झुकाते हैं॥ टेक॥

जहाँ राग-द्वेष की गन्ध नहीं, बस अपने से ही नाता है,
जहाँ दर्शन-ज्ञान-अनन्तवीर्य सुख का सागर लहराता है।
जो दोष अठारह रहित हुए हम मस्तक उन्हें नवाते हैं
मङ्गलमय श्री जिनचरणों में हम सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

जो द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित नित सिद्धालय के वासी हैं,
आतम को प्रतिबिम्बित करते जो अजर-अमर अविनाशी हैं।
जो हम सबके आदर्श सदा, हम उनको ही नित ध्याते हैं,
मङ्गलमय श्री जिनचरणों में हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

जो परम दिगम्बर वनवासी गुरु रत्नत्रय के धारी हैं,
आरम्भ-परिग्रह के त्यागी जो निज चैतन्य विहारी हैं।
चलते-फिरते सिद्धों से गुरु-चरणों में शीश झुकाते हैं,
मङ्गलमय श्री जिनचरणों में हम सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

प्राणों से प्यारा धर्म हमें केवली भगवान का कहा हुआ,
चैतन्यराज की महिमामय यह वीतराग रस भरा हुआ।
इसको धारण करनेवाले भव-सागर से तिर जाते हैं,
मङ्गलमय श्री जिनचरणों में हम सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

(3) मन्त्र जपो नवकार....

मन्त्र जपो नवकार मनुवा, मन्त्र जपो नवकार;
पंच प्रभु को वन्दन कर लो, परमेष्ठी सुखकार॥ टेक॥

अरहन्तों का दर्शन करके, शुद्धातम का परिचय कर लो;
शिवसुख साधनहार मनुवा, मन्त्र जपो नवकार॥1॥

सब सिद्धों का ध्यान लगालो, सिद्ध समान स्वयं को ध्यालो;
मङ्गलमय सुखकार मनुवा, मन्त्र जपो नवकार ॥2 ॥

आचार्यों को शीश नवाओ, निर्ग्रन्थों का पथ अपनाओ;
मुक्ति मार्ग आराध मनुवा, मन्त्र जपो नवकार ॥3 ॥

उपाध्याय से शिक्षा लेकर, द्वादशाङ्ग को शीश नवाकर;
जिनवाणी उर धार मनुवा, मन्त्र जपो नवकार ॥4 ॥

सर्व साधु को वन्दन कर लो, रत्नत्रय आराधन कर लो;
जन्म मरण क्षयकार मनुवा, मन्त्र जपो नवकार ॥5 ॥

(4) मन्त्र णमोकार हमें प्राणों....

मन्त्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा
यही वो जहाज जिसने लाखों को तारा
मन्त्र णमोकार.... ॥ टेक ॥

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ऐसो पंच णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं होहि मङ्गलं ॥
मन्त्र णमोकार... ॥1 ॥

अरिहन्तों को नमन हमारे, अशुभ कर्म अरि हनन करे
सिद्धों के सुमिरण से आतम सिद्धक्षेत्र को गमन करे
भव भव में... ओ... नहीं भ्रमें दुबारा
मन्त्र णमोकार... ॥2 ॥

आचार्यों को आचार्यों तक, निर्मल निज आचार्य धरे
उपाध्याय का ध्यान करें हम, संवर का सत्कार करें
सर्व साधु को... ओ... नमन हमारा
मन्त्र णमोकार... ॥3 ॥

इसी मन्त्र से नागनागिनी, पद्मावती धरणेन्द्र हुए;
सेठ सुदर्शन को सूली से, मुक्ति मिली राजेन्द्र हुए;
अंजन चोर का... ओ... कष्ट निवारा,
मन्त्र णमोकार... ॥4 ॥

(5) पंच परम परमेष्ठी देखे...

पंच परम परमेष्ठी देखे, हृदय हर्षित होता है,
आनन्द उल्लसित होता है, हो... ऽऽऽसम्यग्दर्शन होता है ॥ टेक ॥

दर्श-ज्ञान-सुख वीर्यस्वरूपी, गुण अनन्त के धारी हैं,
जग को मुक्ति मार्ग बताते, निज चैतन्य विहारी हैं,
मोक्षमार्ग के नेता देखे, विश्व तत्त्व के ज्ञाता देखे। हृदय ॥1 ॥

द्रव्यभावनोकर्म रहित, जो सिद्धालय के वासी हैं,
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर-अमर अविनाशी हैं।
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योगरहित निजयोगी देखे। हृदय ॥2 ॥

साधु संघ के अनुशासक जो, धर्मतीर्थ के नायक हैं,
निज-पर के हितकारी गुरुवर, देव धर्म परिचायक हैं।
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे। हृदय ॥3 ॥

जिनवाणी को हृदयंगम कर, शुद्धातम रस पीते हैं,
द्वादशांग के धारक मुनिवर, ज्ञानानन्द में जीते हैं,
द्रव्यभाव श्रुत धारी देखे, बीस-पाँच गुणधारी देखे। हृदय ॥4 ॥

निजस्वभाव साधनरत साधु, परम दिगम्बर वनवासी,
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय, निजपरिणति के अभिलाषी।
चलते-फिरते सिद्ध प्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे। हृदय ॥5 ॥

(6) अरिहंत जय जय...

अरिहंत जय जय बोले, सिद्ध प्रभु जय जय।
सर्व साधु जय जय, जिन धर्म जय जय॥

अरिहंत मङ्गल, सिद्ध प्रभु मङ्गल।
सर्व साधु मङ्गल, जिनधर्म मङ्गल॥1॥

अरिहंत उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम।
सर्व साधु उत्तम, जिनधर्म उत्तम॥2॥

अरिहंत शरणा, सिद्ध प्रभु शरणा।
सर्व साधु शरणा, जिनधर्म शरणा॥3॥

(7) ॐ आदिनाथाय नमः...

ॐ आदिनाथाय नमः ॐ आदिनाथाय नमः ॐ आदिनाथाय नमः
जप लो रे आदीश्वर नाम, मंगल होंगे सारे काम।टेक॥

प्रथम सूर्य हैं जैन धर्म के, बंधन तोड़े अष्टकर्म के,
वंदन कर लो सुबह और शाम।
जप लो रे आदीश्वर नाम, मंगल होंगे सारे काम॥1॥

महाभाग्य से नर तन पाया, प्यारे प्रभु को क्यूँ बिसराया,
सुमिरन कर ले सुबह और शाम।
जप लो रे आदीश्वर नाम, मंगल होंगे सारे काम॥2॥

(8) भावे भजो भावे...

भावे भजो भावे भजो जिनराया
चौबीस जिनवर पाया जी पाया...॥ टेक॥

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन,
सुमति पद्म सुपार्श्व पद वंदन;
आतम में अपनापन करके मिथ्यातम को दूर भगाया।
जिनवर भजूँ आतम लखूँ, जिनराया॥ चौबीस जिनवर...॥1॥

चन्द्र पहुप शीतल श्रेयांस, जिन,
वासुपूज्य अरहन्त महा जिन;
वीतराग परिणति प्रगटाकर निर्ग्रन्थों का पथ अपनाया।
समकित लहूँ चारित्र लहूँ , जिनराया॥ चौबीस जिनवर.. ॥2॥

विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वल,
शांन्ति कुन्थु अर मल्लि सुनिर्मल;
शुक्लध्यान की श्रेणी चढ़कर क्षण में केवलज्ञान उपाया।
आनन्द लहूँ, कैवल्य लहूँ , जिनराया॥ चौबीस जिनवर.. ॥3॥

मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु,
वर्धमान जिनराज महाविभु;
स्याद्वादमय दिव्यध्वनि से, जग को मुक्ति-मार्ग बताया।
ऐसा बनूँ तुम जैसा बनूँ , जिनराया॥ चौबीस जिनवर.. ॥4॥

(9) मैं महापुण्य उदय से.....

मैं महापुण्य उदय से जिनधर्म पा गया॥
जिनधर्म पा गया जिनमन्दिर आ गया॥टेक॥

चार घाति कर्म नाशे ऐसे अरहंत हैं।
अनन्त चतुष्टय धारी श्री भगवन्त हैं॥
मैं अरहंतदेव की शरण आ गया॥1॥

अष्टकर्म नाश किये ऐसे सिद्धदेव हैं।
अष्टगुण प्रगट जिनके हुए स्वयमेव है॥
मैं ऐसे सिद्धदेव की शरण आ गया॥2॥

वस्तु का स्वरूप बतावे वीतराग-वाणी है।
तीन लोक के जीव हेतु महाकल्याणी है॥
मैं जिनवाणी माँ की शरण आ गया॥3॥

परिग्रह रहित दिगम्बर मुनिराज हैं।
ज्ञान ध्यान सिवा नहीं दूजा कोई काज है॥
मैं श्री मुनिराज की शरण आ गया॥4॥

(10) जय अरिहन्ता ....

जय अरिहन्ता तुम्हीं महान, जय श्री सिद्धा तुम्हीं महान।
तुझ में हमें दिखाई देती, सहज सुखों की खान॥ टेक॥

तुम हो विगत सकल अभिलाषा, तुमने जन्म मरण है नाशा।
तुमसे दृष्टि मिलायें गर हम, निजपर का हो ज्ञान॥
जय अरिहन्ता............ ॥1॥

मोक्ष मार्ग का तू परिचालक, द्रव्य भाव मम है इस लायक।
निज अनुभव के आश्रय से हम, पावें पद निर्वाण॥
जय अरिहन्ता............ ॥2॥

ऋद्धि सिद्धियाँ सर्व हैं झुकती, सोई हुई चेतना जगती।
समता ज्ञान मिले जैसे ही, शिवरमणी से राम॥
जय अरिहन्ता............ ॥3॥

कोटि सूर्य सा ज्ञान तुम्हारा, लघु दीपक हे नाथ हमारा।
झिलमिल दीप शिखा दिखलाये, तुम हो दिव्य महान॥
जय अरिहन्ता............ ॥4॥

(11) मङ्गल अर्हन्त मङ्गल सिद्धा........

मङ्गल अर्हन्त मङ्गल सिद्धा,
मङ्गल साधु पद पा जाना;
मङ्गलमय जिनवाणी माता,
कैवल्य कला को पा जाना॥
मङ्गल अर्हन्त.... ॥ टेक॥

ये चारों मङ्गल उत्तम है,
मैं शरण इन्हीं की पा जाऊँ।
इनका ही मनन सुमिरन करके,
अपने शुद्धातम को ध्याऊँ।

अन्वेषण हो आराधन हो,
फिर नित्य निरंजन पा जाना।
मङ्गल अर्हन्त.... ॥1 ॥

ये पञ्चकल्याणक सुयोग मिला,
निर्वाण भूमि पर आ जाना।
मङ्गल सुयोग महान मिले,
जिनवाणी का अमृत पाना।
मेरा महंगा नरभव सफल बने,
ऐसा कुछ गुरूवर बतलाना।
मङ्गल अर्हन्त.... ॥2 ॥

(12) घड़ि-घड़ि पल-पल......

घड़ि-घड़ि पल-पल छिन-छिन निश-दिन,
प्रभुजी का सुमिरन कर ले रे॥ टेक॥

प्रभु सुमिरनतैं पाप कटत है, जनम मरन दुख हर ले रे॥ 1॥
मनवचकाय लगाय चरन चित, ज्ञान हिये बिच धर ले रे॥ 2॥
'दौलतराम' धर्म नौका चढ़ि, भवसागरतैं तिरले रे॥ 3॥

(13) आप्त आगम गुरूवर.....

आप्त आगम गुरूवर सौख्य दातार हैं,
ज्ञानदातार हैं, मुक्ति दातार हैं॥ टेक॥

वीतरागी छवि जिनकी, शांत मुद्रा सुपावन,
दिव्यध्वनि अमृतवर्षा, भविकजन को मन भावन,
श्री अरिहंत दर्शन, करना भव पार है
आप्त आगम .... ॥1 ॥

नित्य नव–नव सुखों का, सदा वेदन जो करते,
अष्ट गुणों से शोभित, अष्टम वसुधा में वसते,
तुम्हीं आदर्श मेरे, महिमा अपार है
आप्त आगम .... ॥2 ॥

निष्पृही अपरिग्रही जो, सिद्धों के लघुनंदन है,
मोक्षमार्गी यतियों को, मेरा शत्–शत् वंदन है,
आप जिनशासन, के मूल आधार हैं
आप्त आगम .... ॥3 ॥

आगम चक्षु से माता, निज की प्रभुता बताई,
सात तत्व छः द्रव्यों से, विश्व रचना समझाई,
सर्वज्ञ प्रभु सम माता, तेरा उपकार है
आप्त आगम .... ॥4 ॥

(14) तेरी पूजा ओ........

तेरी पूजा ओ मेरे ईश, निश दिन चरण में रहेगा ये शीश ॥ टेक ॥

वैराग्य मन में समाया हुआ
सरागी से तू दूर जाता हुआ।
दुनियाँ के मन्दिर में लाखों हैं देव
अनादि से स्वामी मैं भटका हुआ।
अब मैं भी जागा हूँ ओ मेरे ईश
निशदिन चरण में रहेगा ये शीश।
तेरी पूजा....... ॥1 ॥

पाऊँगा अब तेरे चरणों की धूल
जगाऊँगा आतम में समकित की धूम।
श्रद्धा ज्ञान और चारित्र में
निशदिन रहूँगा मैं लवलीन।
अब मैं भी जागा हूँ ओ मेरे ईश
निशदिन चरण में रहेगा ये शीश।
तेरी पूजा....... ॥2 ॥

(15) ॐ मङ्गलम् ....

ॐ मङ्गलम्	**-**	**ॐकार मङ्गलम्**
णमो मङ्गलम्	-	णमोकार मङ्गलम्
देव मङ्गलम्	-	जिनवाणी मङ्गलम्
वाणी मङ्गलम्	-	जिनगुरू मङ्गलम्
अरहंत मङ्गलम्	-	सिद्ध मङ्गलम्
साधु मङ्गलम्	-	सर्व साधु मङ्गलम्
कुन्द मङ्गलम्	-	कुन्दकुन्द मङ्गलम्
अमृत मङ्गलम्	-	अमृतचंद्र मङ्गलम्
समय मङ्गलम्	-	समयसार मङ्गलम्
नियम मङ्गलम्	-	नियमसार मङ्गलम्
आदि मङ्गलम्	-	महावीर मङ्गलम्
तीर्थ मङ्गलम्	-	तीर्थंकर मङ्गलम्
देव मङ्गलम्	-	देव-शास्त्र मङ्गलम्
गुरू मङ्गलम्	-	गुरूदेव मङ्गलम्

(16) देवों के देव श्री जिनदेव..

देवों के देव श्री जिनदेव! नाथों के नाथ श्री जिननाथ। टेक॥

महापुण्य से दर्शन पाया, भक्ति भाव उर में उमगाया।
स्वयमेव चरणों में झुकता है माथ। नाथों के नाथ श्री जिननाथ॥1॥

तुम ही जग में शरण सहारे, निरपेक्ष बांधव हो तुम ही हमारे।
अहो अहो तुम ही हो सांचे तात। नाथों के नाथ श्री जिननाथ॥2॥

तुम से विमुख रह बहुदुःख उठाये, आज विघन सब सहज नशाये।
दर्शन से स्वामी हुए हम सनाथ। नाथों के नाथ श्री जिननाथ॥3॥

तत्त्वों का स्पष्ट ज्ञान हुआ है, निज पर भेद-विज्ञान हुआ है।
अनुभव में आया है चैतन्यनाथ। नाथों के नाथ श्री जिननाथ॥4॥

जग से उदासी हुई सुखकारी, दूर हुए दुर्भाव विकारी।
मन में बसी है छवि मुनिनाथ। नाथों के नाथ श्री जिननाथ ॥5॥

वीतराग निर्दोष सर्वज्ञ तुम्हीं हो, तीर्थ प्रणेता हितैषी तुम्हीं हो।
समवशरण में न हो दिनरात। नाथों के नाथ श्री जिननाथ ॥6॥

चतुर्निकाय के इन्द्र नमत है चक्री नरेन्द्र मृगेन्द्र नमत है।
मुनीन्द्र गणीन्द्र नवावत है माथ। नाथों के नाथ श्री जिननाथ ॥7॥

रत्नत्रयमार्ग प्रभु ने दिखाया, मोक्षार्थी भव्यों को अन्तर में भाया।
हो ऐसा बल ध्यावें हम निजनाथ। नाथों के नाथ श्री जिननाथ ॥8॥

(17) णमोकार मन्त्र को..

णमोकार मन्त्र को प्रणाम हो, प्रणाम हो
ये अनादि महामन्त्र मंगल निष्काम हो...

पहला अरहन्त नाम, करता है कर्म नाश - 2,
जीवों को देता है, ज्ञान सूर्य का प्रकाश - 2,
जय हो अरहन्त देव तुम्हीं धर्म ध्यान हो - 2।
ये अनादि महामन्त्र मंगल निष्काम हो...

दूजा है सिद्ध नाम, जन्म मृत्यु से विहीन - 2,
अविनाशी वीतरागी, सदा स्वयं आत्मलीन - 2,
है अनन्त शुद्धतत्त्व, सृष्टि के ललाम हो - 2।
ये अनादि महामन्त्र मंगल निष्काम हो...

महाव्रती ज्ञानी आचार्य, नमस्कार हो - 2,
उपाध्याय ज्ञान ज्योति, जहाँ अन्धकार हो - 2,
विनयशील वीतराग साधु ज्ञानवान हो - 2।
ये अनादि महामन्त्र मंगल निष्काम हो...

सर्वसाध्य मुक्तिरूप, महामन्त्र ध्यान से - 2,
अन्तर बाहिर पवित्र, मन्त्र नमस्कार से - 2,
नमस्कार मन्त्र मुक्ति, सिद्धि के निधान हो - 2।
ये अनादि महामन्त्र मंगल निष्काम हो...

(18) म्हारा पंच प्रभु भगवान सुहावनो रे...

म्हारा पंच प्रभु भगवान सुहावनो रे... म्हारा पंच प्रभु
थारी वीतराग जिनमुद्रा मन भावनो रे... - 2
म्हारा पंचप्रभु भगवान सुहावनो रे... 2

म्हारा अरिहन्त प्रभुवर प्यारा, जग को मुक्ति मार्ग दिखलावें। - 2
प्रभु की सौम्य छवि मनभावन, हम को वस्तुस्वरूप दिखावें॥ - 2
प्रभु ने रत्नत्रय प्रगटायो.. सुखकारनों रे.. ॥1॥

सर्वकर्मों से विरहित शाश्वत सिद्ध परमपद पायो। - 2
अविनाशी अविचल सुखरूपी, भव्यों के आदर्श सदा हो॥ - 2
भोगें सुख अनन्तानंत आनन्दकारनों रे... ॥2॥

साधु संघ के अनुशासक आचारज विज्ञानी ध्यानी।
निर्मल आचारज के धारी जो मुनिवर पथ के अनुगामी॥
पंचाचार धारी मुनिवर.. हितकारनों रे.. ॥3॥

श्रुत आगम के बहु अभ्यासी, स्वयं पढ़े हैं और पढ़ावें।
ज्ञानादिक स्वभाव आराधक, ध्रुव ज्ञायक के गीत सुनावें॥
विषयों की न चाह जिनके मंगलकारनों रे... ॥4॥

मुनिवर सकलव्रती बड़भागी, भव भोगों से सदा विरागी।
चलते फिरते सिद्धों सम मुनि परिणति अनुभव में नित पागी॥
बहती उपशम रस की धारा... सुखकारनों रे... ॥5॥

देवभक्ति खण्ड

(1) वीतरागी देव तुम्हारे

वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ,
मार्ग बताया है जो जग को कह न सके कोई और यहाँ॥ टेक॥

हैं सब द्रव्य स्वतन्त्र जगत में कोई न किसी का काम करें,
अपने-अपने स्वचतुष्टय में सभी द्रव्य विश्राम करें।
अपनी-अपनी सहज गुफा में रहते पर से मौन यहाँ,
वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ॥1॥

भाव शुभाशुभ का भी कर्ता, बनता जो दीवाना है,
ज्ञायक भाव शुभाशुभ से भी भिन्न न उसने जाना है।
अपने से अनजान तुझे भगवान बताते देव यहाँ,
वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ॥2॥

पुण्य-पाप भी पर आश्रित है, उसमें धर्म नहीं होता,
ज्ञान भावमय निज परिणति से बन्धन कर्म नहीं होता।
निज आश्रय से ही मुक्ति है कहते श्री जिनदेव यहाँ,
वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ॥3॥

(2) हे प्रभो चरणों में तेरे....

हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये;
भावना अपनी का फल हम पा गये॥ टेक॥

वीतरागी हो तुम्ही सर्वज्ञ हो;
सप्त तत्त्वों के तुम्ही मर्मज्ञ हो।
मुक्ति का मारग तुम्ही से पा गये;
हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये॥1॥

विश्व सारा है झलकता ज्ञान में;
किन्तु प्रभुवर लीन हैं निज ध्यान में।
ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये;
हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये॥2॥

तुमने बताया जगत् के सब आत्मा;
द्रव्यदृष्टि से सदा परमात्मा।
आज निज परमात्म पद पा गये;
हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये॥3॥

(3) रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम......

रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हाँ! नाम तुम्हारा।
ऐसी भक्ति करूँ प्रभुजी, पाऊँ न जन्म दुबारा॥ टेक॥

जिनमन्दिर में आया, जिनवर दर्शन पाया।
अन्तर्मुख मुद्रा को देखा, आतम दर्शन पाया॥
जनम-जनम तक न भूलूंगा, यह उपकार तुम्हारा॥1॥

अरहंतों को जाना, आतम को पहिचाना।
द्रव्य और गुण-पर्यायों से, जिन सम निज को माना॥
भेदज्ञान ही महामन्त्र है, मोह तिमिर क्षयकारा॥2॥

पञ्च महाव्रत धारूँ समिति गुप्ति अपनाऊँ।
निर्ग्रन्थों के पथ पर चलकर, मोक्ष महल में आऊँ॥
पुण्य-पाप की बन्ध श्रृंखला, नष्ट करूं दुखकारा॥3॥

देव-शास्त्र-गुरु मेरे, हैं सच्चे हितकारी।
सहज शद्ध चैतन्यराज की महिमा, जग से न्यारी॥
भेदज्ञान बिन नहीं मिलेगा, भव का कभी किनारा॥4॥

(4) रोम-रोम पुलकित हो.............

रोम-रोम पुलकित हो जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय।
ज्ञानानन्द कलियाँ खिल जाँय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥
जिनमन्दिर में श्री जिनराज, तनमन्दिर में चेतनराज।
तन-चेतन को भिन्न-पिछान, जीवन सफल हुआ है आज॥ टेक॥

वीतराग सर्वज्ञ देव प्रभु, आये हम तेरे दरबार।
तेरे दर्शन से निज दर्शन, पाकर होवें भव से पार॥
मोह-महातम तुरत विलाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥1॥

दर्शन-ज्ञान अनन्त प्रभु का, बल अनन्त आनन्द अपार।
गुण अनन्त से शोभित है प्रभु, महिमा जग में अपरम्पार॥
शुद्धातम की महिमा आय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥2॥

लोकोलोक झलकते जिसमें, ऐसा प्रभु का केवलज्ञान।
लीन रहें निज शुद्धातम में, प्रतिक्षण हो आनन्द महान॥
ज्ञायक पर दृष्टि जम जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥3॥

प्रभु की अन्तर्मुख-मुद्रा लखि, परिणति में प्रगटे समभाव।
क्षणभर में हों प्राप्त विलय को, पर-आश्रित सम्पूर्ण विभाव॥
रत्नत्रय-निधियाँ प्रगटाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥4॥

(5) आज हम जिनराज......

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये,
हाँ जी हाँ! हम आये आये ॥ टेक ॥

देखे देव जगत के सारे, एक नहीं मन भाये।
पुण्य-उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये ॥1 ॥

जन्म-मरण नित करते, करते काल अनन्त गमाये।
अब तो स्वामी जन्म-मरण का, दुखड़ा सहा न जाये ॥2 ॥

भव-सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।
तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये ॥3 ॥

अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।
'पंकज' की प्रभु यही वीनती, चरण-शरण मिल जाये ॥4 ॥

(6) निरखी-निरखी मनहर मूरति........

निरखी-निरखी मनहर मूरति,
तोरी हो जिनन्दा।
खोई-खोई आतम निज निधि,
पाई हो जिनन्दा ॥ टेक ॥

मोह दु:ख का घर है मैने,
आज सरासर देखा है, - 2
आतम-धन के आगे झूठा,
जग का सारा लेखा है, - 2
मैं अपने में घुल-मिल जाऊँ,
तो पाऊँ जिनन्दा ॥1 ॥

तू भवनाशी मैं भववासी,
भवसागर से तिरना है, - 2
शुद्धस्वरूपी तुझ-सा-बनकर,
शिवरमणी को वरना है, - 2
मैं अपने में ही रम जाऊँ,
वर पाऊँ जिनन्दा ॥2 ॥

नादानी में अब लो लों मैंने,
पर को अपना माना है, - 2
काया की माया में भूला,
तुझको नहिं पहिचाना है, - 2
अब भूलों पर रोता ये मन
मोरा हो जिनंदा ॥3 ॥

(7) मेरे मन मन्दिर में आन.......

मेरे मन मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान ॥ टेक ॥

भगवन तुम आनन्द सरोवर रूप तुम्हारा महा-मनोहर।
निश-दिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान ॥1 ॥

सुर-किन्नर-गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते।
गाते सब तेरा यश-गान, पधारो महावीर भगवान ॥2 ॥

जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया।
तुम हो दया-निधि भगवान, पधारो महावीर भगवान ॥3 ॥

भक्तजनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें।
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान ॥4 ॥

आये हैं हम शरण तिहारी, भक्ति हो स्वीकार हमारी।
तुम हो करुणा दया निधान, पधारो महावीर भगवान ॥5॥

रोम-रोम में तेज तुम्हारा, भू-मण्डल तुमसे उजियारा।
रवि-शशि तुमसे ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान ॥6॥

(8) निरखो अङ्ग-अङ्ग जिनवर के........

निरखो अङ्ग-अङ्ग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार ॥ टेक ॥

चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार।
पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार।
यातैं पद्मासन विराजे, जिनवर झलके शांति अपार ॥1॥

हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का करता होय।
ऐसी मिथ्या बुद्धि से ही, भ्रमण-चतुर्गति होय।
यातैं पद्मासन विराजे, जिनवर झलके शांति अपार ॥2॥

लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार।
पर दुःखमय गति-चतुर में ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार।
यातैं नासादृष्टि विराजे, जिनवर झलके शांति अपार ॥3॥

अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरसाय।
जिन-दर्शन कर निज-दर्शन पा सत्गुरु वचन सुहाय।
यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे, जिनवर झलके शांति अपार ॥4॥

(9) चाह मुझे है दर्शन की.......

चाह मुझे है दर्शन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥ टेक ॥

वीतराग-छवि प्यारी है, जग जन को मनहारी है।
मूरत मेरे भगवन् की, वीर के चरण स्पर्शन की ॥1 ॥

कुछ भी नहिं श्रृंगार किये, हाथ नहीं हथियार लिये।
फौज भगाई कर्मन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥2 ॥

समता पाठ पढ़ाती है, ध्यान की याद दिलाती है।
नासादृष्टि लखो इनकी, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥3 ॥

हाथ पै हाथ धरे ऐसे, करना कुछ न रहा जैसे।
देख दशा पद्मासन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥4 ॥

जो शिव आनन्द चाहो तुम, इनसा ध्यान लगाओ तुम।
विपत हरै भव भटकन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥5 ॥

(10) मङ्गलमय जिनराज तुम्हारे......

मङ्गलमय जिनराज तुम्हारे, निश-दिन शरणे आये।
भक्ति-भाव की सरगम गाकर, चरणे शीश झुकाये ॥ टेक ॥

भाव-सुमन की सुर-सौरभ हो, गाती निश-दिन प्रभु गौरव को।
अमृत देती प्रभु-भक्तों को, भव सागर तिर जाये ॥1 ॥

भाव-किरण की ज्योति जलाई, भक्ति स्वरों में आरती गाई।
अखियाँ दर्शन को ललचाई, जन्म सफल कर जाये ॥2 ॥

नव लय नव संगीत सुनाये, शान्त-स्वरों में बीन बजाये।
नवरस भक्ति तान सुनाये, निश दिन प्रभु-गुण गाये ॥3 ॥

(11) दिन-रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ......

मैं दिन-रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ॥ टेक॥

तेरी शान्त-मूरत मुझे भा गई है।
मेरे नयनों में नजर आ गई है।
मैं अपने में अपने को कैसे समाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ॥1॥

मैं सारे जहाँ में कहीं सुख न पाया।
है गम का भरा गहरा दरिया है छाया।
ये जीवन की नैया मैं कैसे तिराऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ॥2॥

निगोद अवस्था से मानव गति तक।
तुझे लाख ढूंढा न पाया मैं अब तक।
कहाँ मेरी मन्जिल तुझे कैसे पाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ॥3॥

यही आस जिनवर-शरण पाऊँ तेरी,
मिट जाये मेरी ये भव-भव की फेरी।
शरण दो, तुम्हें नाथ शीश नवाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ॥4॥

(12) कोई इत आओ जी......

कोई इत आओ जी, वीतराग ध्याओ जी।
जिनगुण की आरती, संजोय लाओ जी॥ टेक॥

दया का हो दीपक, क्षमा की हो ज्योत।
तेल सत्य संयम में, ज्ञान का उद्योत।
मोह तम नशाओ जी, वीतराग ध्याओ जी॥1॥

संयम की आरती में समकित सुगंध।
दर्श ज्ञान चारित्र की हृदय में उमंग।
भेद-ज्ञान पाओजी, वीतराग ध्याओ जी ॥2 ॥

नर-तन को पाय कर, भूलियो मती।
बन जा दिगम्बर महाव्रत यती।
भावना ये भावो जी, वीतराग ध्याओ जी ॥3 ॥

जिनगुण की आरती में ध्यान की कला।
भव-भव के लागे सब कर्म लो गला।
भवभ्रमण मिटाओ जी, वीतराग ध्याओ जी ॥4 ॥

(13) तुम्हारे दर्श बिन स्वामी ......

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहिं चैन पड़ती है।
छवी वैराग्यमय तेरी, मेरी आखों में फिरती है॥ टेक॥

निराभूषण विगत दूषण परम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की आशा की अनी पर ये गुजरती है ॥1 ॥

नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणन में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है ॥2 ॥

मिले नर स्वर्ग की सम्पति अचम्भा कौन सा इसमें।
तुम्हें जो नयन भर देखे गति दुरगति की टलती है ॥3 ॥

हजारों मूर्तियाँ हमने बहुत सी अन्य मत देखीं।
शान्त मूरत तुम्हारी सी नहीं नजरों में चढ़ती है ॥4 ॥

जगत सिरताज हो जिनराज सेवक को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है ॥5 ॥

(14) तिहारे ध्यान की मूरत......

तिहारे ध्यान की मूरत अजब छवि को दिखाती है।
विषय की वासना तज कर निजातम लौ लगाती है॥ टेक॥

तेरे दर्शन से हे स्वामी, लखा है रूप मैं मेरा।
तजूँ कब राग तन-धन का ये सब मेरे विजाती हैं॥1॥

जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी।
किसी के हाथ आयुध है किसी को नार भाती है॥2॥

जगत के देव हठ ग्राही, कुनय के पक्षपाती है।
तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती है॥3॥

मुझे कुछ चाह नहीं जग की यही है चाह स्वामी जी।
जपूं तुम नाम की माला जो मेरे काम आती है॥4॥

तुम्हारी छवि निरख स्वामी निजातम लौ लगी मेरे।
यही लौ पार कर देगी जो भक्तों को सुहाती है॥5॥

(15) आये आये रे जिनन्दा ......

आये आये रे जिनन्दा, आये रे जिनन्दा तोरी शरण में आये।
कैसे पावें................हो कैसे पावें, तुम्हारे गुण गावें रे॥
मोह में मारे-मारे, भव-भव में गोते खाये।
तोरी शरण में आये, हो........आये आये रे जिनन्दा॥ टेक॥

जग झूठे से प्रीत लगाई, पाप किये मन माने।
सद्‌गुरु वाणी कभी न मानी, लागे भ्रम रोग सुहाने॥1॥

आज मूल की भूल मिटी है, तव दर्शन कर स्वामी।
तत्त्व चराचर लगे झलकने, घट-घट अन्तरयामी॥2॥

जन्म-मरण रहित पद पावन, तुम-सा नाथ सुहाया।
वो सौभाग्य मिले अब सत्वर, मोक्ष-महल मन भाया॥3॥

(16) आओ जिनमन्दिर में आओ......

आओ जिनमन्दिर में आओ, श्री जिनवर के दर्शन पाओ।
जिनशासन की महिमा गाओ,
आया आया रे अवसर आनन्द का॥ टेक॥

हे जिनवर तब शरण में, सेवक आयो आज।
शिवपुर-पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज॥
प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ चहुँगति दुख से शीघ्र छुड़ाओ।
दिव्यध्वनि अमृत बरसाओ, आया प्यासा मैं सेवक-आनन्द का॥1॥

जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय।
मोह-महातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय॥
शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ, निर्मल भेदज्ञान प्रगटाओ।
अब विषयों से चित्त हटाओ, पाओ पाओ रे मारग निर्वाण का॥2॥

चिदानन्द चैतन्यमय, शुद्धात्म को जान।
निज स्वरूप में लीन हो पाओ केवलज्ञान॥
नव केवललब्धि प्रगटाओ, फिर योगों को नष्ट कराओ।
अविनाशी सिद्धपद को पाओ, आया आया रे अवसर आनन्द का॥3॥

(17) दरबार तुम्हारा मनहर है......

दरबार तुम्हारा मनहर है, दरबार तुम्हारा मनहर है-2
प्रभु दर्शन कर हर्षाये दरबार तुम्हारे आए हैं॥ टेक॥

भक्ति करेंगे चित से तुम्हारी, तृप्ति भी होगी चाह हमारी।
भाव रहे नित उत्तम ऐसे, घट के पट में लाये हैं॥
दरबार तुम्हारे आए हैं॥1॥

जिसने चिंतन किया तुम्हारा, मिला उसे संतोष सहारा।
शरणे जो भी आये हैं, निज आतम को लख पाये हैं॥
दरबार तुम्हारे आए हैं॥2॥

विनय यही है प्रभु हमारी, आतम की महके फुलवारी।
अनुगामी हो तुम पद पावन 'वृद्धि' चरण सिर नाये हैं॥
दरबार तुम्हारे आए हैं॥3॥

(18) प्रभु हम सब का एक......

प्रभु हम सब का एक, तू ही है तारण हारा रे।
तुम को भूला, फिरा वही नर मारा-मारा रे॥ टेक॥

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, आज तुम्हारा दर्शन पाया।
फूला मन यह हुआ सफल मेरा जीवन सारा रे॥1॥

भक्ति में जब चित्त लगाया, चेतन में तब चित ललचाया।
वीतरागी देव करो अब भव से पारा रे॥2॥

जीवन में मैं नाथ को पाऊँ, वीतरागी भाव बढ़ाऊँ।
भक्ति भाव से प्रभु चरणों में जाऊँ-जाऊँ रे॥3॥

अब तो मेरी ओर निहारो, भव समुद्र से नाव उबारो॥
'पंकज' का लो हाथ पकड़ मैं पाऊँ किनारा रे॥4॥

(19) थांकी उत्तम क्षमा पै......

थांकी उत्तम क्षमा पै जी अचम्भो म्हानें आवे,
किस विधि कीने करम चकचूर॥ टेक॥

एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, पास न तिल-तुष मात्र हुजूर।
दूजे जीव दया के सागर, तीजे सन्तोषी भरपूर॥1॥

चौथे प्रभु तुम हित उपदेशी, तारण तरण जगत मशहूर।
कोमल वचन सरल सत्वक्ता, निर्लोभी संयम तप सूर ॥2॥

कैसे ज्ञानावरणी नास्यौ, कैसे कर्यो अदर्शन चूर।
कैसे मोह-मल्ल तुम जीत्यो, कैसे किये घातिया दूर ॥3॥

कैसे केवलज्ञान उपायो, अन्तराय कैसे निरमूल।
सुरनर मुनि सेवें चरण तुम्हारे, तो भी नहीं प्रभु तुमको गरूर ॥4॥

करत आश अरदास 'नैनसुख', दीजे यह मोहे दान जरूर।
जनम-जनम पद पंकज सेवूँ, और न चित कछु चाह हुजूर ॥5॥

(20) नाथ तुम्हारी भक्ति में सब......

नाथ तुम्हारी भक्ति में सब, स्वाहा करने आया।
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया ॥टेक॥

पंचेन्द्रिय का लक्ष्य करूँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा।
इन्द्र नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा।
तेरी साक्षी से अनुपम मैं यज्ञ रचाने आया ॥1॥

जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा।
नहीं मूल्य इस मन्द भाव का, व्रत तप आदि स्वाहा।
वीतराग के पथ पर चलने का प्रण लेकर आया ॥2॥

अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा।।
पर लक्षी सब ही वृत्ति को, करना मुझको स्वाहा।
अक्षय निरंकुश पद पाने और पुण्य लुटाने आया ॥3॥

(21) नेमि जिनेश्वर...

नेमि जिनेश्वर... नेमि जिनेश्वर तेरी जय जयकार करें हम सारे... ॥ टेक॥

भव भयहारी मम हितकारी, तुम हो ज्ञाता-तुम हो दृष्टा;
प्राणी मात्र के प्रभु आपने सारे कष्ट निवारे... ॥1॥

विघ्न विनाशक स्वपरप्रकाशक, तुम्ही महंता तुम भगवंता;
तीन जगत् के सारे ज्ञेयाकार निहारे... ॥2 ॥

ध्येय प्रकाशक हेय विनाशा, उपादेय निज तुम दर्शाया;
इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र तुम्हारी आरती उतारें... ॥3 ॥

(22) तुम्हारी मूरत पे हमने देखा......

तुम्हारी मूरत पे हमने देखा, गजब की समता झलक रही है।
तुम्हारे अन्तर की रश्मियों से, अनन्त सृष्टि झलक रही है॥ टेक॥

हजारों भानुओं की प्रभा भी, शर्म से मस्तक झुका रही है।
तुम्हें विलोकन को इन्द्र तरसे, नव निधियाँ छटपटा रही हैं॥1 ॥

अनन्त गरिमा है उनकी हमको, मिले नहीं जग में कोई ऐसा।
पुण्य पाप का ना होवे कीचड़, दिव्य ध्वनि अब बरस रही है॥2 ॥

लाख चौरासी में आना जाना, नहीं मिली एक समय की फुरसत।
अजर अमर पद पायेंगे हम सब, गजब दामिनी दमक रही है॥3 ॥

(23) प्रभु शांति छवि तेरी अंतर......

प्रभु शांति छवि तेरी अंतर में है समाई।
प्रत्यक्ष देख मूरत, शांति हृदय में छाई॥ टेक॥

शुभ ज्ञान ज्योति जागी आतम स्वरूप जाना
प्रत्यक्ष आज देखा चैतन्य का खजाना
जो दृष्टि पर में भ्रमती वह लौट निज में आई।प्रत्यक्ष.. ॥1 ॥

अक्षय निधि को पाने, चरणों में प्रभु के आया
पर प्रभु ने मूक रहकर, मुझको भी प्रभु बताया
अंतर में प्रभुता मेरे निश्चय प्रतीति आई।प्रत्यक्ष.. ॥2 ॥

हे देव आपको लख खुदही हुआ अकामी
है आश पर की झूठी मैं पूर्ण निधि का स्वामी
पर्याय हीनता से मुझमें कमी न आई ॥प्रत्यक्ष.. ॥3 ॥

मम भाव अभाव शक्ति पामरता मेट देगी
अभाव भाव शक्ति, प्रभुता विकास देगी
निश्चिन्त होय दृष्टि निज द्रव्य में रमाई ॥प्रत्यक्ष.. ॥4 ॥

सर्वोत्कृष्ट निज प्रभु, तजकर कहीं न जाऊँ
जिन, बहुत धक्के खाये, विश्राम निज में पाऊँ
हो नमन कोटिश: प्रभु शिव सुख डगर बताई ॥प्रत्यक्ष.. ॥5 ॥

(24) मनहर तेरी मूरतियाँ.....

मनहर तेरी मूरतियाँ, मस्त हुआ मन मेरा।
तेरा दर्श पाया-पाया, तेरा दर्श पाया॥ टेक॥

प्यारा प्यारा सिंहासन अति भा रहा, भा रहा।
उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा, छा रहा॥
पदमासन अति सोहे रे, नयना उमगे हैं मेरे।
चित्त ललचाया पाया, तेरा दर्श पाया॥१॥

तव भक्ति से भव के दुख मिट जाते हैं, जाते हैं।
पापी तक भी भव सागर तिर जाते हैं, जाते हैं॥
शिव पद वही पाये रे, शरणाऽगत में तेरी॥
जो जीव आया, पाया, तेरा दर्श पाया॥२॥

सांच कहूं कोई निधि मुझको मिल गई मिल गई।
जिसको पाकर मन की कलियाँ खिल गई, खिल गई॥
आशा पूरी होगी रे, आशा लगा के वृद्धि,
तेरे द्वार आया, पाया, तेरा दर्श पाया.॥३॥

(25) जिनराज तेरी महिमा....

जिनराज तेरी महिमा, मुख से न कही जाए।
तेरी छवि नयनों में, चेतन छवि दरशाए।।टेक।।

रागादि से है न्यारा, पर्यायों से है पारा।
सदा पूज्य आत्मदेवा, तीनों लोकों में है न्यारा।।
ज्ञानानंद का है धारी, यह दिव्य ध्वनि में आए।
जिनराज..... ।।1।।

है अगम अगोचर ज्ञायक, निज का महानायक।
ज्ञानानंद का है दरिया, सुख मय चिन्मय ज्ञायक।।
उपदेश तेरा पावन, हर पल यही दरशाए।।
जिनराज..... ।।2।।

ज्ञानमय ज्ञायक प्रभुवर, तू अखंड निजातम है।
अनंत शक्ति का भंडारा, तू अचल परमातम है।।
हर जीव है परमातम, जिनवाणी ये बतलाये।
जिनराज..... ।।3।।

(26) प्रभु विनति लेकर आये हैं....

प्रभु विनति लेकर आये हैं, भगवान तुम्हारे चरणों में।
मेरे भक्ति भाव को मिल जाए, स्थान तुम्हारे चरणों में।।टेक।।

धन यौवन पर अभिमान न हो, मिथ्यात्व से पूरितज्ञान न हो,
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर्यों का, भूले से भी अपमान न हो।
मैं बनके रहूँ इक धर्ममयी, संतान तुम्हारे चरणों में।।1।।

व्रत नियम अटल संकल्प अटल, किसी स्थिति में चारित्र छूटे न,
तेरे चरणों में गज मुक्ता, रत्नों को अर्पण कर दूँ में हाँ।
यदि कुछ न बने तो मैं रख दूँ, निज प्राण तुम्हारे चरणों।।2।।

(27) तेरी वाणी को अंतर....

तेरी वाणी अंतर में स्वीकार करते हैं।
ओ प्रभु हम तो सिर्फ तेरा ध्यान धरते हैं।।टेक।।

जो स्वरूप तेरा वो ही मेरा है।
आठ कर्मों ने आके घेरा है-2।।
तेरे दर्शन से अंतर का भान करते हैं ऽऽऽ
ओ प्रभु............ ।।1।।

तेरी मुद्रा हमें सिखाती है।
वीतरागता से शांति आती है-2।।
आनंदामृत हूँ मैं ये ध्यान धरते हैं ऽऽऽ
ओ प्रभु............ ।।2।।

हर घड़ी हमको दर्श तेरा मिले।
स्वानुभव रत्नत्रय कलियाँ खिलें-2।।
तेरे चरणों में भक्ति से गान करते हैं ऽऽऽ
ओ प्रभु............ ।।3।।

(28) कैसी सुन्दर जिन प्रतिमा...

कैसी सुन्दर जिनप्रतिमा है, कैसा सुन्दर है जिनरूप।
जिसे देखते सहज दीखता, सबसे सुन्दर आत्मस्वरूप।। टेक।।

नग्न दिगम्बर नहीं आडम्बर, स्वाभाविक है शान्तस्वरूप।
नहीं आयुध नहीं वस्त्राभूषण, नहीं संग नारी दुखरूप।।1।।

बिन श्रृंगार सहज ही सोहे, त्रिभुवन मांही अतिशयरूप।
कायोत्सर्ग दशा अविकारी, नासादृष्टि आनन्दरूप।।2।।

अर्हत् प्रभु की याद दिलाती, दर्शाती अपना प्रभुरूप।
बिन बोले ही प्रगट कर रही, मुक्तिमार्ग अक्षय सुखरूप।।3।।

जिसे देखते सहज नशावें, भव-भव के दुष्कर्म विरूप।
भावों में निर्मलता आवे, मानों हुए स्वयं जिनरूप ॥4 ॥

महाभाग्य से दर्शन पाया, पाया भेदविज्ञान अनूप।
चरणों में हम शीश नवावें, परिणति होवे साम्यस्वरूप ॥5 ॥

(29) नाथ तुम्हारे दर्शन से...

नाथ तुम्हारे दर्शन से, निज दर्शन मैंने पाया।
तुम जैसी प्रभुता निज में लख, चित मेरा हर्षाया ॥ टेक ॥

तुम बिन जाने निज से च्युत हो, भव-भव में भटका हूँ
निज का वैभव निज में शाश्वत, अब मैं समझ सका हूँ
निज प्रभुता में मगन होऊँ, मैं भोगूँ निज में माया ॥1 ॥

पर्याय में पामरता, तब भी द्रव्य सुखमयी राजे।
लक्ष्य तजूँ पर्यायों का, निजभाव लखू सुख काजे ॥
पर्यायों में अटक-भटक कर, मैं बहु दु:ख उठाया ॥2 ॥

पद्मासनथिर मुद्रा, स्थिरता का यह पाठ पढ़ाती।
निज भाव लखे से सुख होता, नासादृष्टि सिखलाती।
कर पर में कर्तृत्व रहित, सुखमय शिवपंथ सुझाया ॥3 ॥

यही भावना अब तो भगवन, निज में ही रम जाऊँ।
आधि-व्याधि उपाधि रहित, मैं परम समाधि पाऊँ॥
ज्ञानानंदमय ध्रुवस्वभाव ही, अब मेरे मन में भाया ॥4 ॥

(30) नाम तुम्हारा तारण हारा...

नाम तुम्हारा तारण हारा, कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा ॥ टेक ॥
सब नर मुनि तेरे चरणों में, निश दिन ध्यान लगाते हैं।
जो भी आता तेरे दर पर पे, मन वांछित फल पाता है।

धन्य यही समझूँगा उस दिन, जिस दिन यह शरणा होगी।
तेरी प्रतिमा...... ॥1 ॥

दीन दयालू दया के सागर, जग में नाम तुम्हारा है।
जो भी आया दर पे तेरे, उसको पार लगाया है।
नाव से पार उतरने को बस, भावों का सरगम होगा।
तेरी प्रतिमा........... ॥2 ॥

(31) स्वर्ग से सुन्दर अनुपम

स्वर्ग से सुन्दर अनुपम है, ये जिनवर का दरबार।
श्रद्धा से जो ध्यावे निश्चित होता भव पार॥
यही श्रद्धान हमारा, नमन हो तुम्हें हमारा।टेक॥

कभी न टूटे श्रद्धा तुम पर भगवान हमारी।
झुक जायेगी जीवन में प्रतिकूलता सारी॥
है विश्वास हमारा इक दिन छूटेगा संसार।
यही श्रद्धान......... ॥1 ॥

निर्वांछक है भगवन, ये आराधना हमारी।
होवे दशा हमारी बस जैसी हुई तुम्हारी॥
रत्नत्रय का मार्ग चलें और पायें मुक्तिद्वार।
यही श्रद्धान......... ॥2 ॥

स्याद्वाद वाणी ही, भ्रम का अज्ञान मिटाये।
निज गुण पर्यायें ही, अपना परिवार बताये॥
न भूलेंगे मुनिराज का यह अनंत उपकार।
यही श्रद्धान......... ॥3 ॥

लोकालोक झलकते, कैवल्य ज्ञान है पाया।
फिर शुद्धात्मा ही बस उपादेय बतलाया॥
मानो आज मिला मुझको यह द्वादशांग का सार।
यही श्रद्धान......... ॥4 ॥

(32) भवि देखि छवि भगवान की...........

भवि देखि छवि भगवान की।
सुन्दर सहज सोम आनन्दमय, दाता परम कल्यान की, ॥ टेक ॥

नासादृष्टि मुदित मुखवारिज, सीमा सब उपमान की।
अंग अडोल अचल आसन दिढ़, वही दशा निज ध्यान की ॥1 ॥भवि. ॥

इस जोगासन जोगरीतिसौं, सिद्धि भई शिवथान की।
ऐसे प्रगट दिखावै मारग, मुद्रा धात पखान की ॥2 ॥भवि. ॥

जिस देखें देखन अभिलाषा, रहत न रंचक आनकी।
तृपत होत 'भूधर' जो अब ये, अंजुलि अम्रतपान की ॥3 ॥भवि. ॥

(33) जपि माला जिनवर नाम की.....

जपि माला जिनवर नाम की।
भजन सुधारससों नहिं धोई, सो रसना किस काम की ॥ टेक ॥

सुमरन सार और सब मिथ्या, पटतर धूंवा नाम की।
विषम कमान समान विषय सुख, काय कोथली चाम की ॥1 ॥ जपि. ॥

जैसे चित्र-नाग क मांथै, थिर मूरति चित्राम की।
चित आरूढ़ करो प्रभु ऐसे, खोय गुंडी परिनाम की ॥2 ॥ जपि. ॥

कर्म बैरि अहनिशि छल जोवैं, सुधि न परत पल जाम की।
'भूधर' कैसे बनत विसारैं, रटना पूरन राम की ॥3 ॥जपि. ॥

(34) परम गुरु बरसत.....

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी।
हरषि हरषि बहु गरजि गरजि के मिथ्या तपन हरी ॥ टेक ॥

सरधा भूमि सुहावनि लागे संशय बेल हरी।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े समुझि पवन सियरी ॥1 ॥

स्याद्वाद नय बिजली चमके परमत शिखर परी।
चातक मोर साधु श्रावक के हृदय सुभक्ति भरी ॥2 ॥

जप-तप परमानन्द बढ्यो है, सुखमय नींव धरी।
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ॥3 ॥

(35) कर लो जिनवर का गुणगान.....

कर लो जिनवर का गुणगान, आई सुखद घड़ी।
आई सफल घड़ी, देखो मङ्गल घड़ी॥ करलो..........।टेक॥

वीतराग का दर्शन-पूजन भव-भव को सुखकारी।
जिन प्रतिमा की प्यारी छवि लख मैं जाऊँ बलिहारी ॥1 ॥

तीर्थङ्कर सर्वज्ञ हितंकर महामोक्ष के दाता।
जो भी शरण आपकी आता तुम सम ही बन जाता ॥2 ॥

प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परिणाम नाश हो जाते।
धर्मध्यान में मन लगता है शुक्ल ध्यान भी पाते ॥3 ॥

सम्यग्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता।
रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता ॥4 ॥

निज स्वरूप का दर्शन होता निज की महिमा आती।
निज स्वभाव साधन के द्वारा सिद्ध स्वगति मिल जाती ॥5 ॥

(36) श्री अरहंत छवि......

श्री अरहंत छवि लखि हिरदै, आनन्द अनुपम छाया है।टेक॥

वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है।
दृष्टि नासिका अग्रधार मनु, ध्यान महान बढ़ाया है ॥1 ॥

रूप सुधाकर अंजुलि भर भर, पीवत अति सुख पाया है।
तारन-तरन जगत् हितकारी, विरद सची पति गाया है॥2॥

तुम मुख-चन्द्र नयन के मारग, हिरदै मांहि समाया है।
भ्रमतम दु:ख आताप नस्यो सब, सुख सागर बढ़ि आया है॥3॥

प्रगटी उर सन्तोष चन्द्रिका निज स्वरूप दर्शाया है।
धन्य-धन्य तुम छवि जिनेश्वर, देखत ही सुख पाया है।॥4॥

(37) हे जिन तेरो सुजस उजागर

हे जिन तेरो सुजस उजागर, गावत है मुनिजन ज्ञानी।टेक॥

दुर्जय मोह महाभट जाने, निजवश कीने जगप्रानी।
सो तुम ध्यानकृपान पानिगहि, तत्छिन ताकी थिति भानी॥1॥

सुप्त अनादि अविद्या निद्रा, जिन जन निजसुधि विसरानी।
ह्वै सचेत तिन निजनिधि पाई, श्रवन सुनी जब तुम वानी॥2॥

मंगलमय तू जग में उत्तम, तू ही शरन शिवमग दानी।
तुव पद सेवा परम औषधि, जन्मजरामृतगदहानी॥3॥

तुमरे पंच कल्यानकमाही, त्रिभुवन मोददशा ठानी।
विष्णु विदम्बर, जिष्णु, दिगम्बर, बुध, शिव कह ध्यावत ध्यानी॥4॥

सर्व दर्वगुनपरजयपरनति, तुम सुबोध में नहिं छानी।
तातैं 'दौल' दास उर आशा, प्रगट करो निजरससानी॥5॥

(38) ऐसा दो वरदान जिनेश्वर....

ऐसा दो वरदान जिनेश्वर, तुम सम ही बन जाऊँ मैं।
निर्मल परिणति होवे मेरी, मोक्ष महापद पाऊँ मैं।टेक॥

नर तन पाकर मेरे जिनवर, निज को न पहिचान सका,
क्यों आया हूँ कहाँ है जाना, ये भी न मैं जान सका।

शरण लगा लो मुझको भगवन्, दर्श तेरा कर पाऊँ मैं॥
ऐसा दो.................. ॥1॥

जय जिनेश्वर जय जिनेश प्रभु, जय जिनेन्द्र जयवन्त हो,
जय जिनवाणी जय जिनशासन, उसका भी न अन्त हो।
न आऊँ मैं इस धरती पर, तुम पर बलि बलि जाऊँ मैं।॥
ऐसा दो.................. ॥2॥

पाप-पुण्य में उलझा जीवन, मैं बालक नादान हूँ,
नहीं आराधना पूजा चाहूँ, मैं अवगुण की खान हूँ।
ऐसा ज्ञानी बना दो भगवन्, सिद्धों से मिल जाऊँ मैं॥
ऐसा दो.................. ॥3॥

(39) तेरा ध्यान जब से किया है....

तेरा ध्यान जब से किया है, बदला मेरा जीवन भगवन्।
धन्य घड़ी धन्य वो पल है, धन्य है ऐसा मेरा जन्म।।टेक॥

वीतराग का दर्शन पूजन करने,
भव-भव के बंधन सब यूँ ही कटते हैं।
जिन प्रतिमा की प्यारी मूरत लखने से,
परिणामों में निर्मल भाव प्रगटते हैं॥
जो भी शरण तेरी है आया, पार होता वही भगवन्॥1॥

तीर्थंकर सर्वज्ञ हितंकर होते हैं,
राग भाव के वो ही विजेता होते हैं।
दर्शन ज्ञान अनंत प्रभु के होते हैं,
बल अनंत आनंद भी जिनमें होते हैं॥
ऐसी परम मुद्रा को देखो, ध्यान में बैठे पद्मासन॥2॥

पंच कल्याणक उत्सव जब भी मनाते हैं;
सारी नगरी दुल्हन-सी हम सजाते हैं॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान कल्याणक मनाते हैं,
और प्रभु का मोक्ष-कल्याणक मनाते हैं॥
ऐसी परम प्रतिमा को देखो, जो भी बन जाती है भगवन्॥3॥

(40) सुर से सुनाऊँ.....

सुर से सुनाऊँ, सरगम से सुनाऊँ, नई धुन से सुनाऊँ महिमा।
महिमा अरहंत नाम की, महिमा सिद्ध नाम की॥टेक॥

आदि जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है।
ऐसे आदिप्रभु को, बारंबार प्रणाम है॥1॥

वासु जिनका नाम है, चम्पापुर जिनका धाम है।
ऐसे वासुपूज्य को, बारंबार प्रणाम है॥2॥

नेमि जिनका नाम है, गिरनार जिनका धाम है।
ऐसे नेमिनाथ को, बारंबार प्रणाम है॥3॥

वीर जिनका नाम है, पावापुर जिनका धाम है।
ऐसे वीर प्रभु को, बारंबार प्रणाम है॥4॥

(41) आयो आयो रे हमारो ......

आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग कि हम आए पूजन को।
पूजन को प्रभु दर्शन को, पावन प्रभु-पद पर्शन को ॥टेक॥

जिनवर की अन्तर्मुख मुद्रा आतम दर्श कराती।
मोह महामल प्रक्षालन कर शुद्ध स्वरूप दिखाती॥1॥

भव्य अकृत्रिम चैत्यालय की जग में शोभा भारी।
मङ्गल ध्वज ले सुरपति आए शोभा जिसकी न्यारी॥2॥

अनेकान्तमय वस्तु समझ जिन शासन ध्वज लहरावें।
स्याद्वाद शैली से प्रभुवर मुक्ति मार्ग समझावें॥3॥

(42) अहो भगवंत का दर्शन......

अहो भगवंत का दर्शन परम आनंद दाता है
द्रव्य दृष्टि से जो देखे प्रभु निज में ही पाता है ।।टेक ।।

देखकर स्वयं की प्रभुता, अक्षय चैतन्यमय वैभव,
सहज ही तृप्ति होती है मोह मिथ्या पलाता है ।।1 ।।

परम ध्रुवरूप के सन्मुख परिणति स्वांग सम दीखे,
सर्व परभावों से न्यारा, एक ज्ञायक दिखाता है ।।2 ।।

सहज आत्मानुभव होवे मुक्ति मारग प्रकट होता,
विशुद्धि त्यौं-त्यौं बढ़ती है, ज्यौं-ज्यौं ज्ञायक में रमता है ।।3 ।।

दशा निर्ग्रंथ होती है चौकड़ी तीन जहाँ नाशे,
स्वाभाविक ज्ञान आनन्दमय साधु जीवन सुहाता है ।।4 ।।

महा आनन्दमय चैतन्य में रमते-चढ़े श्रेणी,
वैभाविक कर्म सब विनशे स्वयं ही प्रभु कहाता है ।।5 ।।

(43) कितना प्यारा....

कितना प्यारा तेरा ये द्वारा, यही गुजारूँ जीवन सारा।
तेरे दरश की लगन से, हमें आना पड़ेगा इस दर पर दुबारा- 2 ।। टेक ।।

शान्त छवि मूरत तेरी महिमा अपरम्पार,
मैं अज्ञानी क्या गा सकूँ गाता है संसार।
भव-भव के बंधन कट जायें पापी भी यदि ध्यान लगायें ।।
अंजन को भी तारा.... ।।1 ।।

भूतकाल प्रभु आपका वह मेरा वर्तमान,
वर्तमान जो आपका वह भविष्य मम जान।
नित प्रतिदिन हम मन्दिर आयें, मोक्षमार्ग में हम लग जाएँ ।।
भव्यों को भी तारा... ।।2 ।।

तुमको पूजें सुरपति, अहपति, नरपति देव,
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।
प्रभु चरणों में ध्यान लगावें, आतमरंग में ही रंग जावें॥
फिर तन मिले न दुवारा.... ॥3॥

(44) है यही भावना....

है यही भावना हे स्वामिन, तुम सम ही अन्तर्दृष्टि हो।
है यही कामना है प्रभुवर, तुम सम ही अन्तर्वृत्ति हो॥ टेक॥

तुमको पाकर सन्तुष्ट हुआ, निजशाश्वत पद का भान हुआ।
परतों पर ही है देह स्वांग, तुमको लख भेदविज्ञान हुआ।
मैं ज्ञानानन्द स्वरूप सहज, ज्ञानानन्दमय मम सृष्टि हो॥1॥

तुम निर्मोही रागादि रहित, निष्काम परम निर्दोष प्रभो।
निष्कर्म, निरामय, निष्कलंक, निर्ग्रन्थ सहज अक्षोभ अहो।
मेरा भी ऐसा हो स्वरूप, अनुभूति धर्ममय वृष्टि हो॥2॥

इन्द्रादिक चरणों में नत हो, पर आप परम निरपेक्ष रहो।
अक्षय वैभव अद्भुत प्रभुता, लखते ही चित आनन्दमय हो।
हे परम पुरुष आदर्श रहो, उर में निष्काम सु-भक्ति हो॥3॥

संसार प्रपंच महा-दुःखमय, मेरा मन अति ही घबराया।
होकर निराश सबसे प्रभुवर, मैं चरण-शरण में हूँ आया॥
मम परिणति में भी स्वाश्रय से, रागादिक की निवृत्ति हो॥4॥

जगख्याति-लाभ की चाह नहीं, हो प्रगट आत्मख्याति जिनवर।
उपसर्गों की परवाह नहीं, आराधना हो सुखमय प्रभुवर।
सब कर्म कलंक सहज विनशें, विभु निजानन्द में तृप्ति हो॥5॥

(45) जय जय जय जिनवर हो....

जय जय जय जिनवर हो ऽऽऽ जय जय जिनवर।
अंतर्दृष्टि तुम सम होवे, दो मुझको वह वर।।टेक।।

विशद् स्वच्छ द्युति आप जिनेश्वर, राग द्वेषमय मल से हीन।
निर्मल दर्पण तुल्य स्वभावी, सुख दुख समरस निज आधीन।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, त्रिभुवन स्वामी प्रवर।।1।।

हे जिनेन्द्र तुम समदृष्टि धर, योगी जन निज को ध्याते।
तुम प्रभाव से तज विभाव वे, तेरे ही सम हो जाते।।
मोह अंधेरा हरने वाले, अविनाशी दिनकर।।2।।

केवल एक आपने प्रभुवर, मार्ग मुक्ति का दिखलाया।
औरों ने तो चारों गति में, सदा भटकना सिखलाया।।
अशरण लागा सारा जग अब, आया तेरे दर।।3।।

(46) वीर जिनेश्वर अब तो मुझको....

वीर जिनेश्वर अब तो मुझको, मुक्ति मार्ग बतलाओ।
निज को भूल बहुत दुःख पाये, अब मत देर लगाओ।।
जाना नहीं आपको मैंने पंच पाप में लीन हुआ,
आतम हित में रहा आलसी, विषयन माँहि प्रवीण हुआ,
छूटै विषय कषाय प्रभो, ऐसा पुरुषार्थ जगाओ।।
निज को भूल बहुत....... ।।1।।

पर में इष्ट अनिष्ट ठानकर, हर्ष-विषाद सुमाना।
पर निरपेक्ष सहज आनंदमय, ज्ञायक तत्त्व न जाना।
महिमावंत परम ज्ञायक प्रभु, अब मुझको दरशाओ।।
निज को भूल बहुत....... ।।2।।

आस्रव बंध है दु:ख के कारण, संवर निर्जरा सुख के।
चतुर्गति दु:ख रूप अवस्था, सुख मुक्ति में प्रगटे।
अब तो स्वामी शिव पथ में मुझको भी शीघ्र लगाओ॥
निज को भूल बहुत....... ॥3॥

ऐसी स्तुति करते करते, इक दिन मन में आई।
कैसे अंतस्तत्व आत्मन्, बाहर देय दिखाई।
प्रभो आपकी मुद्रा कहती अंतर्दृष्टि लगाओ॥
निज को भूल बहुत....... ॥4॥

मुक्ति की सच्ची युक्ति पा अपनी ओर निहारा।
प्रभु सी प्रभुता निज में लखकर आनंद हुआ अपारा।
जागी यही भावना आत्मन्, निज में ही रम जाओ॥
निज को भूल बहुत....... ॥5॥

(47) देखने आया चेहरा....

देखने आया चेहरा आपका, अंतर का वो निधान दिखे।
जब-जब देखूँ भगवन तुमको, मुझे मेरा भगवन दिखे।टेक॥

तुम तो हुए उस पार प्रभुजी, मैं जग में क्यों भटक रहा।
पास तुम्हारे अब आने को, धीरे धीरे बढ़ रहा॥
संग तुम्हारे आ बैठूँ मैं, ऐसा मेरा पुरुषार्थ जगे॥
जब-जब देखूँ भगवन..... ॥1॥

जिस ध्रुवता से आप बने हो, वैसी अपनी जान गया।
स्व से मैं कुछ अलग नहीं हूँ, ऐसा अब पहिचान गया॥
जिसमें तीनों लोक झलकते, ऐसा केवल ज्ञान मिले॥
जब-जब देखूँ भगवन..... ॥2॥

द्वार तुम्हारे आ जाए तो, कर्म प्रवृत्ति गल जाती है।
अशुभ भाव की बात दूर है, शुभ प्रवृत्ति भी नश जाती है॥
शुद्धि के भी अवसर आते, हम सब उसकी राह चले॥
जब-जब देखूँ भगवन..... ॥3॥

(48) श्री जिन मेरा सदा है...

श्री जिन मेरा सदा है तुमको नमन।
तुम्हें देख आज खुला ये ज्ञान गगन॥

अरहंतों को वंदन मेरा
सिद्ध प्रभु आदर्श बनना।
जैनधर्म की अद्‌भुत वाणी।
जिनवाणी को उर में बसाना
करुणा की छाँव में हमें रहना
श्री देव शास्त्र गुरु ही है शरणा
श्री जिन............. ॥1॥

आचार्य आचार सिखाते
उपाध्याय उपदेश सुनाते
उन के पथ को वंदन मेरा
भूल न हो यह आशा करता
सर्व साधुओं की राह पर चलना
श्री देव शास्त्र गुरु ही है शरणा
श्री जिन............. ॥2॥

(49) मन के विकार नासो हे महावीर....

मन के विकार नासो हे महावीर देवा,
संसार ताप छूटे, बस एक चाह देवा॥ टेक॥

भव की भंवर में भ्रमते, तुम ही हो एक खेवा,
कब तक रुलूंगा भगवन्, देखा न तुमसा देवा॥1॥

जग में तो देव सारे, हैं भव भ्रमण के मारे,
जो सेवा नहीं चाहें, देवे स्वपद का मेवा॥2॥

रागादि भाव शीतल, निज आत्म माहि करके,
तुम ही हो इस भवोदधि में, तारने को खेवा॥3॥

तुमसा समान बनकर, हो शान्त आग मेरी,
होकर के वीतरागी, अरहन्त नाम देवा॥4॥

(३९) कर ले प्रभु का ध्यान...

कर ले प्रभु का ध्यान, मन के मन्दिर में।
सब कुछ है तेरे पास मन के मन्दिर में॥
करना उसी का ध्यान, मन के मन्दिर में।
सब कुछ है तेरे पास मन के मन्दिर में॥

जिसको ढूँढे वन वन में, जिसको ढूँढे पर्वत में।
जिसको ढूँढ़े मन्दिर में, वह तो है तेरे अन्दर में॥
करना उसी का ध्यान, मन के मन्दिर में॥१॥

मन मंदिर को करना साफ, क्रोध मान माया का करना नाश
डर की जग में नहीं कोई बात, धर्म का फिर तू लेना साथ
लोभ को दे फटकार, मन के मन्दिर में॥२॥

समय जाय फिर आये न हाथ, समय की कीमत को पहिचान।
तन से करना पर उपकार, भाव से देना चारों दान।
समय को ले लो साथ, मन के मन्दिर में॥३॥

महामन्त्र को बोल बोल बोल, ज्ञान के द्वार खोल खोल खोल
जग में जिसका नहीं है मोल, वो तो तुझ में ही है अनमोल
आतम का कर ले ध्यान, मन के मन्दिर में॥४॥

शास्त्रभक्ति खण्ड

(1) माँ जिनवाणी ज्ञायक....

माँ जिनवाणी ज्ञायक बताय दियो रे, बताय दियो रे।
आनंद भयो भारी, आनंद भयो रे॥
सविनय शीश नवाय रह्यो रे, नवाय रह्यो रे।
मैं भीज गयो आज, मैं भीज गयो रे॥ टेक॥

काल अनादि से भ्रमता फिरता।
जनम-जनम में बहु दुख सहता॥
अब सब दुखऽऽ पलाय गयो रे॥आनंद..... ॥1॥

जो प्रमत्त अप्रमत्त नहीं है।
ज्ञायक शुद्ध अभेद सही है॥
स्वयं सिद्धऽऽ दर्शाय दियो रे॥आनंद..... ॥2॥

पर अवलंबन छोड़ जु देख।
निज का वैभव प्रत्यक्ष देख॥
सम्यक रत्नत्रयऽऽ प्रगटाय रह्यो रे॥आनंद..... ॥3॥

अब न कामना कोई बाकी।
निज महिमा सर्वोत्तम आँकी॥
निज महिमा में ऽऽ डुबोय रह्यो रे॥आनंद..... ॥4॥

(2) म्हारी माँ जिनवाणी....

म्हारी माँ जिनवाणी ऽऽऽ थारी हो जय जयकार।टेक॥

चरणों में रखी लीजो, भव से अब तारी दीज्यो।
कर दीज्यो इतनो उपकार॥ थारी तो..... ॥1॥

कुंदकुंद सा थारा बेटा, दुखड़ा सब जग का मेटा।
राच्यो समय को सार कर दीज्यो इतनो उपकार॥ थारी तो..... ॥2॥

जिनवाणी सुन हर्षाये, निश्चित ही भव्य कहावे।
हो जावे भव से पार॥ थारी तो..... ॥3॥

तत्त्वों का सार बतावे, ज्ञायक से भेंट करावे।
कियो अनंत उपकार॥ थारी तो..... ॥4॥

(3) सुनो सुनो रे जिनवाणी....

सुनो-सुनो रे-2 जिनवाणी, मीठे बोल बोले-2
आगम की वाणी में म्हारो, मन डोले॥

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, आज तुम्हारा दर्शन पाय।
पावापुर के महावीरा ने, सब भव्यों को पार लगाया॥
गाओ-गाओ रे-2, जिनवाणी मीठे..... ॥1॥

घट-घट माटी गुरुदेव की, महिमा है हितकारी।
आत्मज्ञान की बात बताकर, सच्ची ज्योति जगाई॥
नाचो-नाचो रे-2, म्हारो मन हौले-होले..... ॥2॥

जिन मंदिर में सब नर-नारी, थारा ही गुण गावें।
मन से तेरी भक्ति करके, पुण्य महान कमावें॥
नाचो-नाचो रे-2, प्रभु के आगे हौले-हौले..... ॥3॥

कुंदकुंद ने परमागम में, परमामृत बरसाया।
कहान गुरु ने परमामृत को, घर-घर में पहुँचाया॥
सुनो-सुनो रे-2, जिनवाणी मीठे बोल बोले..... ॥4॥

थारे दर्शन के कारण मैं, बड़ी दूर से आया।
सुन-सुन थारी महिमा, भैया दूर-दूर रसे आया॥
करो-करो रे-2, प्रभु के दर्शन हौले-हौले..... ॥5॥

(4) ग्रंथ समयसार....

ग्रंथ समयसार हमें प्राणों से प्यारा।
यही है वो ग्रंथ होऽऽऽ, जिसने लाखों को तारा.... ॥
णमो परमागमम्! णमो रत्नाकरम्, णमो जिनदेशनम्,
णमो वागेश्वरम्, णमो लोए सव्व शब्द ब्रह्म ॥टेक॥

शुद्धात्म का ज्ञान कराता, परमातम का दर्श दिखाता।
ज्ञान गगन में सैर कराता, सिद्ध प्रभु से भेंट कराता॥
सदियों पुराना परमागम हमारा॥ग्रंथ.... ॥1॥

श्रीमद्जी ने इसको पाकर, रत्न लुटाये झोली भर-भर।
गुरु कहान ने मारग पाया, श्री बनारसीदास को भाया॥
कलिकाल सर्वज्ञ हमारा॥ग्रंथ.... ॥2॥

द्रव्य-दृष्टि का यही ग्रंथ है, स्वानुभूति का यही पंथ है।
शुद्धातम ही परमदेव है, स्वयं स्वयंभू महादेव है॥
न्यौछावर इस पर जीवन हमारा॥ग्रंथ.... ॥3॥

(5) हम अगर वीरवाणी पर....

हम अगर वीरवाणी पर, श्रद्धा करें,
ज्ञान के दीप जलते चले जाएँगे।
गर जले ज्ञान के दीप हृदय में तो,
मार्ग संयम के खुलते चले जाएँगे॥टेक॥

हमने मुश्किल से पाया है, मानव जनम,
देव तरसें जिसे ऐसा पाया रतन।
गर इसे हमने विषयों में ही खो दिया,
भूल पर अपनी हम खुद ही पछताएँगे॥1॥

अब मिला जिन धरम और जिनवर शरण,
गुरु मिले हैं दिगम्बर और अमृत वचन।
राग से भिन्न ज्ञायक है, अनुभव करो,
मार्ग कल्याण के खुद ही खुल जाएँगे ॥2 ॥

जब नहीं सच्ची श्रद्धा, तो क्या अर्थ है,
इस बिना ज्ञान और आचरण व्यर्थ है।
हम पुजारी बनें वीतरागी के तो,
कर्म के बंधन कटते चले जाएँगे ॥3 ॥

(6) महिमा है, अगम जिनागम ....

महिमा है, अगम जिनागम की ॥ टेक ॥

जाहि सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की ॥1 ॥
रागादिक दुःख कारन जानैं, त्याग बुद्धि दीनी भ्रम की ॥2 ॥
ज्ञान-ज्योति जागी उर अन्तर, रुचि बाढ़ी पुनि शम-दम की ॥3 ॥
कर्मबंध की भई निरजरा, कारण परम पराक्रम की ॥4 ॥
'भागचन्द' शिवलालच लाग्यो, पहुँच नहीं है जहँ जम की ॥5 ॥

(7) जिन बैन सुनत मोरी....

जिन बैन सुनत मोरी भूल भगी ॥ टेक ॥

कर्मस्वभाव भाव चेतन को, भिन्न पिछानन सुमति जगी ॥1 ॥
निज-अनुभूति सहज ज्ञायकता, सो चिर रुष-तुष मैल पगी ॥2 ॥
स्याद्वाद धुनि निर्मल जल तें, विमल भई समभाव लगी ॥3 ॥
संशय-मोह भरमता विघटी, प्रगटी आतम सोंज सगी ॥4 ॥
'दौल' अपूरव मङ्गल पायो, शिवसुख लेन होंस उमगी ॥5 ॥

(8) चरणों में आ पड़ा हूँ....

चरणों में आ पड़ा हूँ, हे द्वादशांग वाणी।
मस्तक झुका रहा हूँ, हे द्वादशांग वाणी॥ टेक॥

मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को प्रकाशा।
आपा-पराया भासा, हो भानु के समानी॥1॥

षट् द्रव्य को बताया, स्याद्वाद को जताया।
भवफन्द से छुड़ाया, सच्ची जिनेन्द्र वाणी॥2॥

रिपु चार मेरे मग में, जंजीर डाले पग में।
ठाड़े हैं मोक्ष मग में, तकरार मोंसो ठानी॥3॥

दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोड़ूँ नाता।
होवे सुदर्शन साता, नहिं जग में तेरी सानी॥4॥

(9) केवलिकन्ये, वाङ्गमय गंगे....

केवलिकन्ये, वाङ्गमय गंगे, जगदम्बे, अघ नाश हमारे।
सत्य-स्वरूपे, मङ्गलरूपे, मन-मन्दिर में तिष्ठ हमारे॥ टेक॥

जम्बूस्वामी गौतम-गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे।
जगतैं स्वयं पार ह्वै करके, दे उपदेश बहुत जन तारे॥1॥

कुन्दकुन्द, अकलंकदेव अरु, विद्यानन्दि आदि मुनि सारे।
तव कुल-कुमुद चन्द्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे॥2॥

तूने उत्तम तत्त्व प्रकाशे, जग के भ्रम सब क्षय कर डारे।
तेरी ज्योति निरख लज्जावश, रवि-शशि छिपते नित्य विचारे॥3॥

भव-भय पीड़ित व्यथित-चित्त जन, जब जो आये शरण तिहारे।
छिन भर में उनके तब तुमने, करुणा करि संकट सब टारे॥4॥

जब तक विषय-कषाय नशें नहिं, कर्म-शत्रु नहिं जाय निवारे,
तब तक 'ज्ञानानन्द' रहै नित, सब जीवन में समता धारे॥5॥

(10) धन्य-धन्य जिनवाणी माता....

धन्य-धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आए।
परमागम का मन्थन करके, शिवपुर पथ पर धाए।
माता दर्शन तेरा रे! भविक को आनन्द देता है,
हमारी नैया खेता है ॥1 ॥

वस्तु कथंचित् नित्य-अनित्य, अनेकांतमय शोभे।
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टयमय शोभे।
ऐसी वस्तु समझने से, चतुर्गति फेरा कटता है,
जगत का फेरा मिटता है ॥2 ॥

नय निश्चय-व्यवहार निरूपण, मोक्षमार्ग का करती।
वीतरागता ही मुक्ति पथ, शुभ व्यवहार उचरती।
माता तेरी सेवा से, मुक्ति का मारग खुलता है,
महा मिथ्यातम धुलता है ॥3 ॥

तेरे अंचल में चेतन की, दिव्य चेतना पाते।
तेरी अमृत लोरी क्या है, अनुभव की बरसाते।
माता तेरी वर्षा से, निजानन्द झरना झरता है,
अनुपमानन्द उछलता है ॥4 ॥

नव-तत्त्वों में छुपी हुई, जो ज्योति उसे बतलाती।
चिदानन्द चैतन्यराज का, दर्शन सदा कराती।
माता तेरे दर्शन से, निजातम दर्शन होता है,
सम्यग्दर्शन होता है ॥5 ॥

(11) धन्य-धन्य वीतराग वाणी....

धन्य-धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी जग में कहानी।
चिदानन्द की राजधानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥ टेक ॥

उत्पाद-व्यय अरु ध्रौव्य स्वरूप, वस्तु बखानी सर्वज्ञ भूप।
स्याद्वाद तेरी निशानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥1 ॥

नित्य-अनित्य अरु एक-अनेक, वस्तु कथंचित् भेद अभेद।
अनेकांतरूपा बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥2 ॥

भाव शुभाशुभ बन्धस्वरूप, शुद्ध चिदानन्दमय मुक्तिरूप।
मारग दिखाती है वाणी, अमर तेरी जग में कहानी ॥3 ॥

चिदानन्द चैतन्य आनन्द धाम, ज्ञानस्वभावी निजातम राम।
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥4 ॥

(12) जयवन्तो जिनवाणी...

जयवंतो जिनवाणी जयवंतो जिनवाणी ।।टेक ॥

श्री सर्वज्ञ प्रभु की वाणी, गणधर गुरु उर मांहि समानी।
चुनि चुनि अंग रचे सुखदानी, द्वादशांग मय श्री जिनवाणी ॥1 ॥

नित्य बोधिनी माँ जिनवाणी, स्वपर विवेक कराती वाणी।
मिथ्या भ्रांति नशाती वाणी, ज्ञायक प्रभु दर्शाती वाणी ॥2 ॥

असदाचरण मिटाती वाणी, सत्यधर्म प्रगटाती वाणी।
भवदुख हरण पियूष समानी, भवदधि तारक नौका जानी ॥3 ॥

जो हित चाहो भविजन प्राणी, पढ़ो सुनो ध्यावो जिनवाणी।
स्वानुभूति से करो प्रमाणी, शिवपथ की है यही निशानी ॥4 ॥

(13) जिनवाणी सुन लो रे ....

जिनवाणी सुन लो रे भैया, जिनवाणी सुन लो रे ॥
अनन्त भव यूँ ही खोये, पर का बोझा ढोये।
तेरी कथा तुझको सुनावें-2 ॥ जिनवाणी सुन. ॥ टेक ॥

पंचपरावर्तन के दु:खड़े सुनाकर,
दुर्लभ नरभव का ज्ञान कराकर।
अब ना सुनी तो फिर कौन कहेगा-2 ॥ जिनवाणी सुन. ॥1 ॥

सिद्ध स्वरूपी तू जग में है घूमे,
आनन्द सुखमय प्रभु खुद को हैं भूले।
जिनवाणी से अपना आतम पहचान ले–2 ॥ जिनवाणी सुन. ॥1 ॥

चिदान्द ध्रुव का दर्शन कराकर,
वीतरागी सुख का अमृत पिलाकर।
जाग रे क्यों मोह–नींद में सोये–2 ॥ जिनवाणी सुन. ॥3 ॥

(14) हे जिनवाणी माता तुमको....

हे जिनवाणी माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको कोटि प्रणाम।
शिवसुखदानी माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको कोटि प्रणाम।टेक॥

तू वस्तु स्वरूप बतावे, अरु सकल विरोध मिटावे।
स्याद्वादमयी विख्याता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको.... ॥1 ॥

तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात कुमारग खण्डन।
हे तीन जगत की माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको..... ॥2 ॥

तू लोका–लोक प्रकाशे, चर–अचर पदार्थ विकासे।
हे विश्व तत्त्व की ज्ञाता तुमको लाखों प्रणाम तुमको...... ॥3 ॥

शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रगटावे।
निज आनन्द अमृत दाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको...... ॥4 ॥

हे मात! कृपा अब कीजे परभाव सकल हर लीजे।
'शिवराम' सदा गुण गाता, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको...... ॥5 ॥

(15) जिनवाणी माता दर्शन....

जिनवाणी माता, दर्शन की बलिहारियाँ॥ टेक॥

प्रथम देव अरहन्त मनाऊँ, गणधर जी को ध्याऊँ।
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊँ॥1 ॥

योनि लाख चौरासी मांही, घोर महादु:ख पायो।
तेरी महिमा सुनकर माता, शरण तुम्हारी आयो॥2 ॥

जानै थाको शरणा लीनों, अष्ट कर्म क्षय कीनो।
जन्म-मरण को मिटा के माता, मोक्ष महापद दीनो ॥3 ॥

ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता।
द्वादशांग चौदह पूरव का, कर दो हमको ज्ञाता ॥4 ॥

(16) जिनवाणी माता रत्नत्रय....

जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि दीजिये ॥ टेक ॥

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चरण से, काल अनादि घूमे,
सम्यग्दर्शन भयौ न तातैं, दुःख पायो दिन दूने ॥1 ॥

है अभिलाषा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण दे माता।
हम तातैं निजरूप आपनों, क्यों न बनै गुण ज्ञाता ॥2 ॥

जीव अनन्तानन्त पठाये स्वर्ग मोक्ष में तूने।
अब बारी है हम जीवन की, होवे कर्म विदूने ॥3 ॥

भव्य जीव हैं पुत्र तुम्हारे, चहुँगति दुःख से हारें।
इनको जिनवर बना शीघ्र अब, दे दे गुण गण सारे ॥4 ॥

औगुण तो अनेक होते हैं, बालक में ही माता।
पैं अब तुमसी माता पाई, क्यों न बनें गुण ज्ञाता ॥5 ॥

(17) नित पीज्यो धी धारी....

नित पीज्यो धी धारी, जिनवाणी सुधा सम जानिके ॥ टेक ॥

वीर मुखारविंदतै प्रगटी, जन्म-जरा भयटारी।
गौतमादि गुरु-उर घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी ॥1 ॥

सलिल समान कलिलमलगंजन, बुधमनरंजन हारी।
भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी ॥2 ॥

कल्याणकतरु उपवनधरिनी, तरिनि भवजलतारी।
बन्धविदारन पैनी छैनी, मुक्ति-नसैनी सारी ॥3 ॥

स्वपरस्वरूप प्रकाशन को यह, भानु कला अविकारी।
मुनि-मन-कुमुदिनि-मोदन शशिभा, समसुख सुमन सुवारी ॥4 ॥

जाको सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी।
तीन लोकपति पूजत जाको, जान त्रिजग हितकारी ॥5 ॥

कोटि जीव सों महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी।
'दौल' अल्पमति केम कहै यह, अधम उधारन हारी ॥6 ॥

(18) शान्ति सुधा बरसाये....

शान्ति सुधा बरसाये जिनवाणी,
वस्तुस्वरूप बताये जिनवाणी ॥ टेक ॥

पूर्वापर सब दोष रहित है,
पाप क्रिया से शून्य शुद्ध है।
परमागम कहलाये जिनवाणी ॥1 ॥

परमागम भव्यों को अर्पण,
मुक्ति वधु के मुख का दर्पण।
भव सागर से तारे जिनवाणी ॥2 ॥

राग रूप अंगारों द्वारा,
महा क्लेश पाता जग सारा।
सजल मेघ बरसाये जिनवाणी ॥3 ॥

सप्त तत्त्व का ज्ञान कराये,
अचल विमल निजपद दरसावे।
सुख सागर लहराये जिनवाणी ॥4 ॥

(19) आत्मा ही समयसार, म्हाने....

आत्मा ही समयसार, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो - 2
म्हाने जिनवाणी सिखलइयो, कर्मन को तुम खिरवइयो
आत्मा ही समयसार, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो ॥ टेक ॥

तुम सम्मेदाचल जइयो, अरु सिद्ध शिला बतलइयो – 2
करवइयो – 3 भेद–विज्ञान, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो
जिनवाणी सिखलइयो, प्रवचन में लेकर जइयो
आत्मा ही – 3...................... ॥1 ॥

तुम गिरनारी जी जइयो, दशलक्षण पर्व मनइयो – 2
बतलइयो – 3 धर्म महान, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो
जिनवाणी सिखलइयो, तुम सिद्धशिला लेजइयो
आत्मा ही – 3...................... ॥2 ॥

तुम अष्टापद जी जइयो, आतम अनात्म समझइयो – 2
दर्शइयो – 3 सृष्टि–विधान, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो
जिनवाणी सिखलइयो, तुम आतम ध्यान लगइयो
आत्मा ही – 3...................... ॥3 ॥

तुम श्री चम्पापुर जइयो, कल्याणक पंच मनइयो – 3
बतलइयो – 3 केवल ज्ञान, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो
जिनवाणी सिखलइयो, दुखद कर्मों से बचइयो
आत्मा ही – 3...................... ॥4 ॥

(20) पञ्च परम गुरूओं ने गाया....

पञ्च परम गुरूओं ने गाया जिनवाणी यश गान है
एक रहा है एक रहेगा वीतराग विज्ञान है
आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।टेक॥

जीव एक नाना विध योनी
बहु विध कथा जिनागम की
अलग–अलग भाँति विशेष है
सुन्दरता परमागम की
इनके हर पृष्ठों में देखो जीव गुणों की खान है
एक रहा है.........आ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ॥1॥

समझायेंगे सब जीवों को
सोया ज्ञान जगायेंगे
सुखमय मुक्ति मार्ग दिलादे
ऐसा पाठ पढ़ायेंगे
हम रत्नत्रय से शोभित हो, जिनमत की आवाज है
एक रहा है एक रहेगा...........आ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ ॥2॥

(21) माँ जिनवाणी बसो हृदय में...

माँ जिनवाणी बसो हृदय में, दुख का हो निस्तारा।
नित्यबोधिनी जिनवर वाणी, वन्दन हो शतबारा।टेक॥

वीतरागता गर्भित जिसमें, ऐसी प्रभु की वाणी।
जीवन में इसको अपनाएँ, बन जाएँ सम्यक्ज्ञानी।
जनम-जनम तक ना भूलूँगा, यह उपकार तुम्हारा॥1॥

युग युग से ही महादुखी है, जग के सारे प्राणी।
मोहरूप मदिरा को पीकर, बने हुए अज्ञानी।
ऐसी राह बता दो माता, मिटे मोह अंधियारा॥2॥

द्रव्य और गुणपर्यायों का, ज्ञान आपसे होता।
चिदानन्द चैतन्यशक्ति का, भान आपसे होता।
मैं अपने में ही रम जाऊँ, यही हो लक्ष्य हमारा॥3॥

भटक भटक कर हार गए अब, तेरी शरण में आए।
अनेकांत वाणी को सुनकर, निज स्वरूप को ध्याएँ।
जय-जय-जय-जय सरस्वती माँ, शत शत नमन हमारा॥4॥

(22) मीठे रस से भरी......

मीठे रस से भरी, जिनवाणी लागे, मने प्यारी लागे
आत्मा की बात मने, प्यारी लागे॥ टेक॥

आत्मा है उजरो उजरो, तन मन लागे कालो
शुद्धातम की बात अपने, मन में बसा लो
चेतना की बात, मने प्यारी लागे, मनहारी लागे
आत्मा की बात मने प्यारी लागे,
मीठे रस से भरी-जिनवाणी ॥1 ॥

देह अचेतन मैं हूं चेतन, जिनवाणी बतलाये
सिद्धों जैसा मैं भी हूँ, ये फिर भी धोखा खाये
मान ले तु चेतन भईया, थारो काई ना बिगड़े
निज आत्मा की बात मने, प्यारी लागे,
मीठे रस से भरी-जिनवाणी लागे ॥2 ॥

जग झूठा है रिश्ते झूठे, झूठे नाते सारे

जिनवाणी है सच्ची माता, सच्चा मार्ग दिखाये
मोक्षमहल का मार्ग हमको प्यारा लागे।
निज आत्मा की बात मने, प्यारी लागे
मीठे रस से भरी-जिनवाणी लागे ॥3 ॥

नहीं भावे मने लाडु पेडा, नहीं भावे मने काजु
मोक्षपुरी में जाऊंगा मैं, बन के दिगम्बर साधु
मने मोक्षमहल का मारग, प्यारा लागे, मनहारी लागे
आत्मा की बात मने प्यारी लागे,
मीठे रस से भरी - जिनवाणी लागे ॥4 ॥

(23) समयसार-समयसार महाग्रन्थ समयसार

ज्ञायक उसके रहे लक्ष्य में जो पढ़ ले इकबार,
समयसार-समयसार महाग्रन्थ समयसार ॥ टेक ॥

काम भोग बन्धन की कथा तो सबको सहज सुलभ है,
पर से भिन्न एकत्वभाव की उपलब्धि दुर्लभ है।
दुर्लभ सहज सुलभ हो जावे, ऐसा चमत्कार ॥
समयसार-समयसार ॥1 ॥

जैसे लोह समान स्वर्ण की बेड़ी भी है बाँधती,
वैसे ही शुभ अशुभ कर्म की दोनों बेड़ी बाँधती।
पुण्य भला है पाप बुरा है अज्ञानी ये मानता,
लेकिन इनमें कोई ना अन्तर सम्यक्ज्ञानी जानता
नवतत्त्वों में छुपा हुआ है ऐसा जाननहार
समयसार–समयसार ॥2 ॥

(24) माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में...

माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में, होकर मुझ रूप समा जाओ।
शान्त शुद्ध ध्रुव ज्ञायक प्रभु की, महिमा प्रतिक्षण दर्शाओ ॥ टेक ॥

चैतन्य नाथ की बात सुने से, अद्भुत शान्ति मिलती है।
मानो निज वैभव प्रगट हुआ, सब आधि–व्याधि टलती है ॥1 ॥

ज्ञायक महिमा सुनते–सुनते, बस ज्ञायकमय जीवन होवे।
निज ज्ञायक में ही रम जाऊँ, सुनने का भावविलय होवे ॥2 ॥

हे माँ तेरा उपकार यही, प्रभु सम प्रभु रूप दिखाया है।
चैतन्य रूप की बोधक माँ, मैं सविनय शीश नवाया है ॥3 ॥

(25) माँ जिनवाणी तेरो नाम...

माँ जिनवाणी तेरो नाम, सारे जग में धन्य है।
तेरी उतारें आरती माँ, तेरो नाम धन्य है ॥ टेक ॥

ज्ञान की ज्योति तू ही जलाती।
भक्तों को भगवान तू ही बनाती।
अमृत पिलाती, मारग दिखाती, तेरो नाम धन्य है।
माँ जिनवाणी ॥1 ॥

अरिहन्त भाषित जिनवाणी प्यारी
गणधर ऋषि और मुनियों ने धारी ॥
जीवन की नैय्या को तू तारती माँ, तेरो नाम धन्य है।
माँ जिनवाणी ॥2 ॥

तेरे श्रवण से है महिमा समायी।
चैतन्य चैतन्य की धुनि आई॥
संतों के हृदय को, ईश्वर के घर को, तेरे गुंजाते छंद हैं।
माँ जिनवाणी॥3॥

सुनने से संसार का रस शिथिल हो।
गुनने से ज्ञायक का मंगल मिलन हो।
तुमको नमन है, तुमको नमन है, तेरो नाम धन्य है।
माँ जिनवाणी॥4॥

(26) जिनवाणी माँ-....

जिनवाणी माँ, जिनवाणी माँ, जयवंतो मोरी जिनवाणी माँ॥ टेक॥

शुद्धातम का ज्ञान कराती, चिदानन्द रसपान कराती।
कुन्दकुन्द से भेंट कराती, आत्मख्याति का बोध कराती॥
जिनवाणी माँ........ ॥1॥

श्री सर्वज्ञ प्रभु की वाणी, गणधर गुरु उरमाहिं बखानी।
चुनि-चुनि अंग रचे सुखदानी, द्वादशांगमय श्री जिनवाणी॥
जिनवाणी माँ........ ॥2॥

असदाचरण नशाती वाणी, सत्य धर्म प्रगटाती वाणी।
मिथ्या भ्रान्ति नसाती वाणी, ज्ञायक प्रभु दर्शाती वाणी॥
जिनवाणी माँ........ ॥3॥

नित्य बोधिनी माँ जिनवाणी, स्वपर विवेक कराती वाणी।
भवदुःख हरण पीयूष समानी, भवदधि तारक नौका जाणी॥
जिनवाणी माँ........ ॥4॥

जो हित चाहो भविजन प्राणी, पढ़ो सुनो ध्यावो जिनवाणी।
स्वानुभूति से करो प्रमाणी, शिवपथ की है यही निशानी॥
जिनवाणी माँ........ ॥5॥

(27) जिनवाणी-जिनवाणी ध्याना सभी...

जिनवाणी-जिनवाणी ध्याना सभी-2
जिनवाणी माँ - जिनवाणी माँ,
तुम ध्याओ जिनवाणी, वीरा की वाणी,
मुक्ति को देती है, महाकल्याणी ॥टेक ॥

गौतम गणधर ने इसका जब ध्यान किया - 2
सब जीवों को मोक्षमार्ग का ज्ञान दिया - 2
बनकर योगी आतम का कल्याण किया - 2
मुक्तिपुरी को पाके आत्मरसपान किया
तुम ध्याओ भव्य प्राणी - वीरा की वाणी,
मुक्ति को देती है, महाकल्याणी ॥1 ॥
जिनवाणी-जिनवाणी.... 2

कुन्दकुन्द योगेन्दुदेव ने ध्याया है-ध्याया है - 2
पूज्यपाद और उमास्वामी ने गाया है - 2
पुष्पदंत और भूतवली ने ज्ञान दिया - 2
षट्खण्डागम रचकर जग कल्याण किया - 2
तुम ध्याओ जिनवाणी - वीरा की वाणी
मुक्ति को देती है महाकल्याणी ॥2 ॥
जिनवाणी-जिनवाणी.... 2

(28) सुनकर वाणी जिनवर की...

सुनकर वाणी जिनवर की, म्हारे हर्ष हिये न समाय जी ॥ टेक ॥

काल अनादि की तपन बुझायी, निज निधि मिली अथाह जी ॥1 ॥

संशय भ्रम और विपर्यय नाशा, सम्यग्बुधि उपजाय जी ॥2 ॥

नर भव सफल भयो अब मेरो 'बुधजन' भेंटत पाय जी ॥3 ॥

(29) वे प्राणी! सुज्ञानी, जिन जानी....

वे प्राणी! सुज्ञानी, जिन जानी जिनवाणी।

चंद सूर हू दूर करैं नहिं, अन्तरतम की हानी॥ वे० ॥1 ॥

पक्ष सकल नय भक्ष करत है, स्यादवाद में सानी ॥वे० ॥2 ॥

'द्यानत' तीन भवन-मंदिर में, दीवट एक बखानी ॥वे० ॥3 ॥

(30) मेघघटासम श्री जिनवानी

मेघघटासम श्रीजिनवानी ॥टेक ॥

स्यात्पद चपला चमकत जामें, बरसत ज्ञान सुपानी ॥1 ॥

धरम सस्य जातैं बहु बाढ़ैं, शिव आनंदफलदानी ॥2 ॥

मोहन धूल दबी सब यातैं, क्रोधानल सुबुझानी ॥3 ॥

'भागचंद' बुधजन केकीकुल, लखि हरखै चितज्ञानी ॥4 ॥

(31) परम उपकारी जिनवाणी...

परम उपकारी जिनवाणी सहज ज्ञायक बताया है।
हुआ निर्भार अंतर में सहज आनंद छाया है ॥टेक ॥

अहो परिपूर्ण ज्ञातारूप प्रभु अक्षय विभवमय हूँ।
सहज ही तृप्ति निज में ही, न बाहर कुछ सुहाया है ॥1 ॥

उलझ कर दुर्विकल्पों में बीज दुख के रहा बोता।
ज्ञान आनंदमय अमृत धरम मानो पिलाया है ॥2 ॥

नहीं अब लोक की चिंता नहीं है उर में भयकिंचित्।
ध्येय निष्काम ध्रुव ज्ञायक अहो दृष्टि में आया है ॥3 ॥

मिटी भ्रांति मिली शांति तत्त्व अनेकांत जाना।
सार वीतरागता पाकर शीश सविनय नवाया है ॥4 ॥

(32) जान के सुज्ञानी जैनवानी की...

जान के सुज्ञानी, जैनवानी की सरधा लाइये ।।टेक ।।

जा बिन काल अनंते भ्रमता, सुख न मिलै कहूँ प्रानी ।।1 ।।

स्वपर विवेक अखंड मिलत है जाही के सरधानी ।।2 ।।

अखिल प्रमानसिद्ध अविरुद्धत, स्यात्पद शुद्ध निशानी ।।3 ।।

'भागचंद' सत्यारथ जानी, परमधरम रजधानी ।।4 ।।

(33) जिनवाणी माँ सुन तो...

जिनवाणी माँ सुन तो जरा
आगम की वाणी में म्हारा मन डोले।

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, आज तुम्हारा दर्शन पाया।
पावापुर के महावीरा ने, सब भव्यों को पार लगाया॥
गाओ-गाओ रे - 2, जिनवाणी मीठे...........

जिन मंदिर में सब नर-नारी, थारा ही गुण गावे
मन से तेरी भक्ति करके, पुण्य महान कमावे
नाचो-नाचो रे - 2, प्रभु के आगे होले-होले...........

कुन्दकुन्द ने परमागम में, परमामृत बरसाया।
कहान गुरु ने परमामृत को, घर-घर में पहुँचाया।
सुनो-सुनो रे - 2, जिनवाणी मीठे...........
आगम की वाणी में म्हारा मन डोले॥

(34) माँ..... सुनाओ वो गाथा...

माँ-माँ-माँ-माँ
माँ सुनाओ वो गाथा सुहानी,
जिससे परिणति हो वीतरागी ।।टेक ।।

तीर्थंकर विरह को भुला दे, सीधे सिद्धों से बातें करा दे।
जो साधु समागम करा दे, निज धरम के मरम को बता दे॥
ऐसी पर्याय सहज प्रगटा दे॥1॥

वो कहानी जो समता सिखा दे, निज स्वरूप में रमना सिखा दे।
शुद्ध चेतन की कथनी सुहानी, जिसमें वृद्धि न हो न हो हानि॥
जिसमें परिणति हो आसमानी॥2॥

जिसमें शुद्धात्मा की कथा हो, जो हरती हमारी व्यथा हो।
अनेकांतमयी जो बखानी, स्याद्वादी है जिसकी निशानी॥
न हो कथनी जिसकी पुरानी॥3॥

जिसमें कर्तृत्व का वास न हो, जिसमें भोक्तृत्व की सोच न हो।
जिसमें एकत्व ममत्व न हो, मात्र ज्ञायक भाव पूरा हो॥
जिसमें तृप्त रहे मुक्ति रानी॥4॥

जो पामर से प्रभुता जगा दे, सारी पामरता क्षण में मिटा दे।
दीनता हीनता को मिटा दे, और लघुता से हृदय सजा दे॥
प्रभुता की अमर हो कहानी॥5॥

(35) माता तू दया करके...

माता तू दया करके, कर्मों से छुड़ा लेना।
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना।टेक॥

माँ आज मैं भटका हूँ, माया के अँधेरे में।
कोई नहीं मेरा है, इस कर्म के रेले में।
कोई नहीं मेरा है, तुम धीर बंधा देना॥ इतनी... ॥1॥

जीवन के चौराहे पर, मैं सोच रहा कब से।
जाऊँ तो किधर जाऊँ, ये पूछ रहा मन से।
पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह दिखा देना॥ इतनी... ॥2॥

लाखों को उबारा है, मुझको भी उबारो ना।
मझधार में है नैया, उसको भी तिरा दो ना।
मझधार में अटका हूँ, मुझे पार लगा देना॥ इतनी... ॥3॥

(36) जिनवाणी अमृत रसाल...

जिनवाणी अमृत रसाल रसिया आवो रे सुणवा।टेक॥

छह द्रव्यों का ज्ञान करावे, नव तत्त्वों से भिन्न बतावे।
आतम प्रभु है महान–रसिया आवो रे सुणवा॥1॥

विषय कषाय का नाश करावे, निज आतम से प्रीत बढ़ावे।
मिथ्यात्व का होवे नाश, रसिया आवो रे सुणवा॥2॥

अनेकांत मय धर्म बतावे, स्याद्वाद शैली कथन में आवे।
भव सागर से होवे पार, रसिया आवो रे सुणवा॥3॥

जो जिनवाणी सुन हरषावे, निश्चय ही वह भव्य कहावे।
दिगम्बर धर्म महान, रसिया आवो रे सुणवा॥4॥

(37) सुनो जिनवाणी....

सुनो जिनवाणी प्रभु की वाणी
निशि भोजन का त्याग करो रे ऽऽऽ
निशि भोजन का त्याग करो और पियो छानकर पानी।टेक॥

तीन लोक में जीव हैं जितने, दुख से डरे सुख चाहें,
परिग्रह से सुख मिले न जब तक जिन गंगा अवगाहें।
भोगों में सुख नहीं प्रभु ने सच्ची बात बताई
इस संसार में सुख की इच्छा रखना ही दुखदाई
सच्चा सुख मिलता है तब ही ऽऽऽ
सच्चा सुख मिलता है तब जब नर हो आतम ज्ञानी॥
सुनो जिनवाणी....... ॥1॥

हिंसा झूठ चोरी कुशील और परिग्रह,
ये हैं पाँच पाप इन्हें मन से निकारो जी,
पंचेन्द्रिय के कहे में न आये पंच परमेष्ठी,
भले पंच महाव्रत धारो जी,
क्रोध मान माया लोभ चार ये कषाय भारी
इनको सजोय चार गति में सुधारो जी
एकनिष्ठ होके एक पथ पे गमन करो
एक जिनवाणी को कभी न विसारो जी
श्री जिनवर की वाणी जग में ऽऽऽ
श्री जिनवर की वाणी जग में एक मात्र कल्याणी
सुनो जिनवाणी....... ॥2॥

दीन दुखी पर करुणा पाले सबसे प्यार करो रे
सबका सुख दुख एक है सबसे सम व्यवहार करो रे
सत्य अहिंसा धर्म निभाओ बनकर शाकाहारी
खान पान पर निर्भर करती मन और बुद्धि तुम्हारी
सुख से सुखी और दुख से दुखी है ऽऽऽ
सुख से सुखी और दुख से दुखी है दुनिया का हर प्राणी
सुनो जिनवाणी....... ॥3॥

जा वाणी के ज्ञान ते सूझे लोकालोक।
सो वाणी मस्तक नमो सदा देत हूँ ढोक।
सुनो जिनवाणी....... ॥4॥

(38) थे तो जिनवाणी के मारग...

थे तो जिनवाणी के मारग, मारग चालो जी मारा मनड़ा।
चालो जी मारा जिवड़ा।
लख चौरासी कट जासी ।।टेक ।।

कुण थारे संगे आयो, कुण थारे संगे जासी।
काँईं गोरखगंधा राच्यो रे ।।1 ।।

पिछला भव की कमाई, इनाँ भव मां कुण खाई।
अगला भव को काँईं सोच्यो रे ।।2 ।।

बांता बांता मां ही बाँध्या, हँसता हँसता कर्म तू बांध्या।
चुकाणुं पड़गो तो रोई रे ।।3 ।।

थाने जिनवाणी समझावे, जड़ चेतन भिन्न बतावे।
थे तो भेदज्ञान को करणुं रे ।।4 ।।

विभाव भाव से नाता तोड़ो, स्वभाव से नाता जोड़ो।
ज्ञायक के आश्रय से ही थाने, थाने जी म्हारा मनड़ा ।।
सच्चूं मारग मिल जासी ।।5 ।।

गुरुभक्ति खण्ड

(1) श्री मुनि राजत समता सङ्ग.....

श्री मुनि राजत समता सङ्ग,
कायोत्सर्ग समाहित अङ्ग ॥ टेक ॥

करतैं नहिं कछु कारज तातैं,
आलम्बित भुज कीन अभङ्ग।
गमन काज कछु हू नहिं तातैं,
गति तजि छाके निज रस रङ्ग ॥2 ॥

लोचनतैं लखिवौ कछु नाहीं,
तातैं नाशादृग अचलङ्ग।
सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं,
तातैं प्राप्त इकन्त सुचङ्ग ॥2 ॥

तह मध्यान्ह माहिं निज ऊपर,
आयो उग्र प्रताप पतङ्ग।
कैधौं ज्ञान पवन बल प्रज्वलित
ध्यानानल सों उछलि फुल्लिंग ॥3 ॥

चित्त निराकुल अतुल उठत जहँ,
परमानन्द पियूष तरंग,
'भागचन्द' ऐसे श्री गुरुपद,
वन्दत मिलत स्वपद उत्तङ्ग ॥4 ॥

(2) धन-धन जैनी साधु.....

धन-धन जैनी साधु जगत के, तत्त्वज्ञान विलासी हो ॥ टेक ॥

दर्शन बोधमई निज मूरति, जिनको अपनी भासी हो।
त्यागी अन्य समस्त वस्तु में, अंहबुद्धि दुखदासी हो ॥1 ॥

जिन अशुभोपयोग की परिणति, सत्ता सहित विनाशी हो।
होय कदाच शुभोपयोग तो, तहँ भी रहत उदासी हो ॥2 ॥

छेदत जे अनादि दुःख दायक, दुविधि बन्ध की फाँसी हो।
मोह क्षोभ रहित निज परिणति, विमल मयंक विलासी हो ॥3 ॥

विषय चाह दव दाह बुझावन, साम्य सुधारस रासी हो।
'भागचन्द' पद ज्ञानानन्दी, साधक सदा हुलासी हो ॥4 ॥

(3) धन्य मुनीश्वर आतम .....

धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया परिवार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार।
धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा, समझा जगत असार,
कि तुमने छोड़ दिया संसार ॥ टेक ॥

काया की ममता को टारी, करते सहन परीषह भारी।
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के हो भण्डारी ॥
आत्म स्वरूप में झूलते करते निज आतम उद्धार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार ॥2 ॥

राग द्वेष सब तुमने त्यागे, बैर विरोध हृदय से भागे।
परमातम के हो अनुरागे, बैरी कर्म पलायन भागे ॥
सत् सन्देश सुना भविजन को करते बेड़ा पार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार ॥3 ॥

होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते।
निजपद के आनन्द में झूलते, उपशम रस की धार बरसते ॥
मुद्रा सौम्य निरखकर मस्तक नमता बारम्बार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार ॥4 ॥

(4) जिन रागद्वेषत्यागा.....

जिन रागद्वेष त्यागा वह सतगुरु हमारा॥
तज राजरिद्ध तृणवत निज काज सँभारा॥ जिन राग॥टेक॥

रहता है वह वनखंड में, धरि ध्यान कुठारा।
जिन मोह महा तरुको, जड़मूल उखारा॥1॥ जिन राग.॥

सर्वांग तज परिग्रह, दिगअंबर हैं धारा।
अनन्तज्ञानगुन समुद्र, चारित्र भंडारा॥2॥ जिन राग.॥

शुक्लाग्नि को प्रजाल के, वसु कानन हैं जारा।
ऐसे गुरु को 'दौल' है, नमोऽस्तु हमारा॥3॥ जिन राग.॥

(5) ऐसे साधु सुगुरु...

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं॥ टेक॥

आप तरे अरु पर को तारें निष्पृह ही निर्मल है॥1॥
तिल तुष मात्र सङ्ग नहीं जिनके, ज्ञान-ध्यान गुणबल हैं॥2॥
शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मन्दर तुल्य अचल हैं॥3॥
'भागचन्द' तिनको नित चाहें, ज्यों कमलनि को अलि हैं॥4॥

(6) गुरुओं के उपकार को.....

गुरुओं के उपकार को हम तो भुला सकते नहीं
तन भुला सकते हैं पर जिनधर्म भुला सकते नहीं॥ टेक॥

जिसका श्रवण और पठन पाठन जीव को हितकार है
जिसके हृदय में आ बसे, बस वो जगत का ताज है-2
प्राण देकर भी कभी कीमत चुका सकते नहीं॥1॥

है अनन्त उपकार उनका जो हमें वे दे गये
हम भी बने भगवान हममें बीज ऐसे बो गये
क्या कहें हम जबकि, गणधर भी बता सकते नहीं॥2॥

(7) होली खेलें मुनिराज....

होली खेलें मुनिराज शिखर वन में
रे अकेले वन में, मधुवन में
मधुवन में आज मची रे होली मधुवन में...... ॥ टेक ॥

चैतन्य गुफा में मुनिवर बसते, अनन्त गुणों में केली करते
एक ही ध्यान रमायें वन में, मधुवन में....... ॥1 ॥

ध्रुवधाम ध्येय की धूनी लगाई, ध्यान की धधकती अग्नि जलाई
विभाव का ईधन जलावें वन में, मधुवन में........ ॥2 ॥

अक्षय घट भरपूर हमारा, अन्दर बहती अमृत धारा
पतली धार न भायी मन में, मधुवन में........... ॥3 ॥

हमें तो पूर्ण दशा ही चहिए, सादि अनंत का आनंद लहिये
निर्मल भावना भायी वन में, मधुवन में.......... ॥4 ॥

पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती, जिनेन्द्र झलक मुनिराज चमकती
श्रेणी माँडी पलक छिन में, मधुवन में........... ॥5 ॥

नेमिनाथ गिरनार में देखो, शत्रुंजय पर पाण्डव देखो
केवलज्ञान लियो है छिन में, मधुवन में.......... ॥6 ॥

बार-बार वन्दन हम करते, शीश चरण में उनके धरते
भव से पार लगाये वन में, मधुवन में.......... ॥7 ॥

ऐसी होली हम हूँ खेले, निज आतम को हम हूँ देखें।
ज्ञान में ज्ञान रमायो पल में, मधुवन में ॥8 ॥

(8) नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ .....

नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ, परम दिगम्बर साधु,
महाव्रतधारी धारी - 2............महाव्रत धारी ॥ टेक ॥

राग द्वेष नहिं, लेश जिन्हों के मन में है.... तन में है।
कनक कामिनी मोह काम नहि, तन में है....मन में है ॥

परिग्रह रहित निरारम्भी, ज्ञानी वा ध्यानी तपसी,
नमो हितकारी कारी,..........नमो हितकारी ॥1 ॥

शीतकाल सरिता के तट पर, जो रहते....जो रहते।
ग्रीष्म ऋतु गिरिराज शिखर चढ़, अघ दहते....अघ दहते॥
तरु तल रहकर वर्षा में, विचलित न होते लख भय
वन अधियारी भारी,.....वन अधियारी ॥2 ॥

कञ्चन-काँच मसान-महल सम, जिनके हैं... जिनके हैं।
अरि अपमान मान मित्र सम, जिनके हैं....जिनके हैं॥
समदर्शी समता धारी, नग्न दिगम्बर मुनिवर
भव जल तारी तारी,....भव जल तारी ॥3 ॥

ऐसे परम तपोनिधि जहँ-जहँ जाते हैं.....जाते हैं।
परम शान्ति सुख लाभ जीव सब, पाते हैं....पाते हैं॥
भव-भव में 'सौभाग्य' मिले, गुरुपद पूजूँ ध्याऊँ,
वरूँ शिवनारी नारी,..........वरूँ शिवनारी ॥4 ॥

(9) हे परम दिगम्बर यती.....

हे परम दिगम्बर यती महागुण व्रती, करो निस्तारा।
नहिं तुम बिन हितु हमारा ॥ टेक ॥

तुम बीस आठ गुणधारी हो, जग जीव मात्र हितकारी हो।
बाईस परीषह जीत धरम रखवारा,
नहिं तुम बिन हितु हमारा ॥1 ॥

तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो, प्रभु वीतराग वनवासी हो।
है रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा,
नहिं तुम बिन हितु हमारा ॥2 ॥

तुम क्षमा शान्ति समता सागर, हो विश्व पूज्य नर रत्नाकर।
है हित-मित सत उपदेश तुम्हारा प्यारा,
नहिं तुम बिन हितु हमारा ॥3 ॥

तुम धर्म मूर्ति हो समदर्शी, हो भव्य जीव मन आकर्षी।
है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा,
नहिं तुम बिन हितु हमारा॥4॥

है यही अवस्था एक सार, जो पहुँचाती है मोक्ष द्वार।
'सौभाग्य' आप सा बाना होय हमारा,
नहिं तुम बिन हितु हमारा॥5॥

(10) धन्य मुनिराज हमारे...

धन्य मुनिराज हमारे हैं.... ॥टेक॥

धन्य मुनिराज का चिंतन, धन्य मुनिराज का मंथन,
धन्य मुनिराज का जीवन, धन्य मुनिराज का अध्ययन।
धन्य मुनिराज का दर्शन, धन्य मुनिराज का प्रवचन॥1॥

धन्य मुनिराज की प्रभुता, धन्य मुनिराज की विभुता।
धन्य मुनिराज की समता, धन्य मुनिराज की थिरता।
धन्य मुनिराज की ऋजुता, धन्य मुनिराज की शुचिता॥2॥

धन्य मुनिराज का वैभव धन्य मुनिराज का अनुभव,
धन्य मुनिराज का श्रद्धान, धन्य मुनिराज का वह ध्यान।
धन्य मुनिराज की निद्रा, धन्य मुनिराज की मुद्रा॥3॥

अहो मुनिराज निर्द्वंद हैं, अहो मुनिराज निर्ग्रंथ हैं।
अहो निर्लोभता उनकी, अहो निर्दोषता उनकी।
वे तो निष्ताप होते हैं, वे तो निष्पाप होते हैं॥4॥

(11) म्हारे आँगने में....

म्हारे आँगने में आये मुनिराज, हमारो मन नाचे है।
सारी सृष्टि के हैं सरताज, हमारो मन राचे है।टेक॥

भेष दिगम्बर प्यारा-प्यारा, आँखों को लगता मनहारा।
परम दिगंबर मुद्रा प्यारी, संतों की मुद्रा है न्यारी॥
मानों सिद्ध प्रभु का अवतार॥1॥

हाथ कमण्डलु काठ का, पीछी पंख मयूर।
विषय वास आरम्भ तज, परिग्रह से हैं दूर॥
मानो मुक्तिपुरी का राज॥2॥

बालक सम निर्दोष तुम्हारा, चारित्र है जीवन में प्यारा।
मुद्रा ही संदेश सुनाती, जग नश्वरता भान कराती॥
मानो निर्मल जल की धार॥3॥

अत्रो अत्रो तिष्ठो तिष्ठो, हृदय कमल में अत्रो तिष्ठो।
मम मंदिर में आप विराजो, रत्नत्रय की निधियाँ बाँटो॥
मानों आया कल्पवृक्ष आज॥4॥

कनक कामिनी के हैं त्यागी, सब कुछ ममता त्याग विरागी।
सिद्धों के संग बातें करते, गुण अनंत में केली करते॥
मानों सर्व सुखों का धाम॥5॥

(12) सिद्धों की श्रेणी में...

सिद्धों की श्रेणी में आनेवाला जिनका नाम है।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है॥
मेरा नम्र प्रणाम है, मेरा नम्र प्रणाम है।टेक॥

मोक्षमार्ग पर अंतिम क्षण तक, चलना जिनको इष्ट है।
न्हिं न च्युत कर सकता पथ से, कोई विघ्न अनिष्ट है॥
दृढ़ता जिनकी है अगाध और, जिनका शौर्य अदम्य है।
साहस जिनका है अबाध और, जिनका धैर्य अगम्य है॥
जिनकी है निस्वार्थ साधना, जिनका तप निष्काम है।
जग के उन सब............॥1॥

मन में किंचित् हर्ष न लाते, सुन अपना गुणगान जो।
और न अपनी निंदा सुनकर, करते हैं मुख म्लान जो॥
जिन्हें प्रतीत एक सी होतीं, स्तुतियाँ और गालियाँ।
सिर पर गिरती सुमनावलियाँ, चलती हुई दुनालियाँ॥

दोनों समय शांति में रहना, जिनका शुभ परिणाम है।
जग के उन सब............ ॥2 ॥

हर उपसर्ग सहन जो करते, कहकर कर्म विचित्रता।
तन तज देते किंतु न तजते, अपनी ध्यान पवित्रता॥
एक दृष्टि से देखा करते, गर्मी वर्षा ठंड जो।
तप्त ऊष्ण लू रिमझिम वर्षा, शीत तरंग प्रचंउ जो॥
जिनको ज्यों है शीतल छाया, त्यों ही भीषण घाम है।
जग के उन सब............ ॥3 ॥

जिन्हें कंकड़ों जैसा ही है, मणि-मुक्ता का ढ़ेर भी।
जिनका समता धन खरीदने, को असमर्थ कुबेर भी॥
दूर परिग्रह से रह माना करते हैं संतोष जो।
रत्नत्रय से भरते रहते, अपना चेतन कोष जो॥
और उसी की रक्षा में, रत रहते आठों याम हैं।
जग के उन सब............ ॥4 ॥

(13) नगन दिगम्बर संत....

नगन दिगम्बर संत पधारे, आँगण में आज मेरे।
नरभव सफल हुआ मेरा, आहार करा के होऽऽऽ।टेक॥

नवधा भक्ति से पड़गाहो, दोष रहित आहार कराओ।
नमन करो त्रियोग सम्हारो, मुक्ति रमा के नाथ पधारे॥1 ॥

दया क्षमा करुणा के सागर, धन्य हुआ मैं दर्शन पाकर।
सिद्धों के लघु नंदन पाकर, चलते फिरते सिद्ध पधारे॥2 ॥

पल-पल में अंतर्मुख होते, सर्व जगत से निस्पृह रहते।
सिद्धों सम अपने को लखते, मानो खुद जिनराज पधारे॥3 ॥

गाय व्याघ्र तुम सन्मुख आते, एक घाट पर पानी पीते।
परिषह साम्य भाव से सहते, समता के भंडार पधारे॥4 ॥

(14) जंगल में मुनिराज....

जंगल में मुनिराज अहो, मंगल स्वरूप निज ध्यावें।
बैठ समीप संत चरणों के, पशु भी बैर भुलावें।।टेक।।

अहो सिंहनी गौ वत्सों को, स्तनपान कराती।
हो नि:शंक गौ सिंहनी सुत पर, अपना नेह जताती।।
नेवला अहि मयूर सब ही मिल, तहाँ आनंद मनावें।।1।।

नहीं किसी से भय जिनको, जिनसे भी भय न किसी को।
निर्भय ज्ञान गुफा में रह, शिव पथ दर्शाएँ सभी को।।
जो विभाव के फल में भी, निज शुद्धात्म ही ध्यावें।।2।।

वेदन जिन्हें असंग स्वभाव का, नहीं संग में अटकें।
कोलाहल से दूर स्वानुभव, परम सुधारस गटकें।।
भव्य जीव उपदेश श्रवण कर, जिनसे शिवपद पावें।।3।।

ज्ञेयों से निरपेक्ष ज्ञानमय, अनुभव जिनका पावन।
शुद्धातम दर्शाती वाणी, प्रशममूर्ति मन भावन।
अहो जीतेन्द्रिय गुरु अतीन्द्रिय, ज्ञायक ही नित ध्यावें।।4।।

(15) ज्ञानी की ज्ञान गुफा में....

ज्ञानी की ज्ञान गुफा में, ज्ञायक राम बैठे हैं।
भगवान बैठे हैं, सभी भगवान बैठे हैं।।टेक।।

ज्ञानी ने अपने ज्ञान में निज आत्मा देखा।
पर से भिन्न स्वयं का निज शुद्धात्मा देखा।।
ज्ञानी के केवलज्ञान में अरहंत बैठे हैं।
अरहंत बैठे हैं, सभी भगवंत बैठे हैं।।
ज्ञानी की ज्ञान..........।।1।।

सबसे ही सुंदर ज्ञान की सुंदरता को पाता;
निज आत्मा की महिमा को निज ध्यान में ध्याता।
ज्ञानी के रोम-रोम में, भगवंत बैठे हैं;
भगवंत बैठे हैं, सिद्ध भगवंत बैठे हैं॥
ज्ञानी की ज्ञान.......... ॥2॥

(16) मुनिवर आज मेरी...

मुनिवर आज मेरी कुटिया में आये हैं;
चलते-फिरते.... चलते-फिरते सिद्ध प्रभु आये हैं॥ टेक॥

हाथ कमण्डल बगल में पीछी है, मुनिवर पे सारी दुनिया रीझी है;
नगन दिगम्बर हो... नगन दिगम्बर मुनिवर आये हैं॥१॥
अत्र अत्र तिष्ठो हे मुनिवर! भूमि शुद्धि हमने कराई है;
आहार कराके... आहार कराके नर नारी हर्षाये हैं॥२॥
प्रासुक जल से चरण पखारे हैं, गन्धोदक पा भाग्य संवारे हैं;
शुद्ध भोजन के... शुद्ध भोजन के ग्रास बनाये हैं॥३॥
नगन दिगम्बर मुद्राधारी है, वीतरागी मुद्रा अति प्यारी है;
धन्य हुए ये... धन्य हुए ये नयन हमारे हैं॥४॥
नगन दिगम्बर साधु बड़े प्यारे हैं, जैन धरम के ये ही सहारे हैं;
ज्ञान के सागर... ज्ञान के सागर ज्ञान बरसाये हैं॥५॥

(17) मैंने मुनिराज देखें सपने.....

मैंने मुनिराज देखे सपने में रात के,
जागे हैं भाग्य मेरे, दर्शन से आपके॥ टेक॥

चार हाथ आगे की भूमि, देख-देखकर चलते थे - 2
क्षण-क्षण में अन्तर्मुख होकर, आत्मस्वभाव निरखते थे - 2
तन मन न्यौछावर मुनिवर- 2
चरणों में आपके॥1॥ मैंने मुनिराज.....

अन्तर और बाहर से वो तो वीतरागी ही दिखते थे – 2
परद्रव्यों और परभावों से भिन्न स्वयं को लखते थे – 2
मैं भी बन जाऊँ मुनिवर – 2
जैसा ही आपके ॥2 ॥ मैंने मुनिराज....

(18) है परम दिगम्बर मुद्रा....

हे परम दिगम्बर मुद्रा जिनकी, वन-वन करे बसेरा,
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा॥
शाश्वत सुखमय चैतन्य-सदन में, रहता जिनका डेरा,
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा॥ टेक॥

अन्तर-बाहर द्वादश तप से, जो कर्म-कालिमा दहते,
उपसर्ग परीषह-कृत बाधा जो, साम्य-भाव से सहते।
जो शुद्ध-अतीन्द्रिय आनन्द रस का, लेते स्वाद घनेरा॥
मैं उन चरणों.... ॥1 ॥

जो दर्शन ज्ञान चारित्र वीर्य तप, आचारों के धारी,
जो मन-वच-तन का आलम्बन तज, निज चैतन्य विहारी।
शाश्वत सुख दर्शन ज्ञान चरित में, करते सदा बसेरा॥
मैं उन चरणों..... ॥2 ॥

नित समता स्तुति वन्दन अरू, स्वाध्याय सदा जो करते,
प्रतिक्रमण और प्रति आख्यान कर, सब पापों को हरते।
चैतन्य राज की अनुपम निधियाँ, जिसमें करें बसेरा॥
मैं उन चरणों..... ॥3 ॥

(19) धन्य मुनिराज की समता...

धन्य मुनिराज की समता, धन्य मुनिराज का जीवन।
धन्य मुनिराज की थिरता, प्रचुर वर्ते स्वसंवेदन॥ टेक॥

शुद्ध चिद्रूप अशरीरी, लखें निज को सदा निज में।
सहज समभाव की धारा, बहे मुनिवर के अन्तर में॥
है पावन अन्तरंग जिनका है बहिरंग भी सहज पावन॥1॥

कर्मफल के अवेदक वे, परम आनन्द रस वेदे।
कर्म की निर्जरा करते, बढ़े जायें सु शिवमग में।
मुक्ति पथ भव्य प्रगटावें, अहो करके सहज दर्शन॥2॥

परम ज्ञायक के आश्रय से, तृप्त निर्भय सहज वर्ते।
अवांछक निस्पृही गुरुवर, नवाऊँ शीश चरणन में।
अन्तरंग हो सहज निर्मल, गुणों का होय जब चिन्तन॥3॥

जगत के स्वांग सब देखे, नहीं कुछ चाह है मन में।
सुहावे एक शुद्धातम, आराधूँ होंस है मन में।
होय निर्ग्रन्थ आनन्दमय, आपसा मुक्तिमय जीवन॥4॥

भावना सहज ही होवे, दर्श प्रत्यक्ष फल पाऊँ।
नशे रागादि की वृत्ति, अहो निज में ही रम जाऊँ।
मिटे आवागमन होवे, अचल ध्रुव सिद्धगति पावन॥5॥

(20) जब मुनिवर आते हैं...

जब मुनिवर आते हैं, वैराग्य जगाते हैं।
परद्रव्यों से हमको वो भिन्न बताते हैं,
परभावों से हमको वो भिन्न बताते हैं।टेक॥

मुनिराज रहे वन में, नहिं राग करे तन में।
बारह भावना रहे, बस जिनके चिंतवन में।
सिद्धों जैसा बनने, का मार्ग बताते हैं।परद्रव्यों..॥1॥

नहिं विषयों की आशा, बोले हित-मित भाषा।
परिग्रह से दूर रहें, नहिं रखते अभिलाषा।
समता और शान्ति का, वो पाठ पढ़ाते हैं।परद्रव्यों..॥2॥

अरि मित्र अरु महल मसान, निंदक या स्तुतिवान।
कोई स्तुति उतारनवान, कोई असि से करे प्रहार।
प्रत्येक स्थिति में समभाव बढ़ाते हैं।।परद्रव्यों.. ।।3 ।।

कर भव्यों पर करुणा करते श्रुत की रचना।
और अशुभ भाव से वो बस चाहते बचना।
शुद्धोपयोग का ही, पुरुषार्थ बढ़ाते हैं।।परद्रव्यों.. ।।4 ।।

(21) अपना करना हो कल्याण

अपना करना हो कल्याण साँचे गुरुवर को पहिचान-2
जिनकी वाणी में अमृत बरसता है ।। अपना... ।।टेक ।।

रहते शुद्धात्मा में लीन जो है विषय कषाय विहीन।
जिनके ज्ञान में ज्ञायक झलकता है। अपना......... ।।1 ।।

जिनकी वीतराग छवि प्यारी मिथ्यातिमिर मिटावन हारी,
जिनके चरणों में चक्री भी झुकता है। अपना......... ।।2 ।।

पाकर ऐसे गुरु का संग ध्याओ ज्ञायक रूप असंग।
निज के आश्रय से ही शिव मिलता है। अपना......... ।।3 ।।

अनुभव करो ज्ञान में, ज्ञान होवे ध्येय रूप का ध्यान,
फेरा भव-भव का ऐसे मिटता है। अपना......... ।।4 ।।

(22) आत्म अनुभव नित रमण....

आत्म अनुभव नित रमण... आत्म अनुभव नित रमण करते सदा मुनिराज है।
मुक्ति पथ अनुरागी गुरुवर सौख्य के साम्राज्य है।।टेक ।।

सौम्य मुद्रा शान्त छवि नित कह रही उपदेश यह। - २
देख निज की ओर क्षण भर सौख्य का सागर बहे ।।
सहज ज्ञायक भाववर्ती साम्य रस की धार है ।।
आत्म अनुभव नित रमण....

दृष्टि में ध्रुव एक ज्ञायक आत्म अनुभव लीन है। – २
विषय चाह से रहित मुनिवर, परम सुख स्वाधीन है॥
चलते–फिरते सिद्ध प्रभु को वन्दना शत बार है॥
आत्म अनुभव नित रमण....

राग का न लेश जिनके धारे न कोई वेश है। – २
रत्नत्रय भूषण से शोभित एक मुनि का भेष है॥
स्वानुभव के गिरि शिखर से बह रही सुखधार है॥
आत्म अनुभव नित रमण....

(23) गुरुवर थारी परिणति....

गुरुवर थारी परिणति अंतरमयी
पायो सिद्ध स्वपद का राज, गुरुवर आनंद अपार।टेक॥

ग्रीष्म ऋतु में पर्वत राजे, अपना ज्ञायक रूप निहारे।
गुरु शीतल रहे अविकार, गुरुवर आनंद अपार।गुरुवर थारी... ॥1॥

होय विरागी परिग्रह डारा, शुद्धोपयोग रूप धर्म है धारा।
हुई दृष्टि अंतर मा अविकार, गुरुवर आनंद अपार।गुरुवर थारी... ॥2॥

शुद्धातम में मग्न सु रहते, ज्ञान सुधारस पीते–पीते।
भासा सारा जगत निस्सार, गुरुवर आनंद अपार।गुरुवर थारी... ॥3॥

गुरुसम निज गुरुता को ध्याऊँ, धन्य दशा वह कब प्रगटाऊँ।
पाऊँ ऐसा पद अविकार, गुरुवर महिमा अपार।गुरुवर थारी... ॥4॥

(24) निर्ग्रन्थों का मार्ग.....

निर्ग्रन्थों का मार्ग......
निर्ग्रन्थों का मार्ग, हमको प्राणों से भी प्यारा है......
दिगम्बर वेश न्यारा है...... निर्ग्रन्थों का मार्ग॥ टेक॥

शुद्धात्मा में ही, जब लीन होने को, मन किसी का मचलता है;
तीन कषायों का, तब राग परिणति से, सहज ही टलता है।
वस्त्र का धागा...... वस्त्र का धागा, नहीं फिर उसने तन पर धारा है;
दिगम्बर वेश न्यारा है............... निर्ग्रन्थों का मार्ग ॥1 ॥

पञ्च इन्द्रिय का, विस्तार नहीं जिसमें, वह देह ही परिग्रह है;
तन में नहीं तन्मय, है दृष्टि में चिन्मय, शुद्धात्मा ही गृह है।
पर्यायों से पार...... पर्यायों से पार, त्रिकाली ध्रुव का सदा सहारा है;
दिगम्बर वेश न्यारा है............... निर्ग्रन्थों का मार्ग ॥2 ॥

मूलगुण पालन, जिनका सहज जीवन, निरन्तर स्वसंवेदन;
एक ध्रुव सामान्य, में ही सदा रमते, रत्नत्रय आभूषण।
निर्विकल्प अनुभव.. निर्विकल्प अनुभव से ही, जिनने निज को शृंगारा है;
दिगम्बर वेश न्यारा है............... निर्ग्रन्थों का मार्ग ॥3 ॥

आनन्द के झरने, झरते प्रदेशों में निज ध्यान जब धरते हैं;
मोह रिपु क्षण में, तब भस्म हो जाता, श्रेणी जब चढ़ते हैं;
अन्तर्मुहूर्त में...... अन्तर्मुहूर्त में ही, जिनने अनन्त चतुष्टय धारा है;
दिगम्बर वेश न्यारा है............... निर्ग्रन्थों का मार्ग ॥4 ॥

(25) वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी.....

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी।
साधु दिगम्बर, नगन निरम्बर, संवर भूषण धारी ॥टेक ॥

कंचन काँच बराबर जिनके, ज्यों रिपु त्यों हितकारी;
महल मसान, मरण अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी ॥1 ॥

सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी;
शोधत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी ॥2 ॥

जोरि युगल कर 'भूधर' विनवे, तिन पद ढोक हमारी;
भाग उदय दर्शन जब पाऊँ, ता दिन की बलिहारी ॥3 ॥

(26) ऐसे मुनिवर देखे वन में...

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग-द्वेष नहीं मन में।।टेक।।

ग्रीष्म ऋतु शिखर के ऊपर, वे तो मगन रहे ध्यानन में।।1।।

चातुर्मास तरुतल ठाढ़े, वे तो बूँद सहे छिन-छिन में।।2।।

शीत मास दरिया के किनारे, वे तो धीरज धरें ध्यानन में।।3।।

ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊँ, मैं तो देत ढोक चरणन में।।4।।

(27) छोड़ा सब जग का क्लेश

छोड़ा सब जग का क्लेश, धारा यतियों का वेष,
दिगम्बर मुनि चले,
धिक्-धिक् स्वारथ संसार, उमड़ी उपशम रस की धार,
दिगम्बर मुनि चले...।। टेक।।

वैराग्य हुआ जिस क्षण, निज ज्ञायक प्रिय लागा।
अन्तर पौरुष जागा, महलों का सुख त्यागा।
ग्रन्थियाँ टूटते ही, निर्ग्रन्थ दशा प्रगटी।
दिगम्बर मुनि चले...।।1।।

उपसर्ग परीषह में, समता का भाव धरें।
सुमनों की वर्षा हो, या जलते अंगारे।
समिति गुप्ति चारित्र, निर्दोष सहज पालें।
दिगम्बर मुनि चले...।।2।।

आनन्द आत्मा का, अन्तर्मुख हो पाते।
वे मुनिवर सिद्धों के, लघुनन्दन कहलाते।।
धर्मामृत वर्षा से, भवि जीव मुक्ति पाते।
दिगम्बर मुनि चले...।।3।।

(28) धारा है दिगम्बर वेश...

धारा है दिगम्बर वेश... हो ओ... धारा है दिगम्बर वेश
किया मुक्ति श्री में प्रवेश... वो मुनिवर चल पड़े.... 2
नहीं राग तन्तु कुछ शेष, परिग्रह अरू राग न द्वेष.. वे मुनिवर चल पड़े.. ।।टेक ।।

सब राज्य पाट त्यागा... समता धन के स्वामी।
चक्री झुकते पग में, वन्दन अन्तर यामी ॥
बहती उपशम रस धार, त्यागा सुत तिय परिवार।
वो मुनिवर चल पड़े..... 2 ॥1 ॥

दिन रात आत्म चिन्तन... समभावमयी जीवन।
निर्ग्रन्थ दशा कहती कितना पावन है मन ॥
देता जीवन सन्देश, सुख अन्दर बाहर क्लेश।
वो मुनिवर चल पड़े... 2 ॥2 ॥

हे शाश्वत् सुख भोगी... शुद्धात्म विलासी हो।
वैराग्यमयी जीवन, निज भाव प्रकाशी हो ॥
भव भोग से वैरागी, व्रत धारी बड़भागी।
वो मुनिवर चल पड़े.... 2 ॥3 ॥

विषयों की आश न मन... परिग्रह का लेश नहीं।
तप ज्ञान ध्यान जल से परणति है नित भीगी ॥
धनि वनवासी मुनिराज, मुक्ति रमणी सिरताज।
वो मुनिवर चल पड़े... 2 ॥4 ॥

(29) वैराग्य का धन....

वैराग्य का धन संग ले अपार, सुख शांति का करने व्यापार।
शिव पंथचारी हैं हमारे मुनिवर, दिगम्बरधारी हैं हमारे मुनिवर ।।टेक ।।

बाह्य आभूषण तज के, ध्यान आभूषण निज उर में धारा।
काँच के रत्न छोड़े, त्रय रत्नों से हुए निर्भारा ॥
ज्ञान के आहारी, स्वपर हितकारी हैं, हमारे मुनिवर ॥1 ॥

अशुभोपयोग को नाशा, शुभ उपयोग पगड़ी है धारी।
आत्म उपवन में विचरते, शुद्ध उपयोग रूपी है गाड़ी॥
शिवरमणी वरना है, धर्म प्रभावक सारथि हैं, हमारे मुनिवर ॥2 ॥

चक्री इन्द्रादिक नमते, पर वे तो बस निज में ही रमते।
उपसर्ग परीषह सहते, मात्र ज्ञायक हूँ ज्ञायक ही रहते।
सिद्धों के लघुनंदन, वंदन शत बारे हैं, हमारे मुनिवर ॥3 ॥

(30) गुरु समान दाता नहिं कोई....

भानु-प्रकाश न नाशत जाको, सो अँधियारा डारै खोई ।गुरु० ॥

मेघसमान सबनपै बरसै, कछु इच्छा जाके नहिं होई।
नरक पशुगति आग मांहिंतैं, सुरग मुकत सुख थापै सोई ।गुरु० ॥1 ॥

तीन लोक मंदिर में जानौ, दीपक सम परकाशक-लोई।
दीपतलै अँधियार भर्‌यो है, अंतर बहिर विमल है जोई ।गुरु० ॥2 ॥

तारन तरन जिहाज सुगुरु हैं, सब कुटुंब डोबै जगतोई।
'द्यानत' निशिदिन निरमल मन में, राखो गुरु-पद-पंकज दोई ।गुरु० ॥3 ॥

(31) संत निरंतर चिंतत ऐसैं

संत निरंतर चिंतत ऐसैं, आतमरूप अबाधित ज्ञानी ।टेक ॥

रोगादिक तो देहाश्रित हैं, इनतें होत न मेरी हानी।
दहन दहत ज्यों दहन न तदगत, गगन दहन ताकी विधि ठानी ॥1 ॥

वरणादिक विकार पुद्‌गल के, इनमें नहिं चैतन्य निशानी।
यद्यपि एकक्षेत्र-अवगाही, तद्यपि लक्षण भिन्न पिछानी ॥2 ॥

मैं सर्वांगपूर्ण ज्ञायक रस, लवण खिल्लवत लीला ठानी।
मिलौ निराकुल स्वाद न यावत, तावत परपरनति हित मानी ॥3 ॥

'भागचंद्र' निरद्वन्द निरामय, मूरति निश्चय सिद्धसमानी।
नित अकलंक अवंक शंक बिन, निर्मल पंक बिना जिमि पानी ॥4 ॥

(32) देखा उन्हें जो.....

देखो उन्हें जो वन में विचरते
कर्मों के निर्जरा निरंतर है करते
गुणस्थानातीत से वो बातें हैं करते
नाजुक से बालक मुनि बन गये हैं
वन्दन है .... उन मुनिवर को

वो तो सिंह जैसे वन में विचरते
सर्दी हो गर्मी हो ध्यानरूप रहते
ज्ञान के दीपक को रोशन वो करते
जिनवर की वाणी को हाथों से रचते
वन्दन है .... उन मुनिवर को

निर्ग्रन्थ मुनि है दिगम्बर
परिग्रह न लेश है अन्दर
वो तो रहते विषय कषायों से भी दूर
जिनमें ज्ञान की प्यारी
और बातें बड़ी निराली
शुद्धोपयोग से प्यारा रिश्ता है कोई
वो तो रहते निजात्म में
और वहाँ न विचरण करते
रहे अपनी ही शरण में
वन्दन है .... उन मुनिवर को

गर्भकल्याणकभक्ति
खण्ड

(1) मङ्गलायतन में गर्भ कल्याणक...

मङ्गलायतन में गर्भ कल्याणक जय-जय आदिनाथ रे,
चौबीसों जिनराज रे।
अलीगढ़ शहर में गर्भ-कल्याणक अन्तिम गर्भ महान रे,
जय-जय ऋषभकुमार रे ॥ टेक ॥

सर्वार्थ-सिद्धि से प्रभु जी पधारे, अयोध्या नगर में आनन्द छाए।
खुशियाँ अपरम्पार रे, जय-जय ऋषभकुमार रे॥1॥

पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करके हरषा-हरषा।
देव करे जयकार रे, जय-जय ऋषभकुमार रे॥2॥

सोलह सपने माँ ने देखे, उनके फल राजा से पूछे।
अचरज में है मात रे, जय-जय ऋषभकुमार रे॥3॥

देवी छप्पन आईं कुमारी, माता की सेवा सुखकारी।
मन में माँ हर्षाय रे, जय-जय ऋषभकुमार रे॥4॥

(2) गर्भ कल्याणक आ गया...

गर्भ-कल्याणक आ गया,
देखो देखो देखो जी आनन्द छा गया ॥ टेक ॥

स्वर्गपुरी से देवगति को तजकर प्रभु ने नरगति पाई;
धन्य-धन्य हैं त्रिशला माता तीर्थङ्कर की माँ कहलाई;
कुण्डलपुर में आनन्द छा गया ॥1 ॥

सोलह सपने माँ ने देखे मन में अचरज भारी है;
सिद्धारथनृप से फल पूछा उपजा आनन्द भारी है;
तीन भुवन का नाथ आ गया ॥2 ॥

अन्तिम गर्भ हुआ प्रभुजी का अब दूजी माता नहीं होगी;
शुद्धातम के अवलम्बन से आत्मसाधना पूरी होगी;
ज्ञान-स्वभाव हमें भा गया ॥3 ॥

(3) सुनो जी माँ ने...

सुनोजी...
माँ ने देखे सोलह सपने, जाने उनका फल क्या होगा ॥ टेक ॥

प्रथम सुगज ऐरावत देखा, मेघ समान सु-गरज घने,
दूजा बैल एक शुभ देखा, उन्नत कन्धा शब्द भने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥1 ॥

तीजे सिंह धवल शुभ देखा, कन्धे लाल सुवर्ण बने,
सिंहासन थित लक्ष्मी देखी, नाग युगल से न्हवन सने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥2 ॥

पाँचे फूलमाल-द्वय गुंजित, भ्रमर भजत गुण नाथ तने,
छट्ठे शशि पूरण तारागण, अमृत झरता जगत तने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥3 ॥

सप्तम सूर्य निशातम हारी, पूर्व दिशा से उदित ठने,
अष्टम मीन–युगल सर रमते देखे चंचल भाव जने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥4॥

सुवर्ण कलश द्वय जल पूरण भर, कमलपत्र से ढ़कत घने,
दशवें हँस रमण करते सर, कमल गन्ध युत लहर ठने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥5॥

सागर दर्पण–सम निर्मल लख, लसत तरङ्गनि हँसत घने,
बारम सिंहासन सुवर्णमय सिंहपीठ मणि जड़ित बने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥6॥

तेरम स्वर्ग विमान रतनमय, भेजत सर अनुराग घने,
चौदस नाग–भवन भू उठता, देखी कान्ति अपार जने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥7॥

पन्द्रम रत्न–राशि युति पूरण, दुःख–दरिद्र संहार हनै,
धूम रहित शुभ पावक देखी, कर्मकाष्ठ जल जात घने;
उच्च वृषभ स्वर्णमय आयो, मुख प्रवेश करता अपने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को सुनोजी॥8॥

(4) सोती थी मरुदेवी माता...

सोती थी मरुदेवी माता, महल में मगन।
बजने लगी शहनाई, सपनों ने ली अंगड़ाई॥

प्रथम सुगज ऐरावत देखा, मेघ समान सु–गरज घने।
दूजा बैल एक शुभ देखा, उन्नत कंधा शब्द भने॥
कैसी ये लीला है रे भाई, माताजी समझ न पायीं
सोती थीं मरुदेवी.........॥1॥

तीजे सिंह धवल शुभ देखा, कंधे लाल सुवर्ण बने।
सिंहासन थित लक्ष्मी देखी, नाग युगल से न्हवन सने॥

फल क्या इनका होगा भाई, अचरज में माता हरषाई
सोती थीं मरुदेवी.......... ॥2॥

पाँचे फूलमाला-द्वय गुंजित, भ्रमर भजत गुण नाथ तने।
छट्ठे शशि पूरण तारागण, अमृत झरता जगत तने॥
कैसा स्वपन है ये भाई, माताजी है मुस्कायी
सोती थीं मरुदेवी.......... ॥3॥

सप्तम सूर्य निशातम हारी, पूर्व दिशा से उदित ठने।
अष्टम मीन-युगल सर रमते, देखे चंचल भाव जने।।
मेघ घटा है छाई, अमृत सुधा बरसाई
सोती थीं मरुदेवी.......... ॥4॥

सुवर्ण कलश द्वय जल पूरण भर, कमलपत्र से ढकत घने।
दशवें हंस रमण करते सर, कमल गंध युत लहर ठने।
मुक्ति पुरी मन भाई, आनन्द धारा बहाई
सोती थीं मरुदेवी.......... ॥5॥

सागर दर्पण-सम निर्मल लख, लसत तरंगनि हँसत घने।
बारम सिंहासन सुवर्णमय, सिंहपीठ मणि जड़ित बने।
प्रेम सुधा सरसाई, खुशियों की बारिश आयी
सोती थीं मरुदेवी.......... ॥5॥

तेरम स्वर्ग विमान रतनमय, भेजत सर अनुराग घने।
चौदस नाग-भवन भू उठता, देखी कांति अपार जने।
कौन सी निधि मैंने पायी, मुक्ति गोद में आयी
सोती थीं मरुदेवी.......... ॥७॥

पन्द्रम रत्न-राशि युति पूरण, दु:ख-दरिद्र संहार हने।
धूम रहित शुभ पावक देखी, कर्मकाष्ठ जल जात घने॥
उच्च वृषभ स्वर्णमय आयो, मुख प्रवेश करता अपने।
अर्न्तमुख छवि भाई, आतम अनुभव पायी
सोती थीं मरुदेवी.......... ॥८॥

(5) सोलह-सोलह स्वपन...

सोलह-सोलह स्वपन, मैंने देखे हैं साजन,
हर्षित है मन क्यों आज।
बोलो-बोलो जी स्वामी,
बोलोजी नाथ मेरे स्वपन का राज॥टेक॥

हाथी भी देखा वृषभ भी देखा, सिंह और लक्ष्मी का अवतार
बलवान होगा पुत्र हे मात, कर्मठ होगा तेरा लाल
प्रतापी सुत की है तू मात, ज्ञान लक्ष्मी को धरनार
बोलो-बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल॥1॥

माला भी देखी चन्द्र भी देखा, देखा चढ़ता सूर्य प्रकाश
कोमल होगा पुत्र महान, शीतल होगा वह गुणखान
काटेगा अज्ञान अंधकार, होगा वह तो सूर्य समान
बोलो-बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल॥2॥

कलश भी देखा मीन भी देखी, सागर और सरोवर शान्त
गम्भीर होगा सिंधु समान, होगा ज्ञान-सरोवर खान।
नाभिराय का यह दरबार, आज सुनाओ जी महाराज
बोलो-बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल॥3॥

सिंहासन और देव विमान, देखा रत्नों का भंडार
जीतेगा तीन लोक को नाथ, लायेगा उन्हें देव-विमान
अवधिज्ञान विशाल भवन, सोहेगा वो रत्न समान
बोलो-बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल॥4॥

उज्ज्वल-उज्ज्वल अग्नि समान, लाल करेगा अहो निहाल
मुख में स्वर्ण वृषभ जो आय, मानो तीर्थङ्कर अवतार
सफल हुई नारी पर्याय, त्रिभुवन है नतमस्तक आज
बोलो-बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल॥5॥

(6) मरुदेवी माता....

मरुदेवी माता..... 2, मरुदेवी माता..... 2
जय आदिनाथा..... 2, जय आदिनाथा..... 2।टेक॥

मरुदेवी माता के जब तुम गर्भ में आए।
मानो मुक्तिदूत बनकर आप समाए॥
अयोध्याय नगरी में देखो आनंद छाया।
मानो कल्पवृक्ष माता के उदर समाया॥
मरुदेवी माता....... ॥1॥

गर्भ समय सोलह सपने माता ने देखे।
अचरज भारी होता है माता के मन में॥
रोम-रोम पुलकित है माता जी के तन का।
हर्ष भरा स्वागत मुक्ति के शुभागमन का॥
मरुदेवी माता....... ॥2॥

तीन लोक का वैभव मुझको फीका लागे।
अगुरुलघु शक्ति के कारण कुछ न सहावे॥
निज स्वभाव के आश्रय से भगवान बनेंगे।
मुक्ति वधु को वर कर निज ध्रुवधाम रमेंगे॥
मरुदेवी माता....... ॥3॥

(7) गर्भ कल्याणक की शुभ घड़ी आई...

गर्भ कल्याणक की शुभ घड़ी आई, बधाई हो बधाई वामा माता बधाई...

सोलह सपने अद्‌भुत देखे, उनके फल राजा से पूछे।
रानी तेरे गर्भ से सुन्दर पुत्र होगा, तीन लोक का नाथ बनेगा॥
स्वप्न फलों को सुन माता हर्षाई....
बधाई हो बधाई... गर्भकल्याणक की... बधाई हो।

सुपति की आज्ञा से वाराणसी, स्वर्गपुरी सी सजी हुई।
रत्नों की वर्षा से धरती, वाराणसी की भरी हुई।
स्वयं कुबेरजी ने नगरी सजाई
बधाई हो बधाई... गर्भकल्याणक की... बधाई हो।

सुरबालायें स्वर्ग से आई, देवीय वस्त्राभूषण लाई।
रत्नकुक्षी धारिणी वामा माता की, सेवा कर के तृप्ति पाई॥
तत्त्व चर्चा कर शंका मिटाई
बधाई हो बधाई... गर्भकल्याणक की... बधाई हो।

जन्मकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) बहे अमृत धार

बहे अमृत धार देखो सर ररर......
नाचे धरती सारी देखो सर ररर......
यहाँ गूँजे जयकारा देखो सर ररर......
तेरे जन्म महोत्सव में, कि भव्यों की भीड़ आ गयी,
आ गयी कि भव्यों.......।।टेक।।

तीन लोक के दिनकर जन्में, कुण्डलपुर का क्या कहना।
सारी नगरी बनी दुल्हनियाँ, मानो पहना है गहना॥
तेरा दर्शन पाने को ऽऽऽ कि भव्यो..... ॥1॥

वर्धमान है नाम तुम्हारा चंद्र छवि का क्या कहना।
त्रिशला देवी मात तुम्हारी, आज हुआ पूरा सपना॥
तेरा दर्शन पाने को ऽऽऽ कि भव्यो..... ॥2॥

आदि प्रभु का पंचकल्याणक, अलीगढ़ नगर का क्या कहना।
मुमुक्षुओं का लगा है मेला, कहान गुरु का क्या कहना॥
तेरा दर्शन पाने को ऽऽऽ कि भव्यो..... ॥3॥

(2) आया अवसर आया सुहाना

आया अवसर आया सुहाना कि देखो जन्मोत्सव है मनाना।
कि (3) नगरी में वीर जन्मे हैं, त्रिशला देवी लाल जन्मे हैं।।टेक।।

रत्नों की वर्षा करके, सौधर्म हर्षाये
इन्द्र-इन्द्राणी मिलकर मंगल नृत्य रचावे
देखो सारी नगरी की छटा ही निराली है,
घर-घर में देखो आज बाजत बधाई है;
अवसर आया सुहाना सुहाना सुहाना।।1।।

पांडुक शिला ले जाकर, मंगल न्हवन रचाये,
एक हजार आठ कलशों से, मंगल कलश ढुराये।
चारों ही दिशाओं में खुशियाँ ही छाई हैं,
घर-घर में देखो आज बाजत बधाई है,
अवसर आया सुहाना सुहाना सुहाना।।2।।

(3) जब जन्म तीर्थंकर

जब जन्मे तीर्थंकर, तब सारी धरती पर,
इक हर्ष छाया, कि चारों ओर हर्ष छाया;
जन-जन के अंतर में, हम सबके अंतर में,
इक हर्ष छाया, कि चारों ओर हर्ष छाया।।टेक।।

थी नरकों में भी शांति पड़ी,
जिस पल प्रभुजी ने जन्म लिया।
सारा भूमण्डल नाच उठा, देवों ने जयजयकार किया
फिर सारी धरती पर, और सारे अंबर में
इक हर्ष छाया कि, चारों ओर हर्ष छाया।।1।।

सौधर्म हजारों नेत्र धरे, फिर बाल प्रभु की छवि निरखे।
रत्नों की वर्षा स्वर्ग से हो, और इन्द्र इन्द्राणी नृत्य करें
फिर सारी धरती पर, और सारे अंबर में

इक हर्ष छाया कि, चारों ओर हर्ष छाया ॥2 ॥

घर-घर मे बधाई-बजने लगी, दुल्हन-सी नगरी सजने लगी।
देवो ने मंगलगान किया, फिर बाल प्रभु का न्हवन किया।
फिर सारी धरती पर, और सारे अंबर में
इक हर्ष छाया कि, चारों ओर हर्ष छाया ॥3 ॥

(4) लिया प्रभु अवतार....

लिया प्रभु अवतार, जय जयकार-3,
त्रिशला नन्द कुमार जय जयकार-3 ॥टेक ॥

आज खुशी है-2, तुम्हें खुशी है, हमें खुशी है
खुशियाँ अपरम्पार........... ॥1 ॥

आओ हम सब प्रभु गुण गावें, सत्य अहिंसा ध्वज लहराए।
जो जग मंगलकार........... ॥2 ॥

पुण्य योग सौभाग्य हमारा, सफल हुआ है जीवन सारा
मिले मोक्ष दातार........... ॥3 ॥

मंगल उत्सव आज है आया, 'समयसार' का पाठ रचाया।
हो रही जय जयकार........... ॥4 ॥

(5) बाजे कुण्डलपुर में बधाई....

बाजे कुण्डलपुर में बधाई!
कि नगरी में वीर जन्मे, महावीर जी ॥टेक ॥

जागे भाग्य है त्रिशला माँ के, त्रिभुवन नाथ जन्मे,
शुभ घड़ी जन्म की आई, कि स्वर्ग से देव आ गए,
बाजे.................... ॥1 ॥

तेरा न्हवन करें मेरु पर, कि इन्द्र जल भर लाए,
तेरे पलने में हीरे मोती, कि डोरियों पे लाल लटकें।
बाजे.................. ॥2॥

तुझे देवियाँ झुलावे पलना, कि मन में मगन हो के,
अब ज्योति है तेरी जागी, कि सूर्य चंद्र छिप जाए।
बाजे.................. ॥3॥

तेरे पिता लुटाए मोहरें, खजाने सारे खुल जाएँ,
हम दर्श को तेरे आए, कि पाप सब कट जाएँ।
बाजे.................. ॥4॥

(6) प्रभु जी पधारे म्हारे आँगणे...

प्रभु जी पधारे म्हारे आँगणे... 2
बहें आनन्द... बहे आनन्द रस की बयार...
आज सारी नगरी में.....2 ।।टेक ।।

त्रिभुवन माता धन्य तुम... 2
जायों ज्ञायक... जायों ज्ञायक, पुत्र महान...
झूम उठी नगरी रे... ॥1॥

घर घर मंगलाचार हो... 2
लियो अन्तिम... लियो अन्तिम, जन्म महान....
आज इस नगरी में.... ॥2॥

सब ॠतु पुष्पित हो गई... 2
उड़े ज्ञान... उड़े ज्ञान, गुणों की गुलाल....
आज इस नगरी में.... ॥3॥

वसुधा झूमे हर्ष से... वसुधा झूमे हर्ष से।
लख बाल... लख बाल, प्रभु मनहार....
सज गई नगरी रे.... ॥3॥

(7) माता वामा जायो प्यारा...

माता वामाा जायो प्यारा, प्यारा ललना
अंतिम भवधारी झूले पलना
झूले पलना देखो पारस ललना-2।
तीन-तीन ज्ञानधारी शोभे ललना
परिणति प्रभु जी की क्या कहता-2॥टेक॥

दश दिश फैली खुशियाँ, बाजे शहनाई रे।
अश्वसेन नृप द्वारे, गावत बढ़ाई रे॥
हिल-मिल......... नृत्य करे सारी सखियाँ।
जन्म कल्याणक की शुभ घड़ियाँ॥1॥

सुरपति उत्सव कीनो, अद्भुत नजारा है।
त्रिभुवन की शोभा न्यारी, होवे जयकारा है॥
भावना के......... रंग सजी सारी नगरियाँ।
आनंद रस की, झलकी है गागरिया॥2॥

रत्नत्रय से शोभित, प्रभु जी सुहावना।
जिन शासन की होगी मंगल प्रभावना॥
ज्ञान स्वभावी......... आतम मेरे मन में आ गया।
निज कल्याण का, अवसर आ गया॥3॥
माता वामा.............

(8) म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी...

म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी॥टेक॥

वामादेवी माता जी ललना जायो, तीर्थेश्वर सुत अश्वसेन पायो।
दुल्हन सी आज लागे देखो अयोध्यापुरी - 2
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी...॥1॥

अन्तिम जन्म लिया प्रभु तुमने... – 2
स्वानुभूति रमणी का वरने, फिर नरकों में पल भर देखो शान्ति पड़ी॥
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी... ॥2॥

सुरपति ऐरावत ले आये – 2
शचि इन्द्राणी मंगल गाये, कलशा सजा ले आये क्षीर नीर भरी॥
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी... ॥3॥

रत्नमयी पलने में झूले – 3
निज वैभव के रत्न न भूले, तीर्थेश्वर नाथ महिमा तुम्हरी जग में बड़ी।
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी... ॥4॥

(9) उड़ उड़ रे उड़ उड़ रे...

उड़ उड़ रे उड़ उड़ रे उड़ उड़ रे उड़ उड़ रे
उड़ उड़ रे म्हारी ज्ञान चुनरियाँ
तारणहारा प्रभुजी घर आवे, तारणहारा प्रभुजी घर आवे रे आवे – 2

स्वर्ग पुरी से प्रभु जी पधारे हो ऽऽ... जग को मुक्ति मार्ग बताये।
कण कण में... कण कण में छाई है खुशियाली॥1॥
तारणहारा प्रभुजी घर आये... रे आवे तारणहारा प्रभुजी घर आवें।–2

समकित सुगन्धी दश दिश महके होऽऽ... चैतन्य परणति पंछी चहके।
दुल्हन सी... दुल्हन सजी नगरी प्यारी॥2॥
तारणहारा प्रभुजी घर आये... रे आवे तारणहारा प्रभुजी घर आवें।–2

त्रिभुवनपति की शोभा न्यारी होऽऽ... अन्तरपरणति निजरस पागी।
मुक्ति का... मुक्ति का मार्ग पाये नर नारी॥3॥
तारणहारा प्रभुजी घर आये... रे आवे तारणहारा प्रभुजी घर आवें।–2

(10) त्रिभुवन के नाथ प्रभु झूल रहे पलना...

त्रिभुवन के नाथ प्रभु झूल रहे पलना.... 2
अन्तर आनन्द में मुस्काय रहे ललना।
आनन्द आनन्द छाय रहो रे... मंगल सुअवसर आय गयो रे... 2

निज चैतन्य महाहिमगिरि से, बहता अनुभव रस झरना।
निज अन्तर में केलि करते, अब न रहा कुछ भी करना॥
चैतन्य रस का रसिया है ललना...
अनुभव के झूले में झूल रहे पलना... आनन्द आनन्द.... ॥1॥

ज्ञान मात्र के अनुभव कर्ता, प्रतिक्षण ले ज्ञायक का स्वाद।
निज स्वभाव सीमा में बसते, तजकर पर संग वाद विवाद॥
ज्ञायक की धुन नित ज्ञायक की भावना...
ज्ञायक स्वभाव ही लगता सुहावना... आनन्द आनन्द... ॥2॥

निजपद की महिमा जिनके घट, पर पद जिन्हें न भाते है।
कामदेव चक्री पद तज वह, मुक्तिरमा वर जाते हैं॥
भव का अभाव हो एक यही भावना...
विषयों के सुख की रही न चाहना... आनन्द आनन्द... ॥3॥

(11) मङ्गल ये अवसर आंगण आयो...

मङ्गल ये अवसर आंगण आयो जी, प्रभुजी आयेंगे हमारी नगरी... 2
भावों की चुनर ओढ आई शची, सौधर्म आये अलीगढ़ नगरी... 2

हर्षित है वसुधा सारी खुशियाँ अपार है।
भक्ति में झूम रहा इन्द्र परिवार है।
सुरपति उत्सव कीना, शचि गीत गाये।
मङ्गलकारी प्रभु महोत्सव मनायें...
श्रद्धा सुमनों से सजी गई सिद्धपुरी... ॥1॥

प्रभुजी आयेंगे हमारी नगरी...

रोम रोम हर्षे है प्रभु आगमन से
पुष्प रतन वर्षा सुरपति करते।
भक्ति के रंग डूबे देखो नर नार है।
गूंज उठा नभ सारा प्रभु जयकार से...
आनन्द अमृत की छलक रही गगरी ॥2 ॥
प्रभुजी आयेंगे हमारी नगरी...

आत्मीय आमन्त्रण मधुवन से आया।
भावी ऋद्धि को सिद्ध प्रभु ने बुलाया ॥
निज प्रभुता को लख प्रभु बन जाओ।
तज मोह निद्रा चेतन अब जाग जाओ ॥
पुण्यों के फल में पाई शुभ ये घड़ी... ॥3 ॥
प्रभुजी आयेंगे हमारी नगरी...

(12) पंखिडा ओऽऽऽ पंखिडा.....

पंखिडा ओऽऽऽ पंखिडा..... 2
पंखिड़ा रे उड़ के आओ कुण्डलपुर में;
तीर्थङ्कर जन्मे आज भरतक्षेत्र में ॥ टेक ॥

माता त्रिशला ने देखे थे सोलह सपने,
उनका फल बताया सिद्धार्थराज ने;
तेजवान बुद्धिमान लाल होएगा,
ज्ञानवान तीर्थङ्कर बाल होएगा ॥2 ॥

सिद्धार्थराज के द्वार बाजती बधाई है,
प्रथम दर्शन को शची इन्द्राणी आई है;
इन्द्र-इन्द्राणी आये आज नगर में,
खुशियाँ अपार छाईं नगर-नगर में ॥2 ॥

प्रभु आये यहाँ अच्युत विमान से,
यह बालक शोभित सम्यक्त्व रिद्धि से;
मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान है,
सम्यक्दर्शन ज्ञान रत्न भी महान है ॥3 ॥

प्रभु पूरी करेंगे यहाँ आत्म साधना,
अब धारण करेंगे कभी पुनर्जन्म ना;
वीतरागभाव से जिनराज बनेंगे,
चिदानन्द चैतन्यराज वरेंगे ॥4 ॥

(13) नाचे रे इन्दर देव रे......

नाचे रे इन्दर देव रे... नाचे रे इन्दर देव रे...
जन्म कल्याणक की बज रइ बधैया, मुक्ति में अब ना देर रे;
नाचे रे इन्दर देव रे ॥ टेक ॥

शिवादेवी के गर्भ में आये, देखो जी नेमिकुमार रे;
समुद्रविजय जी फल बतावें, होवे खुशियाँ अपार रे।
नाचे रे इन्दर देव रे ॥1 ॥

शिवादेवी ने ललना जायो, जायो जी नेमिकुमार रे;
समुद्रविजय जी मुहरें लुटाये, देखो दोई-दोई हाथ रे।
नाचे रे इन्दर देव रे ॥2 ॥

देव-देवियाँ स्वर्ग से आये, मन में खुशियाँ अपार रे;
छप्पन कुमारी मङ्गल गावें, गावें मङ्गलाचार रे।
नाचे रे इन्दर देव रे ॥3 ॥

(14) दिन आयो दिन आयो...

दिन आयो-दिन आयो-दिन आयो,
आज जन्मकल्याणक दिन आयो ॥ टेक ॥

झूमे आज नर-नारी ऐसे हरषायें,
मारो तन मनवा प्रभु के गुण गाये;
रंग लाग्यो - रंग लाग्यो - रंग लाग्यो,
थारी भक्ति में म्हारों प्रभु रङ्ग लाग्यो ॥1 ॥

तन भीगे, मन भीगे, भीगे मोरो आतम,
प्रभु ने बतायो आतम परमातम;
रंग लाग्यो - रंग लाग्यो - रंग लाग्यो,
थारी भक्ति में म्हारों प्रभु रंग लाग्यो ॥2 ॥

सोलह सपने माँ ने देखे,
उनका फल राजा से पूछा;
रानी तेरे गर्भ से पुत्र जन्म लेगा,
तीन लोक का नाथ बनेगा।
हरषायो हरषायो हरषायो माता
शिवादेवी का मन हरषायो ॥3 ॥

सौरीपुर में जन्म हुआ है तीन भुवन आनन्द हुआ है;
इन्द्र-इन्द्राणी मिल खुशियाँ मनावें,
मङ्गलकारी गीत सुनावें।
फल पायो फल पायो फल पायो
शिवादेवी माता ने शुभ फल पायो ॥4 ॥

(15) बधाई आज मिल गाओ...

बधाई आज मिल गाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं-2
बनादो गीत मङ्गलमय, यहाँ महावीर जन्मे हैं ॥ टेक ॥

बिछा दो चाँदनी चन्दा, सितारो नाचते आओ;
सुनहरा थाल भर ऊषा, प्रभाकर आरती लाओ;
सुस्वागत साज सजवाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं ॥1 ॥

लतायें तुम बलैयां लो, हृदय के फूल हारों से;
तितलियाँ रङ्ग बरसाओ, बहारो की बहारों से;
मुबारकवाद अलि गाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं॥2॥

उमड़कर गंगा यमुना तुम, चरण प्रक्षाल कर जाओ;
अरी धरती उगल सोना, धनद सम कोष भर जाओ;
जगत् आनन्द-घन छाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं॥3॥

सफल हो आगमन इनका, हमें सौभाग्य स्वागत का;
सुखद जिनराज के दर्शन, इष्ट साधर्मी सज्जन का;
मङ्गलाचार नित गाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं॥4॥

ऐरावत साथ लेकर, स्वयं ही इन्द्र आते हैं;
हजारो नेत्र लखकर भी, नहीं वे तृप्ति पाते हैं;
प्रभु गुण-गान मिल गाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं॥5॥

(16) आज तो बधाई राजा...

आज तो बधाई राजा नाभि के दरबार में;
नाभि के दरबार में नाभि के दरबार में॥ टेक॥

मरुदेवी ने ललना जायो, जायो ऋषभकुमारजी;
अयोध्या में उत्सव कीनो, घर-घर मङ्गलाचारजी॥1॥

हाथी दीना घोड़ा दीना, दीना रथ भण्डारजी;
नगर सरीखा पट्टन दीना, दीना सब श्रृंगारजी॥2॥

घन घन घन घन घण्टा बाजे, देव करें जयकारजी;
इन्द्राणी मिल चौक पुरावे, भर-भर मूतियन थालजी॥3॥

तीन लोक में दिनकर प्रगटे, घर-घर मङ्गलचारजी;
केवल कमला रूप निरंजन, आदीश्वर महाराजजी॥4॥

हाथ जोड़कर मैं करूँ विनती, प्रभुजी को चिरकालजी;
नाभिराजा दान देवें, बरसे रतन अपारजी॥5॥

(17) सुरपति ले अपने शीश...

सुरपति ले अपने शीश, जगत के ईश गये गिरिराजा;
जा पांडुक शिला विराजा ॥ टेक ॥

शिल्पी कुबेर वहाँ आकर के, क्षीरोदधि का जल लाकर के;
रचि पैडि ले आये, सागर का जल ताजा,
फिर न्हवन कियो जिनराजा ॥1 ॥

नीलम पन्ना वैडूर्यमणी, कलशा लेकर के देवगणी;
इक सहस आठ कलशा लेकर नभ राजा,
फिर न्हवन कियो जिनराजा ॥2 ॥

वसु योजन गहराई वाले, चहुँ योजन चौड़ाई वाले;
इक योजन मुख के कलश ढुरे जिनमाथा,
नहीं जरा डिगे शिशुनाथा ॥3 ॥

सौधर्म इन्द्र अरु ईशाना, प्रभु कलश करें धर युग पाना;
अरु सनत्कुमार महेन्द्र, दोय सुरराजा,
शिर चमर ढुरावें साजा ॥4 ॥

फिर शेष दिविज जयकार किया, इन्द्राणी प्रभु तन पोंछ लिया;
शुभ तिलक दृगांजन शची कियो शिशुराजा,
नाना भूषण से सजा ॥5 ॥

ऐरावत पुनि प्रभु लाकर के माता की गोद बिठा करके;
अति अचरज ताण्डव नृत्य कियो दिविराजा,
स्तुति करके जिनराजा ॥6 ॥

चाहत मन मुन्नालाल शरण वसु कर्म जाल दुठ दूर करन;
शुभ आशीषमय वरदान देहु जिनराजा,
मम न्हवन होय गिरिराजा ॥7 ॥

(18) झुलाय दियो पलना...

झुलाय दियो पलना, धीरे-धीरे...2 ॥ टेक ॥

झिलमिल मोती झालर झूमे, मैया ललना का मुखड़ा चूमे,
मुस्काय रहे ललना धीरे-धीरे ॥1 ॥

त्रिशला माता पलना झुलावे, सिद्धारथ नृप मोती लुटाये;
सो जाए रे ललना धीरे-धीरे ॥2 ॥

चन्दन का पलना रेशम की डोरी, रतन जड़े हैं चारों ओरी;
उनसे किरणें निकलना धीरे-धीरे ॥3 ॥

मङ्गल गीत गये सुरनारी, बलि-बलि जावे आज पुजारी;
भवदधि से तरना धीरे-धीरे ॥4 ॥

(19) मेरा पलने में झूले ललना...

मेरा पलने में झूले ललना... मेरा पलने में ॥ टेक ॥

स्वर्णमयी अरु रत्न जड़ित यह स्वर्गपुरी से आया है;
इस पलने में बैठ झूलने सुरपति मन ललचाया है;
किन्तु पुण्य है नेमिकुंवर का... इसमें शोभे ललना ॥1 ॥

बड़े प्यार से आज झुलाऊँ, अपने प्यारे लाल को;
सप्त स्वरों से गीत सुनाऊँ, तीर्थङ्कर सुत बाल को ;
शुद्ध बुद्ध आनन्द कन्द में... अनुभव करता ललना ॥2 ॥

तन-मन झूमे पिताश्री का, अवसर है आनन्द का;
सोच रहे हैं पुत्र हमारा, रसिया आनन्दकन्द का;
ज्ञानानन्द झूले में झूले... देखो मेरा ललना ॥3 ॥

देवों के संग क्रीड़ा करता, सब झूले आनन्द में;
किन्तु पुत्र की अन्तर-परिणति, झूले परमानन्द में;
गुणस्थान षष्टम-सप्तम में... कब झूलेगा ललना ॥4 ॥

अन्तर के आनन्द में झूले, जाने ज्ञान स्वभाव को;
मुझसे भिन्न सदा रहते हैं, पुण्य-पाप के भाव तो;
भेदज्ञान की डोरी खीचें... देखो माँ का ललना॥5॥

ज्ञान मात्र का अनुभव करता, रमे नहीं परज्ञेय में;
दृष्टि सदा स्थिर रहती है, चिदानन्दमय ध्येय में;
निज अन्तर में केलि करता... देखो मेरा ललना॥6॥

(20) आज नगरी में जन्मे आदिनाथ,..........

आज नगरी में जन्मे आदिनाथ, सुन सुन मेरे भैया।
चल भव सागर के तीर - 2 अब मिल गई नैया॥
आदीश्वर का जन्म हुआ है, घर घर मंगल छाया...
आज नगरी में...........

सौधर्म इन्द्र भी आया है, और इन्द्राणी भी आई है... हो ऽ ऽ ऽ ऽ
क्या रूप सलौना देखा, तो अखियाँ हजार बनाई है...
नर नारी सब मंगल गावें-2 हाथ से लेय बलैयां
आज नगरी में जन्मे आदिनाथ, सुन सुन मेरे भैया... आज नगरी...॥1॥

ऐरावत हाथी पर चढ़कर, पाण्डुक शिला ले जायेंगे। हो ऽ ऽ ऽ ऽ
क्षीर सागर के निर्मल जल से, अभिषेक प्रभु का कराएंगे... 2
फूली नहीं समाये मन में-2 आज तो मरुदेवी मैया... आज नगरी...॥2॥

जन्म जगत् में सबका निश्चित मरना होता हो ऽऽऽऽ-2
कल्याणक जिनका होता, कभी न जीना मरना होता-2
भव से पार लगाने वाला, मिला खिवैया... आज नगरी...॥3॥

(21) बधाई गाओ रे! ...अयोध्या चालो रे....

बधाई गाओ रे! ...अयोध्या चालो रे...आ हा....
जन्मे हैं ऋषभ कुमार कि मंगल गावो रे ऽ ऽ ऽ ऽ
कि मंगल गावो रे ऽ ऽ ऽ ऽ।टेक॥

नगर अयोध्या सजी हुई है, मंगल तोरण द्वारे...
रंग बिरंगी झल्लरियों से, स्वर्ग को लाज है आवे....2
दशोंदिशायें आनन्दित है.......2
अद्भुत शोभा पावै। बधाई गाओ रे..... ॥1 ॥

तीन लोक में खुशियां छाई, नारकी भी उल्लासे...
उर्ध्व लोक भी मध्य लोक में, आनन्द रस बरसावे...2
मरुदेवी फूली न समावे... 2
नाभिराय मुसकाये... ॥ बधाई गाओ रे.... ॥2 ॥

आज ऋषभ का जन्म हुआ है, मुक्ति का मार्ग खुलेगा।
भव से पार लगाने वाला, रत्नत्रय हमें मिलेगा... 2
केवल ज्ञान की रश्मियों से,... 2
निज के संग रहेगा...........। बधाई गाओ रे.... ॥3 ॥

प्रभु निज चैतन्य साधना में, परिपूर्णलीन होवेंगे।
निज स्वभाव के साधन से, वे मुक्ति नार वरेंगे।
एक मात्र ध्रुव धाम आत्मा,............2
जिन शासन का सार ॥ बधाई गाओ रे.... ॥4 ॥

(22) इन्द्र नाचे तेरी भक्ति....

इन्द्र नाचे तेरी भक्ति में छनन छनन 2
छन छनन छनन तुं तनन तनन
इन्द्र नाचे तेरी भक्ति में छनन छनन ॥टेक ॥

तीन प्रदिक्षण प्रभु की लगा के
शचि देख हरषाई...
बाल प्रभु सीने से लगे, बजी ममता की शहनाई...
इन्द्राणी की पायल बाजे झनन झनन
इन्द्र नाचे.... ॥1 ॥

बाल प्रभु के सुरपति निरखे लोचन सहस बनाये...
नर-नारी भी देख प्रभु को, हिये न हर्ष समाये
पुण्य बढ़े और पाप का होवे हनन हनन
इन्द्र नाचे.... ॥2॥

सनत कुमार माहेन्द्र इन्द्र भी चौसठ चंवर दुरावे...
शेष शुक्र के जयकारे से गगनाम्बर गुंजावे
मन्द सुगधित पवन बह रही सनन सनन
इन्द्र नाचे.... ॥3॥

क्षिरोदधि से कलश इन्द्र ने हाथों हाथ भराये...
पाण्डु शिला पर प्रभु विराजे चन्द्र सूर्य शर्माये
स्वर्ग लोक से घंटे बाजे घनन घनन
इन्द्र नाचे.... ॥4॥

(23) छोटी-2 बइयाँ....

छोटी-2 बइयाँ घुंघराले बाल-2
छोटो सो-2 मरुदेवी तेरो लाल
छोटी............ ।टेक।

ऐरावत हाथी मतवाली चाल—2
ऊपर से-3 बैठो माता तेरो लाल
छोटी........... ॥1॥

ऊँचे-2 पर्वत ऊँचे-2 साल—2
ऊपर से -3 नहावे माता तेरो लाल
छोटी........... ॥3॥

अष्ट कुमारियों की छम-3 चाल—3
झूला-3 झूले माता तेरो लाल
छोटी........... ॥3॥

छोटे-2 पइयाँ छम-2 चाल—2
बड़ो ही-3 नटखट माता तेरो लाल
छोटी........... ॥4 ॥

(24) ऋषभ पधारे भैय्या .....

ऋषभ पधारे भैय्या आज, बाजे रे बाजे शहनाई-2
म्हारा प्रभुजी अयोध्या वाला, मरुदेवी का प्यारा 2 लाल
गाओ - रे गाओ सब भाई ।।टेक ॥

आदि प्रभु आदि तीर्थंकर, स्वर्गों से पधारे है आज
नाचो रे नाचो सब भाई ॥1 ॥

नाभिराय राजा के नंदन, वन्दन शत शत बार
जय-जय बोलो सब भाई ॥2 ॥

म्हारा प्रभुजी अन्तरदृष्टि, सर्वज्ञ अरु वीतराग
बजाओ भाई शहनाई ॥3 ॥

आदि प्रभुजी की मनहर मूरत, समवशरण आयो आज
जयकार करो सब भाई ॥4 ॥

देव-देवियां रत्न बरसावे, केशर की छोड़ो पिचकारी
आओ रे आओ सब भाई ॥5 ॥

धन्य हो गये ते परमाणु जिन, प्रभु की देह रचाई
नाचो रे नाचो सब भाई ॥6 ॥

देव दुदुंभी स्वर्गों में बाजे, हमने धरती पे धूम मचाई
जय-जय बोला सब भाई ॥7 ॥

(25) देखा मैंने त्रिशला को लाल...

देखा मैंने त्रिशला को लाल सोने के पलने में।
सोने के पलने में, मणियों के पलने में।।देखा.. ।।
मैया तेरे ललना की अजब की बात।
सुन्दर ज्ञानी मुखड़ा तीर्थंकर जैसे हाथ।।देखा... ।।टेक ।।

एक अर्ध रात्रि को हाँ जी।
मैया ने देखे हाँ जी।
उन सपनों का फल हाँ जी।
क्या होगा जग में हाँ जी।
एक बालक होगा हाँ जी।
दीनों का पालक हाँ जी।
देखा मैंने त्रिशला का लाल सोने के पहले में, सोने के पलने में... ।।1 ।।

फिर वो क्या होगा हाँ जी।
एक केवल धारक हाँ जी।
मैया का लाला हाँ जी।
सबका रखवाला हाँ जी।
जो भी देखेगा हाँ जी।
हो जाये मतवाला हाँ जी।
देखा मैंने त्रिशला का लाल सोने के पलने में, सोने के पलने में... ।।2 ।।

कुंडलपुर वासी हाँ जी।
वो चरम शरीरी हाँ जी।
इस नश्वर जग को हाँ जी।
छोड़ेगा एक दिन हाँ जी।
निधि की तैयारी हाँ जी।
महलों के अन्दर हाँ जी।
देखा मैंने त्रिशला का लाल सोने के पलने में, सोने के पलने में... ।।3 ।।

(26) आया जन्मकल्याणक महान....

आया जन्मकल्याणक महान, हिल मिल नृत्य करो ॥ टेक ॥

इन्द्र कुबेर स्वर्ग से आये, हीरा रत्न पुष्प बरसाये;
त्रिशला माँ के अँगना में आज, हिल मिल नृत्य करो ॥1 ॥

निरखत प्रभु छवि मन हरषाये, इन्द्र ने नेत्र हजार बनाये;
गाओ सब मिलकर मङ्गलगान, हिल-मिल नृत्य करो ॥2 ॥

भाई भी आओ बहनों भी आओ, जन्मकल्याणक महोत्सव मनाओ;
करो आतम का अब कल्याण, हिल-मिल नृत्य करो ॥3 ॥

(27) आनंद अंतर मा आज न.......

आनंद अंतर मा आज न समाये........2
जनमे ऋषभकुमार खुला मुक्ति का द्वार।
तिहुं लोक में आनंद छाया.... ।टेक ॥

स्वर्गपुरी से देवगति तज प्रभु ने नरतन पायो।
धन्य धन्य मरूदेवी माता तीर्थङ्कर सुत जायो॥
इन्द्र नगरी माँ आये, मंगल उत्सव रचाये......
सारी धरती दुल्हन सी सजी जाये...आनंद अंतर मा आज न ॥1 ॥

सोलह सपने मां ने देखे, मन में अचरज भारी।
नाभिराय से फल जब पूछा, उपजा आनंद भारी॥
तीनों लोकों का नाथ, तेरे गर्भ में मात.............
अनुभूति में दर्शन पाये.............आनंद अंतर मा आज न ॥2 ॥

अंतिम जन्म लिया जब तुमने, सुरपति द्वारे आये।
नेत्र हजार निहारे प्रतिक्षण, तृप्त नहीं हो पाये॥
गीत सुरबाला गायें, शची चौक पुराये.........
नरकों में भी शान्ति छाये..........आनंद अंतर मा आज न ॥3 ॥

इस युग के प्रथम जिनेश्वर, अंतिम भव को धारे।
स्वयं तिरे भवसागर से और, हमको पार उतारे॥
सब मिलकर के आये, प्रभु दर्शन को पाये......
प्रभुता निज की पा जायें........ आनंद अंतर मा आज न॥4॥

(28) महिमा कही न जाए मुख से...

महिमा कही न जाए मुख से ऐसा बना है पलना।
भाग्य जगे हैं उन जीवों के जो आज झुलाये पलना॥ टेक॥

स्वर्गपुरी से आया है देखो सुन्दर पलना,
पुण्य उदय से उन भविजन के जो पहले झुलाए पलना,
ऐसा अवसर देखा भैय्या कभी दुबारा न मिलना॥
मिल झुलाओ पलना॥१॥

लेके बलैय्या अपने लाल की माता हर्ष मनावें,
सिद्धारथ जी हर्षित भारी देखो दान लुटावे
माता भी आओ पिता भी आओ सब मिल झुलाओ पलना॥२॥

मंगल कलश सजा के सखिया, मंगल गान सुनावें,
घर-घर देखो, दीप जल रहे भुमियन चौक पुरावें
स्वर्णपुरी सी नगरी सजी है, हमसे वरणी न जाए॥३॥

(29) लिया ऋषभदेव अवतार...

लिया ऋषभदेव अवतार, निरत सुरपति ने कियो आके।
निरत कियो जी आके हर्षा के, प्रभुजी के दश भव को दर्शाके।
सरर सरर सर सारंगी तमूरा बाजे, पोरी पोरी मटका के।।टेक॥

प्रथम प्रकाशी वाने इन्द्रजाल विद्या ऐसी,
आज लों जगत में सुनी न कहीं देखी ऐसी।

आयो वो छबीलो चटकीलो वो मुकुट बंध,
दम्म घेंसी कूंदो मानो आ कूंदो पूनम को चंद॥
मन को हरत गत फरत प्रभु के पद पूजें धरणी को सिर नाके॥१॥

भुजों पै चढ़ाये हैं हजारों देवी-देवा ताने,
हाथों की हथेली पे जमाये हैं अखाड़े ताने।
ता धिन्ना ता धिन्ना किट-किट धिन्ना उनकी प्यारी लागे,
ध्रुमकुट-ध्रुमकुट बाजा बाजे, नाचे प्रभु जी के आगे।
सेवा में रिझावे तिरछी ऐड़ लगावे, उड़ जावे भजन गाके॥२॥

छिन में जा वन्दे वो तो नंदीश्वर द्वीप आप,
पाँचों मेरू वन्दे वो मृदंग पै लगावे थाप।
वन्दे ढाई द्वीप तरेह द्वीप के सकल चैत्य,
पाँचों मेरू वन्दे पूजे आवे नित-नित॥
आवे वो झपट सबही पै दौड़ा लेने, दम करे छम-छम मनमोहन मुस्क्याके॥३॥

अमृत की लागी झड़ी बरसी रतन धारा,
सीरी-सीरी चालें पुन बोलें देव जय-जयकारा।
भर-भर झोली बरसावें फूल दे दे ताल,
महके सुगंध चहके मुचक पड़ ताल॥
जन्मे जिनंद भयो नाभि के आनंद, नयनानंद गये भक्ति बतलाके॥४॥

तपकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) जन-जन को अचरज आयो...

जन-जन को अचरज आयो, नेमी ने रथ मुडवायो;
नेमिकुंवर के परिणामों में, उपशम रस उमड़ायो उमड़ायो ॥टेक॥

नेमिकुंवर दूल्हा बन आये, छप्पन कोटि बराती लाये;
ब्याह को रंग उमड़ायो...... उमड़ायो। जन-जन..... ॥1॥

पशुओं के क्रन्दन को सुनकर, जग की स्वारथ वृत्ति देखकर;
ब्याह का राग नशायो...... नशायो। जन-जन...... ॥2॥

समुद्रविजय अचरज में भारी, पुत्र विवाह की है तैयारी;
रंग में भंग कैसे आयो...... जी आयो। जन-जन...... ॥3॥

राजुल को बाबुल समझाये, बेटी दूजा ब्याह रचावें;
राजुल को नेमी मन भायो...... भायो। जन-जन...... ॥4॥

शोक बहुत राजुल के मन में, किन्तु लगाया चित्त संयम में;
दीक्षा में चित्त रमायो...... रमायो। जन-जन...... ॥5॥

(2) रोम-रोम में नेमिकुंवर...

रोम-रोम में नेमिकुंवर के उपशम रस की धारा;
राग-द्वेष के बन्धन तोड़े, वेश दिगम्बर धारा ॥टेक ॥

ब्याह करन को आये, संग बराती लाये;
पशुओं को बन्धन में देखा, दया सिन्धु लहराये।
धिक्-धिक् जग की स्वारथ वृत्ति, कहीं न सुक्ख लघारा ॥1 ॥

राजुल अति अकुलाये, नौ भव की याद दिलाये;
नेमि कहें जग में न किसी का, कोई कभी हो पाये।
रागरूप अंगारों द्वारा, जलता है जग सारा ॥2 ॥

नौ भव का सुमिरण कर नेमी, आतम तत्त्व विचारे;
शाश्वत् ध्रुव चैतन्यराज की, महिमा चित्त में धारें।
लहराता वैराग्य सिन्धु अब भायें भावना बारह ॥3 ॥

राजुल के प्रति राग तजा है, मुक्ति वधु को ब्याहें;
नग्न दिगम्बर दीक्षा गह कर, आतम ध्यान लगाये।
भव बन्धन का नाश करेंगे, पावें सुख अपारा ॥4 ॥

(3) गिरनारी पर तपकल्याणक...

गिरनारी पर तप कल्याणक, नेमि बनेंगे मुनिराज रे ॥टेक ॥

प्रभुजी बारह भावना भायें, परिणति में वैराग्य बढ़ायें,
हम भी बनेंगे मुनिराज रे ॥1 ॥

शुद्धातम रस को ही चाहे विषय भोग विष सम ही लागें,
राग लगे अंगार रे ॥2 ॥

प्रभुजी वेश दिगम्बर धारें, चेतन की निर्ग्रन्थ निहारें,
बरसे आनन्द धार रे ॥3 ॥

(4) आनन्द अवसर आयो...

आनन्द अवसर आयो, मुनिवर दर्शन पायो,
परम दिगम्बर सन्त पधारे, जीवन धन्य बनायो-बनायो ॥टेक ॥

पुण्य उदय है आज हमारे, नेमीश्वर मुनिराज पधारे;
श्री मुनिवर के दर्शन करके, शुद्ध हुए हैं भाव हमारे।
जीवन सफल बनायो... बनायो ॥1 ॥

वरदत्त राजा हर्षित भारी, आहार दान की है तैयारी;
निराहार चेतन राजा के, अनुभव से है आनन्द भारी।
मुनिवर को पड़गाह्यो... पड़गाह्यो ॥2 ॥

हे स्वामी तुम यहाँ विराजो, उच्चासन पर आप विराजो;
मन-वच-तन आहारशुद्ध है, भाव हमारे अति विशुद्ध हैं।
अपने चरण बढ़ाओ... बढ़ाओ ॥3 ॥

दोष छियालिस मुनिवर टालें, अन्तराय बत्तीसों टालें;
दोषरहित निज के अनुभव से, चतुरगति का भ्रमण निवारें।
तप को निमित्त बनायो... बनायो ॥4 ॥

मुनिवर अब आहार करेंगे, निज चैतन्य विहार करेंगे;
क्षायिक श्रेणी आरोहण कर, मुक्तिपुरी का राज वरेंगे।
निज में निज को रमायो...रमायो ॥5 ॥

(5) विषयों की तृष्णा को...

विषयों की तृष्णा को छोड़, संयम की साधना में,
चल पड़े वीरकुमार ॥
परिग्रह की चिन्ता को तोड़ के निज के चिन्तन में,
रम रहे वीरकुमार ॥ टेक ॥

यह जीव अनादि से, है मोह से हारा,
चहुँगति में भटक रहा, दुःख सहता बेचारा;
कोई नहीं है शरण अतः, आतम की शरणा में,
जाना जगत् असार, चल पड़े वीरकुमार॥1॥

प्रभु चल पड़े वन को, ध्यायें निज चेतन को,
सब राग तन्तु तोड़े, काटें भव बन्धन को;
फिर मोह शत्रु नाशें और क्षायिक चारित्र धारें,
जिसमें है आनन्द अपार, चल पड़े वीरकुमार॥2॥

कर चार घातिया क्षय, प्रगटे चतुष्ट अक्षय,
सारी सृष्टि झलके, परिणति निज में तन्मय;
शाश्वत् शिवपद पायें और अब मुक्तिवधू ब्याहें,
हो भव-सागर पार, चल पड़े वीरकुमार॥3॥

(6) वेष दिगम्बर धार...

वेष दिगम्बर धार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के,
मुक्तिवधू के द्वार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के।टेक॥

पञ्च महाव्रत जामा सजाया, दशलक्षण का सेहरा बंधाया,
चारित्र रथ हो सवार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥1॥

बारह भावना संग बराती, समिति गुप्ति सब हिल मिल गाती,
हर्ष से मङ्गलाचार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥2॥

राग-द्वेष आतिशबाजी छूटी, क्रोध कषाय की लड़िया टूटी,
समता पायल झंकार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥3॥

शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर, होम किया सब कर्म खपाकर
तप तेरा यशगान, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥4॥

शुभ बेला शिव रमणी वरेंगे, मुक्ति महल में प्रवेश करेंगे,
गूँजेगी ध्वनि जयकार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥5॥

(7) संसार लगने लगा....

संसार लगने लगा सब असार, निज ज्ञायक की सुधी आई।
यतियों के मार्ग की महिमा अपार द्वादश अनुप्रेक्षा मन भाई ॥टेक॥

उपशम रस की धारा बहती,
अंतर परिणती ये ही कहती।
जन्ममरण का अंत होयेगा,
अनगारियों का पंथ होयेगा।
लौकांतिक देवों ने की जय-जयकार,
धन्य-मुनि दशा मन भाई ॥1॥

दशों-दिशाओं की चुनरिया,
ओढ़ चले मुक्ति डगरिया।
मुक्ति नगर को चले दिगम्बर,
हर्षित धरा और है अंबर।
स्वर्गों से पुष्पों की वर्षा अपार,
दिगंबर मुद्रा मन भाई ॥2॥

सुरपति शिविका ले आये,
पालकी में प्रभु को बिठाये।
पंचमुष्ठी केशलोंच करके,
वस्त्राभूषण सब तज के।
तिल तुष मात्र न परिग्रह धार,
यथा जात मुद्रा मनभाई ॥3॥

(8) देवों और मानवों में...

देवों और मानवों में चर्चा ये चल पड़ी,
कौन पालकी का हकदार रे... कौन पालकी का हकदार रे ॥ टेक ॥

दिव्य शक्ति के धारी हम हैं, पालकी लेकर आये हम हैं;
सदा निरोगी यौवनमय तन, गगन विहारी यह वैक्रियतन।
पहले हाथ लगायेंगे, पालकी के हम हकदार रे ॥1 ॥

यह तन तो जड़ पुद्गल का है, इसमें भी क्षण-भंगुरता है;
दिव्य-शक्तियाँ भी पुद्गल, की इनमें शक्ति नहीं आतम की।
करो न अब तकरार रे... पालकी के हम हकदार रे ॥2 ॥

वस्त्राभूषण हम ले आये, पन्द्रहमास रतन बरसाये;
पञ्च कल्याणक महामहोत्सव, भूतल पर आ हमीं मनाये।
न्याय से करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे ॥3 ॥

जड़ रत्नों की क्या है महिमा, यह तो तीर्थङ्कर की गरिमा;
पुण्य उदय से ही तुम आओ, क्यों न अन्य का उत्सव मनायो।
मन में करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे ॥4 ॥

समवशरण भी हम ही बनायें, दिव्यध्वनि का योग बनायें;
मोक्ष कल्याणक में भी आयें, पहले पालकी क्यों न उठायें।
क्यों नहीं करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे ॥5 ॥

भव्यजीव के पुण्य उदय से, तीर्थङ्कर का वचन योग है;
क्या तीर्थङ्कर सम हो सकते, क्या संयम धारण कर सकते।
अतः नहीं हकदार रे... पालकी के हम हकदार रे ॥6 ॥

धन्य-धन्य यह मानव जीवन, संयम धारण कर सकते नर;
हे मानव सुर वैभव ले लो, क्षणभर को मानव तन दे दो।
तुम सच्चे हकदार हो... पालकी के तुम हकदार हो ॥7 ॥

(9) वैराग्य भावों का.....

वैराग्य भावों का लेके आधार,
तप संयम से करने शृंगार........
बड़ी ही सुहानी है.......ये मंगल घड़ी।
बड़ी ही सुहानी है.......ये मंगल घड़ी ।।टेक ।।

देह नेह को तजकर, निज शुद्धातम को ध्यावे....
भव समुद्र सिमट कर, निज ज्ञान सिन्धु लहरावे...
राग की आग बुझाई है....
बड़ी ही सुहानी है... ये मंगल घड़ी... ।।1 ।।

द्वादश तप को धरि के, करम धूलिको धो डालेंगे...
मोह तपन को तजिके, शांत सरोवर में अब गाहे...
बारह भावना भाई है...
बड़ी ही सुहानी है ये मंगल घड़ी.... ।।2 ।।

(10) वर्धमान ललना से...

वर्धमान ललना से कहे, त्रिशला माता।
लाल मेरे शादी, क्यों न रचाता ।। टेक ।।

बोले मुस्का के वीरा, सुनो मेरी माई।
कितनी ही बार मैंने, शादियाँ रचाई ।।
शादियाँ रचाई फिर भी होऽऽऽ, पायी नहीं साता।
इसलिए माता.. ।।1 ।।

बोले मुस्का के वीरा, जगत के सहारे ।।
नेमि नाथ सच्चे है, साथी हमारे।
उन मूक प्राणियों को होऽऽऽ रुदन है बुलाता।
इसलिए माता... ।।2 ।।

बोले मुस्का के वीरा, सुनो मेरी माई।
नरभव में पाई हमने, उम्र बहुत थोड़ी।
भव भव का दु:ख मैया होऽऽऽ सहा नहीं जाता।
इसलिए माता... ॥3॥

सुनो मैया आतम का बनके पुजारी।
तोड़ूँगा कर्मों की, जंजीर सारी।
राजपाट वैभव ये होऽऽऽ कुछ न सुहाता।
इसलिए माता... ॥4॥

(11) अन्तर आनन्द के रसिया...

अन्तर आनन्द के रसिया, तीर्थंकर नाथ हमारे।
मंगल मय मंगलकारी, सांचे मित्र हमारे॥
सांचे मित्र हमारे प्रभु जी लागे जग से न्यारे...
अन्तर आनन्द के रसिया।टेक॥

सुरगण बालक रूप धर, प्रभु संग खेले खेल।
अनन्त गुणों को जोड़कर, चली मुक्ति की रेल॥
अरे सिद्धपुरी की सैर को चालो प्रभु संग सारे... ॥1॥

जनम मरण क्षय कारने, लियो है अन्तिम जनम।
निजानन्द में केलि कर मेट दिये सब करम॥
सिद्धों सम साथी पाके जागे भाग्य हमारे.... ॥2॥

तीन ज्ञान संग जनम ले खेले ज्ञान का खेल।
अनुभव के उद्यान में रहती चहल पहल॥
समकित के क्रीड़ावन में निज चैतन्य निहारे.... ॥3॥

ज्ञानकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) जिनवर दरबार तुम्हारा....

जिनवर दरबार तुम्हारा स्वर्गों से ज्यादा प्यारा
जिन वीतराग मुद्रा से परिणामों में उजियारा।
ऐसे तो हमारे भगवन है चरणों में समर्पित जीवन है।।टेक।।

समवसरण के अंदर, स्वर्ण कमल पर आसन,
चार चतुष्टयधारी बैठे हो पद्मासन;
परिणामों में निर्मलता तुमको लखने से आये,
फिर वीतरागता बढ़ती जो भी जिन दर्शन पायें,
ऐसे तो हमारे........... ॥1॥

त्रैलोक्य झलकता भगवन कैवल्य कला में ऐसे,
तीनों ही कालों में कब क्या होगा और कैसे;
जग के सारे ज्ञेयों को, तुम एक समय में जानो,
निज में ही तन्मय रहते, उनको न अपना मानो,
ऐसे तो हमारे........... ॥2॥

दिव्यध्वनि के द्वारा मोक्षमार्ग दर्शाया,
प्रभु अवलंबन लेकर मैंने भी निजपद पाया;
मैं भी तुमसा बनने को, अब भेदज्ञान प्रगटाऊँ,
निज परिणति में ही रमकर अब सम्यक् दर्शन पाऊँ,
ऐसे तो हमारे........... ॥3॥

(2) समवसरण आएँ भक्तों.....

समवसरण आएँ भक्तों की टोलियाँ - 2
सीमंधर के दर्शन करके सभी बोलो - जय सीमंधर ।टेक ॥

चूहा भी आया, बिल्ली भी आई।
शेर भी आया, गाय भी आई॥
सीमंधर के दर्शन करके सभी बोलो - जय सीमंधर ॥1 ॥

समवसरण की छटा निराली।
वहाँ छाई रहती हरियाली॥
सीमंधर के दर्शन करके सभी बोलो - जय सीमंधर ॥2 ॥

चक्रवर्ती को प्रश्न हुआ है।
ये छोटे से जीव कौन हैं ?
सीमंधर ने उत्तर दीना—
भरतक्षेत्र के कुन्दकुन्द हैं॥
सीमंधर के दर्शन करके सभी बोलो - जय सीमंधर ॥3 ॥

(3) घर-घर आनन्द छायो....

घर-घर आनन्द छायो मुनिवर ने केवल पायो ॥ टेक ॥

शुक्लध्यान का दूजा पाया, प्रभु ने आतमध्यान लगाया;
पहले चारित्रमोह विनाशा, सम्यक् चारित्र रत्न को पाया।
चहुँगति दुःख नशायो नशायो ॥1 ॥

मात्र एक अन्तर्मुहूर्त में, ज्ञान-दर्शनावरण नशाया;
तत्क्षण ही निज आत्मवीर्य से, अन्तराय घातिया नशाया।
अनन्त चतुष्टय पायो जी पायो ॥2 ॥

शुक्लध्यान का तीजा पाया, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति सुहाया;
प्रभु ने अद्भुत ध्यान लगाया, काय योग अतिसूक्ष्म रहाया।
आतम रस बरसायो-बरसायो ॥3 ॥

शुक्लध्यान का चौथा पाया, व्युपरतिक्रियानिवृत्ति सुहाया;
प्रभु ने योग निरोध कराया, मन-वच-काय सम्बन्ध नशाया।
शाश्वत सिद्ध पद पायो जी पायो ॥4 ॥

पुण्य उदय है आज हमारे, नेमीश्वर गिरनार पधारे;
आत्मसाधना पूरी करके, प्रभु शाश्वत् शिवधाम पधारे।
सुरपति ने उत्सव मनायो मनायो ॥5 ॥

(4) समवसरण स्तवन

कल्पद्रुम यह समवसरण है, भव्यजीव का शरणागार;
जिनमुख घन से सदा बरसती, चिदानन्दमय अमृत धार।टेक ॥

जहाँ धर्मवर्षा होती वह, समवशरण अनुपम छविमान;
कल्पवृक्ष-सम भव्यजनों को, देता गुण अनन्त की खान।
सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचना करते हैं सुखकार;
निज की कृति ही भासित होती, अति आश्चर्यमयी मनहार ॥1 ॥

निजज्ञायकस्वभाव में जमकर, प्रभु ने जब ध्याया शुक्लध्यान;
मोहभाव क्षयकर प्रगटाया, यथाख्यात चारित्र महान।
तब अन्तर्मुहूर्त में प्रगटा, केवलज्ञान महासुखकार;
दर्पण में प्रतिबिम्ब तुल्य जो, लोकालोक प्रकाशनहार ॥2 ॥

गुण अनन्तमय कला प्रकाशित, चेतन-चन्द्र अपूर्व महान;
राग आग की दाह रहित, शीतल झरना झरता अभिराम।
निज वैभव में तन्मय होकर, भोगें प्रभु आनन्द अपार;
ज्ञेय झलकते सभी ज्ञान में, किन्तु न ज्ञेयों का आधार ॥3 ॥

दर्शन ज्ञान वीर्य सुख से हैं, सदा सुशोभित चेतनराज;
चौतिस अतिशय आठ प्रातिहार्यों, से शोभित हैं जिनराज।
अन्तर्बाह्य प्रभुत्व निरखकर, लहें अनन्त आनन्द अपार;
प्रभु के चरण-कमल में वन्दन, कर पाते सुख शान्ति अपार ॥4 ॥

(5) ॐकारमयी वाणी तेरी...

ॐकारमयी वाणी तेरी, जिनधर्म की शान है;
समवसरण देख के, शान्त छवि देख के, गणधर भी हैरान है॥ टेक॥

स्वर्ण कमल पर, आसन है तेरा, सौ इन्द्र कर रहे गुणगान है;
दृष्टि है तेरी, नासा के ऊपर, सर्वज्ञता ही तेरी शान है।
चाँद सितारों में, लाख हजारों में तेरी यहाँ कोई मिशाल नहीं है;
चार मुख दिखते, समवसरण में, स्वर्ग में भी ऐसा कमाल नहीं है।
हमको भी मुक्ति मिले बस इतना अरमान है॥1॥

सारे जहाँ में फैली ये वाणी गणधर ने गूँथी इसे शास्त्र में;
सच्ची विनय से श्रद्धा करे तो ले जाती है मुक्ति के मार्ग में।
कषायें मिटाये, राग को नशाये, इसके श्रवण से ये शान्ति मिली है;
सुख का ये सागर, आत्म में रमणकर, आतम की बगिया में मुक्ति खिली है।
हम सब भी तुमसा बनें - ऐसा ये वरदान है॥2॥

मैं हूँ त्रिकाली, ज्ञान स्वभावी, दिव्यध्वनि का यही सार है;
शक्ति अनन्त का, पिण्ड अखण्ड, पर्याय का भी ये आधार है।
ज्ञेय झलकते हैं, ज्ञान की कला में, कैसा ये अद्‌भूत कलाकार है;
सृष्टि को पीता, फिर भी अछूता, तुझमें ही ऐसा चमत्कार है।
जग में है महिमा तेरी गूँज रहा नाम है॥3॥

(6) आदि जिनन्दा-2.....

आदि जिनन्दा-2 आदि जिनन्दा-2
दिव्य ध्वनि दुर्गति नाशिनी
स्व और पर में भेद प्रकाशिनी
जन्म-मरण भयभीत है तुमसे आ ऽ ऽ ऽ ऽ
अमर करे तेरी पूजा, आदि................॥टेक॥

अम्बर में लगता दरबार
भव्य करे तेरी जय जयकार
परम शान्त है मुद्रा तेरी आ ऽ ऽ ऽ
तुझसा नहीं कोई दूजा, आदि................ ॥1 ॥

पावन निश्चय नय व्यवहार
स्याद्वाद वाणी भव पार
अमर तत्व चैतन्य सभी का आ ऽ ऽ
अद्‌भुत श्री जिन की महिमा
आदि जिनन्दा................ ॥2 ॥

(7) अनन्त चतुष्टयवंत हुये......

अनन्त चतुष्टयवंत हुये, कैवल्य भानु उदित हुआ
प्रभु मुक्ति रमा के कंत हुऐ, अब ज्ञान कल्याणक आ गया ।।टेक ।।

समवशरण में स्वर्णकमल पर, पद्मासन विराजित हैं,
ओंकारमयी वाणी सुनने, बारह सभाऐं सुशोभित हैं,
प्रभु अतिशय-2 महिमावंत हुए, अब ज्ञान कल्याणक आ गया,
अनंत चतुष्टय.......... ॥1 ॥

चार घातिया कर्म नाश, अरिहंत अवस्था आई है,
ओंकारध्वनि अमृत वर्षा की, मंगल घड़िया लाई हैं,
प्रभु आज-2 श्री अरिहंत हुये, अब ज्ञान कल्याणक आ गया,
अनंत चतुष्टय.......... ॥2 ॥

भूत भविष्यत वर्तमान सब, वर्तमानवत् जान रहे,
कैवल्य कला की महिमा से, किंचित न अपना मान रहे,
केवल ज्ञानी-2 भगवंत हुये, अब ज्ञान कल्याणक आ गया,
अनंत चतुष्टय.......... ॥3 ॥

(8) दिव्यध्वनि वीरा...

दिव्यध्वनि वीरा खिराई आज शुभ दिन,
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम्।।टेक।।
आतम स्वभावं परभाव भिन्नम्
आपूर्णमाद्यंत-विमुक्तमेकम्।।

मेरे प्रभु विपुलाचल पर आये, वैशाखी दशमी को घातिया खिपाये;
क्षण में लोकालोक लखाये, किन्तु न प्रभु उपदेश सुनाये।
वाणी की काललब्धि आई नहीं उस दिन;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम्।।1।।

इंद्र अवधिज्ञान उपयोग लगाये, समवसरण में गणधर न पाये;
इन्द्रभूति गौतम में योग्यता लखाये, वीर प्रभु के दर्शन को आये।
काललब्धि लेकर के आई आज गौतम;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम्।।2।।

मेरे प्रभु ॐकर ध्वनि को खिराये, गौतम द्वादश अंग रचाये;
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सत् समझाये, तन चेतन भिन्न-भिन्न बताये।
भेद-विज्ञान सुहायो आज शुभ दिन;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम्।।3।।

य एव मुक्त्वा नयपक्षपातं, स्वरूपगुप्ता निवसन्ति नित्यम्;
विकल्प जाल च्युत शांतचित्तास्त एव साक्षातमृतं पिबंति।
स्वानुभूति की कला सिखाई आज शुभदिन;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम्।।4।।

(9) सुनकर वाणी जिनवर की...

सुनकर वाणी जिनवर की, म्हारे हर्ष हिये न समाय जी।। टेक।।

काल अनादि की तपन बुझायी, निज निधि मिली अथाह जी।।1।।

संशय भ्रम और विपर्यय नाशा, सम्यग्बुधि उपजाय जी।।2।।

नर भव सफल भयो अब मेरो 'बुधजन' भेंटत पाय जी।।3।।

(10) आनन्द की गगरी छलक छलक जाये...

आनन्द की गगरी छलक छलक जायें,... 2
शान्ति प्रभु के दरश जब पायें ।।टेक ।।

सौम्य शान्त मुद्रा मनभावन, सुख सागर अन्तर लहराये।
तुव चरणों की पूजन का फल, निजपद प्राप्त होय जिनराय॥
मुक्तिरमा को पाये, जग में न आये....
शान्ति प्रभु के दरश जब पायें... 2 ॥1 ॥

सफल हुआ पुरुषार्थ आपका, निजबल से पाया निर्वाण।
यही भावना मेरे उर भी, पाऊँ तुम सम शिव सुख धाम॥
निजगुण रत्नों की झलक दिख जायें....
शान्ति प्रभु के दरश जब पायें... 2 ॥2 ॥

शिवपथ के दिग्दर्शक हो प्रभु, भव्यों के तुम ही आधार।
ज्ञानहीन हम भक्ति करे क्या, जब गणधर न पावें पार॥
श्रद्धा से शीश मेरा झुक झुक जायें...
शान्ति प्रभु के दरश जब पायें... 2 ॥3 ॥

द्रव्य गुण पर्ययपने से जो जाने जिनवर का रूप।
वो ही निज आतम को लखकर क्षय करते है मोह विरूप॥
ज्ञायक स्वभाव ही उनके मन भाये...
शान्ति प्रभु के दरश जब पायें... 2 ॥4 ॥

मोक्षकल्याणकभक्ति खण्ड

(1) देखो जी आदीश्वर स्वामी...

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है;
कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है ॥टेक॥

जगत् विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है;
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा-दृष्टि सुहाया है ॥1॥

कंचन वरन चले मन रंच न, सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है;
जास-पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नसाया है ॥2॥

शुद्ध उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है;
श्यामलि अलकावलि सिर सोहें, मानो धुआँ उड़ाया है ॥3॥

जीवन-मरन अलाभ लाभ जिन, सबको साम्य बनाया है;
सुर नर नाग नमहिं पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है ॥4॥

(2) अशरीरी सिद्ध भगवान...

अशरीरी सिद्ध भगवान, आदर्श तुम्ही मेरे;
अविरुद्ध शुद्ध चिद्‌घन, उत्कर्ष तुम्ही मेरे ॥टेक ॥

सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञान अगुरुलघु अवगाहन;
सूक्ष्मत्व वीर्य गुणखान, निर्बाधित सुखवेदन।
हे गुण अनन्त के धाम, वन्दन अगणित मेरे ॥1 ॥

रागादि रहित निर्मल, जन्मादि रहित अविकल;
कुल गोत्र रहित निष्कुल, मायादि रहित निश्चल।
रहते निज में निश्चल, निष्कर्म साध्य मेरे ॥2 ॥

रागादि रहित उपयोग, ज्ञायक प्रतिभासी हो;
स्वाश्रित शाश्वत-सुख भोग, शुद्धातम-विलासी हो।
हे स्वयं सिद्ध भगवान, तुम साध्य बनो मेरे ॥3 ॥

भविजन तुम-सम-निज-रूप, ध्याकर तुम-सम होते;
चैतन्य पिण्ड शिव-भूप, होकर सब दुःख खोते।
चैतन्यराज सुखखान, दुःख दूर करो मेरे ॥4 ॥

(3) जीयरा... जीयरा...

जीयरा... जीयरा...
जीयरा... जीयरा... जीयरा...
जीवराज उड़ के जाओ सम्मेदशिखर में;
भाव सहित वन्दन करो, पार्श्व चरण में ॥टेक ॥

आज सिद्धों से अपनी बात हो के रहेगी,
शुद्ध आतम से मुलाकात हो के रहेगी;
रंग रहित राग रहित भेद रहित जो,
मोह रहित लोभ रहित शुद्ध बुद्ध जो ॥ जीयरा... ॥1 ॥

ध्रुव अनुपम अचल गति जिनने पाई है,
सारी उपमाएँ जिनसे आज शरमाई हैं;
अनन्तज्ञान अनन्तसुख अनन्तवीर्य मय,
अनन्तसूक्ष्म नाम रहित अव्याबाधी है। जीयरा॥2॥

अहो! शाश्वत् सिद्धधाम तीर्थराज है,
यहाँ आकर प्रसन्न चैतन्यराज है;
शुरु करें आज यहाँ आत्म साधना,
चतुर्गति में हो कभी जन्म-मरण ना। जीयरा॥3॥

(4) जहाँ राग-द्वेष की गंध नहीं,...

जहाँ राग-द्वेष की गंध नहीं, बस सुख अनुपम ही मिले।
मुक्ति है नगर, सिद्धों का है घर, चलो सिद्धों की छाँव तले।।टेक॥

गुणरूपी जहाँ चमके तारे, और चाँद हो समकित का,
अंतर वीणा प्रतिक्षण गाती, आतम के गीत सदा॥
चैतन्यमयी इस उपवन में, हम मुक्तिवधू से मिले॥1॥ मुक्ति है नगर......

जहाँ सुखमयी अम्बर पर, उड़ती है ज्ञान पतंग।
ध्रुव दृष्टि डोर से बंधी हुई, अविचल स्थिर है उतंग॥
ये देख नजारे अनुपम से भविजन मन कमल खिले॥2॥ मुक्ति है नगर.....

(5) आओ नी आओ नी भविजन...

आओ नी आओ नी भविजन... आओ नी आओ नी भविजन
सिद्धक्षेत्र के तले, सिद्धप्रभु से मिलें... निज अनुभव रस पान करें।
आओ नी आओ नी भविजन।।टेक॥

मधुवन की पावन वसुधा से... 2
मंगल आमन्त्रण आया... 2
सिद्धों के संग मिल जाने को...2 भव्यों को है बुलवाया... 2

अष्टकर्म के बंधन छूटे.... 2 भव भव से
निज अनुभव रस पान करें... ॥1 ॥

मंगलकारी प्रभुकल्याणक.... 2
भव्यों के कल्याण स्वरूप..... 2
जिन दर्शन है उनका सच्चा...2 प्रभु सम जो देखे निज रूप...2
चिरभावी तब मोह पलाय... 2 पल भर में
निज अनुभव रस पान करें... ॥2 ॥

यदि दुख से परिमुक्ति चाहो... 2
तो श्रामण्य स्वीकार करों... 2
इन्द्रिय सुख तो सदा दुखमय... 2 अब इनका परिहार करो... 2
भव सागर से पार चलो अब... 2 क्षण भर में
निज अनुभव रस पान करें.... ॥3 ॥

प्राचीन भक्ति खण्ड

(1) प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ......

प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ,
फिर जग कीच बीच नहीं आऊँ ॥ टेक ॥

जल गंधाक्षत पुष्प सुमोदक, दीप धूप फल सुन्दर ल्याऊँ।
आनन्द जनक कनक भाजन धरि, अर्घ अनर्घ हेतु पद ध्याऊँ ॥1 ॥

आगम के अभ्यास मांहि पुनि चित एकाग्र सदैव लगाऊँ।
संतनि की संगति तजि के मैं, अन्त कहूँ इक छिन नहीं जाऊँ ॥2 ॥

दोष वाद में मौन रहूँ फिर, पुण्य पुरुष गुण निश दिन गाऊँ।
राग दोष सब ही को टारी, वीतराग निज भाव बढ़ाऊँ ॥3 ॥

बाहिर दृष्टि खेंच के अन्दर, परमानन्द स्वरूप लखाऊँ।
'भागचन्द' शिव प्राप्त न जोलों तोलों तुम चरणांबुज ध्याऊँ ॥4 ॥

(2) धन्य-धन्य है घड़ी आज की...

धन्य-धन्य है घड़ी आज की जिनधुनि श्रवण परी;
तत्त्व प्रतीत भई अब मेरे मिथ्यादृष्टि टरी ॥ टेक ॥

जड़ तैं भिन्न लखी चिन्मूरत चेतन स्वरस भरी;
अहंकार ममकार बुद्धि प्रति पर में सब परिहरी ॥1 ॥

पाप-पुण्य विधि बन्ध अवस्था भासी अति दुःख भरी;
वीतराग-विज्ञान भावमय परिणति अति विस्तरी ॥2 ॥

चाह-दाह विनसी बरसी पुनि समता मेघ झरी;
बाढी प्रीति निराकुल पद सों 'भागचन्द' हमरी ॥3 ॥

(3) निरखत जिनचन्द्र-वदन......

निरखत जिनचन्द्र-वदन स्व-पद सुरुचि आई ।टेक ॥

प्रगटी निज-आन की पिछान ज्ञान-भान की।
कला उद्योत होत काम-जामनी पलाई॥ निरखत ॥1 ॥

शाश्वत् आनन्द स्वाद पायो विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई॥ निरखत ॥2 ॥

साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की।
उपाधि को विराधि कै आराधना सुहाई॥ निरखत ॥3 ॥

धन दिन छिन आज सुगुनि चिन्ते जिनराज अबै।
सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई॥ निरखत ॥4 ॥

(4) चिन्मूरत दृग्धारी....

चिन्मूरत दृग्धारी की मोहे, रीति लगत है अटापटी ।टेक ॥

बाहिर नारकिकृत दुःख भोगै, अंतर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनि संग पै तिस, परणति तैं नित हटाहटी ॥1 ॥

ज्ञान-विराग शक्ति तैं विधि-फल, भोगत पै विधि घटाघटी।
सदन-निवासी तदपि उदासी, तातै आस्रव छटाछटी ॥2 ॥

जे भवहेतु अबुध के ते तिस, करत बन्ध की झटाझटी।
नारक पशु तिय षट् विकलत्रय, प्रकृतिन की ह्वै कटाकटी ॥3 ॥

संयम धर न सकै पै संयम, धारन की उर चटाचटी।
तासु सुयश गुन की 'दौलत' के, लगी रहै नित रटारटी ॥4 ॥

(5) आतम रूप अनुपम अद्भुत....

आतम रूप अनुपम अद्भुत, याहि लखैं भव-सिंधु तरो ॥टेक ॥

अल्पकाल में भरत चक्रधर, निज आतम को ध्याय खरो।
केवलज्ञान पाय भवि बोधे, तत्छिन पायौ लोकशिरो ॥1 ॥

या बिन समुझे द्रव्यलिंगि मुनि, उग्र तपन कर भार भरो।
नवग्रीवक पर्यंत जाय चिर, फेर भवार्णव माहिं परो ॥2 ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, ये हि जगत में सार नरो।
पूरव शिव को गये जाहिं अब, फिर जैहैं यह नियत करो ॥3 ॥

कोटि ग्रंथ को सार यही है, ये ही जिनवानी उचरो।
'दौल' ध्याय अपने आतम को, मुक्तिरमा तव वेग वरो ॥4 ॥

(6) आज मैं परम पदारथ पायौ............

आज मैं परम पदारथ पायौ, प्रभुचरनन चित लायौ ॥टेक ॥

अशुभ गये शुभ प्रगट भये हैं, सहज कल्पतरु छायौ ॥1 ॥

ज्ञानशक्ति तप ऐसी जाकी, चेतनपद दरसायो ॥2 ॥

अष्टकर्म रिपु जोधा जीते, शिव अंकूर जमायौ ॥3 ॥

'दौलतराम' निरख निज प्रभो को उर आनन्द न समायो ॥4 ॥

(7) अब मेरे समकित सावन आयो...

अब मेरे समकित सावन आयो।
बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावस सहज सुहायो ॥टेक॥

अनुभव दामिनि दमकन लागी सुरति घटा घन छायो।
बोलै विमल विवेक पपीहा, समति सहगिनि भायो॥1॥

गुरु धुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमन विहसायो।
साधक भाव अंकुर उठे बहु, जित तित हरष सवायो॥2॥

भूल धूल कहिं भूल न सूझत, समरस जल भर लायो।
भूधर को निकसै अब बाहिर, निज निरचू घर पायो॥3॥

(8) भगवंत भजन क्यों भूला रे....

भगवंत भजन क्यों भूला रे।
यह संसार रैन का सुपना, तन धन वारि बबूला रे॥टेक॥

इस जीवन का कौन भरोसा, पावक में तृण पूला रे।
काल कुदार लिये सिर ठाड़ा, क्या समझै मन फूला रे॥1॥

स्वारथ साधै पांव पांव तू, परमारथ को लूला रे।
कहु कैसे सुख पावे प्राणी, काम करै दुःख मूला रे॥2॥

मोह पिशाच छल्यो मति मारै, निज कर कंध वसूला रे।
भज श्री राजमतीवर 'भूधर', दो दुरमति सिर धूला रे॥3॥

(9) हमकौ कछू भय ना रे....

हमकौ कछू भय ना रे, जान लियौ संसार॥टेक॥

जो निगोद में सो ही मुझमें, सो ही मोख मँझार।
निश्चय भेद कछू भी नाहिं, भेद गिनै संसार॥1॥

परवश ह्वै आपा विसारिकै, राग-दोष कौं धार।
जीवत-मरत अनादि काल तैं, यौं ही है उरझार॥2॥

जाकरि जैसैं जाहि समय में, जो हो तब जा द्वार।
सो बनि है टरि है कछु नाहीं, करि लीनौं निरधार ॥3 ॥

अगनि जरावै पानी बोवै, बिछुरत मिलत अपार।
सो पुद्‌गलरूपी मैं 'बुधजन' सबकौ जाननहार ॥4 ॥

(10) भोंदू भाई! समुझ सबद यह मेरा....

भोंदू भाई! समुझ सबद यह मेरा।
जो तू देखै इन आंखिन सौं, तामैं कछू न तेरा ॥टेक ॥

ए आँखैं भ्रम ही सौं उपजी, भ्रम ही के रस पागी।
जहँ जहँ भ्रम तहँ-तहँ इनको श्रम, तू इन ही कौ रागी ॥1 ॥

ए आँखैं दोउ रची चाम की, चामहि चाम बिलोवै।
ताकी ओट मोह निद्रा जुत, सुपन रूप तू जोवै ॥2 ॥

इन आँखिन कौ कौन भरोसौ, एक विनसैं छिन माही।
है इनको पुद्‌गल सौं परचै, तू तो पुद्‌गल नाहीं ॥3 ॥

पराधीन बल इन आँखिन कौ, विनु प्रकाश न सूझै।
सो परकाश अगनि रवि शशि को, तू अपनौं कर बूझे ॥4 ॥

खुले पलक ए कछू इक देखहि, मुंदे पलक नहिं सोऊ।
कबहूँ जाहि होंहि फिर कबहूँ, भ्रामक आँखैं दोऊ ॥5 ॥

जंगम काय पाय एक प्रगटै, नहिं थावर के साथी।
तू तो मान इन्हें अपने दृग, भयौ भीम को हाथी ॥6 ॥

तेरे दृग मुद्रित घट-अंतर, अंध रूप तू डोलै।
कै तो सहज खुलै वे आँखैं, कै गुरु संगति खोलै ॥7 ॥

(11) दुविधा कब जैहै या मन की....

दुविधा कब जैहै या मन की ।टेक ॥

कब निजनाथ निरंजन सुमिरों, तज सेवा जन-जन की ॥1 ॥

कब रुचि सौं पीवौं दृग चातक, बूंद अखयपद धन की।
कब शुभ ध्यान धरौ समता गहि, करूँ न ममता तन की ॥2 ॥

कब घट अंतर रहै निरंतर, दृढ़ता सुगुरु वचन की।
कब सुख लहौं भेद परमारथ, मिटै धारना धन की ॥3 ॥

कब घर छाँडि होहुं एकाकी, लिये लालसा वन की।
ऐसी दशा होय कब मेरी, हौं बलि बलि वा छिन की ॥4 ॥

(12) विराजै 'रामायण' घटमाहिं....

विराजै 'रामायण' घटमाहिं।
मरमी होय मरम सो जाने, मूरख मानै नाहिं ।टेक ॥

आतम 'राम' ज्ञान गुन 'लछमन', 'सीता' सुमति समेत।
शुभोपयोग 'वारनदल' मंडित, वर विवेक 'रण खेत' ॥1 ॥

ध्यान 'धनुष टंकार' शोर सुनि, गई विषय दिति भाग।
भई भस्म मिथ्यामत 'लंका', उठी धारणा 'आग' ॥2 ॥

जरे अज्ञान भाव 'राक्षसकुल', लरे निकांछित 'सूर'।
जूझे राग-द्वेष सेनापति, संसै 'गढ़' चकचूर ॥3 ॥

बिलखत 'कुंभकरण' भव विभ्रम, पुलकित मन 'दरयाव'।
थकित उदार वीर 'महिरावण', 'सेतुबंध' सम भाव ॥4 ॥

मूर्छित 'मंदोदरी' दुराशा, सजग चरन 'हनुमान'।
घटी चतुर्गति परणति 'सेना', छुटे छपक गुण 'बान' ॥5 ॥

निरखि सकति गुन 'चक्र सुदर्शन' उदय 'विभीषण' दान।
फिरै 'कबंध' मही 'रावण' की, प्राण भाव शिरहीन ॥6 ॥

इह विधि सकल साधु घट, अंतर होय सहज 'संगाम'।
यह विवहार दृष्टि 'रामायण' केवल निश्चय 'राम' ॥7 ॥

(13) चेतन तू तिंहुकाल अकेला....

चेतन तू तिंहुकाल अकेला ।।टेक ।।
नदी नाव संजोग मिले ज्यों, त्यों कुटुंब का मेला ।।1 ।।

यह संसार असार रूप सब, ज्यों पटपेखन खेला।
सुख संपति शरीर जल बुद बुद, विनसत नाहीं बेला ।।2 ।।

मोह मगन आतम गुन भूलत, परि तोहि गल जेला।
मैं मैं करत चहूँ गति डोलत, बोलत जैसे छेला ।।3 ।।

कहत 'बनारसी' मिथ्यामत तज, होइ सुगुरु का चेला।
तास वचन परतीत आन जिय, होइ सहज सुरझेला ।।4 ।।

(14) हम बैठे अपनी मौन सौं....

हम बैठे अपनी मौन सौं ।।टेक ।।
दिन दस के मेहमान जगत जन, बोलि बिगारै कौन सौं ।।1 ।।

गये विलाय भरम के बादर, परमारथ-पथ-पौन सौं।
अब अंतर गति भई हमारी, परचे राधा रौन सौं ।।2 ।।

प्रगटी सुधापान की महिमा, मन नहिं लागै बौन सौं।
छिन न सुहाय और रस फीके, रुचि साहिब के लौन सौं ।।3 ।।

रहे अघाय पाय सुख संपति, को निकसै निज भौन सौं।
सहज भाव सद्गुरु की संगति, सुरझै आवागौन सौं ।।4 ।।

(15) भावों में सरलता रहती है....

भावों में सरलता रहती है, जहाँ प्रेम की सरिता बहती है।
हम उस धर्म के पालक हैं, जहाँ सत्य अहिंसा रहती है ।।टेक ।।

जो राग में मूंछें तनते हैं, जड़ भोगों में रीझ मचलते हैं।
वे भूलते हैं निज को भाई, जो पाप के साँचे ढलते हैं ।।1 ।।

उपकार उन्हें माँ जिन-वाणी, जहाँ ज्ञान-कथायें कहती हैं।
जो पर के प्राण दुखाते हैं, वे आप सताये जाते हैं ॥2 ॥

अधिकारी वे हैं शिवसुख के, जो आतम ध्यान लगाते हैं।
'सौभाग्य' सफल कर नर जीवन, यह आय ढलती रहती है ॥3 ॥

(16) अब हम अमर भये न मरैंगे....

अब हम अमर भये न मरें ।टेक ॥
तन कारन मिथ्यात दियो तज, क्यों करि देह धरैंगे ॥1 ॥

उपजै मरै कालतैं प्रानी, तातैं काल हरैंगे।
राग द्वेष जग बंध करत हैं, इनको नाश करैंगे ॥2 ॥

देह विनाशी मैं अविनाशी, भेदज्ञान पकरैंगें।
नासी जासी हम थिरवासी, चोखे हो निखरैंगे ॥3 ॥

मरे अनन्ती बार बिन समुझैं, अब सब दुःख बिसरैंगे।
'द्यानत' निपट निकट दो अक्षर, बिन सुमरैं सुमरैंगे ॥4 ॥

(17) जो जो देखी वीतराग ने....

जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे।
अनहोनी होसी नहिं जग में, काहे होत अधीरा रे ।टेक ॥

समय एक बढ़ै नहिं घटसी, जो सुख-दुःख की पीरा रे।
तू क्यों सोच करै मन मूरख, होय वज्र ज्यों हीरा रे ॥1 ॥

लगै न तीर कमान बान कहुँ, मार सकै नहिं मीरा रे।
तू सम्हारि पौरुष बल अपनो, सुख अनंत तो तीरा रे ॥2 ॥

निश्चय ध्यान धरहु वा प्रभु को, जो टारे भव भीरा रे।
'भैया' चेत धरम निज अपनो, जो तारैं भव नीरा रे ॥3 ॥

(18) जिनवर चरण-भक्ति वर गंगा...

जिनवर चरण-भक्ति वर गंगा, ताहि भजो भवि नति सुखदानी।
स्याद्वाद हिमगिर तैं उपजी, मोक्ष-महासागरहि समानी ।।टेक ।।

ज्ञान-विरागरूप दोऊ ढाये, संयम भाव मगर हित आनी।
धर्म-ध्यान जहाँ भँवर परत है, शम-दम जामें सम-रस पानी ।।1 ।।

जिन-संस्तवन तरंग उठत हैं, जहाँ नहीं भ्रम-कीच निशानी।
मोह-महागिरि चूर करत हैं, रत्नत्रय शुद्ध पंथ ढलानी ।।2 ।।

सुर-नर-मुनि-खग आदिक पक्षी, जहाँ रमत नित सम-रस ठानी।
'मानिक' चित्त निर्मल स्थान करि, फिर नहीं होत मलिन भवि प्राणी ।।3 ।।

(19) धिक्-धिक् जीवन समकित बिना....

धिक्-धिक् जीवन समकित बिना ।।टेक ।।

दान शील व्रत तप श्रुत पूजा, आतम हेत न एक गिना ।।1 ।।

ज्यों बिनु कंत कामिनी शोभा, अंबुज बिनु सरवर सूना।
जैसे बिना एकड़े बिंदी, त्यों समकित बिन सरव गुना ।।2 ।।

जैसे भूप बिना सब सेना, नींव बिना मंदिर चुनना।
जैसे चंद बिहुनी रजनी, इन्हें आदि जानो निपुना ।।3 ।।

देव जिनेन्द्र, साधु गुरु करुना, धर्मराग व्योहार भना।
निहचै देव धरम गुरु आतम, 'द्यानत' गहि मन वचन तना ।।4 ।।

(20) हमें निज धर्म पर चलना....

हमें निज धर्म पर चलना, सिखाती रोज जिनवाणी।
सदा शुभ आचरण करना, सिखाी रोज जिनवाणी ।।टेक ।।

चौरासी लाख योनि में, भटक नर जन्म पाया है।
निधि निज भूल नहिं पावें, सिखाती रोज जिनवाणी ।।1 ।।

ग्रहण करना नहीं करना, कि क्या निज क्या पराया है।
भेद-विज्ञान इसका भी, सिखाती रोज जिनवाणी ॥2 ॥

धनिक निर्धन स्वजन परिजन, कि ज्ञानी या अज्ञानी है।
भेद तज मार्ग सुखकारी, सिखाती रोज जिनवाणी ॥3 ॥

जिन्हें संसार सागर से, उतर भव पार जाना है।
उन्हें सुख के किनारे पर, लगाती रोज जिनवाणी ॥4 ॥

सत्य सुख सार पा इसमें, पतित तम पार जाना है।
शरण 'दोषी' यही तेरी, है तारनहार जिनवाणी ॥5 ॥

हमें संसार सागर में, रुलाते कर्म हैं आठों।
करें किस भाँति इनका क्षय, सिखाती रोज जिनवाणी ॥6 ॥

करें जो भव्य मन निर्मल, पठन कर शीघ्र तिर जावे।
मार्ग शिवपुर में जाने का, दिखाती रोज जिनवाणी ॥7 ॥

(21) अब के ऐसी दिवाली मनाऊँ.....

अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ, कबहूँ फेर न दुःखड़ा पाऊँ ॥टेक ॥

आन कुदेव कुरीति छाँड़ के, श्री महावीर चितारूँ।
राग-द्वेष का मैल जलाकर, उज्ज्वल ज्योति जगाऊँ॥
अपनी मुक्ति-तिया हर्षाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ ॥1 ॥

निज अनुभूति महालक्ष्मी का, वास हृदय करवाऊँ।
निजगुण लाभ दोष टोटे का, लेखा ठीक लगाऊँ॥
जासो फेर न टोटा पाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ ॥2 ॥

ज्ञान-रतन के दीप में, तप का तेल पवित्र भराऊँ।
अनुभव ज्योति जगा के, मिथ्या अंधकार बिनसाऊँ॥
जासों शिव की गैल निहारुँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ ॥3 ॥

अष्ट करम का फोड़ फटाका, विजयी जिन कहलाऊँ।
शुद्ध बुद्ध सुखकंद मनोहर, शील स्वभाव लखाऊँ॥
जासों शिवगोरी बिलसाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ ॥4 ॥

(22) मेरे चारों शरण सहाई....

मेरे चारों शरण सहाई-2
जैसे जलधि परत वायस को-2, वो हित एक उपाई ।टेक ॥

प्रथम शरण अरहंत चरण की, सुर-नर पूजत पाई -2।
द्वितीय शरण श्री सिद्धन केरी-2, लोक तिलकपुर राई ॥1 ॥

तीजे शरण सर्व साधुनि की, नगन दिगम्बर काई -2।
चौथे धरम अहिंसा रूपी-2, सुरग-मुक्ति सुखदाई ॥2 ॥

दुर्गति परत सुजन-परिजन पै, जीवन राख्यो जाई - 2।
'भूधर' सत्य भरोसो इनको-2, ये ही लेहि बचाई ॥3 ॥

(23) पापन सों नित डरिये...

पापन सो नित डरिये, अरे मन पापन सों नित डरिये ।टेक ॥

हिंसा झूठ वचन अरु चोरी, परनारी नहीं हरिये।
निज पर को दुखदायन डायन तृष्णा वेग विसरिये ॥1 ॥

जासों परभव बिगड़े वीरा ऐसो काज न करिये।
क्यों मधु-बिंदु विषय के कारण अंधकूप में परिये ॥2 ॥

गुरु उपदेश विमान बैठ के, यहाँ ते वेग निकरिये।
'नयानंद' अचल पद पावै, भवसागर सो तिरिये ॥3 ॥

(24) अरहंत सुमर मन बावरे.....

अरहंत सुमर मन बावरे अन्तर प्रभु लौ लाव रे ॥ अरहंत ।टेक ॥

नरभव पाय अकारथ खोवै, विषय भोग जु बढ़ाव रे।
प्राण गये पछितैहै मनवा, छिन छिन छीजै आव रे ॥अरहंत ॥1 ॥

जुवती तन धन सुत मित परिजन, गज तुरंग रथ चाव रे।
यह संसार सुपन की माया, आँख मीचि दिखराव रे ॥अरहंत ॥2 ॥

ध्याव ध्याव रे अब है अवसर आतम मंगल गाव रे।
'द्यानत' बहुत कहाँ लौं कहिये, और न कछू उपाव रे ॥अरहंत ॥3 ॥

(25) लगी लौं नाभिनंदनसों.....

लगी लौं नाभिनंदन सों।
जपत जेम चकोर चकई, चन्द भरता को ।।टेक ।।

जाउ तन-धन जाउ जोवन, प्रान जाउ न क्यों।
एक प्रभु की भक्ति मेरे, रहो ज्यों की त्यों ।।1 ।।

और देव अनेक सेवे, कछु न पायो हौं।
ज्ञान खोयो गाँठिको, धन करत कुवनिज ज्यों ।।2 ।।

पुत्र-मित्र कलत्र ये सब, सगे अपनी गों।
नरक कूप उद्धरन श्रीजिन, समझ 'भूधर' यों ।।3 ।।

(26) हम न किसी के कोई न....

हम न किसी के कोई न हमारा, झूठा है जग का ब्योहारा...
तन सम्बन्धी सब परिवारा, सो तन हमने जाना न्यारा ।।टेक ।।

पुण्य उदय सुख का बढ़वारा, पाप उदय दुख होत अपारा।
पाप-पुण्य दोऊ संसारा, मैं सब देखन जाननहारा ।।1 ।।

मैं तिहुँ जग तिहुँ काल अकेला, पर संजोग भया यह मेला।
थिति पूरी करि खिर-खिर जांहीं, मेरे हर्ष शोक कछु नाहीं ।।2 ।।

राग भावतैं सज्जन मानैं, दोष भावतैं दुर्जन जानै।
राग दोष दोऊ मम नाहीं, 'द्यानत' मैं चेतनपद माही ।।3 ।।

(27) धर्म बिना कोई नहीं अपना

धर्म बिना कोई नहीं अपना,
सब सम्पत्ति धन थिर नहिं जग में, जिसा रैन सपना ।।टेक ।।

आगै किया सो पाया भाई, याही है निरना।
अब जो करैगा सो पावैगा, तातैं धर्म करना ।।1 ।।

ऐसे सब संसार कहत है, धर्म कियैं तिरना।
परपीड़ा बिसनादिक सेवैं, नरकविषैं परना ॥2 ॥

नृप के घर सारी सामग्री, ताकैं ज्वर तपना।
अरु दारिद्रीकैं हू ज्वर है, पाप उदय थपना ॥3 ॥

नाती तो स्वारथ के साथी, तोहि विपत भरना।
वनगिरि सरिता अगनि युद्ध मैं, धर्महिका सरना ॥4 ॥

चित 'बुधजन' संतोष धारना, पर चिन्ता हरना।
विपति पड़ै तो समता रखना, परमातम जपना ॥5 ॥

(28) हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजै

हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजै ।।टेक ॥

रागद्वेष दावानलतैं बचि, समतारस में भीजै ॥1 ॥
पर को त्याग अपनपो निज में, लाग न कबहूँ छीजै ॥2 ॥
कर्म कर्मफलमाहि न राचै, ज्ञान सुधारस पीजै ॥3 ॥
मुझ कारज के तुम कारन वर, अरज 'दौल' की लीजै ॥4 ॥

(29) कबधौं मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर

कबधौं मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर, करि हैं भवोदधि पारा हो ।।टेक ॥

भोग उदास जोग जिन लीनो, छाँडि परिग्रह भारा हो।
इन्द्रिय दमन वमन मद कीनो, विषय कषाय निवारा हो ॥1 ॥

कंचन काँच बराबर जिनके, निंदवा बंदक सारा हो।
दुर्धर तप तपि सम्यक् निज घर, मनवचतनकर धारा हो ॥2 ॥

ग्रीषम गिरि हिम सरिता तीरै, पावस तरुतल ठारा हो।
करुणा भीन चीन त्रसथावर, ईर्यापंथ समारा हो ॥3 ॥

मार-मार व्रत धार शील दृढ़, मोह महामल टारा हो।
मास छमास उपास वास वन, प्रासुक करत अहारा हो ॥4 ॥

आरत रौद्रलेश नहिं जिनके, धर्म शुकल चित धारा हो।
ध्यानारूढ़ गूढ़ निज आतम, शुद्ध उपयोग विचारा हो ॥5 ॥

आप तरहिं औरन को तारहिं, भवजल सिंधु अपारा हो।
'दौलत' ऐसे जैन-जतिन को, नितप्रति धोक हमारा हो ॥6 ॥

(30) अपनी सुधि भूल आप,...

अपनी सुधि भूल आप, आप दुख उपायौ
ज्यौं शुक नभचाल विसरि नलिनी लटकायो ॥टेक ॥

चेतन अविरुद्ध शुद्ध, दरश बोधमय विशुद्ध।
तजि जड़-रस-फरस रूप, पुद्गल अपनायौ ॥1 ॥

इन्द्रियसुख दुख में नित, पाग राग रुख में चित्त।
दायकभव विपति वृन्द, बन्धको बढ़ायौ ॥2 ॥

चाह दाह दाहै, त्यागौ न ताहि चाहै।
समतासुधा न गाहै जिन, निकट जो बतायो ॥3 ॥

मानुषभव सुकुल पाय, जिनवर शासन लहाय।
'दौल' निजस्वभाव भज, अनादि जो न ध्यायौ ॥4 ॥

(31) चेतन कौन अनीति गही रे

चेतन कौन अनीति गही रे, न मानैं सुगुरु कही रे।
जिन विषयनवश बहु दुख पायो, तिनसौं प्रीति ठही रे ॥टेक ॥

चिन्मय है देहादि जड़नसौ, तो मति पागि रही रे।
सम्यग्दर्शनज्ञान भाव निज, तिनकौं गहत नहीं रे ॥1 ॥

जिनवृष पाय विहाय रागरुष, निजहित हेत यही रे।
'दौलत' जिन यह सीख धरी उर, तिन शिव सहज लही रे ॥2 ॥

(32) हम तो कबहुँ न निजगुन भाये

हम तो कबहु न निजगुन भाये
तन निज मान जान तनदुखसुख में बिलखे हरखाये ।।टेक ।।

तनको गरन मरन लखि तनको, धरन मान हम जाये।
या भ्रम भौंर परे भवजलचिर, चहुँगति विपत लहाये ।।1 ।।

दरशबोध व्रतसुधा न चाख्यौ, विविध विषय-विष खाये।
सुगुरु दयाल सीखदई पुनि पुनि, सुनि सुनि उर नहीं लायो ।।2 ।।

बहिरातमता तजी न अन्तर-दृष्टि न ह्वै निज ध्याये।
धाम-काम-धन-रामा की नित, आश हुताश जलाये ।।3 ।।

अचल अनूप शुद्ध चिद्रूपी, सबसुखमय मुनि गाये।
'दौल' चिदानंद स्वगुन मगन जे, ते जिय सुखिया थाये ।।4 ।।

(33) मेरे कब ह्वै वा दिन की सुधरी

मेरे कब ह्वै वा दिन की सुधरी ।।टेक ।।

तन बिन वसन असन बिन वन में, निवसों नासादृष्टि धरी।
पुण्य पाप परसौं कब विरचौं, परचों निजनिधि चिरविसरी।
तज उपाधि सजि सहज समाधी, सहो घाम हिम मेघझरी ।।1 ।।

कब थिरजोग धरों ऐसो मोहि, उपल जान मृग खाज हरी।
ध्यान-कमान तान अनुभव शर, छेदो किहि दिन मोह अरी ।।2 ।।

कब तृनकंचन एक गानों अरु, मनिजड़ि तालय शैलदरी।
'दौलत' सत् गुरुचरन सेव जो, पुरवो आश यहैं हमरी ।।3 ।।

(34) जिन देख मगन भयो मेरो मनवा...

जिन देख मगन भयो मेरो मनवा-2 ।।टेक ।।

शुभ को उदय भयो अब मोहे
अशुभ जलें जैसे सूखे पतवा ।।1 ।। जिन...

तीन लोक के नाथ निहारे
नगन दिगम्बर जाके तनवा ॥2 ॥ जिन...

'दौलत' राम दोहु कर जोड़े
नित उठ गावत तेरो गुणवा ॥3 ॥ जिन...

(35) जब आतम अनुभव आवै...

जब आतम अनुभव आवै, निज आतम अनुभव आवै।
और कछू न सुहावै, जब निज आत्म अनुभव आवै।।

रस निरस हो जात ततच्छिन।
अक्ष विषय नहिं भावे।
जब आतम अनुभव आवै.... ॥1 ॥

गोष्ठी कथा कुतूहल विघटै।
पुद्गल प्रीति नसावै।
जब आतम अनुभव आवै.... ॥2 ॥

राग-द्वेष जुग चपल पक्ष युत।
मन पंछी मर जावै।
जब आतम अनुभव आवै.... ॥3 ॥

ज्ञानानन्द सुधारस उमगै।
घट अन्तर न समावै।
जब आतम अनुभव आवै.... ॥4 ॥

'भागचन्द' ऐसे अनुभव को,
हाथ जोरि सिर नावै।
जब आतम अनुभव आवै.... ॥5 ॥

(36) मैं निज आतम कब ध्याऊँगा....

रागादिक परिनाम त्याग कै, समता सौं लौ लाऊँगा।
मन वच काय जोग थिर करकै, ज्ञान समाधि लगाऊँगा।
कब हौं क्षिपकश्रेणि चढ़ि ध्याऊँ, चारित मोह नशाऊँगा ॥1 ॥

चारों करम घातिया क्षय करि, परमातम पद पाऊँगा।
ज्ञान दरश सुख बल भंडारा, चार अघाति कहाऊँगा ॥2 ॥

परम निरंजन सिद्ध शुद्धपद, परमानंद कहाऊँगा।
'द्यानत' यह संपति जब पाऊँ, बहुरि न जग में आऊँगा ॥3 ॥

(37) हम तो कबहुँ न निज घर आये....

परघर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये ॥हम तो. ॥

परपद निजपद मानि मगन ह्वै, पर परनति लपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुखकंद मनोहर, आतम गुण नहिंगाये ॥हम तो. ॥1 ॥

नर पशु देव नरक निज मान्यो, परजयबुद्ध लहाये।
अमल अखंड अतुल अविनाशी, चेतन भाव न भाये ॥हम तो. ॥2 ॥

हित अनहित कछु समझ्यो नाहीं, मृगजलबुध ज्यों धाये।
'द्यानत' अब निज-निज, पर-पर है, सद्गुरु वैन सुहाये ॥हम तो. ॥3 ॥

(38) चरखा चलता नाहीं (रे) चरखा हुआ पुराना (वे)

चरखा चलता नाहीं (रे) चरखा हुआ पुराना (वे) ॥
पग खूंटे दो हालन लागे, उर मदरा खखराना।
छीदी हुई पांखड़ी पांसू, फिरै नहीं मनमाना ॥1 ॥

रसना तकली ने बल खाया, सो अब कैसै खूटै।
शब्द-सूत सूधा नहिं निकसे, घड़ी-घड़ी पल-पल टूटै ॥2 ॥

आयु माल का नहीं भरोसा,अंग चलालच सारे।
रोज इलाज मरम्मत चाहे, वैद्य बढ़ई हारे ॥3 ॥

नया नरखला रंगा-चंगा, सबका चित्त चुरावै।
पलटा वरन गये गुन अगले, अब देखें नहिं भावै ॥4 ॥

मोटा मही कातकर भाई!, कर अपना सुरझेरा।
अंत आग में ईंधन होगा, 'भूधर' समझ सवेरा ॥5 ॥

(39) आकुलरहित होय इमि निशदिन

आकुलरहित होय इमि निशदिन, कीजे तत्त्वविचारा हो।
को मैं कहा रूप है मेरा, पर है कौन प्रकारा हो।।टेक।।

को भव-कारण बंध कहा को, आस्रव रोकनहारा हो।
खिपत कर्मबंधन काहेसों, थानक कौन हमारा हो।।1।।

इमि अभ्यास किये पावत हैं, परमानंद अपारा हो।
'भागचंद' यह सार जान करि, कीजै बारंबारा हो।।2।।

(40) प्रानी समकित ही शिवपंथा

प्रानी समकित ही शिवपंथा। या विन निर्फल सब ग्रंथा।।टेक।।

जा बिन बाह्यक्रिया तप कोटिक, सकल वृथा है रंथा।।1।।
हयजुतरथ भी सारथ विन जिमि, चलत नहीं ऋजु पंथा।।2।।
'भागचंद' सरधानी नर भये, शिवलछमी के कंथा।।3।।

(41) परनति सब जीवन की

परनति सब जीवन की, तीन भाँति वरनी।
एक पुण्य एक पाप, एक रागहरनी।।टेक।।

तामे शुभ अशुभ अंध, दोय करैं कर्मबंध।
वीतराग परनति ही, भवसमुद्रतरनी।।1।।

जीवत शुद्धोपयोग, पावत नाहीं मनोग।
तावत ही करन जोग, कही पुण्य करनी।।2।।

त्याग शुभ क्रियाकलाप, करो मत कदाच पाप।
शुभ में न मगन होय, शुद्धता विसरनी।।3।।

ऊँच ऊँच दशा धारि, चित्त प्रमाद को विडारि।
ऊँचली दशातैंमति, गिरो अधो धरनी।।4।।

'भागचंद' या प्रकार, जीव लहै सुख अपार।
याके निरधार स्याद-वाद की उचरनी।।5।।

आध्यात्मिक भक्ति खण्ड

(1) अब विषयों में नाहि रमेंगे...

अब विषयों में नाहिं रमेंगे, चिदानन्द पान करेंगे;
चहुँ गतियों में नाहिं भ्रमेंगे, निजानन्द धाम रहेंगे।।टेक।।

मैं नहिं तन का, तन नहिं मेरा, चेतनभाव में मेरा बसेरा;
अब भेद-विज्ञान करेंगे, निजानन्द धाम रहेंगे ।।1।।

विषयों का रस विष का प्याला, चेतन का आनन्द निराला;
अब ज्ञान में ज्ञान लखेंगे, निजानन्द पान करेंगे ।।2।।

ज्ञान में है ज्ञायक प्रभु मेरा, ज्ञायकभाव में मेरा बसेरा;
अब क्षायिक श्रेणी चढ़ेंगे, निजानन्द पान करेंगे ।।3।।

(2) निज आत्मा का ज्ञान ......

निज आत्मा का ज्ञान अरु निज तत्व का श्रद्धान कर;
निज आत्मा में लीन होकर मुक्तिपथ पाया प्रवर।।टेक।।

कैवल्य किरणों से प्रकाशित आत्म रवि है चमकता;
जहाँ लोक और अलोक का सम्पूर्ण वैभव झलकता।।1।।

अनन्त दृग अरु ज्ञान से षट् द्रव्य-गुण-पर्याय का;
सामान्य और विशेष अवभासन समस्त पदार्थ का।।2।।

नित सुख अतीन्द्रिय भोगते हे योग बिन आशीष तुम;
निज बल अनन्तानन्त से हे गणधरों के ईश तुम।।3।।

हे मुक्तिपथ नायक महा-नायक समूची दृष्टि के;
हे कर्मभृत् के विदारक तुम्हीं हो वर दृष्टि के।।4।।

यह अर्घ्य है अर्पित प्रभो अनर्घ्य पद की कामना;
भी नहि रहे अब वृत्ति में तुम सम बनूँ निष्कामना।।5।।

(3) हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम....

हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता-दृष्टा आतम राम।।टेक।।

मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान।
अंतर यही ऊपरी जान, वे विराग यहाँ राग वितान।।1।।

मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान।
किंतु आश वश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अज्ञान।।2।।

सुख-दुख दाता कोई न आन, मोह-राग-रूष दुःख की खान।
निज को निज पर को पर जान, फिर दुःख का नहीं लेश निदान।।3।।

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम।
राग त्याग पहुँचूँ निजधाम, आकुलता का फिर क्या काम।।4।।

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम।
दूर हटो परकृत परिणाम, ज्ञायकभाव लखूँ अभिराम।।5।।

(4) चैतन्य के दर्पण में....

चैतन्य के दर्पण में, आनंद के आलय में।
बस ज्ञान ही बस ज्ञान है, कोई कैसे बतलाए।टेक॥

निज ज्ञान में बस ज्ञान है, ज्यों सूर्य रश्मि खान,
उपयोग में उपयोग है, क्रोधादि से दरम्यान।
इस भेद विज्ञान से, तुझे निर्णय करना है,
अपनी अनुभूति में, दिव्य दर्शन हो जाए॥1॥

निज ज्ञान में पर ज्ञेय की, दुर्गंध है कहाँ,
निज ज्ञान की सुगंध में, ज्ञानी नहा रहा।
अभिनंदन अभिवादन, अपने द्वारा अपना,
अपने ही हाथों से, स्वयंवर हो जाए॥2॥

जिस ज्ञान ने निज ज्ञान को, निज ज्ञान न जाना,
कैसे कहे ज्ञानी उसे, परसन्मुख बेगाना।
ज्ञेय के जानने में भी, बस ज्ञान प्रसिद्ध हुआ,
अपनी निधि अपने में, किसी को न मिल पाए॥3॥

(5) मैं ज्ञान मात्र बस....

मैं ज्ञान मात्र बस, ज्ञायक हूँ, आनंदमयी बस ज्ञायक हूँ।
ज्ञान में ही बस रमेंगे - 2, मुक्ति पाने के लिए।
मोह तज निज को वरेंगे, निज में समाने के लिए।टेक॥

आत्मा ही ज्ञेय है बस, आत्मा ही ज्ञान है;
आत्मा ही ध्येय है बस, आत्मा ही ज्ञान है।
चाह कुछ बाकी नहीं है, मुक्ति पाने के लिए॥
मोह तज................. ॥1॥

ज्ञेय जैसा ज्ञान होता, ज्ञान ज्ञेयाकार है;
किंतु वह परमार्थ से ही, ज्ञान का आकार है।
ज्ञान को ही ज्ञान जाने, मुक्ति पाने के लिए॥
मोह तज................. ॥2॥

विषय सुख अब नहीं हैं भाते, ज्ञेय की वाँछा नहीं;
स्वर्ग की कामना मन में, सुहाती है नहीं।
स्वर्ग में भी स्वयं की सृष्टि रचाने के लिए॥
मोह तज................ ॥3॥

(6) आओ रे आओ रे.....

आओ रे आओ रे ज्ञानानन्द की डगरिया।
तुम आओ रे आओ, गुण गाओ रे गाओ।
चेतन रसिया आनन्द रसिया॥टेक॥

बड़ा अचम्भा होता है, क्यों अपने से अनजान रे।
पर्यायों के पार देख ले, आप स्वयं भगवान रे॥1॥

दर्शन-ज्ञान स्वभाव में, नहीं ज्ञेय का लेश रे।
निज में निज को जान कर तजो ज्ञेय का वेश रे॥2॥

मैं ज्ञायक मैं ज्ञान हूँ, मैं ध्याता मैं ध्येय रे।
ध्यान-ध्येय में लीन हो, निज ही निज का ज्ञेय रे॥3॥

(7) भगवान आत्मा आनंद भंडार....

भगवान आत्मा आनंद भंडार चेतन उस पर दृष्टि कर,
शांत स्वरूप को लक्ष में ले, हो जाएँगे सब संकट हर॥टेक॥

कर्म तुझमें नहीं राग तुझमें नहीं, ऐसा जिनवर ने बतलाया,
तेरे दोषों से ही बंधन हैं, यह पूज्य गुरु ने फरमाया-2।
अपने दोषों को दूर करें तो, जाएँ शाश्वत् सुख के घर॥
शांत स्वरूप................ ॥1॥

तू वस्तु स्वरूप को भूला था, पर भावों में भरमाया था,
चेतन तो पर का ज्ञाता है, यह ज्ञान स्वभाव न जाना था-2।
पर का अकर्ता यद्यपि ज्ञाता, ऐसी सम्यक् श्रद्धा कर॥
शांत स्वरूप................ ॥2॥

यदि कर्म विकार कराये तुझे, तो कर्माधीन तू हो जावे,
ऐसी स्थिति में सुन चेतन, तुझे शाश्वत् सुख न मिल पाये-2।
तू चेतन कर्माधीन नहीं यह, पूज्य गुरु की कड़ी मोहर।
शांत स्वरूप................ ॥3॥

(8) देखा जब अपने अंतर....

देखा जब अपने अंतर को, कुछ और नहीं भगवान हूँ मैं।
पर्याय भले ही पामर हो अंतर से वैभववान हूँ मैं।।टेक॥

चैतन्य प्राणों से जीवित नित इंद्रिय बल श्वांसोच्छ्वास नहीं,
हूँ आयु रहित शिव अजर अमर, सच्चिदानंद गुण की खान हूँ मैं॥1॥

आधीन नहीं संयोगों के पर्यायों से अप्रभावी हूँ,
स्वाधीन अखंड प्रतापी हूँ, निज से ही प्रभुतावान हूँ मैं॥2॥

सामान्य विशेषों सहित विश्व, प्रत्यक्ष झलक जावें क्षण में।
सर्वज्ञ सर्वदर्शी आदिक, सम्यक् निधियों की खान हूँ मैं॥3॥

मेरा वैभव शाश्वत् अक्षणु पर से आदान प्रदान नहीं।
त्योपादान शून्य निष्क्रिय अरु अगुरुलघु गुणधाम हूँ मैं॥4॥

तृप्ति आनंदमयी प्रगटी जब देखा अंतरनाथ हूँ मैं।
नहीं रही कामना अब कोई बस निर्विकार निष्काम हूँ मैं॥5॥

(9) आत्मा हूँ आत्मा हूँ.....

आत्मा हूँ आत्मा हूँ आत्मा।
मैं सदा ज्ञायक-स्वभावी आत्मा...........।।टेक॥

शस्त्र से भी, मैं कभी कटता नहीं।
अग्नि से भी, मैं कभी जलता नहीं॥
जल गलाये तो कभी गलता नहीं॥ मैं सदा........... ॥1॥

चर्म चक्षु से कभी दिखता नहीं।
मूर्ख नर अज्ञान वश जाने नहीं।
ज्ञानियों की साध्य-साधक आत्मा॥ मैं सदा........... ॥2॥

क्रोध माया मान से भी भिन्न हूँ।
लोभ अरु रागादि से भी भिन्न हूँ।
भाव कर्मों से रहित मैं आत्मा॥ मैं सदा........... ॥3 ॥

गोरा काला जो भी दिखता चाम है।
मोटा पतला होना उसका काम है।
सब शरीरों से रहित मैं आत्मा॥ मैं सदा........... ॥4 ॥

(10) देखो तो दिखाई देता है

देखो तो दिखाई देता है जहाँ सहज ही आनन्द झरता है
हम उस ज्ञान के धारी हैं-2 जहाँ जगत् प्रकाशित होता है।टेक॥

व्यवहार में जब जीव जगता है तो निश्चय से सो जाता है-2।
जो जगता है परमारथ में संसार सभी कट जाता है-2॥
जन-जन के लिए जिनवाणी माँ, अमृत सा पेय पिलाती है।
हम उस ज्ञान के धारी हैं-2 जहाँ जगत् प्रकाशित होता है॥1॥

पर्याय बिना ना द्रव्य कोई, ना द्रव्य बिना पर्याय रहे-2।
पर्याय झुके निज धाम लखो, सुख वीर्य सदा झरता ही रहे 2॥
ज्ञेयों से लिया कुछ नहीं हमने, ज्ञेयों को तो हम जानते हैं।
हम उस ज्ञान के धारी हैं-2 जहाँ जगत् प्रकाशित होता है॥2॥

निर्मम से मिली साम्यदृष्टि, शुद्धातम को पूजा हमने-2।
हैं अन्य अन्य पर द्रव्य सभी उपयोग को भी जाना हमने-2॥
सिर्फ हम ही नहीं सारे जिनवर, अनन्त जिनागम कहता है।
हम उस ज्ञान के धारी हैं-2 जहाँ जगत् प्रकाशित होता है॥3॥

(11) तू ही शुद्ध है.....

तू ही शुद्ध है, तू ही बुद्ध है, तू ही गुण अनंत की खान है
सुन चेतना अब जागना।टेक॥

कोई कर्म तुझको छुआ नहीं, तुझे कुछ भी तो हुआ नहीं-2

तू ही ज्ञेय, ज्ञाता ज्ञान है, अंतर में तू भगवान है
सुन चेतना अब जागना................. ॥1 ॥

नि:कलंक है निष्काम है, निर्वेद है निर्विकार है-2
निर्दोष है, निष्पाप है, निर्लोभ निराकार है
सुन चेतना अब जागना................. ॥2 ॥

मेरे ज्ञान में सब ज्ञान है, तू सूर्य रश्मि खान है
उपयोग में उपयोग है, तू बन रहा अन्जान है
सुन चेतना अब जागना................. ॥3 ॥

तेरी आत्मा ध्रुव सिद्ध जो, परमात्मा से कम नहीं-2
तू एक ज्ञायक भाव बस, परिपूर्ण प्रभुतावान है
सुन चेतना अब जागना................. ॥4 ॥

(12) ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया...

ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया,
मिथ्याभ्रम का अन्धेरा विलय हो गया। ज्ञान सम्यक्.... ॥ टेक ॥

दृष्टि एकान्त की ही बनी थी मेरी।
और अनेकान्त से बेखबर मैं रहा।
स्याद्वादी सहज हो गया।
ज्ञान में ज्ञान का ज्ञान अब हो गया ॥1 ॥

अपना माना उसे जो ना अपना हुआ,
जो था अपना उसी से पराया रहा
भेदविज्ञान अब हो गया,
एक अभेद की धारा में, मैं बह गया ॥2 ॥

वीतरागी प्रभु, वीतरागी गुरु,
मोक्ष की मानो, तैयारी हो गयी
धन्य नरभव, मेरा हो गया
राग जाने कहाँ खो गया ॥3 ॥

(13) ज्ञानमयी चेतन तुझे जग से क्या काम

ज्ञानमयी चेतन तुझे जग से क्या काम ?
मुक्ति मेरी मंजिल है ध्रुव तेरा धाम॥ टेक॥

पल-पल की भूल तुझे पल-पल रुलाये
भव-भव में भटका के दु:ख ही दु:ख दिलाये।
सद्गुरु की वाणी को सुनो आतमराम।
मुक्ति तेरी मंजिल है..... ॥1॥

इस जग में तेरा कोई नहीं है सहारा।
कर ममत्व दु:ख पाया अपारा॥
फिर भी तू करता क्यों उन्हीं में मुकाम।
मुक्ति तेरी मंजिल है.... ॥2॥

बाहर में तेरा कोई नहीं है सहारा।
तुझमें अत्यन्त अभाव सबका अपारा॥
फिर भी तू माने उन्हें निज से महान।
मुक्ति तेरी मंजिल है.... ॥3॥

चेतन स्वयं तू ही सुख का निधान है।
दु:ख का कारण तुझे तेरा अज्ञान है॥
मैं तो प्रभु सुखमय हूँ ऐसा कर ध्यान।
मुक्ति तेरी मंजिल है.... ॥4॥

सोच तज केवल पर्याय ही समल हैं।
दिव्य अन्तस्तत्व निज आत्मा अमल है॥
भव्य अब तो आश्रय ले ध्रुव का विराम।
मुक्ति तेरी मंजिल है.... ॥5॥

मुक्ति को पाने का हर दम यतन हो।
मुक्तिरूप प्रभुता की प्रतिक्षण लगन हो॥
शीघ्र ही मिलेगा तुझे शाश्वत शिवधाम।
मुक्ति तेरी मंजिल है.... ॥6॥

(14) चेतो चेतन निज में आओ...

चेतो चेतन निज में आओ-2
अन्तर आत्मा बुला रही है-2॥ टेक॥

जग में अपना कोई नहीं है,
तू तो ज्ञानानंदमयी है-2
एक बार अपने में आजा-2
अपनी खबर क्यों भुला दयी है-2॥
चेतो चेतन निज..... ॥1॥

तन धन-जन ये कुछ नहीं तेरे,
मोह में पड़कर कहता है मेरे-2
जिनवाणी को उर में भर दे - 2
समता में तुझे सुला रही है - 2॥
चेतो चेतन निज.... ॥2॥

निश्चय सेतु सिद्ध प्रभु सम,
कर्मोदय से धारे ये तन - 2
स्याद्वाद के इस झूले में - 2
माँ जिनवाणी झुला रही है - 2॥
चेतो चेतन निज.... ॥3॥

(15) ध्रुव शुद्धात्म ही सार...

ध्रुव शुद्धात्म ही सार, नित्य अविकार, सुगुण भंडारा।
प्रभु ज्ञायक रूप निहारा॥ टेक॥

जिस कारण कोई अन्य न हो, जो भी न अन्य का कारण हो।
है स्वयं सिद्ध निरपेक्ष समय का सारा॥1॥

पर्यायार्थिक नय से अनेक रूप, द्रव्यार्थिक नय से एकरूप।
है निर्विकल्प च्रिद्रूप, नयों से पारा॥2॥

परभावों से है सदा शून्य, है स्वयं-स्वयं में सहज पूर्ण।
लोकोत्तम मंगलरूप शरण सुखकारा ॥3 ॥

परमार्थरूप ध्रुव ध्येय अहो, खुद ज्ञाता ज्ञान सुज्ञेय अहो।
है वचनातीत, अचिन्त्य सु जाननहारा ॥4 ॥

धनि-धनि पाया है परमतत्त्व पहिचाना अपना सहजतत्त्व।
वांछा न रहीं, वर्ते आनन्द अपारा ॥5 ॥

निज प्रभु भाऊँ, निज प्रभु ध्याऊँ, अब स्वयं स्वयं में रम जाऊँ।
विलसे अनन्त प्रभुता, माहात्म्य है न्यारा ॥6 ॥

(16) शुद्धात्मा का श्रद्धान होगा

शुद्धात्मा का श्रद्धान होगा, निज आत्मा तब भगवान होगा,
निज में निज, पर में पर भासक, सम्यक् ज्ञान होगा...... ।टेक ॥

नव तत्त्वों में छिपी हुई जो ज्योति उसे प्रगटायेंगे,
पर्यायों से पार त्रिकाली, ध्रुव को लक्ष्य बनायेंगे,
शुद्ध चिदानंद रसपान होगा, निज आत्मा........... ॥1 ॥

निज चैतन्य महा हिमगिरि से परिणति घन टकरायेंगे,
शुद्ध अतीन्द्रिय आनंद रस मय, अमृत जल बरसायेंगे,
मोह महामल प्रक्षाल होगा, निज आत्मा........... ॥2 ॥

आत्मा के उपवन में रत्नत्रय पुष्प खिलायेंगे,
स्वानुभूति के सौरभ से, निज नंदन वन महकायेंगे,
संयम से सुरभित उद्यान होगा, निज आत्मा........... ॥3 ॥

(17) अहो चैतन्य आनंदमय......

अहो चैतन्य आनंदमय, सहज जीवन हमारा है।
अनादि अनंत पर निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है॥ टेक॥

हमारे में न कुछ पर का, हमारा भी नहीं पर में।
द्रव्य दृष्टि हुई सच्ची, आज प्रत्यक्ष निहारा है॥1 ॥

अनंतो शक्तियाँ उछले, सहज सुख ज्ञानमय विलसे।
अहो प्रभुता! परम पावन, वीर्य का भी न पारा है ॥2 ॥

नहीं जन्मूं नहीं मरता, नहीं घटता नहीं बढ़ता।
अगुरुलघुरूप ध्रुव ज्ञायक, सहज जीवन हमारा है ॥3 ॥

सहज ऐश्वर्यमय मुक्ति, अनंतो गुणमयी ऋद्धि।
विलसती नित्य ही सिद्धि, सहज जीवन हमारा है ॥4 ॥

किसी से कुछ नहीं लेना, किसी को कुछ नहीं देना।
अहो! निश्चिन्त परमानंद, मय जीवन हमारा है ॥5 ॥

ज्ञानमय लोक है मेरा, ज्ञान ही रूप है मेरा।
परम निर्दोष समतामय, ज्ञान जीवन हमारा है ॥6 ॥

मुक्ति में व्यक्त है जैसा, यहाँ अव्यक्त है वैसा।
अबद्धस्पृष्ट अविशेष, नियत जीवन हमारा है ॥7 ॥

सदा ही है न होता है, न जिसमें कुछ भी होता है।
अहो उत्पाद व्यय निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है ॥8 ॥

विनाशी बाह्य जीवन की, आज ममता तजी झूठी।
रहे चाहे अभी जाये, सहज जीवन हमारा है ॥9 ॥

नहीं परवाह अब जग की, नहीं है चाह शिवपद की।
अहो परिपूर्ण निष्पृह ज्ञान, मय जीवन हमारा है ॥10 ॥

(18) ज्ञान दर्शन लक्षण....

ज्ञान दर्शन लक्षण में पाया, जिसमें जाननहार जनाया।
आत्मा ऐसा ही है ॥टेक ॥

अरिहंत में ही, प्रभु सिद्ध में ही,
आचार्य उपाध्याय साधु में ही।
पंच परमेष्ठी पद मैंने पाया, जिसमें जाननहार जनाया ॥
आत्मा........ ॥1 ॥

केवल ज्ञानमयी, केवल दर्शनमयी,
केवल सुखमयी, केवल वीर्यमयी।
अनंत गुणमयी प्रभु मैंने पाया, जिसमें जाननहार जनाया॥
आत्मा........ ॥2 ॥

शुद्ध द्रव्य मेरा, शुद्ध गुण है मेरा,
शुद्ध पर्याय रूप परिणमन मेरा।
शुद्धात्म मेरी दृष्टि में आया, जिसमें जाननहार जनाया॥
आत्मा........ ॥3 ॥

(19) ज्ञानी का ध्यानी का....

ज्ञानी का ध्यानी का सबका कहना है।
एक आत्मा ही सबका गहना है।
सोना, चाँदी, पुद्‌गल की सेना है।
ज्ञानी का ध्यानी का.....

मेरे प्रभुवर हो तुम, सबसे अच्छे हो।
सबसे अच्छे हो तुम, सबसे अच्छे हो॥
मैं भी बनूँ, तुमसा, निज में रहना है।
एक आत्मा........ ॥1 ॥

पर में तू भटका,यही है तेरी भूल।
निज में रमजा चेतन, खिलेंगे 'समकित' फूल॥
संयम की साधना में रत रहना है
एक आत्मा........ ॥2 ॥

रत्नत्रय की भक्ति, सब जीवों को प्राप्त हो।
दर्शन ज्ञान चरित, सबके उर में व्याप्त हों॥
चैतन्य आत्मा में रत रहना है।
एक आत्मा........ ॥3 ॥

(20) तू ज्ञान का सागर है...

तू ज्ञान का सागर है, आनंद का सागर है।
उसी आनंदके प्यासे हम-2॥
निजज्ञान सुधा चाहें, प्रभु जी तेरी कृपा से हम।।टेक॥

विषय भोग में तन्मय होकर खोया है जीवन वृथा,
बात प्रभु तेरी एक न मानी, अपनी ही धुन में रहा-2।
जाना है किधर हमको, और आये हैं कहाँ से हम।।तू ज्ञान... ॥1॥

आतम अनुभव अमृत तजकर, पिया विषय जल क्षार,
मोह नशे में पागल होकर किया न तत्त्व विचार - 2।
नैया है मेरी मंझधार इसी से प्रभु को बुलाते हम॥ तू ज्ञान... ॥2॥

भूल रहे हैं राह वतन की, भटक रहे संसार,
भीख माँगते दर-दर भ्रमते, घर में भरा है भंडार - 2।
निज धाम हमारा है, जायें स्वदेश यहाँ से हम॥ तू ज्ञान... ॥3॥

(21) काम मेरा है जानना...

काम मेरा है जानना, काम मेरा मात्र जानना - 2।
बस मैं चाहूँ, भगवन बनूँ और स्वपर का ज्ञान करूँ - 2॥

मैं तो ज्ञायक हूँ, और आत्मध्यान का ज्ञानी।
मुझे मुक्ति में जाना है, और बनना भेदविज्ञानी॥

अपने तो चेतन को, मुक्ति के जीवों से।
मिलाना है अपने गुणों को।

मैं तो न धन चाहूँ, न अपनापन चाहूँ।
एक मुक्ति को पाना है॥

(22) हे ज्ञान.... हे ज्ञान....

हे ज्ञान.... हे ज्ञान.... - 2

बन्ध से छुड़ाता, मुक्ति दिलाता।
हम से तुम्हारा, तादात्म्य नाता॥
सारे जग को तू ही जान.... हे ज्ञान..... ॥1॥

तेरे ही सहारे, जग से हैं न्यारे।
कर्तापन का, भार उतारें॥
हो जाए भेद विज्ञान.... हे ज्ञान..... ॥2॥

सबका ज्ञाता, निज में समाता।
शुद्धात्मा को, लक्ष्य बनाता॥
होते सम्यक ज्ञान.... हे ज्ञान..... ॥3॥

(23) ऐ आतम है तुझको नमन....

ऐ आतम है तुझको नमन, शुद्धातम है तुझको नमन;
वीरवाणी का हम, जिनवाणी का हम।
सदा करते रहे चिन्तवन, ऐ आतम॥ टेक॥

राग और द्वेष हममें भरा, और मिथ्यात्व से मन भरा;
मोह और मान में, आतम अज्ञान में, अपना जीवन अभी तक रहा,
अब हटाये सभी आवरण, और रखें धर्म पथ पर कदम॥
वीरवाणी का हम... ॥१॥

आज जीवन हुआ दुःखमय, ये तो संघर्ष का है समय;
हर तरफ भ्रान्ति है, हर तरफ क्रान्ति है, अपना जीवन बने शान्तिमय,
निज को निज से मिलायेंगे हम, ऐसे सिद्धपद को पायेंगे हम।
वीरवाणी का हम... ॥२॥

ऐसे जिनवर प्रभु को नमन, आतमा में सदा ही रमन;
चलि चलहूँ न हो, तुम मुक्तिश्री, जिनज्ञान की लेके शरण,
जिनवाणी को पढ़कर के हम, और सुधारेंगे अपना जनम।
वीरवाणी का हम... ॥३॥

वैराग्य भक्ति खण्ड

(1) एक तुम्हीं आधार हो......

एक तुम्हीं आधार हो जग में, अय मेरे भगवान।
कि तुमसा और नहीं बलवान।
सम्हल न पाया गोते खाया, तुम बिन हो हैरान।
कि तुमसा और नहीं बलवान॥ टेक॥

आया समय बड़ा सुखकारी, आतम बोध कला विस्तारी।
मैं चेतन तन वस्तु न्यारी, स्वयं चराचर झलकी सारी॥
निज अन्तर में ज्योति ज्ञान की अक्षय निधि महान॥1॥

दुनियाँ में एक शरण जिनंदा, पाप-पुण्य का बुरा ये फंदा॥
मैं शिव भूप रूप सुख कंदा, ज्ञाता दृष्टा तुम सा बन्दा॥
मुझ कारज के कारण तुम हो और नहीं मतिमान॥2॥

सहज स्वभाव भाव दरशाऊँ पर परिणति से चित्त हटाऊँ।
पुनि-पुनि जग में जन्म न पाऊँ सिद्धसमान स्वयं बन जाऊँ॥
चिदानन्द चैतन्य प्रभु का है सौभाग्य प्रधान॥3॥

(2) मोक्ष के प्रेमी हमने...

मोक्ष के प्रेमी हमने, कर्मों से लड़ते देखे।
मखमल पर सोनेवाले, भूमि पर पड़ते देखे॥ टेक॥

सरसों का दाना जिनके, बिस्तर पर चुभता था,
काया की सुध नाहीं, गीदड़ तन भगते देखे॥ 1॥

अर्जुन और भीम जिनके, बल का न पार था,
आत्मोन्नति के कारण, अग्नि में जलते देखे॥ 2॥

हे पारसनाथ स्वामी, तद्भव मोक्षगामी,
कर्मों ने नाही छोड़ा, पत्थर तक पड़ते देखे॥ 3॥

बौद्धों का जोर था जब, निकलंक देव देखे,
धर्म को नाहीं छोड़ा, मस्तक तक कटते देखे॥ 4॥

भोगों को त्याग चेतन, जीवन ये बीता जाये
तृष्णा न पूरी हुई, डोली पर चढ़ते देखे॥ 5॥

(3) आनंद श्रोत बह रहा...

आनंद श्रोत बह रहा, और तू उदास है।
अचरज है जल में रहके भी, मछली को प्यास है।टेक॥

उठ ज्ञान चक्षु खोल के, तू देख तो जरा।
जिसकी तुझे तलाश है, वो तेरे पास है॥1॥

गन्ने में ज्यों मिठास, फूल में सुवास है।
निज आत्मा में तेरे ही, परमात्म वास है॥2॥

कुछ तो समय निकाल, आत्म शुद्धि के लिए।
नर जन्म का-ये लक्ष्य, ने केवल विलास है॥3॥

आतम प्रभु को भूलकर, दूषित है मन तेरा।
प्रभु का न स्मरण तुझे, और जग से आस है॥4॥

(4) क्या तन मांजना रे...

क्या तन मांजना रे..... इक दिन मिट्टी में मिल जाना।
मिट्टी ओढन, मिट्टी बिछावन, मिट्टी का सिरहाना॥ टेक॥

इस तन को तू रोज सजावे, खूब खिलावे खूब पिलावे।
निश-दिन इसकी सेवा करके, सुंदर-सुंदर वस्त्र पहिनावे॥
अंत समय ये साथ जाएगा, इस भ्रम में न आना॥1॥

अब तो स्वानुभूति उर लाओ, ज्ञाता दृष्टा खुद बन जाओ।
भेद ज्ञान से सिद्ध हुए हैं, जीव अनंतानंत हुए हैं॥
भेद ज्ञान बिन कभी न होगा, मिथ्या भ्रम क्षय कारा॥2॥

इसी देह को छोड़ प्रभु ने, शाश्वत् सुख है पाया।
अपने में अपनापन करके, निज वैभव प्रगटाया॥
नहीं तोड़ना इस तन को बस, इससे राग हटाना॥3॥

काल अनंत गए अब तक बस, इससे प्रीति करी है।
लेकिन इसमें महक रहे 'ज्ञायक' की शरण न ली है॥
ये नहीं मुझमें मैं नहीं इसमें, भेद विज्ञान जगाना॥४॥

(5) नर तन को पाकर के....

नर तन को पाकर के, जीवन को विमल कर लो।
शिवपुर के पथिक बनो, नरजन्म सफल कर लो॥ टेक॥

न उम्र की सीमा है, न जन्म का है बंधन।
निज में निज अनुभव कर, बन जाओ स्वयं भगवन्॥
निज के वैभव से तुम, निज को ही धनिक कर लो।
शिवपुर के पथिक बनो, नरजन्म सफल कर लो॥1॥

चारों ही गतियों में, चारों ही कषायों ने।
मुझे खूब रुलाया है, तुझे खूब भ्रमाया है॥
अब मानुष तन पाकर, यह जन्म सफल कर लो।
शिवपुर के पथिक बनो, नरजन्म सफल कर लो॥2॥

परद्रव्य परभावों को, तू निज का मान रहा।
निज को तू भूल रहा, पर को निज मान रहा॥
अंतर में दृष्टि बदल, अब भेदज्ञान कर लो।
शिवपुर के पथिक बनो, नरजन्म सफल कर लो॥3॥

(6) करुणा सागर भगवान....

करुणा सागर भगवान, भव पार लगा देना।
तूफान बहुत भारी, मेरी नाव तिरा देना।टेक॥

मोही बनकर मैंने, अब तक जीवन खोया।
अपने ही हाथों से, काँटों का बीज बोया॥
अब तेरी शरण आया, दु:ख जाल हटा देना।
करुणा सागर............ ॥1॥

भगवान तेरी भक्ति से, संकट टल जाते हैं।
अज्ञान तिमिर मिटता, सुख के फल आते हैं॥
चरणों में पड़ा हूँ मैं, मुझे राह दिखा देना।
करुणा सागर............ ॥2॥

लख चौरासी भ्रमते, बहु कष्ट उठाया है।
हुआ जन्म मरण मेरा, सुख चैन न पाया है॥
चरणों में मस्तक है, मुझे अपना बना लेना।
करुणा सागर............ ॥3॥

आतम अनुभव अमृत, तजकर विषपान किया।
मिथ्यात्व हलाहल से, छककर स्नान किया॥
शुद्धात्म पीयूष पीऊँ, सद्बोध दिशा देना।
करुणा सागर............ ॥4॥

(7) हे भविजन ध्या लो....

हे भविजन ध्या लो आतमराम।
कौन जानता कब हो जाए, इस जीवन की शाम।टेक॥

जग में अपना कुछ भी नहीं है, पर जन तन या दाम।
आयु अंत पर सब छूटेगा, जल जाएगी चाम ॥1 ॥

यह संसार दुखों की अटवी, यहाँ नहीं आराम।
शुद्धात्म की करो साधना, रहो सदा निष्काम ॥2 ॥

मोह राग को छोड़ रे चेतन, निजमें करो विश्राम।
शुद्ध-बुद्ध अविनाशी हो तुम, शुद्धातम सुखधाम ॥3 ॥

(8) साधना के रास्ते...

साधना के रास्ते, आत्मा के वास्ते चल रे राही चल।
मुक्ति की मंजिल मिले, शांति की सरसिज खिले ॥
चल रे राही चल ।टेक ॥

कौन है अपना यहाँ, किसको पराया हम कहें।
एक की आँखों में खुशियाँ, एक के आँसू बहैं।
आत्म के मंदिर चले, ज्योति से ज्योति जले ॥
चल रे राही चल ॥1 ॥

ज्ञान ही अज्ञान था, तो भटकते ये हर जनम।
छल कपट माया दुराचार, कर रहे थे हर कदम।
बात हो कल्याण की, हो शरण भगवान की ॥
चल रे राही चल ॥2 ॥

(9) भूला है तू स्वयं...

भूला है तू स्वयं को ऐ भगवन्, जो भुलाने के काबिल नहीं है
आत्मन् आया अवसर सुनहरा, चूक जाने के काबिल नहीं है ।टेक ॥

मूढ़ काया को प्रतिदिन सजाता, नाना भूषण वसन नित पहनाता।
एक दिन छूट जाएगा निश्चित, ममता करने के काबिल नहीं है ॥1 ॥

पाप छोड़ के पुण्य में आता, मानकर धर्म उसमें भ्रमाता।
अरे बंध का ये भी कारण, मुक्ति मारग के काबिल नहीं है ॥2 ॥

सर्व निर्णय में मन को लगाओ, भेद विज्ञान सम्यक् सजाओ।
सर्व पर्याय गुण भेद को भी, मैं कहाने के काबिल नहीं है॥3॥

ध्रुव के आश्रय सम्यक् उपजाता, ज्ञान चारित्र सच्चा प्रगटाता।
कोई शिव मार्ग अरु शिव स्वयं ही, शंका करने के काबिल नहीं है॥4॥

एक ही मंगलोत्तम शरण है, ज्ञायक ही निश्चय तारन तरन है।
होता स्वयमेव सब परिणमन है, चिंता करने के काबिल नहीं है॥5॥

सुन समझ चेत निज को समझ ले, मात्र ज्ञायक हूँ स्वीकार कर ले।
कैसा सुंदर समागम मिला है, जो गंवाने के काबिल नहीं है॥6॥

(10) भूलकर अपना घर....

भूलकर अपना घर, जाने कितनों के घर
तुझको जाना पड़ा॥टेक॥

इस जहाँ में कई घर बनाये तूने।
रिश्तेदारी सभी से निभाई तूने॥
जिनके थे तुम पिता, उन्हीं को पिता, फिर बनाना पड़ा॥1॥

जो थी माता कभी, वो ही पत्नी बनी।
पत्नी से फिर तेरी भगिनी बनी॥
रिश्ते बनते रहे, और बिछड़ते रहे, न ठिकाना मिला॥2॥

बन के जलचर तू सबलों से खाया गया।
होके नभचर तू जालों, फँसाया गया॥
नरक पशुओं के गम, देखकर वो सितम, हाय रोना पड़ा॥3॥

इस जहाँ की तो वधुऐं, अनेकों वरी।
मुक्ति रानी न अब तक, मेरे मन बसी॥
जिसने इसको वरा, इस जहाँ की धरा, फिर न आना पड़ा॥4॥

(11) पाना नहीं जीवन को...

पाना नहीं जीवन को, बदलना है साधना।
धुएँ सा जीवन मौत है, जलना है साधना ॥टेक ॥

मूंड मुड़ाना बहुत सरल है, मन मंडन आसान नहीं,
व्यर्थ भभूत रमाना वन में, यदि भीतर का ज्ञान नहीं,
पर की पीड़ा में मोम सा, पिघलना है साधना।
पाना नहीं जीवन.... ॥1 ॥

मन्दिर में हम बहुत गये पर, मन यह मन्दिर नहीं बना,
व्यर्थ देवालय में जाना यदि, मन समता रस नहीं सना,
पल-पल समता में इस तन का, ढलना है साधना।
पाना नहीं जीवन.... ॥2 ॥

सच्चा पाठ तभी होगा जब, जीवन में पारायण हो,
श्वांस-श्वांस धड़कन-धड़कन में, जुड़ी हुई रामायण हो,
तब पर परिणति से चित्त हटा, रमना है साधना।
पाना नहीं जीवन.... ॥3 ॥

(12) मोहे भावे न भैया...

मोहे भावे न भैया थारो देश, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥ टेक ॥

मोहे न भावे यह महल अटारी, झूँठी लागे मोहे दुनिया सारी;
मोहे भावे नगन सुभेष, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥1 ॥

हमें यहाँ अच्छा नहीं लगता, यहाँ हमारा कोई न दिखता;
मोहे लागे यहाँ परदेश, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥2 ॥

श्रद्धा ज्ञान चारित्र निवासा, अनन्त गुण परिवार हमारा;
मैं तो जाऊँगा सुख के धाम, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥3 ॥

कब पाऊँगा निज में थिरता, मैं तो उसके लिए तरसता;
मैं तो धारूँ दिगम्बर भेष, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥4 ॥

(13) देख तेरी पर्याय की हालत...

देख तेरी पर्याय की हालत क्या हो गयी भगवान;
तू तो गुण अनन्त की खान;
चिदानन्द चैतन्यराज क्यों अपने से अनजान;
तुझमें वैभव भरा महान।टेक॥

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, श्री जिनवर के दर्शन पाया;
जिनने निज को निज में ध्याया, शाश्वत् सुखमय वैभव पाया;
इसलिए श्री जिन कहते हैं, कर लो भेद-विज्ञान॥1॥

तन-चेतन को भिन्न पिछानों, रत्नत्रय की महिमा जानो;
निज को निज पर को पर जानो, राग भाव से मुक्ति न मानो;
सप्त तत्त्व की यही प्रतीति देगी मुक्ति महान॥2॥

(14) सन्त साधु बनके....

सन्त साधु बनके विचरूँ वह घड़ी कब आयेगी।
चल पडूँ मैं मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी।टेक॥

आयेगा वैराग्य मुझको, इस दु:खी संसार से।
त्याग दूँगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी॥1॥

हाथ में पीछी कमण्डल, ध्यान आतम राम का।
छोड़कर घरबार दीक्षा की घड़ी कब आयेगी॥2॥

पाँच समिति तीन गुप्ति, बाईस परिषह भी सहूँ।
भावना बारह जु भाऊँ, वह घड़ी कब आयेगी॥3॥

बाह्य उपाधि त्याग कर निज तत्त्व का चिन्तन करूँ।
निर्विकल्प होवे समाधि वह घड़ी कब आयेगी॥4॥

भव-भ्रमण का नाश होवे इस दु:खी संसार से।
विचरूँ मैं निज आत्मा में, वह घड़ी कब आयेगी॥5॥

(15) तू जाग रे चेतन प्राणी.....

तू जाग रे चेतन प्राणी कर आतम की अगवानी।
जो आतम को लखते हैं उनकी है अमर कहानी।।टेक।।

है ज्ञान मात्र निज ज्ञायक जिसमें हैं ज्ञेय झलकते।
यह झलकन भी ज्ञायक है, इसमें नहिं ज्ञेय महकते।।
मैं दर्शन ज्ञान स्वरूपी मेरी चैतन्य निशानी।।1।।

अब समकित सावन आया, चिन्मय आनन्द बरसता।
भीगा है कण-कण मेरा हो गई अखण्ड सरसता।।
समकित की मधु चितवन में झलकी है मुक्ति निशानी।।2।।

ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शान्ति बरसती इनमें।
मानों आया सिद्धालय, मेरी बस्ती हो उसमें।।
मैं हूँ शिवपुर का वासी भव-भव की खतम कहानी।।3।।

(16) उठो रे सुज्ञानी जीव....

उठो रे सुज्ञानी जीव, जिनगुण गाओ रे-3।।टेक।।

निशि तो नसाई गई भानु को उद्योत भयो-2
ध्यान को लगाओ प्यारे नींद को भगाओ रे।।
उठो रे सुज्ञानी........................।।1।।

भववन चौरासी बीच, भ्रमे तो फिरत नीच-2
मोहजाल फन्द परयो, जन्म-मृत्यु पायो रे।।
उठो रे सुज्ञानी........................।।2।।

आरज पृथ्वी में आय, उत्तम जन्म पाये-2
श्रावक कुल को लहाये, मुक्ति क्यों न जाओ रे।।
उठो रे सुज्ञानी........................।।3।।

विषयनि राचि-राचि, बहुविधि पाप साचि-2
नरकनि जायके, अनेक दुःख पायो रे॥
उठो रे सुज्ञानी........................ ॥4॥

पर को मिलाप त्यागि, आतम के जाप लागि-2
सुबुद्धि बताये गुरु, ज्ञान क्यों न लाओ रे॥
उठो रे सुज्ञानी........................ ॥5॥

(17) चलो रे भाई....

चलो रे भाई अपने वतन में चले
अपने वतन में तन ही नहीं है,
तन ही नहीं है मन भी नहीं है,
राग और द्वेष की दुविधा नहीं है,
विषय कषायों का ताप नहीं है,
दर्शन मोह को सुविधा नहीं है।टेक॥

सुख सरोवर बहे-चलो रे भाई अपने वतन में चले...
सिद्धों से होगी रिश्तेदारी
मंगलमय परिणति अविकारी
सादि अनंत सहज सुखकारी
सुख अनंत लहे-चलो रे भाई अपने वतन में चले... ॥1॥

मुनियों का मार्ग भाने लगा है
रत्नत्रय का रंग आने लगा है
सिद्ध ही होंगे चारों ओर - चलो रे भाई अपने वतन में चले... ॥2॥

मुक्ति के मार्ग में, मैं भी चलूँगा
वन खण्डादि में अचल रहूँगा
चाहे उपसर्ग आ जाये- चलो रे भाई अपने वतन में चले.... ॥3॥

मोक्ष महल में हम सब मिलेंगे
मोक्ष महल में मैं भी रहूँगा
चार गति में अब ना रुलूँगा
वीतरागी वाणी सुहाय-चलो रे भाई अपने वतन में चले... ॥4॥

(18) आया कहाँ से कहाँ है जाना....

आया कहाँ से कहाँ है जाना,
ढूँढ़ ले ठिकाना चेतन ढूँढ़ ले.... ॥ टेक ॥

इक दिन तेरा गोरा तन यह, माटी में मिल जायेगा।
कुटुम्ब कबीला खड़ा रहेगा, कोई बचा न पायेगा।
नहीं चलेगा कोई बहाना, ढूँढ़ ले..... ॥1 ॥

बाहर सुख को खोज रहा है, बनता क्यों दिवाना रे।
आतम ही सुखधाम है चेतन, खुद को भूल न जाना रे।
सारे सुखों का ये है खजाना, ढूँढ़ ले.... ॥2 ॥

धन दौलत और रूप खजाने, यही धरे रह जायेंगे।
दौलत के दीवानों सुन लो कुछ भी साथ न जायेंगे।
आया अकेला अकेले है जाना, ढूँढ़ ले..... ॥3 ॥

(19) पुद्‍गल का क्या विश्वासा...

पुद्‍गल का क्या विश्वासा, जैसे पानी बीच पताशा।
जैसे चमत्कार बिजली का, और इन्द्र धनुष आकाशा-2 ॥ टेक ॥

एक दिन ऐसा होगा लोगों जंगल होगा वासा - 2,
इस तन पर हलचल जाएँगे और पशु चरेंगे घासा ॥1 ॥

झूठा तन धन झूठा यौवन, झूठा है जग सारा - 2,
झूठे ठाठ है दुनिया के, और झूठा है जग वासा ॥2 ॥

इक बार श्री जिन जी का, भजले तू नाम निराला-2,
नवन कहे क्षण भी न भूलों, जब तक है घट में श्वासाँ ॥3 ॥

(20) जीवन है पानी की बूँद....

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे
होनी अनहोनी कब क्या घट जाए रे॥
जीवन है पानी.......... ॥टेक ॥

पढ़ा न जरा विचारा है, खुद को नहीं सुधारा है।
खुद को नहीं सुधारा है, इसीलिए अँधियारा है॥
इसलिए अँधियारा है, दिल में नहीं उतारा है।
खुद को ही पढ़ ले, सब कुछ पढ़ जाए रे॥1॥

करना है वो आज करें, कल पर मत विश्वास करें।
कल पर मत विश्वास करो, आज करो वो अभी करो॥
कल को किस ने देखा है, कल का नहीं भरोसा है।
कल-कल करके तू, क्यों अकल गँवाये रे॥2॥

(21) तीन भुवन के स्वामी....

तीन भुवन के स्वामी मेरे, आया सुखद सबेरा।
आनन्द उर न समाये, प्रभुवर दर्शन पाया तेरा॥ टेक॥

वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, हम सुनी नहीं जिनवाणी।
कर्ता-धर्ता तुमको माना, कर बैठा नादानी॥
तुम तो साक्षीभूत जगत् के, दूर हुआ भ्रम मेरा॥1॥

कण-कण है स्वाधीन जगत् का तुमने प्रभु बतलाया।
निज-पर के कर्तापन का भ्रम जिनवर दर्शन तेरा॥
सर्व विकल्प शून्य आनन्दमय, जिनवर दर्शन तेरा॥2॥

तन-मन कर्म रंग-रागादिक देते भिन्न दिखाई।
सम्यग्ज्ञान कला उर जागी, निज प्रभुता मैं पाई॥
मुक्त स्वरूप अहो प्रगटा अब, सफल हुआ भव मेरा॥3॥

सम्यक् हुई प्रतीति प्रभुवर, तुम सम ही प्रभु मैं हूँ।
हूँ गुणधाम सहज अभिराम, सु आनन्द धाम सदा हूँ॥
निज में ही रम जाऊँ विभुवर, अभिनन्दन है तेरा॥4॥

(22) मैं तो छोड़ चला....

मैं तो छोड़ चला गतियों का वेश
सिद्धों का प्यारा लगे
मोह आता है आनंद विशेष
सिद्धों का घर प्यारा लगे ।।टेक ।।

हमें यहाँ अच्छा नहीं लगता,
यहाँ हमारा कोई न दिखता।
मोहे लागे यहाँ परदेश,
सिद्धों का घर प्यारा लगे ।।1 ।।

पाप भाव में जीवन बिताया,
पुण्य भाव में खुद को लुभाया।
मैं तो धारूँ दिगम्बर वेश,
सिद्धों का घर प्यारा लगे ।।2 ।।

अब तो यही भावना भाऊँ,
तत्त्वज्ञान में जीवन लगाऊँ।
निर्ग्रंथों का पथ अपनाकर,
निज में निज का ध्यान लगाऊँ।।
करूँ सिद्धों की नगरी प्रवेश,
सिद्धों का घर प्यारा लगे ।।3 ।।

(23) क्षणभंगुर इस झूठे जग में...

क्षणभंगुर इस झूठे जग में, मुझको अब नहीं रहना
हम सिद्ध शिला पर जाएंगे, तुम देखते रहना

दृष्टि सम्यक् हो जाएगी और निज को लक्ष्य बनायेगी
संयम का अंश प्रकट करके, अविरत का भाव नशाएगी
जड़ रत्नों को छोड़ के इक दिन पहने रत्नत्रय गहना
हम सिद्ध.......

हम निज का ध्यान लगायेंगे कैवल्यज्ञान हो जाएगा
फिर लगा हो चाहे समवसरण बस ज्ञायक भाव सुहाएगा
काल अनंतानंत हमें फिर, सिद्धों के संग रहना
हम सिद्ध.......

स्थिरता बढ़ती जाएगी, मुनिदशा धन्य हो जाएगी
और तीन कषाय चौकड़ी भी, फिर सहज नष्ट हो जाएगी
परिषह और उपसर्गों के भी बस ज्ञाता ही रहना
हम सिद्ध.......

(24) अब गतियों नांही....

अब गतियों में नांही रुलेंगे, निजानंद पान करेंगे,
अब भव-भव का नाश करेंगे, निजानंद पान करेंगे।।टेक।।

मैं मुझमें पर में पर रहता, निज रस के सागर में बहता।
अब भेद विज्ञान करेंगे निजानंद पान करेंगे।।1।।

मैं ज्ञायक ज्ञायक ही ना जाना, ज्ञेयों में ही आनंद माना।
खुद की खुद में ही खोज करेंगे निजानंद पान करेंगे।।2।।

तूने खुद को न पहिचाना, अब तक आत्मस्वभाव न जाना।
अब सिद्धों के बीच रहेंगे, निजानंद पान करेंगे।।3।।

(25) न रागी बनूँगा न मैं द्वेषी बनूँगा...

न रागी बनूँगा न मैं द्वेषी बनूँगा
भगवान की सन्तान हूँ, भगवान बनूँगा।। टेक।।

बस मोह भाव ने, मुझे संसार रुलाया,
विपरीत मान्यता से, मैं दुःख ही पाया।
और व्यर्थ ही मैं यूँ अनन्त काल गँवाया,
संसार में मैं फिर से नहीं जन्म धरुँगा।।1।।

अज्ञानता से मैंने जिस वस्तु को जाना,
एकत्व और ममत्व से अपना उसे माना।
जो जानने के योग्य था बस वो ही न जाना,
मैं भेदज्ञानपूर्वक आत्मज्ञान करूँगा ॥2 ॥

व्रत, शील और संयम बाहर से ही किया,
इच्छा निरोध के कभी प्रयास न किये।
पाप छोड़ पुण्य में सन्तुष्ट ही रहे,
मैं तो विकार से भी भेदज्ञान करूँगा ॥3 ॥

(26) विषयों से दामन बचाते चलो

विषयों से दामन बचाते चलो,
कर्मों के बन्धन छुड़ाते चलो ॥ टेक ॥

ये घर तेरा नाही चेतन कोह को भरमाया
इस झूठी दुनिया से पगले काहे को नेह लगाया।
भक्ति में मन को लगाते चलो ॥1 ॥

आया है जो जायेगा वो, युग युग की ये रीति
सोच समझ ले ओ बावरिया आयु जाये बीती
रिश्ते नाते भुलाते चला ॥2 ॥

रावण राजा से बलधारी काल बलि से हारे
गया सिकन्दर भी दुनिया से खाली हाथ पसारे
मान को मन से हटाते चलो ॥3 ॥

(27) जिया कब...

जिया कब तक घूमेगा संसार में,
चलो चलो न चेतन-दरबार में ॥टेक ॥

अनादि काल से घूम रहा है, पर में तू सुख को खोज रहा है;
जहाँ सुख का नहीं है ठिकाना। चलो चलो न... ॥1 ॥

सिद्ध समान स्वभाव है चेतन, जड़ कर्मों से भिन्न है चेतन;
स्व सन्मुख पर्याय प्रगटाओ ना। चलो चलो न... ॥2 ॥

अब तक जीवन ऐसा बिताया, संसार को ही तूने बढ़ाया;
आज पुण्य उदय है हमारा। चलो चलो न... ॥3 ॥

मृत्यु महोत्सव की तैयारी करले, ममता को तजकर समता धरले;
तेरे पास है सुख का खजाना। चलो चलो न... ॥4 ॥

आनन्द सागर अन्तर में उछले, आनन्द-आनन्द की लहर है डोले;
उस सागर में डुबकी लगाओ ना। चलो चलो न... ॥5 ॥

(28) मैं क्या माँगू भगवान...

मैं क्या माँगू भगवान, मैं तुमसे क्या माँगूँ ?
मेरे रोम रोम में बस जाओ भगवान और मैं क्या माँगू ।।टेक ।।

धन न माँगू भगवन्, मान न माँगू
झूठे जग की शान न माँगू।
देना हो तो दे दो भगवन्,
अपने को जिन धाम और मैं क्या माँगू ॥1 ॥

हे प्रभु तुम तो अर्न्यामी,
पार करो ये नाव हमारी।
दया करो हे दया सिंधु भगवान,
करो कल्याण, और मैं क्या माँगू ॥2 ॥

तुम तो सारे जग के रखवारे,
तुम तो हो सबके जाननहारे।
दो ऐसा वरदान प्रभुजी, चरणों में रहे ध्यान
और मैं क्या माँगू ॥3 ॥

(29) सुन रे जिया ...

सुन रे जिया चिरकाल गया,
तूने छोड़ा न अब तक प्रमाद, जीवन थोड़ा रहा।टेक॥

जिनवाणी कहती है तेरी कथा, तूने भूल करी सही भारी व्यथा;
अब करले स्वयं की पहिचान, जीवन थोड़ा रहा॥1॥

जीव तत्त्व है तू, परम उपादेय, अजीव सभी हैं ज्ञान के ज्ञेय;
निज को निज, पर को पर जान, जीवन थोड़ा रहा॥2॥

आस्रव बन्ध ये भाव विकारी, चेतन ने पाया दु:ख इनसे भारी;
मिथ्यात्व को ले पहिचान, जीवन थोड़ा रहा॥3॥

संवर-निर्जरा शुद्धभाव है, मोक्ष तत्त्व पूर्ण बन्ध अभाव है;
इनको ही हित रूप मान, जीवन थोड़ा रहा॥4॥

(38) तू धर ले दिगम्बर चोला...

तू धर ले दिगम्बर चोला ऽऽऽभाई
धरले दिगम्बर चोला॥ टेक॥

द्रव्यलिंगमय यह चोला संयम का चिह्न कहलाता है,
किन्तु भावलिंगमय बिना कभी ये शोभा नहीं पाता है॥1॥

महावीर से गौतमजी तक, गौतमजी से कुन्दकुन्द तक
कुन्दकुन्द से टोडरमल तक, सबने यही है बोला॥2॥

इस चोले को धारण करने, सुरपति मन ललचाया है
जिसके लिए स्वर्ग का, वैभव भी सब ठुकराया है।
चलते-फिरते सिद्धों जैसे मुनिराजों का टोला॥3॥

प्रासंगिक भक्ति खण्ड

(1) आएँगे जब परमात्मा...

आएँगे जब परमात्मा, त्रिभुवन झूम उठेंगे।
बरसेगा आनन्द-बरसेगा आनन्द तीनों लोक में।
भविजन भाग्य जगेंगे.... ॥ टेक ॥

पंच कल्याणक आए हैं, रत्न सुरों ने बरसाएँ हैं।
निज कल्याणक कराते हैं, भविजन समकित पाते हैं।
आयें शुद्धात्मा, आये सिद्धात्मा।
बरसेगा आनन्द-2..... ॥1 ॥

त्रिलोकीनाथ पधारे है, त्रिजग में जयकारे हैं।
सातिशय पुण्य को धारे हैं, प्रथम जिनेश्वर हमारे हैं॥
आयें शुद्धात्मा, आये परमात्मा।
बरसेगा आनन्द-2...... ॥2 ॥

पावन अवसर आया है, पुण्योदय से पाया है।
नरपति सुरपति आये हैं गणधर महिमा गाते हैं॥
आयें शुद्धात्मा, आये सिद्धात्मा।
बरसेगा आनन्द-2.... ॥3 ॥

(2) सीमंधर मुख से....

सीमंधर मुख से फुलवा खिरे, जाकी कुन्दकुन्द गूँथे माल रे।
जिनजी की वाणी भली रे। सीमंधर मुख से फुलवा खिरे ।।टेक ।।

वाणी प्रभु मन लागे भली, जिसमें सार समय सिरताज रे।
जिनजी की वाणी भली रे। सीमंधर मुख से फुलवा खिरे ।।1 ।।

गूँथा पाहुड़ अरु गूँथा पंचास्ति, गूँथा जो प्रवचनसार रे।
जिनजी की वाणी भली रे। सीमंधर मुख से फुलवा खिरे ।।2 ।।

गूँथा नियमसार गूँथा रयणसार, गूँथा समय का सार रे।
जिनजी की वाणी भली रे। सीमंधर मुख से फुलवा खिरे ।।3 ।।

स्याद्वादरूपी सुगंधी भरा जो, जिनजी का ओंकार नाद रे।
जिनजी की वाणी भली रे। सीमंधर मुख से फुलवा खिरे ।।4 ।।

वंदूँ जिनेश्वर, वंदूँ मैं कुन्दकुन्द, वंदूँ यह ओंकार नाद रे।
जिनजी की वाणी भली रे। सीमंधर मुख से फुलवा खिरे ।।5 ।।

हृदय रहो मेरे भावे रहो, मेरे ध्यान रहो, जिनबैन रे।
जिनजी की वाणी भली रे। सीमंधर मुख से फुलवा खिरे ।।6 ।।

जिनेश्वरदेव की वाणी की गूँज, मेरे गूँजती रहो दिन रात रे।
जिनजी की वाणी भली रे। सीमंधर मुख से फुलवा खिरे ।।7 ।।

(3) भ्रात जिनवाणी सम....

भ्रात जिनवाणी सम नहिं आन, जान श्रुतपंचमी पर्व महान ।। टेक ।।

एकान्तों का नहीं ठिकाना, स्याद्वाद का लखा निशाना।
है मिटता भव-भव का अज्ञान, जान श्रुतपंचमी पर्व महान ।।1 ।।

केवलज्ञानी की यह वाणी, खिरे निरक्षर तदि समझानी।
सुरनर तिर्यंच सुनतें आन, जान श्रुतपंचमी पर्व महान ।।2 ।।

गणधर हृदय विराजी माता, ज्ञानस्वभाव सहज झलकाता।
सुनत चिन्तत हो भेदविज्ञान, जान श्रुतपंचमी पर्व महान ।।3 ।।

भविजन प्रीतिसहित चितधारे, रवि शशि सम तम को परिहारे।
उर घट प्रगटे पूरने ज्ञान, जान श्रुतपंचमी पर्व महान॥4॥

मोक्ष दायिका है जिनमाता, तुम पूजक सम्यक निधिपाता।
नन्द भी अपने आश्रित जान, जान श्रुतपंचमी पर्व महान॥5॥

(4) आया पंचकल्याणक महान....

आया पंचकल्याणक महान आया पंचकल्याणक महान। - 2
जन्म मरण दुख क्षय कर हम भी... - 2 पायें पद निर्वाण॥

जग तारक प्रभु तीर्थेश्वर का अन्तिम जन्म महा सुखमय।
स्वयं तिरे प्रभु भवसागर से हमको तारो यही विनय॥
ज्ञान दिवाकर उदित हुआ अब पाओ सम्यग्ज्ञान...
आया पंचकल्याणक महान आया... - 2

निरख निरख छवि बाल प्रभु की सुरपति आनन्द उर भारी।
रूप अनुपम प्रभु बालक का लख शचि लेती बलिहारी॥
हिल मिल नृत्य करें सब भविजन गावें मंगल गान....
आया पंचकल्याणक महान आया... - 2

गुण अनन्त के धारी प्रभुवर अन्तर परिणति क्या कहना।
तीन ज्ञान संग ले जन्मे प्रभु पहने रत्नत्रय गहना॥
धन्य धन्य हैं भाग्य हमारे मिला मुक्ति वरदान...
आया पंचकल्याणक महान आया... - 2

ज्यों पारस से संस्पर्शित हो लोह स्वयं पारस होता।
त्यों जिनवर के दर्श मात्र से मोह अन्धेरा क्षय होता॥
आप कृपा से जागे वह बल मैं भी बनूँ भगवान...
आया पंचकल्याणक महान आया... - 2

(5) पंचकल्याणक आए, ...

पंचकल्याणक आऐ, आऐऽऽऽकल्याणक आए
मङ्गलायतन में मङ्गलमय महा-महोत्सव मनाए ।।टेक ।।

आगमन तीर्थङ्कर प्रभु का, रोम रोम हर्षाए
अभिनंदन करने जिनवर का, नरपति सुरपति आए
पंच कल्याणक आए...... ।।1 ।।

पुलकित अवनी पुलकित अंबर, पुलकित दसों दिशाए
अनुपमेय अवतार आपका, अमृत रस बरसाए
पंच कल्याणक आए...... ।।2 ।।

अंतरबल से ही आदीश्वर, सर्वश्रेष्ठ पद पाए
दिव्यरूप लखकर जिनवर का, निज की सुधी-बुधी आए
पंच कल्याणक आए...... ।।3 ।।

(6) तेरे पाँच हुए कल्याण प्रभो...

तेरे पाँच हुए कल्याणक प्रभो, इक बार मेरा कल्याण कर दो।
अन्तर्यामी-अन्तर्ज्ञानी, प्रभु दूर मेरा अज्ञान कर दो ।। टेक ।।

गर्भ समय में रत्न जो बरसें, उनमें से एक रतन नहीं चाहूँ।
जन्म समय क्षीरोदधि जल से, इन्द्रों ने किया वो न्हवन नहीं चाहूँ।
जो चित्त को निर्मल शान्त करे, वही गन्धोदक मुझे दान कर दो.... ।।1 ।।

धार दिगम्बर वेश किया तप, तपकर विषय विकार को त्यागा।
निर्ग्रन्थों का पथ अपनाकर, निज आतम को ही आराधा।
अपने लिए बरसों ध्यान किया, मेरी ओर थोड़ा-सा ध्यान कर लो ।।2 ।।

केवलज्ञान की खिल गई ज्योति, लोकालोक दिखानेवाली।
समवशरण में खिरती वाणी, सबकी समझ में आने वाली।
हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, मुझे मेरा दरश आसान कर दो ।।3 ।।

तीर्थंकर होकर तुम प्रगटे, स्वाभाविक ही मुक्ति तुम्हारी।
सिद्धालय में बैठ प्रभु ने, शाश्वत सुख की धारा पाली।
यहाँ कौन है ऐसा तेरे सिवा, औरों को जो अपने समान कर दो ।।4 ।।

(7) नाथ मेरे होऽऽ नाथ मेरे...

नाथ मेरे होऽऽ नाथ मेरे......
नाथ मेरे पथ रखियो सदा महावीर जी, त्रिशला के ऽऽ राजकुँवर,
जपूँ मैं जिनवर-जिनवर, दया कर नाथ दया कर।।टेक।।

जब महावीर जी गर्भ में आए, देवों ने तब रत्न लुटाए,
इन्द्रों ने ऽऽऽ तेरा न्हवन किया, महावीर जी।
त्रिशला के ऽऽऽ राजकुँवर....... ॥1॥

वो महावीर जी जन-जन के प्यारे, त्रिशला माँ के राजदुलारे,
सिद्धारथ जी ऽऽऽ तेरे पूज्य पिता, महावीर जी।
त्रिशला के ऽऽऽ राजकुँवर....... ॥2॥

रात अमावस की वो आई, तेरे कारण हुई वो दिवाली,
जब तेरा ऽऽऽ निर्वाण हुआ, महावीर जी।
त्रिशला के ऽऽऽ राजकुँवर....... ॥3॥

(8) पावन हो गई....

पावन हो गई आज ये धरती, महावीर के नाम से,
कण-कण से अब गूँज उठेगी, तीर्थेश्वर के नाम से।।टेक।।

छिपा हुआ था गर्भ में, जिसका सुंदर रूप,
प्रगट हुआ है आज वही, जिसका सत्य स्वरूप
चलो जी चलो ध्वज लहराये, कि सब मिल भक्ति गायें,
बहेगी जिनशासन की आज यहाँ पर पावन गंगा
पावन हो गई...... ॥1॥

स्वर्गपुरी सा सजा हुआ, आज यहाँ ये मंगलधाम,
नर-नारी भी उमड़ पड़े हैं करने इसे प्रणाम,
चलो जी चलो कलश ढुरायें, कि चलकर पुण्य कमायें,
करेंगे धन्य ये नर तन को, ये अवसर ऐसा आया
पावन हो गई...... ॥2॥

धन्य-धन्य हैं लोग यहाँ के, मंगल गान किया,
पूज्य गुरु कहान का, सपना साकार किया,
चलो जी चलो दर्शन पाये, कि पूजा पाठ रचाये,
बनेंगे ज्ञानी ध्यानी और बनेंगे वीर जिनन्दा।
पावन हो गई...... ॥3॥

(9) अमृत से गगरी भरो...

अमृत से गगरी भरो, कि न्हवन प्रभु आज करेंगे;
खुशी-खुशी मिल के चलो, कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥ टेक॥

सब साथी मिल कलश सजाओ, मङ्गलकारी गीत सुनाओ;
मन में आनन्द भयो, कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥1॥
इन्द्र-इन्द्राणी मिल हर्ष मनावें, प्रभु-चरणों में शीश झुकावें;
प्रभुजी की छवि निरखो, कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥2॥
सुवर्ण-कलश प्रभु उदकनि धारा, अङ्गे न्हावे जिनवर प्यारा;
स्वामी जगत को खरो, कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥3॥
हे सुखकारी सब दुःखहारी, सेवा जिनकी प्यारी-प्यारी;
लेकर 'सरस' को चलो, कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥4॥

(10) मङ्गल बेला आज.....

मङ्गल बेला आज आई री सखिरीया
हुआ लहर-लहर ये चेतन का घर
जरा निरखन दे।टेक॥

अनन्त गुणों से छलाछल ये सखिरिया
कहीं पाये जो गर, गोते खावे ना सवर, सुख पावेंगे
मङ्गल बेला...............

अब की बार हम जायेंगे जग से, मोह का पाया अन्त रे,
अन जाना एक आतम है प्यारे, कर ले उसका संग रे।

मोह जाल में फस मत जाना-2 ना करना कुसंग रे,
संग करने का निज वादा है सखिरीया हुआ लहर लहर......
मङ्गल बेला................ ॥1 ॥

कितनी दूर अब कितनी दूर है, ऐ चेतन तेरा धाम रे,
अरूपी से पहचान हुई तो, जीवन हो गया धन्य रे।
सम्यक हीरा परख लिया तो-2 कटे चौरासी के फन्द रे,
फन्द हरने का भव पाया है सखिरीया... हुआ लहर लहर....
मङ्गल बेला................ ॥2 ॥

(11) छोटे-छोटे मुनिवर....

छोटे-छोटे मुनिवर, हो गये निहाल।
निज परिणति का, देखो तो कमला॥

आठ वर्ष में ही दीक्षा धार।
नवें वर्ष पाया ज्ञान तत्काल॥ निज परिणति... ॥1 ॥

पंच महाव्रत धारे अणुव्रत धार।
संयम के रथ पर हो गये सवार॥
सम्यक्त्वाचरण पाया आ गया स्वकाल॥ निज परिणति... ॥2 ॥

चार घातिया विनाशे सर्वज्ञ।
अपने में रहकर हुए आत्मज्ञ॥
अघातिया विनाश बने त्रिभुवन भाल॥ निज परिणति... ॥3 ॥

(12) नेमीकुंवर को देखो ये क्या...

नेमी कुंवर को देखो ये क्या हो गया ?
लाये थे बारात और वैराग्य हुआ॥ टेक॥

कैसी ये सावन की घड़ी है, राग विराग में जंग छिड़ी है।
कहीं पर गीत कहीं पर बाजे, नेमी प्रभुजी रथ में विराजै॥

महलों से राजुल ने देखा, नेमी प्रभु ने रथ को रोका।
सारथी से भेद जो पूछा, उन पशुओं को किसने रोका?

दुखमय है इनकी किलकारी, कौन है इन पर अत्याचारी।
सारथी ने भेद जो खोला, नेमी प्रभु का हिल गया चोला।

राग रंग में इतनी हिंसा, पालूँगा मैं परम अहिंसा।
जल गया सारा राग ज्ञान की अग्नि मेंऽऽऽ
चल दिये नेमी कुमार, विराग की बस्ती में ॥1 ॥

मन में भावना बारह आई, लौकान्तिक ने महिमा गायी।
धन्य प्रभु है आपकी बुद्धि, आत्मज्ञान से करो विशुद्धि॥
राग-द्वेष दुखमय संसारा, ज्ञान विराग महा सुखकारा।
एक अकेलापन भा जाता, पूर्णानन्द स्वयं का ज्ञाता॥
नेमी प्रभु का मन अंतर में खो गयाऽऽऽऽ ॥2 ॥

प्रथम अनित्य भावना भाई, आतम नित्य सदा सुखदाई।
संयोगों में शरण नहीं है, शुद्धात्म ही परम शरण है।
पर से भिन्न सदा अविनाशी चेतनमय चैतन्य विलासी
देह अशुचिता हमने जानी, स्व पर भेद के हम श्रद्धानी
पुण्य-पाप तो दु:ख के घर हैं, संवर निज आतम का घर है।
शुद्धि की वृद्धि में निर्जरा होती हैऽऽऽऽ
ध्यान अग्नि ही कर्म कालिमा धोती है ॥3 ॥

सर्व परिग्रह उन ने छोड़ा, जिन दीक्षा से नाता जोड़ा
मन दर्पण तो प्रगट हुआ है, सुख शान्ति आनन्द हुआ है।
राजुल ने भी मन में विचारी, आतमज्ञान महा सुखकारी
नेमी प्रभु का मन अपने में खो गया ॥4 ॥

(13) घर में ही वैरागी भरतजी

घर में ही वैरागी भरतजी- 2
जड़ वैभव से भिन्न स्वयं में निज वैभव अनुरागी।
घर में ही वैरागी भरतजी ॥टेक ॥

छह खंडों को तुमने जीता, यह कहने में आया।
लेकिन जग की विजय में, उनने खुद को हारा पाया॥
भोर भयी समकित की अंतर लगन मोह की भागी।
घर में......... ॥1॥

धन्य-धन्य है लोग वही जो, दिव्य ध्वनि सुन पाते।
किन्तु भरतजी छह खण्डों पर, विजय ध्वजा फहराते॥
भाग्यवान कहे सारी दुनिया, पर समझे वो अभागे।
घर में......... ॥2॥

चक्रवर्ती ये छह खण्डों के, पर अखण्ड अन्तर में।
बाहर से भोगी दिखते, ये पर योगी अन्तर में।
चक्री पद भी नहीं सुहाये, शुद्धातम रुचि लागी॥
घर में......... ॥3॥

भावलिंगी सन्तों की प्रतिदिन, भरत प्रतिक्षा करते।
नवधा भक्ति से पड़गाहन का, भाव हृदय में धरते।
हुए एक अन्तर मुहूर्त में सारे जग के त्यागी॥
घर में......... ॥4॥

(14) धन्य-धन्य हे गौतम....

धन्य-धन्य हे गौतम गुरु पुरुषार्थ तुम्हारा;
निश्चय भक्ति करी प्रभु की भव का लिया किनारा।टेक॥

शिष्य पाँच सौ पाये, इस गौरव में भरमाये;
जिन शासन के तीव्र विरोध, मोह महातम छाये।
कहाँ छिपी थी महायोग्यता जिससे किया उजारा॥1॥

काललब्धि जब आई, इन्द्र निमित्त बन आया;
जिनशासन के सारभूत इक, मंगल छंद सुनाया।
मंगलमय भवितव्य दिशा में तुमने चरण बढ़ाया॥2॥

वीरप्रभु के समवसरण का, मानस्तंभ निहारा;
मिथ्यामद गल गया तुम्हारा, वेश दिगम्बर धारा।
योग्य शिष्य थे वीर प्रभु के झेली जिन-श्रुतधारा ॥3 ॥

अनेकांतमय वस्तु बताई, स्याद्वाद के द्वारा;
वीरप्रभुजी मुक्ति पधारे, तुमने 'केवल' धारा।
धन्य-धन्य निर्वाण महोत्सव जग में हुआ उजारा ॥4 ॥

(15) आदीश्वरस्वामी वन्दूँ...

आदीश्वर स्वामी, वन्दूँ मैं बारम्बार।
धन्य घड़ी प्रभु दर्शन पाये, वन्दूँ बारम्बार।टेक॥

कर्मभूमि की आदि में, मुक्तिमार्ग अविकार।
दर्शायो आनन्दमय, कियो परम-उपकार ॥1 ॥

परम-शान्तमुद्रा अहो, भेदज्ञान दर्शाय।
दिव्यध्वनि सुनि आपकी, विभ्रम सर्व पलाय ॥2 ॥

भव्य अनेकों तिर गये, निजस्वरूप को साध।
इस अशरण संसार में, आपहि तारण हार ॥3 ॥

मुक्ति मार्ग प्रभु आपका, हमें आज भी प्राप्त।
भेदज्ञानियों से अहो, निज में ही हे आप्त ॥4 ॥

प्रभुता प्रभुवर आप सम, दीखे अन्तर माहिं।
होय परम निर्ग्रन्थता, भाव सहज उमगाहिं ॥5 ॥

नहीं प्रयोजन जगत से, चाह न रही लगार।
तृप्त स्वयं में ही रहूँ, सहजरूप सुखकार ॥6 ॥

(16) धन-धन साधर्मी मिलन...

धन-धन साधर्मी मिलन की घड़ी,
बरसत भ्रमताप हरन ज्ञानघन झरी ॥

जाके बिन पाये भवविपति अति भरी
निज परहित अहित की कछू न सुधि परी ॥

जाकै परभाव चित सुथिरतामटी,
संशय-भ्रम-मोह की सुवासना टरी ॥1 ॥

मिथ्या गुरु-देव सेव टेव परिहरी
वीतराग देव सुगुरु सेव उरधरी।

चारों अनुयोग सुहितदेश दिठपरी।
शिवमग के लाह की सुचाह विस्तरी ॥2 ॥

सम्यक् तरु धरनि येह करन करिहरी
भवजल को तरनि समर भुजग विषज।

पूरव भव या प्रसाद रमनि शिववरी।
सेवो अब 'दौल' याहि बात यह खरी ॥3 ॥

(17) अब प्रभु चरण....

अब प्रभु चरण छोड़ कित जाऊँ।
ऐसी निर्मल बुद्धि प्रभु दो, शुद्धातम को ध्याऊँ ॥ अब... ॥ टेक ॥

सुर नर पशु नारक दुख भोगे, कब तक तुम्हें सुनाऊँ।
बैरी मोह महा दु:ख देवे, कैसे याहि भगाऊँ ॥ अब... ॥1 ॥

सम्यग्दर्शन की निधि दे दो, तो भवभ्रमण मिटाऊँ।
सिद्ध स्वपद को प्राप्त करूँ मैं, परम शान्त रस पाऊँ ॥ अब... ॥2 ॥

भेदज्ञान का वैभव पाऊँ, निज के ही गुण गाऊँ।
तुम प्रसाद से वीतराग प्रभु, भवसागर तर जाऊँ ॥ अब... ॥3 ॥

(18) जिनेन्द्र चरण चन्द्र...

जिनेन्द्र चरण चन्द्र के, सुरेन्द्र आदि वन्दिते।
सकल दुःख निकन्द के, जयति जय जिनेश्वरम्।।टेक।।

मोहगर्व गंजनम्, काम, क्रोध भंजनम्।
नमामि हे निरंजनम्, जयति जय जिनेश्वरम्।।1।।

सर्वश्रेष्ठ शासकम्, सत्य-पथ प्रकाशकम्।
पापपुंज नाशकम्, जयति जय जिनेश्वरम्।।2।।

मोक्षफल प्रदायकम्, सकल विश्व नायकम्।
दीन जन सहायकम्, जयति जय जिनेश्वरम्।।3।।

भक्तकाज सारणम्, सकल दुःख निवारणम्।
भवसमुद्र-तारणम्, जयति जय जिनेश्वरम्।।4।।

(19) आचार्य कुंदकुंद....

आचार्य कुंदकुंद जो भारत में न आते
अध्यात्म समयसार कहो कौन सुनाते-2।।टेक।।

रच करके कौन देता आत्म ख्याति समयसार।
ऐसे अनेक ग्रंथ भेद ज्ञान के भंडार।।
उनके बिना हृदय में शांति कौन दिलाते।।1।।

जलती कषाय अग्नि सहज भाव जलाती।
कर्मों के महाबंध को आत्मा से कराती।।
शांति का सहज प्याला कहो कौन पिलाते।।2।।

सम्यक्त्व बिना मोह के भववन में घुमाया।
सम्यक्त्व बिना आत्मा को उसने रुलाया।।
सम्यक्त्व आत्मा की निधि कौन बताते।।3।।

है जगत के संबंध कोई पार न पाया।
है सब अनित्य, नित्य एक भी नहीं पाया।।
होता न सगा आप जिसे अपना बनाते।।4।।

(20) स्वागत करते आज तुम्हारा....

स्वागत करते आज तुम्हारा....
आओ आओ हे प्रिय मेहमान, मंगल स्वागत है ।।टेक ।।

स्वागत करते हैं जिनवर का, परमपूज्य तीर्थंकर प्रभु का।
स्वागत है निर्मल परिणति में, मंगलमय चेतन ज्ञायक का ।।
प्रभु के चरणों में वंदन कर, श्रद्धा सुमनों को अर्पण कर।
तुम धन्य बनो मेहमान! मंगल स्वागत है ।।1 ।।

सारा भूमण्डल रोमांचित, कण-कण में छाई हरियाली।
तीर्थंकर के शुभागमन से, भरतक्षेत्र की छटा निराली ।।
हम तुम सब स्वागत करते हैं, चरणों में वंदन करते हैं।
तुम भले पधारे भाग्यवान मंगल स्वागत है ।।2 ।।

पंच प्रभु में भक्ति तुम्हारी, निशदिन हो भावना हमारी।
प्रभु के पंचकल्याण महोत्सव की कर ली हमने तैयारी ।।
शुद्धातम को लक्ष्य बनायें, रत्नत्रय निधियाँ प्रगटायें ।।
जन-जन का हो कल्याण, मंगल स्वागत है ।।3 ।।

(21) हिंसा पीड़ित विश्व राह...

हिंसा पीड़ित विश्व राह महावीर की तकता है।
पापों के दलदल में फंसकर धर्म सिसकता है ।।
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है ।।टेक ।।

हिंसा के बादल छाए संसार पर,
सर्वनाश के दुनिया खड़ी कगार पर।
नहिं शास्त्रों में अब शस्त्रों में होड़,
मानवता रोती है अपनी हार पर ।।
वर्धमान ही पथ भूलों को समझा सकता है ।।1 ।।

बाँधो प्रभु को भक्ति भाव की डोर से,
करो प्रार्थना सब जीवों की ओर से।

वीतराग दुःखियों के दुःख पर ध्यान दो,
हमको करो कृतार्थ कृपा की डोर से॥
प्रभु के नयनों से समता का नीर झलकता है॥2॥

वर्धमान के आदर्शों पर ध्यान दो,
हित उपदेशों को अंतर में स्थान दो।
हम जिसके वंशज जिसकी संतान हैं,
होकर एक उसे पूरा सम्मान दो॥
विश्व शांति पाए जग का कल्याण हो सकता है॥3॥

(22) हे वीर रे आए हैं तेरे हम द्वार...

हे वीर रे, आए हैं तेरे हम द्वार,
ओ जय जय जय जय, वीर प्रभु जय जय जय जय,
सुन ले तू मन की पुकार, वीर रे॥टेक॥

मोह माया में डूबे हुए हैं, अब तो लगा दो पार,
तू ही दिखा अब रास्ता, ये दुनिया दुःखों का धाम।
मेरे वीरा का यही सम्मान, ओ जय जय....... ॥1॥

सारे ग्रंथ का सार यही है, देव निरंजन आत्म,
जीवन में सम्यक् उजियारा, कर पाओ परमात्म।
चेतन तू है स्वयं भगवान, ओ जय जय....... ॥2॥

काम क्रोध और लोभ असत्य ही, है दुःखों का डेरा।
बात धर्म की हमको बताएँ, आत्म सुखों का डेरा।
मेरा जीवन बने सुख का धाम, ओ जय जय....... ॥3॥

मंगलमय मंगल करण, वीतराग विज्ञान।
नमौं ताहि जातैं भये अरहंतादि महान॥
करि मंगल करिहौं महा, ग्रंथकरण को काज।
जातैं मिलै समाज सब, पावैं निजपद राज॥4॥

(23) करुणा के भण्डार....

करुणा के भण्डार, हमारे महावीरा,
हर दु:ख मेटनहार, हमारे महावीरा।
हो ऽऽऽ शरणा जो आते हैं, भक्तियाँ जो गाते हैं,
उन पुण्य वालों के भाग्य जाग जाते हैं।टेक॥

महावीर प्रभु का तो यश चारों ओर है,
दयालु के हाथ में मुक्ति की ये डोर है।
चंदापुर के चंदा का मन ये चकोर है,
मैना सुंदरी इक अंजन चोर है॥
कथा जो सुनाते हैं, मन से बुलाते हैं,
उन पुण्य वालों के भाग्य जाग जाते हैं॥1॥

महावीर कहने से वीर बन जाओगे,
सिंह चिह्न देख शक्ति सिंह जैसी पाओगे,
अहिंसा के राही की राह पे जो आओगे,
भवसागर में थपेड़े नहीं खाओगे॥
नारे जो लगाते हैं, माला जो फिराते हैं,
उन पुण्य वालों के, भाग्य जाग जाते हैं.... ॥2॥

(24) भावना की चूनर ओढ़ के...

भावना की चूनर ओढ़ के, जिनमंदिर में आवजो रे-3
आवजो-3 ऽऽऽ, सारी नगरी को लावजो रे।टेक॥

श्रद्धा के रंग से रंग दे चुनरिया, ज्ञानगुणों से जड़ी।
मंगल महोत्सव वीर प्रभु का, होगी प्रभावना बड़ी॥
हो ऽऽऽ लेकर श्रद्धा अपार, आप आवजो रे
सारी नगरी को लावजो रे॥1॥

घन नन घन नन घंटा बाजे, शंख-नगाड़े बजे।
वीर प्रभु के अभिनंदन से, स्वर्ग-सी धरती सजे॥

हो ऽऽऽ लेकर श्रद्धा अपार, आप आवजो रे
सारी नगरी को लावजो रे ॥2 ॥

वीतरागता उर में धारी, वेष दिगम्बर लिया।
सबको मुक्तिमार्ग बताया, जग का कल्याण किया॥
हो तज के मन के विकार, आप आवजो रे
सारी नगरी को लावजो रे ॥3 ॥

(25) अ र र र र र र र र र र र ऽऽऽ....

अ र र र र र र र र र र र ऽऽऽ
र मनड़ो लाग्यो रे भक्ति में, कि सब मिल मंदिर चालो रे ।टेक ॥

कर लो धर्म कर्म की कमाई,
जीवन फिर नहीं आवे रे ॥1 ॥

उमरिय पल-पल बीती जाए,
थोड़ो सुमिरन कर लो रे ॥2 ॥

जीवन बीत गयो बातन में,
अवसर फिर नहीं आवे रे ॥3 ॥

जीवड़ो डोले रे सत्संग में,
प्रभुजी थारे चरणों में आवे रे ॥4 ॥

(26) मितवा रे सुमिरन अवसर आयो...

मितवा रे सुमिरन अवसर आयो।
म्हारा जीवड़ारो, म्हारो ज्ञानारो
म्हारा चेतन रो, चमक्यो तारो।
म्हारा मीत भला सा ।टेक ॥

साधर्मी रे मंदिर जी को चालो।
मैं सब कुछ–मैं सब कुछ;
मैं निज वैभव को पायो।
म्हारा मीत भला सा ॥1 ॥

मितवा रे पंचकल्याणक आयो।
देव देवी ने, इंद्राणी ने;
नर–नारी ने मंगल गायो।
म्हारा मीत भला सा ॥2 ॥

साधर्मी रे शिक्षण शिविर है आयो।
म्हारा जीवड़ा रो, म्हारा ज्ञानारो;
म्हारा चेतन रो चमक्यो तारो।
म्हारा मीत भला सा ॥3 ॥

(27) आया है सारा सिद्धालय...

आया है सारा सिद्धालय, ज्ञान में मेरे।
मेरे ज्ञान में ही रहना, सब सिद्ध सिद्ध बन के।टेक ॥

सूना पड़ा था ज्ञान, सब सिद्धि के बिना।
सूनी पड़ी थी दृष्टि, सब सिद्ध के बिना।
भरा है मेरा प्रांगण, सिद्ध सिद्धि दाता बन के ॥1 ॥

गुण आठ से अलंकृत, सिद्ध रूप मैंने देखा।
जन्म मरण के बिना, लोकाग्र वासी देखा।
कर्मों से रहित सिद्ध, गुण से सहित मैं देखा ॥2 ॥

द्रव्य गुण से मैं हूँ पूरा, पर्याय से भी पूरा।
उपयोग से भी पूरा, पूरा सदा ही पूरा।
पूर्णता, मैंने निज में, सिद्धों के सम है देखी ॥3 ॥

सिद्धों की ये डगरिया, बन गई मेरी नजरिया।
बन गई मेरी नजरिया, बस गई मेरी नजरिया।
दृष्टि है मेरी पलटी, सिद्धों ने मुझमें आके ॥4 ॥

(28) गा रे भैया, गा रे भैया...

गा रे भैया, गा रे भैया, गा रे भैया गा।
प्रभु गुण गा तू समय न गंवा।।टेक।।

किसको समझे अपना प्यारे,
स्वारथ के हैं रिश्ते सारे।
फिर क्यों प्रीति लगाये, ओ भैयाजी।।1।। गा रे भैया गा........।

दुनियाँ के सब लोग निराले,
बाहर उजले अन्दर काले।
फिर क्यों मोह बढ़ाये, ओ बाबूजी।।2।। गा रे भैया गा........।

मिट्टी की यह नश्वर काया,
जिसमें आतमराम समाया।
उसका ध्यान लगा ले, ओ दादाजी।।3।। गा रे भैया गा........।

स्वारथ की दुनियाँ को तजकर,
निश-दिन प्रभु का नाम जपा कर।
सम्यग्दर्शन पाले, ओ काकाजी।।4।। गा रे भैया गा........।

शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर,
निर्मल भेदज्ञान प्रगटा कर।
मुक्ति-वधू को पा ले, ओ लालाजी।।5।। गा रे भैया गा........।

(29) शिखर पे कलश.....

शिखर पे कलश चढ़ाओ म्हारा साथी।
मोक्ष-महल में आओ म्हारा साथी।।टेक।।

शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर,
आतम में अपनापन लाकर।
समकित नींव भराओ म्हारा साथी।।1।।

नय-प्रमाण दीवार बनाओ,
अनेकान्त का रंग चढ़ाओ।
चारित्र छत डलवाओ मेरे साथी ॥2 ॥

रत्नत्रय का शिखर बनाओ,
केवलज्ञान का कलश चढ़ाओ।
मोक्षमहल में आओ म्हारा साथी ॥3 ॥

(30) ये शाश्वत् सुख का प्याला...

ये शाश्वत् सुख का प्याला, कोई पियेगा अनुभव वाला ॥टेक ॥

ध्रुव अखण्ड है, आनन्द-कन्द है, शुद्ध बुद्ध चैतन्य पिण्ड है।
ध्रुव की फेरो माला। कोई.... ॥1 ॥

मङ्गलमय अरु मङ्गलकारी, सत् चित् आनन्द का है धारी;
ध्रुव का हो उजियारा। कोई.... ॥2 ॥

ध्रुव का रस तो ज्ञानी पावें, जन्म-मरण का दु:ख मिटावे;
ध्रुव का धाम निराला। कोई.... ॥3 ॥

ध्रुव की धुनी में मुनि रमावें, ध्रुव के आनन्द में रम जावें;
ध्रुव का स्वाद निराला। कोई.... ॥4 ॥

ध्रुव के रस में हम रम जावें, अपूर्व अवसर कब यह पावें;
ध्रुव का हो मतवाला। कोई.... ॥5 ॥

(31) विश्व तीर्थ बड़ा प्यारा .....

विश्व तीर्थ बड़ा प्यारा अजब है नजारा आओ यहाँ रे-2
यहाँ पर मंदिर बना न्यारा, देश का पियारा सुनो जरा रे ॥टेक ॥

दूर दूर से आये मनीषी जिनवचनामृत कहने।
जड़ चेतन का चिह्न बताकर मोह अंधेरा हरने।
सही शिव मार्ग बताने को, जैन ग्रंथ देखो, गुरु कहें रे-2 ॥1 ॥

जिनवाणी के लाल बनो तुम, बन जाओ प्रभु जैसे।
सम्यक श्रद्धा गर हो जाये भटकोगे तुम कैसे।
कुन्द-कुन्द कहान के ये सपने, कैसे होंगे अपने, सोचो जरा रे-2 ॥2 ॥

एक शुद्ध मैं सदा अरूपी, भगवन का कहना है।
मान लें भैय्या बात प्रभु की, भव सागर तिरना है।
ले लो अब आत्म का सहारा, तीर्थ बड़ा प्यारा, आओ यहाँ रे-2 ॥3 ॥

(32) ऊँचे-ऊँचे शिखरों....

ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला रे, यह तीरथ हमारा।
तीरथ हमारा हमें लागे प्यारा ।टेक ॥

श्री जिनवर से भेंट करावें, जग को मुक्ति मार्ग दिखावें।
मोह का नाश करावे रे, यह तीरथ हमारा ॥1 ॥

शुद्धातम से प्रीति लगावे, जड़-चेतन को भिन्न बतावे।।
भेद-विज्ञान करावे रे यह तीरथ हमारा ॥2 ॥

(33) अभी-अभी मेरे मन में, ये...

अभी-अभी मेरे मन में ये भाव आया है,
तत्त्वोपदेश सुनाया गया है मेरे लिए॥ टेक ॥

मोह की नींद से व चेतन तुझे उठाने को,
राग का राग सब ही तुझे छुड़ाने को।
ज्ञान का दीप जलाया गया है तेरे लिए ॥1 ॥

शुभ-अशुभ में अनादि से खड़ा था मैं,
चारों गतियों में न जाने कहाँ पड़ा था मैं।
किन्तु इस बार बचाया गया है, मेरे लिए ॥2 ॥

मोह को जीत निज में आऊँगा,
आठों कर्मों को मैं अब तो भगाऊँगा।
मोक्ष का द्वार समान गया है मेरे लिए॥3॥

मैं तो हूँ एक पूर्ण निश्चित ही,
मैं अधूरा नहीं हूँ किंचित् भी।
सिद्धों का धाम बताया गया है मेरे लिए॥4॥

(34) तुमसे लागी लगन....

तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण पारस प्यारा।
मेटो मेटो जी संकट हमारा।
निश दिन तुमको जपूं, पर से नेहा तजूं।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा॥ मेटो..॥ टेक॥

अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोड़ा जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा॥ मेटो...॥1॥

इन्द्र और धरणेन्द्र भी आए, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरो सदा, दुख नहीं पावे कदा, सेवक थारा॥ मेटो...॥2॥

जग के दुख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है।
मेटा जामन मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा॥ मेटो...॥3॥

लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन यह जिया लगो खारा॥ मेटो...॥4॥

(35) प्रभु जी अब न भटकेंगे...

प्रभु जी, अब न भटकेंगे संसार में।
अब अपनी... होऽऽऽ अब अपनी खबर हमें हो गई॥ टेक॥

भूल रहे थे निज वैभव को, पर को अपना माना।
विष सम पंचेन्द्रिय विषयों में ही सुख हमने जाना।
पर से भिन्न लखूँ निज चेतन, मुक्ति निश्चित होगी॥1॥

महापुण्य से हे जिनवर अब तेरा दर्शन पाया।
शुद्ध अतीन्द्रिय आनन्द रस, पीने को चित्त ललचाया।
निर्विकल्प निज अनुभूति से, मुक्ति निश्चित होगी ॥2 ॥

निज को ही जानें पहचानें निज में ही रम जायें।
द्रव्य भाव नौ कर्म रहित हो शाश्वत शिवपद पावें।
रत्नत्रय निधियाँ प्रगटायें मुक्ति निश्चित होगी ॥3 ॥

(36) जागो जागो जागो चेतन...

जागो जागो जागो चेतन, तुम्हें जगाने को।
मंगल उत्सव आय है, ये बात बताने को ॥ टेक ॥

काल अनादि भटक रहा, और घूमी चारों-गतियाँ,
ये समय है जिंदगी के, लौट न आये घड़ियाँ॥
तू ही तो प्राणी भगवन् है, चेतना लक्षण है-2 ॥1 ॥

तू ही ज्ञाता, तू ही दृष्टा, तू ही चिन्मय है हो ऽऽऽ
अनंत गुणों का एक खजाना, तू ही तन्मय है,
प्राणी तू तो अरस अरूपी, जड़ तन पुद्गलरूपी
तू तो ज्ञानमयी शुद्धातम हो, परमानंद स्वरूपी।
तू ही तो प्राणी भगवन् है, चेतना लक्षण है ॥2 ॥

तू तो प्राणी जाननहारा, तू ही भगवन है हो ऽऽऽ
अतुल सुखों का तू है खजाना, तू ही चिन्मय है,
प्राणी तू तो ज्ञान स्वभावी, चिदानंद रसवाला।
तू ध्रुवराज त्रिकाली चेतन, अनुभव आतमवाला॥
तू ही तो प्राणी भगवन् है, चेतना लक्षण है ॥3 ॥

(37) वीर प्रभु का है कहना...

वीर प्रभु का है कहना, राग में जीव तू मत फँसना ॥ टेक ॥

अनादि काल से रुलता है, दृष्टि पर में करता है;
अब ना गलती तू करना, राग में जीव तू मत फँसना ॥1 ॥

तन-मन्दिर में देव हैं तू, ज्ञायक को पहिचान ले तू;
समयसार में तू रमना, राग में जीव तू मत फँसना ॥2 ॥

तू तो गुणों का सागर है, पूर्णानन्द महाप्रभु है;
निज में ही दृष्टि करना, राग में जीव तू मत फँसना ॥3 ॥

गुण पर्याय में भेद न कर, त्रैकालिक में दृष्टि कर;
मोक्षपुरी में है चलना, राग में जीव तू मत फँसना ॥4 ॥

(38) ज्ञान की ज्योति जलाते चलो....

ज्ञान की ज्योति जलाते चलो, निज अन्तर कि वीणा बजाते चलो ॥ टेक ॥

जीवन तो आना-जाना, इसका नहीं ठिकाना।
कल क्या होगा समय धुरी पे, ये तो किसने जाना;
अपने मन को, जगाते चलो ॥ निज अन्तर ॥1 ॥

जीवन अच्छे से जीने का नाम है ईश्वर पूजा
सत्य अहिंसा प्रेम से बढ़के नहीं धर्म है दूजा;
इसको सीखोऽऽऽ सिखाते चलो ॥ निज अन्तर ॥2 ॥

खुद जीयो जीने दो सबको, यही धर्म का नारा,
साम्यभाव और विश्व शान्ति का फैलाओ उजियारा;
गीत धर्म के ही गाते चलो ॥ निज अन्तर ॥3 ॥

काम क्रोध, मद, राग-द्वेष की जंजीरों को तोड़ो,
यही देशना है सन्तों की बुरी आदतें छोड़ो;
अपना जीवनऽऽऽ फूल खिलाते चलो ॥ निज अन्तर ॥4 ॥

(39) निज आत्मा में देखो.....

निज आत्मा में देखो, भगवान बस रहा है,
मङ्गलायतन में देखो, सोना बरस रहा है ।।टेक ।।

तुझमें करम नहीं है, तुझमें नहीं कषायें,
अपनी ही भूल चेतन, भव-भव तुझे रुलायें।
तू आज तक भी चेतन, कुंदन सा ही खरा है ।।1 ।।

भवताप को मिटाने, निज में ही शक्ति क्षमता,
अनजाने में हुई थी, दुखदायी मोह ममता।
आया मुहूर्त मंगल, हर रोम जग गया है ।।2 ।।

भगवान आत्मा हूँ - गुरुदेव ने बताया,
पामर नहीं प्रभु हूँ - वैभव अमिट दिखाया।
सिद्धों से कम नहीं हूँ - आगम भी कह रहा है ।।3 ।।

सब तीर्थों का राजा है, स्वर्णपुरी हमारा,
सर्वोच्च सौख्य पाने, गुरुदेव करे इशारा।
सिद्धायतन स्वयं हूँ, अनुभव ये कह रहा है ।।4 ।।

(40) पूर्व दिशा सम जननी जिनेश्वर...

पूर्व दिशा सम जननी जिनेश्वर आदीश्वर भगवान
तीर्थनाथ है आदिप्रभुजी पुत्र तेरा अविकार
जय-जय आदिनाथ भगवान....... ।।टेक ।।

ज्ञान को पाया, ज्ञान ही भाया।
निज में अंर्तध्यान किया।
तीन लोक की माता बनकर करुणानिधि को जन्म दिया
रत्न कुक्षी मां तेरे कारण रत्न सुरों ने बरसाये
जन्म समय सुमधुर ध्वनि हो गई इन्द्र के आसन कम्पाये
जय जय आदिनाथ...... ।।1 ।।

धन्य धन्य है तेरे मुख से सत् सुबोध की धार बहे
तत्व स्वरूप बताकर तुमने दुखियों के दुख दूर किये
आओ भाई हम सब मिलकर जग जननी का यश गायें
भगवन सम आत्मा पाने को आदि प्रभु को सब ध्याये।
जय जय आदिनाथ...... ॥2॥

(41) ये महामहोत्सव मंगलमय सुहावना...

ये महामहोत्सव मंगलमय सुहावना.... 2
निर्दोष जिनशासन की हो प्रभावना.... 2

अद्‌भुत स्वप्न सोलह माता ने देखे, आनन्दकारी फल नृप उल्लेखे।
अन्तिम भवधारी सुत गर्भ में आया, पुण्यफला नाथ त्रिभुवन ने पाया॥1॥
ये गर्भ कल्याणक अतिपावन मनभावना...

प्रभु जनम की मंगल घड़ी आई, तिहुंलोक छाई खुशियाँ बाजे शहनाई।
निरखत छवि प्रभु इन्द्र हर्षायें, पांडुकशिला पर मंगल न्हवन रचाये॥2॥
अन्तर आनन्द में झूल रहे प्रभु पालना....

उपशम रस धारा प्रभु मनमांहि, विषयन में मन रीझत नांहि।
प्रभुजी वेश दिगम्बर धारें, राग से भिन्न निज ज्ञायक निहारें॥3॥
वैराग्य जननी भाये प्रभु वर भावना...

समवशरण शोभित श्री जिनराया, वस्तु स्वरूप प्रभु वाणी में आया।
लोकालोक झलके प्रभु ज्ञान मांहि, निजरस लीन भोगें आनन्द सदाहि॥4॥
शाश्वत पद तुम सम प्रगटाऊँ है कामना...

अशरीरी सिद्ध दशा क्षण में प्रगटाई, भव्यों के आदर्श सिद्ध जिनराई।
ज्ञायक स्वभाव भव्य तुम सम निहारे, निजस्वरूप भव्य तुम सम निहारे॥5॥
न रहे कामना अब कोई यह कामना...

(42) करता रहूँ गुणगान...

करता रहूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान।
तेरा नाम ही लेते-लेते, इस तन से निकले प्राण।टेक॥

तेरी दया से मेरे भगवन्, मैंने ये नरतन पाया।
तेरी सेवा में बाधाएँ, डालें जग की ये मोह माया॥
इसलिए अरज करता हूँ, हो सके तो देना ध्यान॥1॥

क्या मालूम कब कौन किस घड़ी, आयु कर्म विनश जाए।
मेरे मन की इच्छा मेरे, मन ही मन में न रह जाए॥
मेरी इच्छा पूरी करना, मेरे महावीर भगवान॥2॥

चंदना और द्रौपदी के जैसी, दुख सहने की शक्ति दो।
विचलित न होऊँ तेरे पथ से, ऐसी मुझे अनुरक्ति दो॥
तेरी ही सेवा में, इस जीवन की हर शाम॥3॥

(43) कैसे करुँ गुणगान...

कैसे करुँ गुणगान प्रभु जी तेरा
कैसे करुँ गुणगान॥ टेक॥

सारी पृथ्वी कागज बनाऊँ, समुद्र जल से स्याही लाऊँ।
सारे वनस्पति की कलम बनाऊँ, अरे पूरा न होय बखान॥
प्रभुजी तेरा कैसे.... ॥1॥

शक्ति का संग्रहालय तुझमें, गुण के भरे गोदाम।
प्रभुजी तेरा कैसे करुँ गुणगान॥

अनन्त गुण परिवार हमारा, अन्दर बहती अमृतधारा।
सुख सन्तोष महान, प्रभु जी तेरा कैसे करुँ गुणगान॥
गोखुर में नहीं सिंघ समाये, वायसलोक अन्त नहीं पाये,
जो स्वरूप सर्वज्ञ ने देखा, शास्त्रों में क्या होगा लेखा॥
अनुपम चीज महान, प्रभु जो तेरा... ॥2॥

(44) पारस प्यारा लागे.....

पारस प्यारा लागे, चवलेश्वर प्यारा लागे,
थाकी बागड़ लि जा यों में रस्तो,
भूल्या जी म्हारा पारसजी,
भूल्या जी मारा स्वामी जी।
मैं रास्तो कैसे पावंगा, पावंगा मैं तो रस्तौ कै पावंगा॥ टेक॥

डर लागे छे माने, हर बार पुकारा याते - 2,
थाँरा पर्वत रा जंगल में रस्तो भूल्यो जी म्हारा पारस जी।
भूल्यो जी म्हारा पारस जी।
मैं रस्तो कैसे.......... ॥1॥

थाँका दर्शन करवा आया, मैं आया थी भाग्या-भाग्या-2
थाँकी मूँगा वरणी मूरत माने लागे प्यारी स्वामी जी - 2।
भूल्यो जी म्हारा पारस जी।
मैं रस्तो कैसे पावंगा..... ॥2॥

जिनधर्म भक्ति खण्ड

(1) सत्य सनातन धर्म प्यारा लगता है....

सत्य सनातन धर्म प्यारा लगता है,
निर्ग्रन्थों का मार्ग प्यारा लगता है,
वीर प्रभु का मार्ग प्यारा लगता है,
शुद्धातम का अनुभव प्यारा लगता है ।।टेक ।।

महावीर ने धर्म बताया जग को प्यारा,
भीतर में अहो ये केवल जाननहारा।
भेदज्ञान करने से भगवन बनता है ।।1 ।।

छह द्रव्यों की स्वतंत्रता को जान के,
द्रव्य और गुण पर्याय पहिचान के।
परद्रव्यों का भाव कर्तृत्व मिटता है ।।2 ।।

सोचो जानो शुद्धातम की कैसी महिमा,
गुरुदेव को आई इसकी अपार गरिमा।
महिमा रुचि से कारज होने लगता है ।।3 ।।

धन्य धन्य मुनिराजों का समतामय जीवन
वीतरागता सहित है जिनका प्रचुर संवेदन।
शीघ्र निर्ग्रन्थ होने का मन करता है ।।4 ।।

(2) पंच परम परमेष्ठी भगवन्....

पंच परम परमेष्ठी भगवन्, हो ऽऽऽ जिसके है रखवाले।
ऐसा धर्म है मेरा होऽऽऽ॥
कुन्दकुन्द योगीन्दु देव हैं, जिसके पालन हारे॥ ऐसा..... ।टेक॥

अणु-अणु की स्वतंत्रता, धर्म मेरा बतलाए।
पराधीन किंचित् भी, नहिं सर्वद्रव्य पर्यायें॥
जड़ और चेतन सारे, अपने में ही परिणमते।
अब तन की भी पराधीनता, न मेरे में आए॥
तो सुन लो! निर्विकल्प निर्भेद निराकुल, निज स्वरूप दर्शाए॥
ऐसा धर्म है मेरा॥1॥

अष्टापद चंपापुर पावापुर और गिरनारी।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों पर सम्मेद शिखर मनहारी॥
तीर्थंकरों की मुक्ति ने कण-कण पावन कर डाला।
सोनगढ़ से फैला जग में भेदज्ञान का उजाला॥
तो सुन लो! इन तीर्थों पर आकर मानो, सिद्धों से मिल जाए॥
ऐसा धर्म है मेरा॥2॥

(3) करो धर्म से प्यार....

करो धर्म से प्यार अमृत बरसेगा-2
हो जाओ भव पार अमृत बरसेगा.... ।टेक॥

अवसर रूप सुहाना आया, बड़ा पुण्य अवसर यह आया।
जनम-जनम के पाप नशाया, प्रभु की पूजा आज रचाया।
देख-2 के मन हर्षाया, धर लो ध्रुव का ध्यान..... ॥1॥

सोच समझकर देख ले प्राणी, तेरी शक्ति सबसे न्यारी
पुण्य उदय से शुभ घड़ी आई, परमागम की बात सुहाई।
कहान गुरु कही बात सुहाई, तू तो जाननहार॥2॥

एक झलक तू ले ले चेतन, ज्ञायक सुख की खान है चेतन।
दूर नहीं वो पास है चेतन, अद्भुत शक्तिवाला चेतन॥
तू स्वतंत्र निष्काम.... ॥3॥

(4) कितना सुन्दर...

कितना सुन्दर, कितना सुखमय, अहो सहज जिनपंथ है।
धन्य धन्य स्वाधीन निराकुल, मार्ग परम निर्ग्रन्थ है॥टेक॥

श्री सर्वज्ञ प्रणेता जिसके, धर्म पिता अति उपकारी।
तत्वों का शुभ मर्म बताती, माँ जिनवाणी हितकारी।
अंगुली पकड़ सिखाते चलना, ज्ञानी गुरु निर्ग्रन्थ हैं॥धन्य॥1॥

देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा ही, समकित का सोपान है।
महाभाग्य से अवसर आया, करो सही पहिचान है॥
पर की प्रीति महा दुख:दायी, कहा श्री भगवंत है॥धन्य॥2॥

निर्णय में उपयोग लगाना ही, पहला पुरुषार्थ है।
तत्व विचार सहित प्राणी ही, समझ सके परमार्थ है॥
भेदज्ञान कर करो स्वानुभव, विलसे सौख्य बसन्त है॥धन्य॥3॥

(5) है धर्म यहाँ की रीत सदा...

है धर्म यहाँ की रीत सदा, मैं साथी तुम्हें बताता हूँ।
जिन वीरों ने यहाँ जन्म लिया, उनकी गाथा बतलाता हूँ॥ टेक॥

ये तो पावन धरती है, जहाँ पर महावीर प्रभु आये थे।
सब जीयो सभी को जीने दो, मंगल सन्देश सुनाये थे।
मैं भी वही सन्देश को गाकर के तुम्हें सुनाता हूँ॥1॥

श्री कुन्दकुन्द आचार्य देव ने इसी धरा पर जन्म लिया।
और विदेह क्षेत्र से लाकर हमको मुक्तिमार्ग सन्देश दिया।
सन्तों की अमृत वाणी का रसपान तुम्हें कराता हूँ॥2॥

आओ हम सब भी मिलकर उन्हीं के पथ पर चलते हैं।
अब भक्त नहीं भगवान बनेंगे ऐसा कुछ कर सकते हैं।
उस वीतराग पथ पर चलने का ये रहस्य बतलाता हूँ ॥3 ॥

(6) ये धर्म हमारा है....

ये धर्म हमारा है, हमें अति प्यारा है,
हम है इसी की शान में ॥ टेक ॥

सिद्धों ने फरमाया है तू बन सकता भगवान है,
इतनी तुझमें शक्ति है पा सकता केवलज्ञान है।
थोड़ा सा श्रद्धान कर ज्ञान कर गौरव जहान का ॥1 ॥ ये धर्म हमारा...

अनेकान्त और वीतरागता जैनधर्म के प्राण हैं,
द्रव्यदृष्टि से देखे तो सब प्राणी सिद्धसमान है
अब तो चेतन जान लो मान लो मार्ग निर्वाण का ॥2 ॥ ये धर्म हमारा...

तीर्थंकरों की देशना और उनका ये सन्देश है,
प्रथम अन्तरंग नग्नता फिर बाह्य दिगम्बर वेष है।
ये ही सच्चा मार्ग है-२ भेदज्ञान का ॥3 ॥ ये धर्म हमारा...

(7) दशलक्षण के दशधर्मों का...

दशलक्षण के दश धर्मों का, उत्सव आया प्यारा।
धर्म ध्यान और पूजन पाठ से, ज्यों दिश हो उजियारा ॥
बोलो पर्यूषण की जय, बोलो दशधर्मों की जय- 2 ॥ टेक ॥

उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच और संयम।
जो नर इन धर्मों को पाले, धन्य- धन्य हो जीवन।
इन दशधर्मों में है समाया, समयसार यह सारा॥
धर्मध्यान............. ॥1 ॥

तप और त्याग तो आभूषण है, इस मानव जीवन के।
आकिंचन और ब्रह्मचर्य है पूज्य है योगीजन के।
इन दश धर्मों के पालन से, सुधरे जीवन सारा॥
धर्मध्यान............. ॥2 ॥

मुनिदशा में उत्तम पालन, इन धर्मों का होता।
इन दशधर्मों से होती है परिणति निर्मल न्यारी।
हर अन्तर्मुहूर्त में मुनिवर, ध्याते शुद्धात्म न्यारा॥
धर्मध्यान............. ॥3 ॥

(8) जहाँ रागद्वेष से रहित.......

जहाँ रागद्वेष से रहित निराकुल, आतम सुख का डेरा।
वो विश्व धर्म है मेरा, वो जैन धर्म है मेरा।
जहाँ पद-पद पर है परम अहिंसा करती क्षमा बसेरा।
वो विश्व धर्म है मेरा, वो जैनधर्म है मेरा॥ टेक ॥

जहाँ गूंजा करते, सत संयम के गीत सुहाने पावन।
जहाँ ज्ञान सुधा की बहती निशदिन धारा पाप नशावन।
जहाँ काम क्रोध, ममता, माया का कहीं नहीं है घेरा ॥1 ॥

जहाँ समता समदृष्टि प्यारी, सद्‌भाव शांति के भारी।
जहाँ सकल परिग्रह भार शून्य है, मन अदोष अविकारी।
जहाँ ज्ञानानंद दरश सुख बल का, रहता सदा सवेरा ॥2 ॥

(9) बड़े भाग्य से हमको मिला....

बड़े भाग्य से हमको मिला जिनधर्म
हमारी कहानी है, तुम्हारी कहानी है बड़ी बेरहम ।।टेक ॥

अनादि से भटके चले आ रहे हैं।
प्रभु के वचन क्यों नहीं भा रहे हैं।
रुलते रहें जग में, सुने कौन जन ॥1 ॥

भगवान बनने की ताकत है मुझमें।
मैं मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं।
मेरे घट में घट घट का, वासी है चेतन ॥2 ॥

अणु-अणु स्वतंत्र प्रभु ने ज्ञान कराया।
विषयों का विष पी-पी, उन्माद आया।
क्षण भर को पी ले तू निज में हो जा मगन ॥3 ॥

(10) कभी भूल नहीं जाना...

कभी भूल नहीं जाना, जिनधर्म को तुम ध्याना,
ऐसा यह धर्म सुहाना है, इसे कभी न बिसराना॥ टेक॥

नरजन्म रतन को पाकर के, अब समय नहीं गवाना हैं,
कोई पूर्व पुण्य होगा तेरा, नरतन को पाया है।
कभी भूल नहीं जाना..... ॥1 ॥

ये विषयभोग दुःखदाई है, त्यागो जिनवाणी कहती है।
कर पंचेन्द्रिय को वश में तू, फिर छोड़ मोह आना।
कभी भूल नहीं जाना... ॥2 ॥

ये काय यही रह जाएगी, इससे तुम प्रीति नहीं करना।
है चेतन इसमें बसा हुआ, जाने किस क्षण जाना॥
कभी भूल नहीं जाना... ॥3 ॥

(11) महावीर संदेश ये न्यारा....

महावीर संदेश ये न्यारा, मार्ग अहिंसा सबसे प्यारा।
हिंसा से लड़ने को, तुम्हें आना पड़ेगा महावीर दुबारा।टेक॥

तन की हिंसा से बड़ी, मन की हिंसा होती है।
केवल इस भव में नहीं, भव भव में दुःख देती है॥
राग-द्वेष की... हिंसा छोड़ो... इन सबको समझाने ॥1 ॥

बिना युद्ध हथियार बिन, तुमने जीता विश्व को।
सूर्य अहिंसा का उगा, हुआ न अब तक अस्त जो॥
उसी अहिंसा... को अपनाने... ये सबको समझाने ॥2 ॥

(12) भले रूठ जाए ये सारा जमाना...

भले रूठ जाए ये सारा जमाना,
नहीं रागियों की शरण मुझको जाना ॥
बस एक वीतरागी को मस्तक झुकाना-2
ये श्रद्धान मेरा है मेरु समाना, नहीं रागियों.... ॥ टेक ॥

मेरे ज्ञान और ध्यान में बस तुम्हीं हो,
अटल मेरे श्रद्धान में बस तुम्हीं हो।
नहीं लाज गौरव, ना भय मुझको आना ॥1 ॥ नहीं रागियों.....

तुम्हीं से मुझे मुक्तिमार्ग मिला है,
रत्नत्रय का सुन्दर चमन ये खिला है।
ना तीर्थंकरों के, कुल को लजाना ॥2 ॥ नहीं रागियों.....

मैं हूँ मात्र ज्ञायक ये अनुभव ने जाना,
तिहुँ लोक में बस उपादेय माना।
ये गुरुओं का ऋण है, मुझे ही चुकाना ॥3 ॥ नहीं रागियों....

है आदर्श अकलंक गुरुवर हमारे,
है निकलंक आचार्य प्राणों से प्यारे।
धर्म के लिए, जिनने मस्तक कटाया ॥
नहीं जैन कुल को उन्होंने लजाया,
उसी मार्ग पर हमको चल के दिखाना ॥4 ॥ नहीं रागियों....

(13) ये प्रण है हमारा....

ये प्रण है हमारा, ना जनमें दुबारा,
क्योंकि विषयों में, आनन्द हमको आता नहीं।
अरे! इस झूठे जग में, रहना हमको भाता नहीं ॥ टेक ॥

जिन-जिन संयोगों में हमने, अपनापन दिखलाया।
भ्रमबुद्धि से हमने खुद, अपना संसार बढ़ाया ॥
भव-भव से हो छुटकारा, संकल्प हमारा ॥1 ॥ क्योंकि विषयों...

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से, मैं इस जग से न्यारा।
छः द्रव्यों से भिन्न चाल है, मेरा रूप निराला।
चैतन्य प्रभु हमारा, जब से हमने निहारा ॥2 ॥ क्योंकि विषयों....

धन्य-धन्य है कुन्दकुन्द ने, समयसार दिखलाया।
कहान गुरु है उपकारी, हमको भगवान बताया।
निर्ग्रन्थ धर्म है प्यारा, लेगें उसका सहारा ॥3 ॥ क्योंकि विषयों....

(14) मंगलायतन की वसुन्धरा पर...

मंगलायतन की वसुन्धरा पर, बच्चा-बच्चा गाये,
नीले अम्बर पे धर्म ध्वजा लहाराये ॥टेक ॥

इस तीर्थंकर की वसुन्धरा पर अनुपम अमृत घोला।
मुक्ति का मैं ध्यान करके मुनि भक्ति में बोला
गुरुदेव की सुरभित वाणी-२, दशों दिशा महकाये ॥१ ॥
नीले अम्बर पे धर्म ध्वजा लहराये।

शुद्धातम का ध्यान हुआ निज परिणति में लौलाई
भूल गये आडम्बर सारे, सिद्ध दशा मन भायी।
ओ, जिनमन्दिर को लखकर मनवा झूम-झूम कर गाये ॥२ ॥
नीले अम्बर पे धर्म ध्वजा लहराये।

(15) श्री जिनवर की दिव्य देशना...

श्री जिनवर की...
श्री जिनवर की दिव्य देशना फैला रहा जहान में।
मंगलमय जिनशासन ध्वज ये लहराता है शान से - 2।
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में... ।टेक ॥

अनेकान्तमय वस्तु व्यवस्था का घोतक जग में न्यारा।
स्याद्वाद चिह्नों से अंकित केशरिया, ध्वज अति प्यारा॥
मुक्ति मार्ग का ऽऽऽ दिग्दर्शक ये भव्य कहें बहुमान से... ॥1 ॥
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में...

रत्नत्रय के पावन नभ पर फहराता है मन भावन।
सिद्धालय की ओर बढ़े जो उनकी परिणति हो पावन॥
पाये भविजन ऽऽऽ भव का किनारा मिला मुक्ति सोपान है... ॥2॥
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में...

नव देवों में एक जिनालय जिसकी शोभा का नायक।
मोह तिमिर क्षय करने वाला शाश्वत सुख का परिचायक॥
भेदज्ञान का ऽऽऽ दीप जला अब फैला सम्यग्ज्ञान है... ॥3॥
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में...

जिनशासन की गौरव गाथा का यह बोध कराता है।
निर्ग्रन्थों का अनुगामी ही महा मोक्ष पद पाता है॥
मैं स्वभाव से ऽऽऽ सिद्ध स्वरूपी जागा निज सम्मान रे.... ॥4॥
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में...

सीमन्धर सन्देश सुनाने कुन्दकुन्द मुनिवर आये।
धन्य धन्य गुरुवर कहान निज ज्ञायक परिचय करवाये॥
अध्यात्म भवन के ऽऽऽ ज्ञान शिखर पर फहरा रहा है शान से... ॥5॥
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में...

(16) कंकड़-कंकड़ बन गया....

कंकड़-2 बन गया मोती, पत्थर-2 धन्य हुआ।
अरहंतों के चरण चूमकर जड़ पर्वत चैतन्य हुआ॥
केवलियों की जिनवाणी से मुखरित गहन अरण्य हुआ।
अरहंतों के चरण चूमकर जड़ पर्वत चैतन्य हुआ॥

चौबीसों में बीस जिनेश्वर मुक्त हुए यहाँ ध्यान लगाकर।
जन को जिनपद देनेवाला,चमत्कार देता है यही पर
जय शिखर-2, सम्मेदशिखर
इतने जिनवर मुनिवर वाला गिरिधर नहीं कोई धन्य हुआ।
अरहंतों के चरण चूमकर जड़ पर्वत चैतन्य हुआ।

गिरि का वातावरण अलौकिक दिव्य
छटा मन हरण अलौकिक
कूट, कूट में जिनदेवों के मंगल कारक चरण अलौकिक
प्राप्त अगोचर दुर्लभ सिद्धात्माओं का सौजन्य हुआ।
अरहंतों के चरण चूमकर जड़ पर्वत चैतन्य हुआ।

(17) जिनवर सत्य है....

जिनवर सत्य है... जिनधर्म सत्य है... आतम सत्य है...
आओऽऽऽ सब मिल जैनों मुक्ति का मार्ग है,
जैनं जयतु शासनम् होऽऽ...2
जय-जय जैन धरम आऽऽ.....3
जैनं जयतु शासनम्... ॥ टेक ॥

अष्टापद में ऽऽ अष्टापद में आदिनाथ है, वीरा पावापुर में,
दया करो प्रभु हे जगदीश्वर, सब जायें शिवपुर में;
जिनवर शरण मङ्गलं, जैनं जयतु शासनम् ॥1॥

एक सूत्र हैऽऽऽ एक देशना, एक ही सबकी वाणी;
आतम ही परमातम जानो; जानो हे भविप्राणी,
जिनवर शरण मङ्गलं, जैनं जयतु शासनम्... ॥2॥

धन्य भाग हैऽऽऽ धन्य जनम है, धन्य है पन्थ हमारा
धन्य-धन्य है माँ जिनवाणी, धन्य वो तारणहारा,
वन्दन उन्हें शत् नमन, जैनं जयतु शासनम्... ॥3॥

(18) जिनशासन बड़ा निराला...

जिनशासन बड़ा निराला, मानो मुक्ति का प्याला – 2।
सभी द्रव्य हैं भिन्न-भिन्न, निर्भार हमें कर डाला।टेक॥

मोह के उदय से जग के प्राणी, चतुर्गति भरमाये।
कर्मोदय से भिन्न आत्मा, कुन्दकुन्द फरमाये।
मुनिराजों ने खोल दिया है मानों मुक्ति का ताला।
जिनशासन बड़ा...... ॥1॥

वीतरागी हैं देव हमारे उनसे हम क्या माँगें।
रत्नत्रय के आगे स्वर्गों का वैभव भी त्यागें।
सारी दुनिया में नहीं देखा तुमसा देनेवाला॥
जिनशासन बड़ा...... ॥2॥

पंचक काल लगा भारी, अध्यात्म की नदिया सूख गई।
प्राणों की कीमत देने पर, जिनवाणी लिपिबद्ध हुई।
मुनिराजों ने तीर्थंकर का, विरह भूला ही डाला।
जिनशासन बड़ा...... ॥3॥

मङ्गलार्थी भक्ति खण्ड

(1) अन्याय अनीति छोड़ा....

अन्याय अनीति छोड़ा, परद्रव्यों से मुख मोड़ा,
उपयोग को निज से जोड़ा।
परम पद पर स्थित हो परमेष्ठियो,
तुम ही तो भगवन् हो ॥टेक ॥

तुमने है नाशा, घातिया कर्मों को।
प्रगटे चतुष्टय, धारा दस धर्मों को॥
समवशरण से हो प्रभु शोभित, प्रातिहार्य भी अष्ट हैं।
शुक्लध्यान के धारक जिनवर, श्री अरहंत भगवंत हैं॥
तुम ही सुख के कारण हो॥1॥

तुम हो अशरीरी, प्रभु ज्ञान शरीरी हो।
तुम को ध्याकर के, भावना ये पूरी हो॥
समकित दर्शन ज्ञान सहित है, अगुरुलघु अवगाहना।
सूक्ष्मत्व है वीर्य जिनेश्वर, निर्बाधित सुख वेदना॥
प्रभु जग के आदर्श हो॥2॥

शासक कहलाते, आचारज मुनिवर हैं।
संयम के हैं धारक, शान्ति के सागर हैं॥
ज्ञान ध्यान के हैं प्रभु धारक, मूलगुणों से शोभित हैं।
सहित मुनि हैं रत्नत्रय से, निज आतम पर मोहित हैं॥
प्रभु भावी सिद्ध हो॥3॥

करते हैं अध्ययन सारे मुनिवर तुमसे।
पाया ज्ञानानंद, निज के ही अनुभव से॥
पाठी द्वादशांग के, लघु नंदन कहलावें सिद्ध के।
गुण पच्चीस हृदय से पाले, आतम बल की ऋद्धि से॥
हम पर उपकार करो॥4॥

षष्टम् अरु सप्तम्, गुणस्थानों में तुम झूलते।
करते हो चर्चा, सिद्धों से भी तुम मिलते॥
आतम को ध्याकर के तु, अरहंत दशा प्रगटाते हो।
निज में जमकर के फिर तुम भी, सिद्ध लोक को जाते हो।
साधते हो 'सर्वार्थ' को॥5॥

(2) न राग न द्वेष, धरा दिगम्बर वेष...

न राग न द्वेष, धरा दिगम्बर वेष, न किंचित् ममता शेष
तुम्हीं तो मेरे जिनवर हो।टेक॥

तुम दर्शन-ज्ञान स्वरूपी, सुख वीर्य से भरपूर।
तुम गुण अनंत के धारी, पर गंध से बहु दूर॥
तेरी वाणी, लागे प्यारी, नहिं मन में कोई क्लेश॥1॥

सुर किन्नर भी गुण गाते, योगी भी ध्यान लगाते।
तेरी महिमा इतनी प्यारी, गणधर भी पार न पाते॥
तुम मंगल तुम उत्तम, तुम जग में शरणा एक॥2॥

तुम छत्र चंवर से शोभित, सिंहासन दुंदुभि मोहित।
भामंडल भी लगे प्यारा, और वृक्ष शोक हरतारा॥
होवे वृष्टि पुष्पों की, और खिरे दिव्यध्वनि शेष॥3॥

(3) जब से मैंने आतम....

जब से मैंने आतम आत्म वैभव से जाना रे
तब से वैरागी हुआ, जग से वैरागी हुआ
तन भी पराया लागे रे.................।टेक॥

जब से हुई है, आतम रमणता। तब से हुई है, भावों में समता॥
आतम में, हैं गहराईयाँ। मुझको मिली ये निधियाँ॥
सुख का खजाना मेरे अन्तर में साजे रे॥1॥

जब से मिला है, मुक्ति का मारग।
तब से मिला है सुख का ये सागर॥
जब से तेरा, शरण मिला।
तब से परम, आनन्द हुआ।
जब से मैंने आतम आत्म वैभव से जाना रे॥2॥

(4) मैंने गुरुवर को है ध्याया....

मैंने गुरुवर को है ध्याया, उनके उपदेशों को गाया
अब तो आतम में रम जाएँ ओ गुरुवर सम्यग्दर्शन पाएँ।।टेक॥

गुरु तुम सम्यक्ज्ञानी, तुम्हारा कोई न सानी
ओ मेरे गुरुवर भगवन्, ओ गुरुवर ओ ऽऽऽ
मैंने................. ॥1॥

गुरु तुम आतमज्ञानी, मुक्ति का मार्ग बतावे
निजातम ज्ञान कराते, ओ गुरुवर ओ ऽऽऽ
मैंने................. ॥2॥

गुरु तुम हमें बताते, आत्म चिंतवन कराते
सिद्धों से हमें मिलाते, ओ गुरुवर ओ ऽऽऽ
मैंने................. ॥3॥

गुरु तुम ज्ञान के सागर, आत्मानन्द दर्शायक
मुक्ति मार्ग के प्रदायक, ओ गुरुवर ओ ऽऽऽ
मैंने................. ॥4॥

(5) जहाँ केश लुंचन हाथ कमण्डल....

जहाँ केश लुंचन, हाथ कमण्डल, नगन दिगम्बर संता
It Happens Only Jindharma... ।**टेक ।।**

जहाँ जाना चाहे वन में तो, खुद जननी तिलक लगावे।
अब न किसी जननी को रुलाऊँ, यह कहकर के जावे ॥
फिर पंच महाव्रत के पालन, से नासे सारे कर्मा
1234 It Happens...... ॥1 ॥

मुनि बनकर के श्री आदीनाथ ने धर्मध्वजा लहराई।
महावीर प्रभु की वाणी, ये धर्मामृत भरलाई ॥
फिर कुन्दकुन्द के समयसार से, फैलाए जिनधर्मा
1234 It Happens...... ॥2 ॥

अरहंत पिताजी मेरे हैं, जिनवाणी माता मेरी।
अरहंत सहज है होना, तू कर ले तैयारी पूरी ॥
जहाँ माँ से लोरी सुने बिना, बच्चे को न आए निंदिया
1234 It Happens...... ॥3 ॥

(6) आत्म चिंतन का....

आत्म चिंतन का ये समय आया।
पाके नरतन क्या खोया क्या पाया ।।टेक ।।

हम जिसे ज्ञान-ज्ञान कहते हैं।
हमको इन्द्रियों ने है भरमाया ॥1 ॥

देखो पर्याय तो है क्षणभंगुर।
फिर भी तू पर्याय में इतराया ॥2 ॥

तू तो टंकोत्कीर्ण ज्ञायक है।
बस यही तू समझ नहीं पाया ॥3 ॥

एक क्षण निज में अब ठहर जाओ।
आखरी क्षण बस अब यही आया ॥4 ॥

(7) इक्षु रस का किया पारणा....

इक्षु रस का किया पारणा, आखा तीज महान।
जय जय आदीनाथ भगवान।टेक॥

एक वर्ष आहार न पाया, ऐसा कर्म उदय में आया।
फिर भी समता भाव धराया आतम में ही चित्त लगाया।
जग की प्रतिकूलताओं में, किया भेदविज्ञान॥1॥

ऐसी कठिन आँकड़ी लेकर, निकले थे मुनिराज।
सारा जग हैरान हो गया, क्या दें हम महाराज॥
नृप श्रेयांस स्वप्न फिर देखे आहार विधि महान॥2॥

(8) हे तीन भुवन के स्वामी

हे तीन भुवन के स्वामी, सुनो मेरी करुण कहानी
चारों गतियों में भ्रमकर, अब पाई है जिनवाणी॥ टेक॥

अज्ञान अंधेरा छाया, भोगों से मन अकुलाया।
प्रभु तुम जैसा बनने को, शुभभाव हृदय में आया।
मेटो अज्ञान महातम, हो सफल मेरी जिन्दगानी॥
चारों गतियों में भ्रमकर... ॥१॥

अब तक देखें पर अवगुण, निज के गुण नहिं पहचाने।
कभी निजस्वरूप नहिं जाना, रहें सिद्धों से अनजाने।
जब आत्मधर्म प्रगटाऊँ, मुक्ति है जिसकी निशानी।
चारों गतियों में भ्रमकर... ॥२॥

जलबूँद सा मेरा जीवन, इस पर मैं क्या इतराऊँ।
पर से ना प्रीति लगाऊँ, बस अपने में रम जाऊँ॥
संयम धारो सुख पाओ, कहते हैं गणधर ज्ञानी।
चारों गतियों में भ्रमकर... ॥३॥

जिनको साथी समझा था, वे भी कब साथ निभाते।
है ज्ञान मात्र निज ज्ञायक, जिसमें है ज्ञेय झलकते॥
हूँ दर्शन-ज्ञान स्वरूपी, मेरी चैतन्य निशानी॥
चारों गतियों में भ्रमकर... ॥४॥

(9) शुद्धातम की बात....

शुद्धातम की बात बता दो वीरा, मैं तो दर्शन करने आऊँगा।
आतमध्यान लगाऊँगा मैं तो सम्यग्दर्शन पाऊँगा॥
भेदज्ञान की बात बता दो वीरा मैं तो सम्यग्दर्शन पाऊँगा।टेक॥

वीतरागता सार जगत में, मैंने तुमसे जाना है।
मैं सर्वज्ञ स्वरूपी हूँ ये, हित उपदेश पिछाना है॥
श्रद्धा सम्यक् होवे हो ऽऽऽ और मिट जावे भव की पीड़ा॥1॥

निर्ग्रंथों की सम्यक् भक्ति, मेरे हृदय समाई है।
जिनकी निर्मल अंतरंग, परिणति की महिमा आई है॥
निज में थिरता होवे हो ऽऽऽ और मिट जावे भव की पीड़ा॥2॥

(10) दिया जले अगम का....

दिया जले अगम का, बिन बाती बिन तेल।टेक॥

नूर तेरा ....2 सब ओर देखा है मैंने ज्ञान से॥1॥

मन क्यों हरषा ....2 मेरा नाम है जो शास्त्रों में लिखा॥2॥

रिमझिम वर्षा ....2 स्याद्वाद तेरी वाणी में बसा॥3॥

(11) निजातम ध्याऊँगा...

निजातम ध्याऊँगा भवसागर होने पार पार हो जाऊँगा।
मैं निज शुद्धातम ध्याऊँगा।टेक॥

कुन्दकुन्द देव ने जो, दिया समयसार था।
पूज्य गुरुदेव श्री को, मिला समयसार था॥
उसे ही पाऊँगा, भवसागर होने पार पार हो जाऊँगा॥1॥

ग्रन्थ समयसार ही, मुक्ति का मार्ग है।
वीतराग रूप मेरा, परम समयसार है॥
मोक्षपद पाऊँगा, भवसागर होने पार पार हो जाऊँगा॥2॥

कितना सुन्दर, अपना ये मन्दिर।
मनहर प्रतिमाएँ हैं, जिसके अन्दर॥
देख शान्त मुद्रा, कष्ट मिट जाते हैं।
देख भव्यजन इनको, परम शान्ति पाते हैं॥
सिद्धपद पाऊँगा, संसार से होने पार पार हो जाऊँगा॥3॥

निर्ग्रंथों गुरुओं से, मिली दिव्य देशना।
भाव नोकर्म, से रहित आत्मा॥
जिनवाणी माता ने, मार्ग हमें बताया।
मोक्षार्थी भव्यों को, अन्तर में भाया॥
मुनि बन जाऊँगा, नहिं डूबूँगा मँझधार पार हो जाऊँगा॥4॥

(12) मंगलमय हो मंगलकारी...

मंगलमय हो मंगलकारी परमात्मा।
ज्ञान के तुम सागर, पूज्य हो रत्नाकर, शुद्धात्मा।
मोह के तुम नाशक, स्वपर के प्रकाशक, सिद्धात्मा॥टेक॥

वीतराग तुम परम दिगम्बर, तुम सर्वज्ञ हो जगत् हितंकर।
ध्रुव हो अचल तुम्हीं भगवंता, कहलाओ तुम सिद्ध महंता॥
अष्ट कर्म को तुमने नाशा परमात्मा...... ॥1॥

तुमने भव समुद्र है नाशा, अरु केवल निज ज्ञान प्रकाशा।
वसुन्धरा अष्टम के वासी, मैं भी हूँ प्रभु का विश्वासी॥
शिखामणि तीनों लोकों के परमात्मा...... ॥2॥

ज्ञान पूज्य है अमर आपका, इसीलिए कहलाते बुध।
तीन भुवन के सुख सम्वर्धक, अत: तुम्हीं शंकर हो शुद्ध॥
ध्याकर तुमको भव से तिरते परमात्मा...... ॥3॥

(13) जिनवाणी माता - जिनवाणी माता

जिनवाणी माता - 2, जिनवाणी माता - 2
जय अरहन्ता - 2, जय अरहन्ता - 2॥ टेक॥

सात तत्त्वों छ: द्रव्यों का जो ज्ञान करावे,
भव्य जनों को सच्चा मुक्तिमार्ग बतावे।
अरहन्तों की वाणी है वो माँ जिनवाणी,
गौतम गणधर कुन्दकुन्द ने रची जो वाणी॥1॥

स्व-पर भेद विज्ञान को जो करना, सिखावे,
सिद्धों जैसा मैं भी हूँ जो मुझको बतावे।
अरिहन्त आदि मंगल जो चार बतावे,
अरहन्तों की वाणी सुनना मन को भावे॥2॥

तीन लोक का वैभव मुझको फीका लागे।
अरहन्तों की बात मन को प्यारी लागे॥
भेदज्ञान की ज्योति जला भगवन बन जाए।
जिनवाणी की बात सुनी तो मन हर्षाए॥3॥

(14) मुनि निजरूप परम शिवभूत....

मुनि निजरूप परम शिवभूत, मोह उदंगल नाश किया॥ टेक॥

पंच महाव्रत समिति पंच है, पंचेन्द्रिय पर जय पाया।
षट् आवश्यक सात शेष गुण, पाल्यो तुम मन-वच-काया॥1॥

तीन चौकड़ी नाशन शुद्ध, बहिरात्म को हेय किया।
निज अन्तर आतम को ध्याकर, परमातम पुरुषार्थ किया॥2॥

नमन करत 'सिद्धान्त' तुम्हें, अब निजहित का उपदेश दिया।
समयसारमय समयसार ध्या समयसार मैं प्राप्त किया॥3॥

(15) मन मोहक छवी थारी

मन मोहक छवी थारी
निरखत ही समता रस झरता झलकन देखूँ म्हारी ॥ टेक ॥

क्रूर सिंह भी हिंसा छोड़े, देखत ही छवी थारी।
भेदभाव न रंक राज का, साम्य सुधारस धारी ॥1 ॥

त्यों निज आतम भाव प्रकट है, ज्यों शीतलता वारी।
निजस्वभाव के बाण चलाएँ, कर्म सैन्य सब हारी ॥2 ॥

सुनकर तुमरी हर्षित जावें, हित-मित वाणी प्यारी।
नमन करत 'सिद्धांत' भया मैं आतम जानी न्यारी ॥3 ॥

(16) वीर जिनेश्वर

वीर जिनेश्वर, अब तो मुझको मुक्ति महल जाना है - 2
भव-भव में, भटक रहा विषयों में अटक रहा - 2
तुम तो तिरे हो, मुझको भी वर दो, मुक्ति महल जाना है ॥ टेक ॥

हमने मुश्किल से पाया है मानव जनम।
देव तरसे जिसे ऐसा पाया रतन।
हमने जाना नहिं, पहिचाना नहिं।
अपने आतम स्वरूप को ध्याया नहीं ॥
होता भोगों में सुख थी मेरी भ्रमणा ॥ वीर...... ॥1 ॥

अब मिला जिनधरम, और जिनवर शरण।
गुरु मिलें हैं दिगम्बर, और अमृत वचन ॥
अब जो जाना नहीं पहिचाना नहीं।
गुरुवर्यों के वचन, है कल्याण मयी ॥
जाने बिन थे सहे, अब तक जन्म-मरण ॥ वीर..... ॥2 ॥

अब मैं त्यागूँ भरम, और पाऊँ शरम।
जग भर दु:ख से भरा, दु:खमय बँधते करम ॥
अब जो जाना सही, और माना वही।
जग में होता जो सुख, क्यूँ जिन जाते कहीं ?
अब मैं भी चला, सिद्धों के अँगना ॥ वीर...... ॥3 ॥

(17) हम सब ज्ञायक हैं...

हम सब ज्ञायक हैं।
अपना लक्ष्य एक है आहा..हा.. एक है हो हो हो
एक हैऽऽऽऽऽ।टेक॥

हम सब के पिता अरहन्त प्रभु और माता जिनवाणी।
सदियों से जिन ने हमको पिलायी है अमृत वाणी॥
जिनधर्म की रक्षा के खातिर हम सब कष्ट उठा लेंगे।
लहर-लहर इस झंडे को हम कभी न गिरने देंगे।
हाँ हाँ हाँ नहीं गिरने देंगे।
हम सब ज्ञायक......... ॥1॥

सिद्ध प्रभु आदर्श है और यति हमारे लघुनन्दन।
हम भी अशरीरी सम हैं, है ऐसे दिव्य वचन॥
हम सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे यह विश्वास हमारा है।
सुंदर-सुंदर सिद्धशिला पर हम भी राज्य करेंगे।
हाँ हाँ हाँ..... करेंगे।
हम सब ज्ञायक......... ॥2॥

(18) बाहुबली, जय बाहुबली...

बाहुबली जय बाहुबली, जय बाहुबली - 2
मङ्गलायतन के दरबार, देखो लागी भीड़ अपार
करे सबका बेड़ा पार प्रभु बाहुबली........

दूर-दूर से यात्री आए, दर्शन के अभिलाषी - 2
मङ्गलायतन दरबार प्रभु का, शान्त छवि मन भायी - 2
प्रभु दया के हो भण्डार, और क्षमा के हो अवतार
करे सबका बेड़ा पार प्रभु बाहुबली..........

न माँगू मैं हीरा मोती, माँगू ज्ञान का दान-2
ज्ञान बिना युग-युग से धरती, हम तुझसे अनजान-2
मेरी नाव पड़ी मझधार, नही दूजा कोई आधार
करे सबका बेड़ा पार प्रभु बाहुबली......

(19) माँ, प्यारी माँ, जिनवाणी माँ

माँ, प्यारी माँ, जिनवाणी माँ...

सात तत्त्वों छह द्रव्यों का जो ज्ञान कराती।
स्व और पर में भेदविज्ञान जो हमें कराती॥
ज्ञान तुझसे किया ग्रहणऽऽ
बारंबार तुम्हें शत नमन..... हो माँ, प्यारी माँ....

संसार से छूटने का मारग हमें बताती।
स्याद्वाद मयी अमृत का जो पान कराती॥
देत ढोक आपके चरणऽऽ
बारंबार तुम्हें शत नमन..... हो माँ, प्यारी माँ....

मोक्षालय का सच्चा मारग हमें बताती।
वीतरागता का संदेश जन तक पहुँचाती॥
'स्नेह' से तुझे शत् नमन्ऽऽ
बारंबार तुम्हें शत नमन..... हो माँ, प्यारी माँ....

(20) माँ, प्यारी माँ, जिनवाणी माँ

पारस रे तेरी कठिन डगरिया।
किस विधि मैं तुझे पाऊँ रे साँवरिया।।टेक॥

कठिन तुझे आहार कराना, अंतराय से कठिन बचाना।
कठिन जिमाना बिन प्याली बिन थलिया... ॥1॥

कठिन महल तज वन को जाना, कठिन रात-दिन ध्यान लगाना।
तप अति कठिन, कठिन मुनिचर्या... ॥2॥

मोक्ष जहाँ से गया तू जिनराई, उस पर्वत की कठिन चढ़ाई।
तू ही ले चल मेरी थाम के डगरिया... ॥3॥

विविध भक्ति खण्ड

(1) नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी....

मुख ओंकार धुनि सुनि अर्थ गणधर विचारै।
रचि आगम उपदेश भविक जीव संशय निवारै॥

दोहा

सो सत्यारथ शारदा, तासु भक्ति उर आन।
छन्द भुजङ्गप्रयागतै अष्टक कहों बखान॥1॥

भुजङ्गप्रयात

जिनादेश जाता जिनेन्द्रा विख्याता,
विशुद्धा प्रबुद्धा नमों लोकमाता।
दुराचार-दुनैहरा शंकरानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥2॥

सुधाधर्म संसाधनी धर्मशाला,
सुधातापनिर्नाशिनी मेघमाला।
महामोहविध्वंसनी मोक्षदानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥3॥

अखैवृक्षशाखा व्यतीताभिलाषा,
कथा संस्कृता प्राकृता देशभाषा।
चिदानन्द-भूपाल की राजधानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥4॥

समाधानरूपा अनूपा अक्षुद्रा,
अनेकान्तधा स्याद्वादाड्कमुद्रा।

त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी बखानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥5 ॥

अकोपा अमाना अदंभा अलोभा,
श्रुतज्ञानीरूपी मतिज्ञानशोभा।
महापावनी भावना भव्यमानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥6 ॥

अतीता अजीता सदा निर्विकारा
विषैवाटिका खंडिनी खड्ग-धारा।
पुरापापविक्षेप कर्तृ कृपाणी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥7 ॥

अगाधा अबाधा निरंध्रा निराशा,
अनन्ता अनादीश्वरी कर्मनाशा।
निशंका निरंका चिंदका भवानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥8 ॥

अशोका मुदेका विवेका विधानी
जगज्जन्तुमित्रा विचित्रावसानी।
समस्तावलोका निरस्ता निदानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥9 ॥

उल्लाला

जे आगम रुचिधरैं, जे प्रतीति मन मांहि आनहि।
अवधारहिंये पुरुष, समर्थ पद अर्थि आनहिं॥

दोहा

जे हित हेतु 'बनारसी', देहिं धर्म उपदेश।
ते सब पावहिं परम सुख, तज संसार कलेश॥

(2) ये महा-महोत्सव पंच-कल्याणक.....

ये महा-महोत्सव पंच-कल्याणक आया मङ्गलकारी...
ये महा-महोत्सव ॥ टेक ॥

जब काललब्धिवश कोई जीव निज दर्शन शुद्धि रचाते हैं;
उसके संग में शुभभावों की धारा उत्कृष्ट बहाते हैं।
उन भावों के द्वारा तीर्थङ्कर कर्म प्रकृति रज आते हैं;
उनके पकने पर भव्य जीव वे तीर्थङ्कर बन जाते हैं ॥1॥
इस भूतल पर पन्द्रह महीने धनराज रतन बरसाते हैं;
सुरपति की आज्ञा से नगरी दुल्हन की तरह सजाते हैं।
खुशियाँ छाई हैं दश दिश में यूँ लगे कहीं शहनाई बजे;
हर आतम में परमातम की भक्ति के स्वर हैं आज सजे ॥2॥
माता ने अजब निराले अद्भुत देखें हैं सोलह सपने;
यह सुना तभी रोमाञ्च हुआ तीर्थङ्कर होंगे सुत अपने।
अवतार हुआ तीर्थङ्कर का क्या मुक्ति गर्भ में आई है;
क्षय होगा भ्रमण चतुर्गति का मङ्गल सन्देशा लाई है ॥3॥
जब जन्म हुआ तीर्थङ्कर का सुरपति ऐरावत लाते हैं;
दर्शन से तृप्त नहीं होते, तब नेत्र हजार बनाते हैं।
जा पाण्डुशिला क्षीरोदधि जल से बालक को नहलाते हैं;
सुत माता-पिता को सौंप इन्द्र, तब ताण्डव नृत्य रचाते हैं ॥4॥
वैराग्य समय जब आता है, प्रभु बारह भावना भाते हैं;
तब ब्रह्मलोक से लौकान्तिक आ, धन्य-धन्य यश गाते हैं।
विषयों का रस फीका पड़ता चेतनरस में ललचाते हैं;
तब भेष दिगम्बर धार प्रभु संयम में चित्त लगाते हैं ॥5॥
नवधा भक्ति से पड़गाहें, हे मुनिवर यहाँ पधारो तुम;
हे गुरुवर अत्र-अत्र तिष्ठो, निर्दोष अशन कर धारो तुम।
है मन-वच-तन आहार शुद्ध अति भाव विशुद्ध हमारे हैं;
जन्मान्तर का यह पुण्य फला, श्री मुनिवर आज पधारे हैं ॥6॥

सब दोष और अन्तराय रहित, गुरुवर ने जब आहार किया;
देवों ने पञ्चाश्चर्य किये, मुनिवर का जय-जयकार किया।
हैं धन्य-धन्य शुभ घड़ी आज, आँगन में सुरतरु आया है;
अब चिदानन्द रसपान हेतु, मुनिवर ने चरण बढ़ाया है ॥7 ॥

प्रभु लीन हुए शुद्धातम में निज ध्यान अग्नि प्रगटाते हैं;
क्षायिक श्रेणी आरूढ़ हुए, तब घाति चतुष्क नशाते हैं।
प्रगटाते दर्शन-ज्ञान वीर्य-सुख लोकालोक लखाते हैं;
ॐकारमयी दिव्यध्वनि से प्रभु मुक्ति-मार्ग बतलाते हैं ॥8 ॥

प्रभु तीजे शुक्लध्यान में चढ़ योगों पर रोक लगाते हैं;
चौथे पाये में चढ़ प्रभुवर गुणस्थान चौदवाँ पाते हैं।
अगले ही क्षण अशरीरी होकर सिद्धालय में जाते हैं;
थिर रहे अनन्तानन्त काल कृतकृत्य दशा पा जाते हैं ॥9 ॥

है धन्य-धन्य वे कहान गुरु जिनवर महिमा बतलाते हैं;
वे रङ्ग राग से भिन्न चिदातम का संगीत सुनाते हैं।
हे भव्यजीवों आओ सब जन, अब मोहभाव का त्याग करो;
यह पंच कल्याणक उत्सव कर, अब आतम का कल्याण करो ॥10 ॥

(3) आदिप्रभु का, वीरप्रभु का....

आदिप्रभु का, वीरप्रभु का, बाहुबलीजी का आयतन।
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहान गुरु का मंगलायतन ॥टेक ॥

प्रथम विराजें आदिप्रभुजी, ऋषभदेव सादर वंदन।
ध्यानमात्र से भक्तजनों के, मिटेंगे सब भव दु:ख क्रंदन ॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहान गुरु का मंगलायतन ॥1 ॥

वर्धमान महावीर जिनस्वामी के चरणों में मेरा वंदन।
चारों गति में भटका हूँ, अब कटेंगे दु:ख मेरे प्रतिक्षण ॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहान गुरु का मंगलायतन ॥2 ॥

बाहुबलीजी की शरणा पाकर, धन-धन होंगे हम सब जन।
स्व-पर विवेक जगेगा उर में, मेटेंगे मिथ्यादर्शन॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहान गुरु का मंगलायतन॥3॥

गगनचुम्बी मानस्तंभ प्यारा, विराजें आदिनाथ भगवन्।
दर्शनमात्र से भव्यजनों के, मान गले साधें आतम॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहान गुरु का मंगलायतन॥4॥

कहानगुरु के मंगलायतन पर, तन-मन-धन सब है अर्पण।
भेदज्ञान की ज्योति जला करूँ निज आतम का अभिनंदन॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहान गुरु का मंगलायतन॥5॥

कहानगुरु का मंगलायतन रे, बहिनश्री का मंगलायतन।
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहान गुरु का मंगलायतन॥

(4) मुझे चरणों से लगा ले...

मुझे चरणों से लगा ले, हे नाथ मधुवन वाले।
मेरी साँस-2 में तेरा, है नाम मधुवन वाले॥टेक॥

भक्तों की विपदा प्रभुवर, तुमने है टाली।
मेरी भी बाँहें थामो, हे जगतारी॥
मेरी बिगड़ी बनाई तूने, हर काम मधुवन वाले॥1॥

पतझड़ है मेरा जीवन, बन के बहार आजा।
सुनकर पुकार प्रभु, बस एक बार आजा॥
वीरान मन के तुम्हीं हो, बहार मधुवन वाले॥2॥

तुम हो दया के सागर, जन्मों का मैं हूँ प्यासा।
चरणों में दे दो जगह, बस तुम ज़रा सी॥
मेरी सुबह-सुबह तुम्हीं हो, हर शाम मधुवन वाले॥3॥

(5) पारस नाम...

पारस नाम पारस नाम, मेरे प्रभु का पारस नाम।
है सुख खान प्रभु का नाम, मेरे प्रभु का पारस नाम।।टेक।।

है सुखकारी पर हितकारी,
जग हितकारी महिमा भारी।
निशदिन जपते तेरा नाम।।1।।

पाप निकंदन कर्म निकंदन,
भव तम भंजन जन मन रंजन।
भक्तजनों के तुम अभिराम।।2।।

दे उपदेश बहुत जन तारे।
सिद्धालय में आप विराजे।।
हम भी पहुँचे शिवपुर धाम।।3।।

(6) सुन ले ध्यान लगाकर

सुन ले ध्यान लगा कर ध्यानी,
मत कर तू अब मन की मानी,
क्या तूने नरकों में जाने की है
निश्चित मन में ठानी - 2।। टेक।।

भूल गया सब धर्म कर्म को पापों में भरमाया - 2,
जीवन कपटाई में खायो नस-नस में है माया - 2,
तेरी दो दिन की जिन्दगानी, क्यों करता है खोट अज्ञानी,
क्या तूने नरकों में जाने की है निश्चित मन में ठानी।।
सुन ले ध्यान लगाकर.....।।1।।

तेरा मेरा करते-करते नरभव व्यर्थ गंवाया - 2,
अंतसमय जब आन पड़े तो शीश पकड़कर रोया - 2,
बन करके तूने अभिमानी कर ली अपनी ही नुकसानी,

क्या तूने नरकों में जाने कि निश्चित मन में ठानी॥
सुन ले ध्यान लगाकर.... ॥2॥

चेत समय अब भी है चेतन, जो तू कहना माने - 2,
अभय दया अरु दानशीलता को सच में तू जाने - 2,
जीवन है दुनिया का पानी पाले मुक्ति की निशानी,
क्या तूने नरकों में जाने की है निश्चित मन में ठानी॥
सुन ले ध्यान लगाकर.... ॥3॥

(7) सुख आते हैं, दुःख आते हैं,...

सुख आते हैं, दुःख आते हैं,
इन आते जाते सुख दुःख में
हम मस्त रहते हैं॥टेक॥

गाते गाते फकीरा कह जाता, कोई पैदा हुआ कोई मर जाता।
इस जन्म मरण के खेल में, -2 हम मस्त रहते हैं॥1॥

कभी मान मिला जी भर-भर के, अपमान मिला जी भर-भर के।
इस मान अपमान के खेल में, -2 हम मस्त रहते हैं॥2॥

गुरु ज्ञान पिटारा खोला है, ये जग एक सारा मेला है।
क्षण-क्षण बदलते सुख दुःख में, -2 हम मस्त रहते हैं॥3॥

यह जीना भी कोई जीना है, विष छोड़ के अमृत पीना है।
हम अमृत पीते रहते हैं, -2 हम मस्त रहते हैं॥4॥

(8) सोते-सोते ही निकल गयी...

सोते-सोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी;
सारी जिन्दगी तेरी प्यारी जिन्दगी।
बोझा ढोते ही निकल गयी॥टेक॥

जन्म लेते ही इस धरती पर तूने रुदन मचाया,
आँखे भी न खुलने पायी, भूख-भूख चिल्लाया;
रोते-रोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी ॥1 ॥

खेलकूद में बचपन बीता, यौवन पा बौराया,
धर्म कर्म का मर्म न जाना, विषय भोग लपटाया;
भोगों भोगों में निकल गयी सारी जिन्दगी ॥2 ॥

धीरे-धीरे बढ़ा बुढ़ापा, डगमग डोले काया;
सबके सब रोगों ने देखो डेरा खूब जमाया।
रोगों रोगों में निकल गयी सारी जिन्दगी ॥3 ॥

जिसको तू अपना समझा था, वह दे बैठा धोखा;
प्राण गये फिर जल जायेगा ये माटी का खोका।
खोका ढोने में निकल गयी सारी जिन्दगी ॥4 ॥

(9) सजधज के जिस दिन...

सजधज के जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी;
ना सोना काम आयेगा, ना चाँदी आयेगी ॥ टेक ॥

छोटा-सा तू कितने बड़े अरमान हैं तेरे;
मिट्टी का तू सोने के सब सामान हैं तेरे;
मिट्टी की काया मिट्टी में जिस दिन समायेगी ॥1 ॥

पर छोड़ के पंछी तू पिंजरा छोड़ के उड़ जा;
माया-महल के सारे बन्धन तोड़ के उड़ जा;
धड़कन में जिस दिन मौत तेरी गुनगुनायेगी ॥2 ॥

(10) वीरा प्रभु के ये बोल.....

वीरा प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले,
तुझ ही में डोले हाँ तुझ ही में डोले,
मन की तू कुण्डी को खोल, खोल खोल खोल.........
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ।।टेक ।।

क्यों जाता गिरनार क्यों जाता काशी,
घट-घट ही में है तेरे घट-घट का वासी,
अन्तर का कोना टटोल, टोल टोल टोल........
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ।।1 ।।

चारों कषायों को तूने है पाला,
आतम प्रभु को जो करती है काला,
इनकी तू सङ्गति को छोड़, छोड़ छोड़ छोड़........
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ।।2 ।।

पर में जो ढूँढ़ा न भगवान पाया,
संसार को ही तूने बढ़ाया,
देखो निजातम की ओर, ओर ओर ओर........
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ।।3 ।।

मस्तों की दुनियाँ में तू मस्त हो जा,
आतम के रङ्ग में ऐसा तू रम जा,
आतम को आतम में घोल, घोल घोल घोल........
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ।।4 ।।

भगवान बनने की ताकत है तुझमें,
तू मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं,
ऐसी तू मान्यता को छोड़ छोड़ छोड़........
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ।।5 ।।

(11) प्रेम जब अनन्त हो गया,

प्रेम जब अनन्त हो गया, रोम रोम सन्त हो गया।-2
ज्ञान चेतना जग गई, जीव भगवन्त हो गया॥टेक॥

आतमा स्वभाव से महान, महान से महन्त हो गया।
साधना स्वभाव की जहाँ, साधुपन वहीं तो आयेगा।
शुद्ध स्वभाव का मनन जहाँ, मुनि वहीं शोभा पायेगा।
रत्नत्रय-२ लहर बहे, जहाँ रत्न का करंड मिल गया॥1॥

मोह भाव से न ज्ञान था, कौन हूँ मेरा है क्या स्वरूप?
राग-द्वेष ज्ञान के थे ज्ञेय, मैंने माना उनको आत्म रूप॥
भेदज्ञान-२ का गजब कमाल, आज मैं निहाल हो गया॥2॥

शांति प्राप्ति के लिये किये, मैंने घोर अब तक प्रयास।
छोड़ दी ग्रहस्थ जिंदगी, पाप-पुण्य छोड़ सुख बिलास॥
शांतिधाम-२ था स्वयं प्रभु, देखते प्रसन्न हो गया॥3॥

गिलवा शिकवा कुछ नहीं रहा, जो भी होता होने योग्य ही।
कोई भी न कर्ता धर्ता है, जीव ज्ञान मात्र है सदैव॥
सब स्वतंत्रता से परिणमित, देख दृष्टि मोक्ष हो गया॥4॥

(12) मोह की महिमा देखो

मोह की महिमा देखो, क्या तेरे मन में समाई।
तूने अपनी ही महिमा भुलाई, तुझे अपनी ही महिमा न आई॥ टेक॥

काहे अरिहन्तों के कुल को लजाया।
काहे जिनवाणी माँ का कहना भुलाया।
काहे मुनिराजों की सीख ना मानी
सिद्ध समान शक्ति हरकत बचकानी।

अपने ही हाथों अपने घर में आग लगाई।
तूने अपनी ही महिमा भुलाई ॥1 ॥

समवशरण में जिनवरेन्द्रों ने गाया।
सौ-सौ इन्द्रों के मध्य सबको समझाया।
अपनी शुद्धात्मा को भगवान बताया।
भव्यों ने समझा अन्दर अनुभव में आया।
जानो और देखो चेतन इसमें तेरी भलाई।
तूने अपनी ही महिमा भुलाई ॥2 ॥

काहे अपनाये तूने माटी के ढ़ेले।
हीरा-पन्ना या माणिक रूप अलबेले।
पुद्गल अचेतन से प्रीति बढ़ाई
काहे भिखारी बनके झोली फैलाई।
रघुकुल के राम तूने काहे को रीति गमाई।
तूने अपनी ही महिमा भुलाई ॥3 ॥

(13) ममता की पतवार न तोड़ी...

ममता की पतवार न तोड़ी, आखिर को दम तोड़ दिया।
एक अनजाने राही ने, शिवपुर का मारग छोड़ दिया ॥ टेक ॥

नर्क में जिसने भावना भायी, मानुष तन को पाने की।
भेष दिगम्बर धारण करके, मुक्ति पद को पाने की ॥
लेकिन देखो आज ये हालत, ममता के दीवाने की।
चेतन होकर जड़-द्रव्यों से कैसा नाता जोड़ लिया ॥1 ॥

ममता के बंधन में बंधकर, क्या युग युग तक सोना है।
मोह अरि का सचमुच इस पर, हो गया जादू टोना है ॥
चेतन क्या नर-तन को पाकर, अब भी यों ही खोना है।
मन का रथ क्यों शिवमारग से कुमारग को मोड़ दिया ॥2 ॥

मत खोना दुनिया में आकर ये बस्ती अनजानी है।
जायेगा हर आनेवाला जग की रीति पुरानी है॥
जीवन बन जाता यहाँ पंकज सबकी एक कहानी है।
चेतन निज स्वरूप देखा तो दु:ख का दामन तोड़ दिया है॥3॥

(14) लक्ष्य-बिन्दु

लक्ष्य बिन्दु का कभी न हम पता लगा सके।
खोजते रहे सदा, मगर न पंथ पा सके॥ टेक॥

दिव्य देवगति मिलि जहाँ कि सुख अपार था।
फूल की सुगंधी सा सुदेवियों का प्यार था।
क्या वहाँ बहार थी कि क्या अजब खुमार था?
भोग वस्तुएँ अनेक भोगना भी भार था।
मुग्ध हो गया हृदय, बन गया कि ज्यों अभय।
भूल यह गया कि कालचक्र है नहीं सदय॥
और एक दिन ढली वह खिली हुई कली।
दु:ख हुआ बहुत कि हम जरा नहीं अघा सके॥ 1॥

नर्क में गया कभी, जहाँ महान क्लेश था।
वेदना अपार थी, तथा विचित्र वेष था।
मार-काट-चीर-फाड़ से भरा प्रदेश था।
रक्त पीव माँस का समुद्र वह अशेष था॥
दम लगा घुटा-घुटा, प्राण भी लुटा-लुटा।
किन्तु पूर्ण आयु तक, उसी जगह रहा डटा॥
भूख भी न मर सकी, प्यास कब उभर सकी?
ये बड़े चतुर न किन्तु कर्म को हटा सके॥ 2॥

पशु हुए कभी तो भार कर वहन सदा फिरे।
हीन बल हुए तो आयु भर रहे डरे-डरे॥

ज्ञान हीन जिन्दगी विकास किस तरह करें ?
        बन्धनों के बीच घोर वेदना लिये मरे।
पाप से घिरे-घिरे, पंक में गिरे-गिरे
        साथ के निकल गए, परन्तु हम नहीं तिरे॥
सोचते यही रहे, एक फिर लहर बहे।
        इन्तजार में रहे न चेतना जगा सके॥ 3॥

पुण्य बन्ध कुछ हुआ, मनुष्य का मिला भवन।
        धन वैभव अधिक हुआ उसी में एक दम मगन॥
चाटुकार राह दें उसी तरफ बढ़ें चरण।
        न सत्य की लगन रही न धर्मध्यान में है मन॥
बात-बात पर अड़े, नैन भी चढ़े-चढ़े।
        शान के मकान पर गुमान से हुए खड़े॥
दैव था विहंस रहा, मूर्ख आप फंस रहा।
        चक्रवर्ती भी न भाग्य फल कभी हटा सके॥ 4॥

भाग्य साथ दे गया महाव्रती हुए कभी।
        राग-द्वेष पुण्य-पाप आदि छोड़कर सभी॥
भूख प्यास शीत घाम आदि सह उठे सभी।
        ख्याति हो गई कि साधु श्रेष्ठ हैं यही अभी॥
भक्त कुछ बड़े-बड़े, सिर झुका हुये खड़े।
        डगमगा गये कदम न रह सके वहीं अड़े॥
कौन काम आ सका, कीर्ति से बचा सका।
        खो प्रकाश पास का न और ज्योति ला सके॥5॥

(15) जब एक रतन अनमोल है...

जब एक रतन अनमोल है तो, रत्नाकर कैसा होगा ?
जिसकी चर्चा ही है सुन्दर तो, वो कितना सुन्दर होगा ?
कहते अनुपम रसखान है वो, कब स्वाद चखूँ वह क्षण होगा॥ टेक॥

जिसके दीवाने हैं ज्ञानी, धर धुन में वही सवार रहे।
बस एक लक्ष और एक पक्ष, हर श्वांस उसी के लिए बहे॥
जिसको पाकर सब कुछ पाया, उससे भी बढ़कर क्या होगा ?॥1॥

जो वाणी के भी पार कहा, मन भी थक करके रह जाये।
इन्द्रिय गोचर तो दूर, अतीन्द्रिय, के विकल्प में न आये॥
अनुभवगोचर कुछ नाम नहीं, निरनाम भी क्या अद्‌भुत होगा ?॥ 2॥

सब अंग पढ़े नौ पूर्व रटे, पर उसका स्वाद नहीं आये।
तिर्यंच गति के अनपढ़ भी, ले स्वाद सफल भव कर जाये॥
जड़ पुद्‌गल तो अनजान स्वयं, वो ज्ञान तुझे कैसे देगा ?॥ 3॥

जिसकी महिमा प्रभु की वाणी, गाती मनमोहक लहराये।
ध्रुवधाम गुणों के रत्नाकर, सब हैं परमेश्वर फरमाये॥
तू माने या न भी मानें, परमात्मपना कम न होगा॥ 4॥

कवि क्या, मुनि त्यागी हुये थकित, गणधर कथ पार नहीं पाये।
अनुभूति में तो दर्शन होते, जो होनहार वो लख पाये॥
बस एक लगन भर हो सच्ची, तुझको निश्चित दर्शन होगा॥ 5॥

व्रत प्रतिमा लो उपवास करो, या जंगल में डेरा डारो।
या करो पाठ पूजा वंदन, इस तन को खूब सुखा डारो॥
ज्ञायक तो आनन्द खान सहज-जानन में निज दर्शन होगा॥ 6॥

(16) तेरी छत्र छाया भगवन....

तेरी छत्र छाया भगवन मेरे सिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥

जिनवाणी सा पान करूँ मैं-2 जिनवर को ध्याऊँ।
आर्य जनों की संगति पाऊँ-2 व्रत संयम पालूँ।
गुणी जनों के सद्‌गुण गाऊँ जिनवर यह वर दो॥
मेरा अंतिम मरण.............. ॥1॥

पर निंदा मुँह से न निकले -2, मधुर वचन बोलूँ,
हृदय तराजू परहितकारी-2, सम्भाषक तोलूँ।
आत्म तत्त्व की रहे भावन भाव विमल भर दो॥
मेरा अंतिम मरण.............. ॥2॥

जिनशासन में प्रीति बढ़ाऊँ -2, मिथ्या पथ छोडूँ,
निष्कलंक चैतन्य भावना - 2, जिनमत से जोडूँ।
जन्म-जन्म में जैनधर्म यह मिल कृपा कर दो॥
मेरा अंतिम मरण.............. ॥3॥

मरण समय गुरु पाद मूल हो - 2, संत समूह रहे,
जिनवर के आलय मंदिर में - 2, गंगा नित्य बहे।
भव-भव में संन्यास मरण हो नाथ हाथ भर दो॥
मेरा अंतिम मरण.............. ॥4॥

(17) सिद्धालय जाना है

सिद्धालय जाना है,
मुक्ति को पाना है
जीवन के हर क्षण-2 को
अति सौम्य बनाना है।

बालक की अवस्थाओं में
दम अज्ञानी और चंचल थे
पर ज्ञान दीप स दमको
अनुभव को पाना है। – 2

जब समय और युवा बुरा
मोह के कारण दुखी हुए
अब समय धारक करके
ब्रह्मचर्य लेना – 2

वृद्धावस्था में रेल बड़ी
जब शिथिल जनों ने भी
साथ छोड़ा है। – 2

ये वर्तमान पावन क्षण है
आत्म चिंतन अनन्य है
सब भव्य जीव को अब हो
समकित को पाना है – 2

पूज्य गुरुदेव भक्ति

(1) शांति सुधा बरसा गये...

शांति सुधा बरसा गये गुरु दोई बिरियां।
समयसार समझा गये गुरु दोई बिरियां॥
दोई बिरियां गुरु दोई बिरियां॥टेक॥

श्वेताम्बर मत छोड़, दिगम्बर पथ भाया।
आतम धरम महान, समझकर समझाया॥
स्वयं सिद्ध भगवान, सहज अनुभव आया।
जिन शासन का मर्म गुरु ने बतलाया॥
सब भूले भगवान, कहें गुरु दोई बिरियां॥1॥

सीमंधर संदेश सुनाने आये थे।
भरत क्षेत्र के भाग्य जगाने आये थे॥
जीवराज जिनराज बताने आये थे।
शुद्ध बुद्ध के गीत आपको भाये थे॥
कुंदकुंद के नंदन वंदौ दोई बिरियां॥2॥

पावन चेतन रत्न गुरुजी आनंद भवन।
धन्य गुरु की द्रव्य दृष्टि जो लगी लगन॥
धन्य साधना भूमि सोनगढ़ का कण-कण।
धन्य हो गया भारत सारा जगन मगन॥
अंतर आतम ब्रह्म बताये गुरु दोई बिरियां॥3॥

तीर्थंकर का भी विरह हमें नहीं साला।
गुरुदेव ने गूथा पंचरत्न की माला॥
एकत्व विभक्त स्वरूप कुंद ने गाया।
गुरुदेव ने उसका हार्द हमें समझाया॥
क्यों पहिन रहा है पाप-पुण्य की माला।
सर्वज्ञ का पंथ तो जग से रहा निराला॥4॥

ध्रुव और अध्रुव पर्याय यही जिन गाया।
निज भवन मांहि देखो रत्नत्रय भाया॥
अपने पुरुषार्थ से पाओ सम्यक् माला॥
परमागम मंदिर बना आज गुरु शाला॥5॥

'आचार्य कुंद' ने मंदिर 'समय' बनाया।
'अमृत' ने उस पर, कंचन कलश चढ़ाया॥
'गुरुदेव' ने उस पर, पचरंगा फहराया।
यह विजय पताका देख जगत हर्षाया॥6॥

(2) मोहे लागी लगन

मोहे लागी लगन गुरु चरणन की, गुरु चरणन की।
गुरु बिना मोहे कछु नहीं भावे, सब माया सब सपनन की॥ टेक॥

कहान गुरु ने आतम बताया, सीधा साधा मोक्ष बताया।
ऐसे गुरु को मेरा नमन, मोहे लागी लगन॥1॥

नियमसार का पान कराया, समयसार का सार बताया।
उन गुरुवर को मेरा नमन, मोहे लागी लगन॥2॥

(3) गुरुदेव आए रे....

गुरुदेव आए रे, बड़े ही सौभाग्य से।
गूँज गया भारत सारा, ॐकार नाद से।टेक॥

शुभाचार धर्म बनकर, बैठा चुपचाप था।
शास्त्र ज्ञान में ही माना, मुक्ति का माप था॥
वीतरागी ज्ञान जागा, तेरे ही प्रताप से॥1॥

कर्ता कर्म की भ्रांति, करती हैरान थी।
ज्ञाता स्वभाव से हूँ, दुनिया जनजान थी॥
चेतन है जाननहारा, बतलाया शान से॥2॥

लाए थे संग में गुरुवर, सीमंधर देशना।
चेतन रस झरती वाणी, हरती मन वेदना॥
महाशक्तिशाली आतम, दर्शाते चाव से॥3॥

बालगीत खण्ड

(1) तुझे बेटा कहूँ कि वीरा

तुझे बेटा कहूँ कि वीरा, तू तो है जाननहारा।
मेरा वीर बनेगा बेटा, महावीर बनेगा बेटा।टेक॥

तू गुणों के पलने में झूले, विषयों से दूर ही रहना,
नहीं गंध कषायों की भी, तेरे सहज स्वरूप में बेटा।
तू अरस अरूपी भगवन, भगवन ही बनकर रहना॥
मेरा वीर बनेगा........ ॥1॥

ये पंच परम परमेष्ठी है सदा पिताजी तेरे,
हम तो झूठे स्वारथ के संयोगी साथी हैं सारे।
तू नितप्रति उनको ध्याना, ज्ञायक नित सांझ सवेरे॥
मेरा वीर बनेगा........ ॥2॥

मोह की अंधियारी बीते खुलते जब ज्ञान के नैना,
तुम ज्ञायक को नित लखना, संयोग का मोह न करना।
तुम सहज हो जानन हारे, बस जानन हार ही रहना॥
मेरा वीर बनेगा........ ॥3॥

तुम सहज हो ज्ञान स्वरूपी और सहज ही ज्ञाता रहना।
फिर सहज प्रगट हो जाए वह रत्नत्रय का गहना॥
जाने कर्म बंध से न्यारा, अरु गणधर को भी प्यारा।
तुम भी चैतन्य में बसना, महावीर बनेगा बेटा॥
मेरा वीर बनेगा........ ॥4॥

सहज को लखते-लखते, मुक्ति मार्ग प्रगट हो जाए,
फिर काल अनंतो सुखमय, तुम मुक्ति पुरी में रहना।
तुम मुक्त स्वरूप को जानो, अपना स्वरूप पहचानो॥
मेरा वीर बनेगा........ ॥5॥

(2) चेतन है तू....

चेतन है तू, ध्रुव ज्ञायक है तू।
अनन्त शक्ति का धारक है तू॥
सिद्धों का लघुनन्दन कहा,
मुक्तिपुरी का नायक है तू।
चेतन है तू.....................।।टेक॥

चार कषाय, दु:ख से भरी, तू इनसे दूर रहे,
पापों में जावे न मन दृष्टि निज में ही रहे।
चलो चलें अब मुक्ति की ओर,
पंचम गति के लायक है तू॥
चेतन है तू..................... ॥1॥

श्री जिनवर से राह मिली, उस पर सदा चलना,
माँ जिनवाणी शरण सदा, बात हृदय रखना।
मुनिराजों संग केलि करे-2
मुक्ति वधू का नायक है तू॥
चेतन है तू..................... ॥2॥

(3) आत्मा हमारा हुआ है....

आत्मा हमारा हुआ है क्यों काला, राग से है मैला हुआ है झमेला।
दौड़ा-दौड़ा-दौड़ा चेतन चार गति में दौड़ा।।टेक॥

राग करोगे—नहीं नहीं। द्वेष करोगे—नहीं नहीं॥
पूजा करोगे—हाँ हाँ। भक्ति करोगे—हाँ हाँ॥
दौड़ा-दौड़ा-दौड़ा चेतन मुक्तिपुरी में दौड़ा॥1॥

मनुष्य गति में पहुँचा, दुनिया को जब देखा।
मान में गंवाया जीवन, भटक गयी फिर नौका॥

दौड़ा-दौड़ा-दौड़ा चेतन मनुष्य गति में दौड़ा।
मान करोगे—नहीं नहीं, घमंड करोगे—नहीं नही ॥
दौड़ा-दौड़ा-दौड़ा चेतन मुक्तिपुरी में दौड़ा ॥2 ॥

नरक गति में पहुँचा, दु:खों को जब देखा।
क्रोध की जलती ज्वाला थी स्व को फिर से भूला।
दौड़ा-दौड़ा-दौड़ा चेतन नरक गति में दौड़ा ॥
क्रोध करोगे—नहीं नहीं, गुस्सा करोगे—नहीं नहीं।
दौड़ा-दौड़ा-दौड़ा चेतन मुक्तिपुरी में दौड़ा ॥3 ॥

तिर्यंच गति में पहुँचा, वहाँ भी खुद को भूला।
माया में गंवाया जीवन, भटक गयी फिर नौका ॥
दौड़ा-दौड़ा-दौड़ा चेतन तिर्यंचगति में दौड़ा।
माया करोगे—नहीं नहीं, हिंसा करोगे—नहीं नहीं।
दौड़ा-दौड़ा-दौड़ा चेतन मुक्तिपुरी में दौड़ा ॥4 ॥

(4) ज्ञाता दृष्टा राही हूँ.....

ज्ञाता दृष्टा राही हूँ अतुल सुखों का ग्राही हूँ।
बोलो मेरे संग, आनन्दघन - 3 ॥टेक ॥

आत्मा में रमूंगा मैं क्षण-क्षण में,
चाहे मेरा ज्ञान जाने निज पर में।
अपने को जाने बिना लूँगा नहीं दम,
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।
सुख में दु:ख में, दु:ख में सुख में एक राह पर चल— ॥1 ॥

धूप हो या गर्मी बरसात हो जहाँ,
अनुभव की धारा बहाऊँगा वहाँ।
विषयों का फिर नहीं होगा जनम,

आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।
सुख में दु:ख में, दु:ख में सुख में एक राह पर चल— ॥2॥

गुण अनन्त का स्वामी हूँ मैं मुझमें ये रतन,
गणधर भी हार गये करके वर्णन।
अनुपम और अद्‌भुत है मेरा ये चमन,
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।
सुख में दु:ख में, दु:ख में सुख में एक राह पर चल— ॥3॥

(5) जैनधर्म का प्यारा बच्चा

जैनधर्म का प्यारा बच्चा, जिनवाणी नित पढ़ता है।
अवगुण उसके घटते जाते, गुण श्रेणी में चढ़ता है।टेक॥

प्रात: जब बिस्तर से उठता, परमेष्ठी को ध्याता है।
माँ जिनवाणी के चरणों में, अपना शीश झुकाता है॥
जैन......... ॥1॥

हर धड़कन में बसी अहिंसा, हिंसा से तो डरता है।
जिनमंदिर के दर्शन पूजन, नित्य नियम से करता है॥
जैन......... ॥2॥

दश धर्मों की पूजा करता, सोलह कारण ध्याता है।
तीर्थंकर पद की महिमा को, जिनवाणी में गाता है॥
जैन......... ॥3॥

शोभायात्रा / ध्वजारोहण भक्ति खण्ड

(1) यह धर्म है आतम ज्ञानी का....

यह धर्म है आतम ज्ञानी का, सीमंधर महावीर स्वामी का।
इस धर्म का भैया क्या कहना, यह धर्म है वीरों का गहना ।।टेक ।।

यहाँ समय सार का चिंतन है, यहाँ नियमसार का मंथन है।
यहाँ रहते हैं ज्ञानी मस्ती में, मस्ती है स्व की अस्ति में ।।1 ।।

अस्ति में मस्ती ज्ञानी की, यह बात है भेद विज्ञानी की।
यहाँ झरते हैं झरने आनंद के, आनंद ही आनंद आतम में ।।2 ।।

यहाँ बाहुबली से ध्यानी हुए, यहाँ कुंदकुंद से ज्ञानी हुए।
यहाँ वीर प्रभु ने ये बोला, मेरा जैन धर्म है अनमोला ।।3 ।।

(2) केशरिया केशरिया...

केशरिया केशरिया आज हमारो रंग केशरिया।
हम केशरिया, तुम केशरिया, इंद्र इंद्राणी हैं केशरिया।
आज यहाँ पर सब केशरिया, केशरिया... केशरिया ।।टेक ।।

हमरा झंडा है केशरिया, झंडे का डंडा केशरिया।
हमरा कलशा है केशरिया, कलशे का धागा केशरिया ।।1 ।।

पूजन की थाली केशरिया, थाली के चावल केशरिया।
थाली में चंदन केशरिया, पूजन की पुस्तक केशरिया ।।2 ।।

हमरे प्रभुजी हैं केशरिया, हमरे गुरुजी हैं केशरिया।
माँ जिनवाणी हैं केशरिया, देव शास्त्र गुरु सब केशरिया ।।3 ।।

कुंदकुंद आचार्य केशरिया, अमृतचंद्र आचार्य केशरिया।
टोडरमल जी हैं केशरिया, कहान गुरुजी हैं केशरिया ।।4 ।।

(3) मंगलमय अरु मंगलकारी...

मंगलमय अरु मंगलकारी, शासनध्वज लहराता।
अनेकांतमय वस्तु व्यवस्था, का यह बोध कराता॥

स्याद्वाद शैली से जग का, संशय तिमिर मिटाता।
चहुँ गति दु:ख नशाता, जन गण मन हर्षाता।
जिन शासन सुखदाता॥

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरणमय मुक्तिमार्ग दर्शाता।
जय हे...जय हे...जय हे...जय जय जय जय हे।

(4) रङ्ग मां.......

रङ्ग मां..........रङ्ग मां..........रङ्ग मां रे,
प्रभु थारा ही रङ्ग मां रङ्ग गयो रे।टेक॥

आया मङ्गल दिन मङ्गल अवसर,
भक्ति मां थारी हूँ नाच रह्यो रे॥1॥

गाओ रे गाना आज ध्रुवधाम का,
आतमदेव बुलाय रह्यो रे॥2॥

आतमदेव को अन्तर में देख्या,
सुख-सरोवर उछाल रह्यो रे॥3॥

भाव भरी ने हम भावना ये भायें,
आप समान बनाय लीज्यो रे॥4॥

समयसार में कुन्द-कुन्द देव,
भगवान कहकर जगाय रह्यो रे॥5॥

आज हमारो उपयोग पलट्यो
चैतन्य-चैतन्य भास रह्यो रे॥6॥

(5) अपना ही रङ्ग मोहे....

अपना ही रङ्ग मोहे रङ्ग दो प्रभुजी,
आतम का रङ्ग मोह रङ्ग दो प्रभुजी।
रङ्ग दो रङ्ग दो रङ्ग दो प्रभुजी॥ टेक॥

ज्ञान में मोह की धूल लगी है,
धूल लगी है प्रभु धूल लगी है।
इससे मुझको छुड़ा दो प्रभुजी॥1॥

सच्ची श्रद्धा रङ्ग अनुपम,
रङ्ग अनुपम प्रभु रङ्ग अनुपम।
इससे मोकों सजा दो प्रभुजी॥2॥

रत्नत्रय रङ्ग तुमरा सरीखा,
तुमरा सरीखा प्रभु तुमरा सरीखा।
इससे मोकों सजा दो प्रभुजी॥3॥

सेवक शरण गही जिनवर की,
सेवक शरण गही आतम की।
जनम-मरण दु:ख मिटा दो प्रभुजी॥4॥

(6) धन्य धन्य आज घड़ी......

धन्य धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है।
जिन-चरणों की भक्ति करके आनन्द अपार है।टेक॥

खुशियाँ अपार आज, हर दिल में छाई हैं।
दर्शन के हेतु देखो, जनता अकुलाई हैं।
चारों ओर देख लो, भीड़ बेशुमार है॥1॥

भक्ति से नृत्यगान, कोई हैं कर रहे।
आतम सुबोध कर, पापों से डर रहे।
पल-पल पुण्य का, भर भण्डार है॥2॥

जय-जय के नाद से, गूँजा आकाश है।
छूटेंगे पाप सब, निश्चय यह आज है।
देख लो 'सौभाग्य' खुला, आज मुक्ति द्वार है॥3॥

महावीर के सन्देशों को, जीवन में अपनाऐंगे।
भेद-ज्ञान की ज्योति जलाकर, महावीर बन जाऐंगे।
सत्य अहिंसा अनेकान्त ही, जिनवाणी का सार है॥4॥

(7) लहर-लहर लहराये......

लहर-लहर लहराये, केशरिया झण्डा जिनमत का।
केशरिया झण्डा जिनमत का हो जी हो जी॥
यह सबका मन हरषाये, केशरिया झण्डा जिनमत का
केशरिया झण्डा जिनमत का हो जी हो जी॥टेक॥

फर फर फर फर करता झण्डा, गगन-शिखा पर डोले-2।
स्वस्तिक का यह चिन्ह अनूठा, भेद हृदय के खोले-2।
यह ज्ञान की ज्योति जलाये, केशरिया झण्डा॥1॥

इसकी शीतल छाया में हम, पढ़ें रतन जिनवाणी-2।
सत्य अहिंसा प्रेम मार्ग पर, बने देश लासानी-2।
यह सत् पथ पर पहुँचायें, केशरिया झण्डा॥2॥

(8) शासन ध्वज लहराओ

शासन ध्वज लहराओ मारा साथी,
पञ्च कल्याण रचाओ म्हारा साथी।
आओ रे आओ आओ म्हारा साथी,
जीवन सफल बनाओ म्हारा साथी॥टेक॥

स्वर्गपुरी से सुरपति आये, अनेकान्तमय ध्वज ले आये।
स्याद्वाद का रङ्ग भरकर, सबका संशय तिमिर मिटाये।
परिणति में लहराओ म्हारा साथी॥1॥

मङ्गल स्वस्तिक चिह्न बनाओ, चार गति का दु:ख नशाओ।
शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर, भेदज्ञान की ज्योति जलाओ।
मोक्ष महल में आओ म्हारा साथी ॥2 ॥

गुण अनन्तमय निर्मल आतम, अनेकान्त कहते परमातम।
धर्म-युगल जो रहे विरोधी, वे भी रहते हैं निज आतम।
निज स्वरूप रस पाओ म्हारा साथी ॥3 ॥

मंगल स्वर्ण-कलश ले आओ, इस पर स्वस्तिक चिह्न बनाओ।
माता के कर कमलों द्वारा, मंगल वेदी पर पधराओ।
मङ्गल कलश ढुराओ म्हारा साथी ॥4 ॥

(9) उड़े गगन में झण्डा प्यारा,

उड़े गगन में झण्डा प्यारा, जैनधर्म का बजे नगारा ।।टेक ।।

ऋषभ देव ने इसको रोपा, भरत चक्रवर्ती को सौंपा।
उसने इसका किया प्रचारा, उड़े गगन में झण्डा प्यारा ॥1 ॥

महावीर ने इसे उठाया, भारत को सन्देश सुनाया।
धर्म अहिंसा जग हितकारा, उड़े गगन में झण्डा प्यारा ॥2 ॥

गौतम गणधर ने अपनाया, अनेकान्त जग को समझाया।
स्याद्वाद करके विस्तारा, उड़े गगन में झण्डा प्यारा ॥3 ॥

मुनियों ने फिर इसे सम्हाला, भूतल पे कर दिया उजाला।
यही करेगा देश सुधारा, उड़े गगन में झण्डा प्यारा ॥4 ॥

हम भी सब मिलकर सेवेंगे, नहीं जरा झुकने देवेंगे।
तन-धन चाहे जाय हमारा, उड़े गगन में झण्डा प्यारा ॥5 ॥

दया धर्म का पाठ पढ़ावें, सबको करना प्रेम सिखावें।
विजय पताका लगता प्यारा, उड़े गगन में झण्डा प्यारा ॥6 ॥

अन्य भक्ति खण्ड

(1) लक्ष्य-बिन्दु

लक्ष्य बिन्दु का कभी न हम पता लगा सके।
खोजते रहे सदा, मगर न पंथ पा सके ॥ टेक ॥

दिव्य देवगति मिलि जहाँ कि सुख अपार था।
फूल की सुगंधी सा सुदेवियों का प्यार था।
क्या वहाँ बहार थी कि क्या अजब खुमार था ?
भोग वस्तुएँ अनेक भोगना भी भार था।
मुग्ध हो गया हृदय, बन गया कि ज्यों अभय।
भूल यह गया कि कालचक्र है नहीं सदय ॥
और एक दिन ढली वह खिली हुई कली।
दुःख हुआ बहुत कि हम जरा नहीं अघा सके ॥ 1 ॥

नर्क में गया कभी, जहाँ महान क्लेश था।
वेदना अपार थी, तथा विचित्र वेष था।
मार-काट-चीर-फाड़ से भरा प्रदेश था।
रक्त पीव माँस का समुद्र वह अशेष था ॥
दम लगा घुटा-घुटा, प्राण भी लुटा-लुटा।
किन्तु पूर्ण आयु तक, उसी जगह रहा डटा ॥
भूख भी न मर सकी, प्यास कब उभर सकी ?
ये बड़े चतुर न किन्तु कर्म को हटा सके ॥ 2 ॥

पशु हुए कभी तो भार कर वहन सदा फिरे।
हीन बल हुए तो आयु भर रहे डरे-डरे ॥
ज्ञान हीन जिन्दगी विकास किस तरह करें ?
बन्धनों के बीच घोर वेदना लिये मरे।
पाप से घिरे-घिरे, पंक में गिरे-गिरे

साथ के निकल गए, परन्तु हम नहीं तिरे॥
सोचते यही रहे, एक फिर लहर बहे।
इन्तजार में रहे न चेतना जगा सके॥ 3॥

पुण्य बन्ध कुछ हुआ, मनुष्य का मिला भवन।
धन वैभव अधिक हुआ उसी में एक दम मगन॥
चाटुकार राह दें उसी तरफ बढ़ें चरण।
न सत्य की लगन रही न धर्मध्यान में है मन॥
बात-बात पर अड़े, नैन भी चढ़े-चढ़े।
शान के मकान पर गुमान से हुए खड़े॥
दैव था विहंस रहा, मूर्ख आप फंस रहा।
चक्रवर्ती भी न भाग्य फल कभी हटा सके॥ 4॥

भाग्य साथ दे गया महाव्रती हुए कभी।
राग-द्वेष पुण्य-पाप आदि छोड़कर सभी॥
भूख प्यास शीत घाम आदि सह उठे सभी।
ख्याति हो गई कि साधु श्रेष्ठ हैं यही अभी॥
भक्त कुछ बड़े-बड़े, सिर झुका हुये खड़े।
डगमगा गये कदम न रह सके वहीं अड़े॥
कौन काम आ सका, कीर्ति से बचा सका।
खो प्रकाश पास का न और ज्योति ला सके॥5॥

(2) श्री पार्श्वनाथ स्तुति

पारस प्रभु की छवि सुखकारी, वीतराग मूरत मनहारी॥ टेक॥

पद्मासन अरु नासा दृष्टि, धर्मामृत की करती वृष्टि।
अद्भुत मुद्रा है हितकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी॥1॥

निरखत परमानन्द उपजावे, भेदज्ञान उर में प्रगटावें।
सब संक्लेश मिटे दुखकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी॥2॥

प्रभु की महिमा कैसे गावें, इन्द्रादिक भी पार न पावें।
चरित नाथ का मंगलकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी ॥3 ॥

मन में जिनवर यही भावना, करें आप सम आत्मसाधना।
साम्यभाव हो मंगलकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी ॥4 ॥

चित्त मलिन नहीं होने पावें, निरतिचार संयम प्रगटावें।
प्रभु चरणों में ढोक हमारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी ॥5 ॥

ऐसा निश्चल ध्यान लगावें, कर्म कलंक समूल नशावें।
पंचम गति पावें अविकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी ॥6 ॥

दिव्य शान्तिमय तीर्थ आपका, परम शान्त है तत्त्व आपका।
हो प्रभावना मंगलकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी ॥7 ॥

(3) श्री बाहुबली स्तुति

प्रभु बाहुबली ऐसा बल हो ॥ टेक ॥

जीतू मैं मोह महाभट को, श्रद्धान सहज ही सम्यक् हो।
निज पर का भेद विज्ञान रहे, अन्तर शुद्धातम अनुभव हो ॥1 ॥

जड़रूप सदा आकुलतामय, भोगों का नहिं आकर्षण हो।
अध्रुव अशरण दुःखरूप परिग्रह, के प्रति नहिं समर्पण हो ॥2 ॥

हो ज्ञान सहज वैराग्यमयी, वैराग्य ज्ञानमय जिनवर हो।
संकल्प सहित निर्ग्रन्थ मार्ग में, विचरण स्वामी सत्वर हो ॥3 ॥

उपसर्ग परीषह चाहे हों, परिणाम सदा समतामय हो।
दशलक्षण प्रगट सदा वर्ते, आराधन नित मंगलमय हो ॥4 ॥

हो ऐसा निश्चल आत्मध्यान, कर्मों का कर्मों में लय हो।
चैतन्य विभूति ध्रुव अनुपम, प्रगटे भक्ति का प्रभु फल हो ॥5 ॥

(4) जब एक रतन अनमोल है...

जब एक रतन अनमोल है तो, रत्नाकर कैसा होगा ?
जिसकी चर्चा ही है सुन्दर तो, वो कितना सुन्दर होगा ?
कहते अनुपम रसखान है वो, कब स्वाद चखूँ वह क्षण होगा ॥ टेक ॥

जिसके दीवाने हैं ज्ञानी, धर धुन में वही सवार रहे।
बस एक लक्ष और एक पक्ष, हर श्वांस उसी के लिए बहे ॥
जिसको पाकर सब कुछ पाया, उससे भी बढ़कर क्या होगा ? ॥1 ॥

जो वाणी के भी पार कहा, मन भी थक करके रह जाये।
इन्द्रिय गोचर तो दूर, अतीन्द्रिय, के विकल्प में न आये ॥
अनुभवगोचर कुछ नाम नहीं, निरनाम भी क्या अद्भुत होगा ? ॥2 ॥

सब अंग पढ़े नौ पूर्व रटे, पर उसका स्वाद नहीं आये।
तिर्यंच गति के अनपढ़ भी, ले स्वाद सफल भव कर जाये ॥
जड़ पुद्गल तो अनजान स्वयं, वो ज्ञान तुझे कैसे देगा ? ॥ 3 ॥

जिसकी महिमा प्रभु की वाणी, गाती मनमोहक लहराये।
ध्रुवधाम गुणों के रत्नाकर, सब हैं परमेश्वर फरमाये ॥
तू माने या न भी मानें, परमात्मपना कम न होगा ॥ 4 ॥

कवि क्या, मुनि त्यागी हुये थकित, गणधर कथ पार नहीं पाये।
अनुभूति में तो दर्शन होते, जो होनहार वो लख पाये ॥
बस एक लगन भर हो सच्ची, तुझको निश्चित दर्शन होगा ॥ 5 ॥

व्रत प्रतिमा लो उपवास करो, या जंगल में डेरा डारो।
या करो पाठ पूजा वंदन, इस तन को खूब सुखा डारो ॥
ज्ञायक तो आनन्द खान सहज-जानन में निज दर्शन होगा ॥ 6 ॥

मङ्गल भक्ति सुमन

प्रस्तुत आवृत्ति के प्रकाशनार्थ प्राप्त आर्थिक सहयोग

मङ्गलार्थी संचार मनीष सिंघई, करेली (मध्यप्रदेश)	1234/-
श्रीमान प्रीतमदास जैन, आदर्श जैन, अक्षत जैन, अर्चित जैन भोपाल (मध्यप्रदेश)	1111/-
कुमारी आज्ञा, आरोही जैन, तीर्थधाम मङ्गलायतन (उत्तरप्रदेश)	1100/-
श्रीमान अशोक सेठी, झालरापाटन (राजस्थान)	1100/-
स्व० श्री सुनील जैन, करेली (मध्यप्रदेश)	501/-
श्रीमान प्रकाशचंद पुत्र श्री सुरेंद्र सुहाने, मौ (मध्यप्रदेश)	501/-
श्रीमती सीमा जैन, कानपुर (उत्तरप्रदेश)	501/-
मङ्गलार्थी सिद्धार्थ जैन, इंदौर (मध्यप्रदेश)	501/-
श्रीमान् रतनचंद सरला जैन, पनागर(मध्यप्रदेश)	501/-
श्रीमान् संजीवकुमार जैन, पन्ना (मध्यप्रदेश)	501/-
मङ्गलार्थी निमिष मिलिंद जैन, हिंगोली (महाराष्ट्र)	501/-
मङ्गलार्थी सर्वज्ञ विकास जैन, दिल्ली	501/-
मङ्गलार्थी मांशु हिमांशु जैन, खुरई (मध्यप्रदेश)	501/-
गुप्तदान	300/-
मङ्गलार्थी रिधित संयम अजमेरा, भीलवाड़ा (राजस्थान)	251/-
मङ्गलार्थी स्नेह नवीन परतवार, हिंगोली (महाराष्ट्र)	251/-
मङ्गलार्थी संस्कार सिंघई, महाराजपुर (मध्यप्रदेश)	251/-
श्रीमान् मनोज रवने, वाशिम (महाराष्ट्र)	251/-
श्रीमान् मनोज आरती जैन, भोपाल (मध्यप्रदेश)	251/-
मङ्गलार्थी आश्रय मनोज जैन, हरपालपुर (मध्यप्रदेश)	201/-
मङ्गलार्थी प्रांजल जैन, ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	201/-
श्रीमान् राजकुमार जैन, मंडला	201/-
श्रीमान् राजीव सूर्यांश ठगन (एस.आर.टी.), टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)	201/-
मङ्गलार्थी रियांक रजनीश जैन, छतरपुर (मध्यप्रदेश)	201/-
मङ्गलार्थी मनन जैन, भोपाल (मध्यप्रदेश)	201/-
मङ्गलार्थी निशित जैन, जबलपुर (मध्यप्रदेश)	200/-
श्रीमान् श्रेयांश सम्यक् मोदी, खुरई (मध्यप्रदेश)	200/-
श्रीमान् प्रमोद काव्य जैन, जयपुर (राजस्थान)	200/-
श्रीमान् आशीषकुमार जैन, ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	200/-
मङ्गलार्थी हित जैन, भोपाल (मध्यप्रदेश)	151/-
श्रीमान् ज्ञानचंद्र विनय जैन, विदिशा (मध्यप्रदेश)	121/-

मङ्गलार्थी आयुष राजीवकुमार जैन, एटा (उत्तरप्रदेश)	110/-
मङ्गलार्थी शुभम जैन, एटा (उत्तरप्रदेश)	101/-
श्रीमान् पवन रॉबिन सतभैया, टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)	101/-
मङ्गलार्थी सम्यक् शेखर जैन, शिकोहाबाद (उत्तरप्रदेश)	101/-
मङ्गलार्थी रिषभ जैन, अम्बाह (मध्यप्रदेश)	101/-
मङ्गलार्थी आदित्य जैन, ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	101/-
श्रीमान् जिनेश्वरदास राजीवकुमार, आर्जव, सौर्या, मडावरा (उत्तरप्रदेश)	101/-
श्रीमती रुपल आर्या, आरुष, सौर्या, मडावरा (उत्तरप्रदेश)	101/-
श्रीमती सुखवती सौर्या, मडावरा (उत्तरप्रदेश)	101/-
श्रीमान् संजीव रेखा जैन, सागर (मध्यप्रदेश)	101/-
मङ्गलार्थी सम्यक् श्रेया जैन, सागर (मध्यप्रदेश)	101/-
मङ्गलार्थी समय वरांग जैन, इंदौर (मध्यप्रदेश)	101/-
श्रीमान् सन्मति शाश्वत जैन, गढ़ाकोटा (मध्यप्रदेश)	101/-
श्रीमती सुधा ओशी जैन, गढ़ाकोटा (मध्यप्रदेश)	101/-
श्रीमती आस्था, आदि, हनि जैन,ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	101/-
श्रीमान् अस्मित दोडल, हिंगोली (महाराष्ट्र)	101/-
श्रीमान् यम्वल, बस्मत (महाराष्ट्र)	101/-
कुमारी काव्या मनारकेर, वाशिम (महाराष्ट्र)	101/-
मङ्गलार्थी ओंकार दोडल, हिंगोली (महाराष्ट्र)	101/-
श्रीमान् आरव मनाटकर, वाशिम (महाराष्ट्र)	101/-
श्रीमान् पवन पारस जैन, इंदौर (मध्यप्रदेश)	100/-
मङ्गलार्थी अतिशय प्रशांत जैन, जबलपुर (मध्यप्रदेश)	100/-
मङ्गलार्थी अनिमेष संदीप जैन, जबलपुर (मध्यप्रदेश)	100/-
श्रीमान् अरविन्द सीमा जैन, मौ (मध्यप्रदेश)	100/-
मङ्गलार्थी आयुष जैन, ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	100/-
मङ्गलार्थी अपूर्व जैन, ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	100/-
मङ्गलार्थी श्रेष्ठ जैन, भिण्ड (मध्यप्रदेश)	100/-
कुमारी मणि जैन, शाश्वतधाम, उदयपुर (राजस्थान)	100/-
श्रीमती रेखा जैन, भिण्ड (मध्यप्रदेश)	100/-
मङ्गलार्थी ज्ञायक जैन, विदिशा (मध्यप्रदेश)	51/-
श्रीमान् संजीव सीमा जैन, विदिशा (मध्यप्रदेश)	51/-
मङ्गलार्थी कृतिक जैन, जबलपुर (मध्यप्रदेश)	51/-
मङ्गलार्थी सम्यक् जैन, सहारनपुर (उत्तरप्रदेश)	51/-
मङ्गलार्थी यश अनुजकुमार जैन, देहरादून (उत्तराखंड)	51/-
मङ्गलार्थी दीक्षित जैन, जयपुर (राजस्थान)	51/-

मङ्गलार्थी तनिष्क संजीव बुखारिया, ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	51/-
कुमारी तनिषा बुखारिया, ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	51/-
श्रीमती संगीता बुखारिया, ललितपुर (उत्तरप्रदेश)	51/-
मङ्गलार्थी अतिशय प्रीति जैन, रुड़की (उत्तराखंड)	51/-
श्रीमान् अंकुर शैफाली समायिक जैन, रुड़की (उत्तराखंड)	51/-
श्रीमती सुमन कनिका जैन, रुड़की (उत्तराखंड)	51/-
श्रीमान् संजय रिषभ जैन, मुजफ्फरनगर (उत्तरप्रदेश)	51/-
श्रीमती सपना भव्याभाविका जैन, मुजफ्फरनगर (उत्तरप्रदेश)	51/-
श्रीमान् हार्दिक जैन, विदिश्याा (मध्यप्रदेश)	51/-
मङ्गलार्थी उद्देश्य संदेश जैन, मौ (मध्यप्रदेश)	50/-

तीर्थधाम मङ्गलायतन
ग्रन्थमाला के सम्माननीय सदस्य

परम संरक्षक -

(1) पण्डित श्री कैलाशचन्द्र पवनकुमार जैन, अलीगढ़; (2) श्रीमती सुशीलादेवी, धर्मपत्नी श्री अजितप्रसाद जैन, दिल्ली; (3) श्रीमती ममता जैन, धर्मपत्नी श्री मुकेश जैन परिवार, अलीगढ़; (4) श्रीमती ताराबेन दाह्यालाल शाह, मुम्बई हस्ते श्री हसमुखभाई शाह, मुम्बई; (5) श्री गिरीश-प्रवीण शाह, यू.एस.ए.; (6) श्री गुणवन्त जे. हिमानी, मुम्बई; (7) श्रीमती कमलादेवी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्द पाण्डया, कोलकाता; (8) श्री महेशचन्द्र परिवार, कन्नौज; (9) श्रीमती सरलादेवी जैन मातृश्री आलोककुमार जैन, परिवार, कानपुर; (10) श्री पी. के. जैन, परिवार, रुड़की; (11) श्री चम्पालाल भण्डारी, बंगलौर; (12) श्री महाचन्द जैन चन्दकला जैन सिंघई, भीलवाड़ा; (13) श्रीमती शीतल बी. शाह, लन्दन; (14) श्रीमती बीना जैन धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रकुमार जैन, देहरादून; (15) श्री प्रेमचन्द बजाज, कोटा; (16) श्री ऋषभ सुपुत्र श्री जैन बहादुर जैन, स्नेहलता, कानपुर; (17) श्रीमती पुष्पलता जैन धर्मपत्नी श्री अजितकुमार जैन, छिन्दबाड़ा; (18) श्री रमणलाल नेमीचन्द शाह, मुम्बई; (19) श्रीमती अमिता धर्मपत्नी श्री भानेन्द्रकुमार बगड़ा, नैरोबी; (20) श्री अजितजी जैन, बड़ौदरा, गुजरात (21) श्री गंभीरमल प्रकाशचन्द्र जैन, अहमदाबाद; (22) श्री वीरेन्द्र कुमार, त्रिशला देवी, नईदिल्ली; (23) श्री बाबूलाल राजेशकुमार मनोजकुमार पाटौदी, गोहाटी (दिल्ली); (24) जैन सेन्टर ऑफ ग्रेटर फिनिक्स, ऐरिजोना; (25) श्रीमती कोकिलाबेन शाह C/O श्री प्रवीन शाह कल्पना शाह, अमेरिका; (26) श्रीमती रंभाबेन पोपटलाल बोरा चैरिटेबिल ट्रस्ट, मुम्बई; (27) श्री विवेक जैन, इन्दौर; (28) श्रीमती कौशल्यादेवी धर्मपत्नी श्री हरीशचन्द्र

जैन, विकासनगर, देहरादून; (29) श्रीमती लीला जैन धर्मपत्नी श्री जयन्तीलाल जैन, मद्रास; (30) श्री विजयभाई, हाथरस-दादर, मुम्बई।

संरक्षक -

(1) अहिंसा चेरिटेबिल ट्रस्ट, जयपुर हस्ते दिलीपभाई; (2) श्री प्रकाशचन्द्र जैन छाबड़ा, सूरत; (3) डॉ० सनतकुमार जैन परिवार, सिहोर; (4) श्री कपूरचन्द छाबड़ा परिवार, सूरत; (5) श्री कैलाशचन्द छाबड़ा परिवार, सूरत; (6) श्रीमती त्रिशलादेवी जैन, सूरत; (7) ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट, बाँसबाड़ा हस्ते श्री महीपाल जैन ज्ञायक; (8) श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी श्री केशवदेव जैन, कानपुर; (9) श्री निहालचन्द जैन, धेवरचन्द जैन, जयपुर; (10) श्रीमती कमलप्रभा जैन मातुश्री श्री अशोक बड़जात्या, इन्दौर (11) श्री महावीर जी पाटिल, सांगली, महाराष्ट्र (12) श्री विजेन्द्र कुमार जैन, जैन मैटल कम्पनी, कुमार मैटल कम्पनी, अलीगढ़। (13) श्रीमती पूनम जैन धर्मपत्नी श्री मुकेश जैन, सहारनपुर।

परम सहायक -

(1) पण्डित कैलाशचन्द जैन, परिवार, अलीगढ़; (2) श्री कैलाशचन्द्रजी जैन, परिवार, ठाकुरगंज; (3) श्री अशोककुमार जैन, परिवार, चिलकाना; (4) श्री बोसकुमार जैन, परिवार, चिलकाना; (5) श्री राजीवकुमार जैन, चिलकाना; (6) श्री संजयकुमार जैन, चिलकाना; (7) श्री बलीशकुमार जैन, परिवार, गाजियाबाद; (8) श्री कैलाशचन्द्रजी जैन, परिवार, भीलवाड़ा; (9) श्री दिगम्बर जैन कुन्द कुन्द कहान स्मृति सभागृह ट्रस्ट, आगरा; (10) श्री प्रशान्तभाई दोशी, पुणे; (11) श्री राजेन्द्रभान बारौलिया, आगरा; (12) श्री शान्तिलाल कुसुमलता पाटनी, छिन्दबाड़ा; (13) श्री रविन्द्रकुमार जैन स्नेहलता जैन, नवी मुम्बई; (14) श्री कपूरचन्द अक्षयकुमार बत्सल, खनियांधाना; (15) श्री एम.पी. जैन चैरिटेबल ट्रस्ट, विवेक विहार, दिल्ली; (16) श्री जीवराज, कैलाश, प्रकाश संचेती, अजमेर; (17) श्रीमती इन्दिराबेन नवीनभाई शाह जोबालिया, मुम्बई; (18) श्री प्रकाशचन्द जैन, सूरत; (19) श्री रूचाम्स फ्रेमिंग, टोरन्टो कनाडा; (20) श्री कार्तिक जैन, नयी दिल्ली।

सहायक

(1) श्रीमती कान्तीदेवी जैन, धर्मपत्नी श्री मोतीचन्द्र जैन (शहरी), चिलकाना; (2) श्रीमती सीमा सेठी धर्मपत्नी श्री दिलीप सेठी, झालावाड़; (3) श्री शीलचन्द्र जैन 'सर्राफ', परिवार, बीना; (4) श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, आगरा; (5) श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, करेली; (6) श्री उमेशचन्द संजीवकुमार, भोपाल; (7) श्री कन्नूभाई

दोशी, परिवार, मुम्बई; (8) श्री खुशालचन्द्र राकेशकुमार सर्राफ, खिमलसा; (9) श्री धनकुमार सुनीलकुमार जैन, सूरत; (10) श्री वीरेश चिरंजीलाल कासलीवाल परिवार, सूरत; (11) श्रीमती स्व० शोभाबेन, धर्मपत्नी स्व० मोतीलाल कीकावत, लूणदा; (12) श्रीमती प्रकाशवती धर्मपत्नी गंभीरचन्द्रजी वैद्य, अलीगंज हस्ते डॉ० योगेश जैन; (13) श्री महेशचन्द जैन, आगरा; (14) श्रीमती रविकान्ता जैन, राधोगढ़; (15) श्री कीर्तिञ्जय अण्णासा गोरे, हिंगोली (फालेगाँव); (16) वन्दना प्रकाशन, अलवर; (17) श्री राजकुमार जैन, रश्मि जैन, उज्जैन; (18) श्री अजित 'अचल' ग्वालियर; (19) श्री कोटडिया चम्पकलाल नाथालाल शाह, अहमदाबाद; (20) श्री सी.एस. जैन, देहरादून; (21) श्री सागरमल माधवलाल सेठी, बुरहानपुर; (22) श्रीमती शकुन्तलादेवी धर्मपत्नी श्री जवाहरलाल जैन, जयपुर; (23) श्री मनु जैन सुपुत्र श्री अरिदमन जैन, मेरठ; (24) श्री अजितकुमार जैन, एड. सीकर; (25) श्री वीरेन्द्रकुमार पारसकुमार, मनोजकुमार हरसौरा, कोटा; (26) डॉ. रांका जैन, प्रिसिंपल, देहरादून; (27) श्रीमती वर्षा बेन पीयूष शाह, ऐरिजोना अमेरिका; (28) श्री विजय किकावत, बसंत विहार, नई दिल्ली; (29) पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, मुम्बई; (30) श्री अजय जैन (सी.ए.), कोटा; (31) श्री चान्दमल हेमन्तकुमार वेद, भीलवाड़ा; (32) श्री सुशीलकुमार जैन समकित पहाड़िया, किशनगढ़; (33) श्री समय गाँधी सुपुत्र श्री रणजीत भाऊ साहेब गाँधी, सोलापुर; (34) श्री कमल बोहरा, कोटा; (35) श्री अनूपकुमार जैन, आगरा; (36) श्रीमती नेहल धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रकुमार कोठारी, दाहोद; (37) श्रीमती नीलमबेन रमणीकभाई घड़ियाली, मोरबी; (38) स्व. श्री चान्दमल लुहाड़िया परिवार, बिजौलिया; (39) श्री महावीर प्रसाद जैन, आगरा; (40) श्री सुभाषचन्द गोयल, आगरा; (41) श्री वंशीधर जैन, आगरा; (42) श्रीमती सत्या जैन धर्मपत्नी श्री महेन्द्रकुमार जैन, नई दिल्ली; (43) श्रीमती प्रकाशदेवी सेठी, गोहाटी; (44) श्री धनकुमार जैन, पार्ले पाइन्ट, सूरत; (45) श्री महावीर कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, दुर्ग; (46) सुमतचन्द विनीतकुमार शास्त्री, आगरा; (47) श्री भगवान पारसकुमार जैन, आगरा; (48) स्व. श्री ज्ञानमलजी, भीलवाड़ा (राज०); (49) श्री विमलचन्द पुत्र श्री राजकुमार काला, खरगौन; (50) श्री पुचाम्स परिवार, टोरंटो, कनाडा; (51) श्रीमती सुलोचनादेवी जैन, गोहाटी; (52) श्री प्रभुदयाल जैन, सिलीगुड़ी (आसाम); (53) श्रीमती चंचला जैन, सोलापुर; (54) श्री अम्बुज जैन पुत्र श्री जे. डी. जैन, मलाड़, मुम्बई; (55) श्री अनुभव अशोककुमार जैन, जबलपुर; (56) श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन परमागम ट्रस्ट, इन्दौर; (57) श्री रमेशचन्द सोगानी, कोलकाता; (58) श्री बटुकलाल राघवजी भापाणी, घाटकोपर, मुम्बई; (59) श्रीमती कमलादेवी पीताम्बरलाल पाटनी, छिन्दवाड़ा; (60) ब्रह्मचारिणी कुसुमबेन, कुम्भोज, कोल्हापुर।

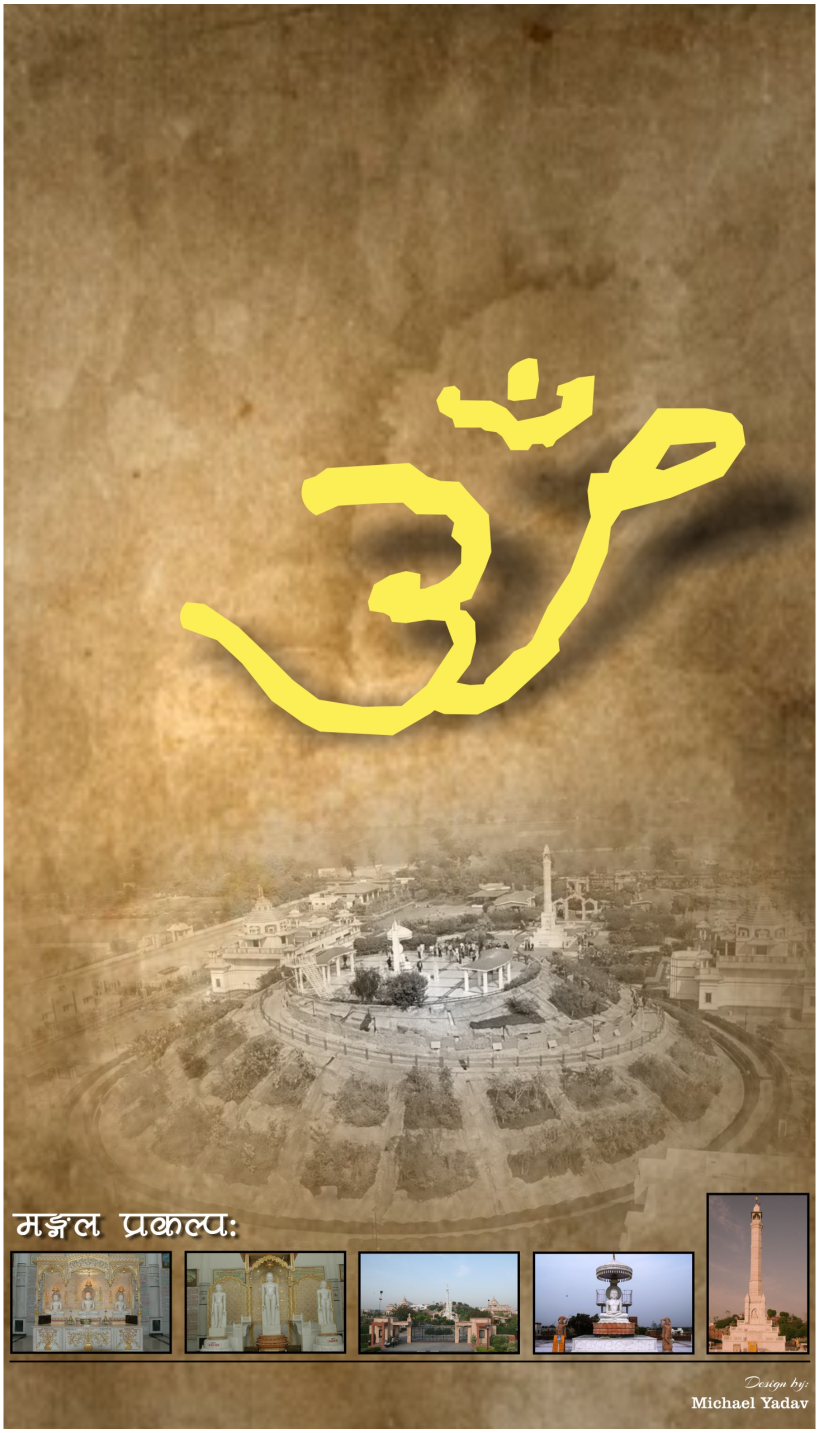
ॐ
मङ्गल प्रकल्प:
Design by:
Michael Yadav